निकोलाई तीखोनोव

कहानियां
और
रेखाचित्र

अनुवादक बुद्धि प्रसाद भट्ट

Н. ТИХОНОВ
РАССКАЗЫ
На языке хинди

हिन्दी अनुवाद प्रगति प्रकाशन १९७३

अपने बारे में

सामाजिक अन्तय से भरपूर और उदात्त आदर्शों से अनुप्राणित निकोलाई तीखोनोव के कृतित्व म सोवियत साहित्य की जिसे महान अक्तूबर समाजवादी क्राति ने जन्म दिया और जा समाजवादी मातभूमि और सोवियत जनता तथा समूची मानवजाति के उज्ज्वल भविष्य के लिए किये गये अथक सघप म परिपक्वता को प्राप्त हुआ, अनेक उत्तम विशेषताए सकेद्रित हुई ह।

"साहित्यकार बनने के लिए पूण समपण, अत्यधिक प्रयास, गहरी लगन, सतत सक्रियता और अनवरत उत्साह, विकास और परिष्कार की आवश्यकता होती है," निकोलाई तीखोनोव के ये शब्द उनके जीवन का मूलमत्र बन गये हैं। तीखोनोव का सपूण कृतित्व जीवन मे साहित्यकार के अविच्छेद्य सबध का उदाहरण है। उनके कृतित्व म उच्च नागरिक भावना और देशप्रेम सवहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के साथ अन्तगुम्फित हैं, जा समूचे सोवियत साहित्य की सबसे बडी विशेषता है।

अटल सकल्पशक्ति और शौयपूण चरित्र वाले लोग तीखोनोव को सदा आकृष्ट करते हैं। वह सदा उमग, विविधता और गति से भरपूर जीवन के सतत सपक म रहते हैं। "दृढ सकल्पशक्ति वाले लोगो और वीरो को देखकर वह आनन्दविभोर हो उठते ह," १६२३ मे ही मक्सिम गोर्की न तीखोनाव के बारे म कहा था। उनका कृतित्व बहुमुखी और बहुविध है। तीखोनोव कवि हैं, कहानीकार ह, पत्रकार ह, अनुवादक हैं, सपादक ह। वह सच्चे अर्थों म जनता के साहित्यकार है उनका न सिफ जन्म एक सामान्य परिवार म हुआ, अपितु अपनी रचनाओ मे भी वह सामान्य जन की चिन्तनधारा, भावनाओ, आशाओ आकाक्षाओ और भाग्य का चित्रण करते है।

निकोलाई तीखोनोव का जन्म १८९६ में पीटरबर्ग (वर्तमान लेनिनग्राद) में एक सामान्य मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। बचपन में ही राजधानी के औद्योगिक मजदूरों और गरीबों के जीवन और अभावों से उनका साक्षात्कार हो गया। वह बहुत पढ़ते थे। "किताबें मेरी सबसे बड़ी दोस्त थीं," तीखोनोव अपने बाल्यकाल के संस्मरणों में लिखते हैं, "और वे मुझे इस बारे में सोचने को बाध्य करती थीं कि जीवन में आदमी को क्या होना चाहिए।" किशोर तीखोनोव को कविता और जीवन से अपरिमित लगाव था, वह दुनिया में सत्य और न्याय को प्रतिष्ठित हुआ देखना चाहता था और लोगों के सुख और आज़ादी के लिए शौर्यपूर्ण कारनामे दिखाने को तत्पर रहता था। किशोर तीखोनोव स्वप्नदर्शी और रूमानियतपसन्द था।

प्रथम विश्वयुद्ध शुरू हुआ। बीसवर्षीय तीखोनोव स्वेच्छा से मोर्चे पर लड़ने गये। किन्तु इस निरर्थक युद्ध ने शीघ्र ही युवा स्वप्नदर्शी की आंखें खोल दीं। युद्ध में तीखोनोव को सच्चे शौर्य का एक भी प्रमाण नहीं मिला, क्योंकि उसका, यानी युद्ध का, जनता के वास्तविक हितों से दूर का भी संबंध नहीं था। इन्हीं दिनों निकोलाई तीखोनोव ने लिखना भी शुरू किया। 'तारों की छांह में' शीर्षक उनकी प्रारंभिक कवितामाला की, जो १९३५ में जाकर ही प्रकाशित हो पायी, पंक्ति-पंक्ति से कवि की घोर निराशा की झलक मिलती है। युद्ध को वह 'रक्तस्नात जड़िमा' कहते हैं और समझते हैं कि "विश्व में युद्ध के नैराश्यपूर्ण मौसम से अधिक निर्मम मौसम और नहीं है'।

अक्तूबर १९१७ में युद्धपोत "अव्रोरा" की तोपों की गरज ने मानव इतिहास में एक नये युग के सूत्रपात की उद्घोषणा की। तीखोनोव क्रांति के पहले ही दिन से उसमें सक्रिय भाग लेने लगे। वे लाल सेना में स्वयंसेवक के रूप में भरती हुए और गृहयुद्ध के मोर्चों पर लड़े। क्रांतिकारी लड़ाइयों में उनकी कलम पैनी हुई और उनके आदर्शों तथा कलात्मक रुचियों का निर्धारण हुआ। तीखोनोव की गृहयुद्ध और रूस में सोवियत सत्ता की स्थापना से संबंधित कविताएं आशावादिता, विजय में अटल विश्वास, शत्रुओं के प्रति घोर नफ़रत और मित्रों एवं साथियों के प्रति गहरे लगाव और निष्ठा से भरपूर हैं। १९२२ में प्रकाशित "गिरोह' और "घरेलू बीयर' नामक कविता संग्रहों में उन्होंने एक ऐसे शक्तिशाली और शौर्यपूर्ण व्यक्ति का बिंब प्रस्तुत किया है, जिसे क्रांति ने जन्म दिया था। "घरेलू बीयर

कविता-सग्रह के आदशवाक्य के लिए तीखोनोव ने महान रूसी कवि अलेक्सान्द्र ब्लोक के इन प्रसिद्ध शब्दो को चुना "और चिर युद्ध! चैन केवल सपना है।" इनसे उन वर्षों के वातावरण का अच्छा आभास मिलता है।

इन दो कविता-सग्रहो ने तीखोनोव को तुरत नवजात सोवियत साहित्य की पहली कतारो मे ला बिठाया।

गहयुद्ध खत्म हुआ और नवस्थापित सोवियत राज्य नये जीवन का निर्माण करने लगा। सघष और श्रम मे एक नये सोवियत मानव ने जन्म लिया, जो नये जीवन के निर्माण के साथ अपने आपको भी बदल रहा था। सोवियत साहित्य के समक्ष एक उत्तरदायित्वपूण कायभार था सारे विश्व को हिला देनेवाली ऐतिहासिक घटनाओ को चित्रित करना। निकोलाई तीखोनोव उन पहले सोवियत साहित्यकारा मे से थे, जो भूतपूव जारशाही रूस के पिछडे उपात प्रदेश काकेशिया और मध्य एशिया की तरफ आकृष्ट हुए। और तब से पूव को तीखोनोव के कृतित्व मे एक प्रमुख स्थान प्राप्त हो गया। "मैं आत्मा से पूर्वी हू," एक बार तीखोनोव ने कहा था। "मैं एशिया को बहुत पहले से और दूर से प्यार करने लगा था," अपने एक पात्र के माध्यम से उन्होंने पूव के प्रति अपने लगाव को अभिव्यक्त किया।

तीखोनोव ने सोवियत पूव के जनतत्रो मे अपन नायको की खोज की, जहा नये जीवन की स्थापना के लिए विशेष रूप से भीषण सघष करना पडा था। उन्होने इन दूरवर्ती इलाको की अनेक बार यात्राए की, रूस के कोने-कोने मे जाकर सोवियत सत्ता के विजय अभियान के बारे म सामग्री एकत्र की। १९२७ मे प्रकाशित गद्य सग्रह "साहसी व्यक्ति" इन्ही यात्राओ का फल था। यह रचना सोवियत पूव विषयक साहित्य म महत्त्वपूण योगदान सिद्ध हुई। "निकोलाई तीखोनोव का गद्य बहुत उत्तम कोटि का है," इस किताब को पढने पर १९२८ म म० गोर्की ने लिखा था। तुर्कमानिस्तान की यात्रा से लौटने के बाद १९३० मे तीखोनोव ने "खानाबन्दोश" रेखाचित्र-सग्रह और "युर्गा" कविता सग्रह प्रकाशित करवाये, जिनका विषय मध्य एशिया मे समाजवाद का निर्माण था। इन सग्रहो मे शामिल, तथ्यपूण सामग्री पर आधारित यथाथवादी रेखाचित्रा और रुमानियत से ओतप्रोत कविताओ म सामाजिक यथातथ्य और तत्कालीन युग का ऐतिहासिक वातावरण उभर कर सामने आये हैं।

काकेशिया और ट्रासकाकेशिया के प्रदेश तीखोनोव के लिए विशेष रूप से प्रिय है। उन्होंने उन्हे साहसिक, शौर्यपूर्ण, ईमानदार और आत्मत्यागी लोगो के इलाके, गृहयुद्ध के दिनो मे सोवियत सत्ता की स्थापना के लिए हुए भीषण युद्धो की स्थली और समाजवाद के विराट निर्माण-स्थल के रूप मे आकृष्ट किया। ऊचे, हिमाच्छादित पहाडो और दुर्लघ्य चट्टानो, गहरी खाइयो और फूलती-फलती घाटियो, वेगवती नदियो और ऊचे-ऊचे प्रपातो का यह देश तीसरे दशक के प्रारभ से ही तीखोनोव के कृतित्व मे वाड्मय अभिव्यक्ति पाने लग गया था।

पहली पचवर्षीय योजनाओ के वर्षों मे, जब सारा देश एक विशाल निर्माण-स्थल मे परिवर्तित हो गया था, तीखोनोव ने काकेशिया के विषय को गुणात्मक रूप से नया आयाम दिया। वह शांति और समाजवाद के निर्माण मे भाग लेनेवाले लोगो को चित्रित करने लगे। प्रगतिशील काकेशियाई सिमोन-बोल्शेविक ने सोवियत साहित्य मे हमेशा के लिए अपना स्थान बना लिया है। उसके माध्यम से तीखोनोव ने दिखाया कि कैसे प्रकृति का कायाकल्प और नये मानव का विकास करनेवाला सचेत, जोशीला श्रम पुरानी परपराओ की जजीरो को तोडता है, कैसे मार्गों के निर्माण मे रत लोगो के रास्ते मे खडी चट्टानो की तरह पुराने मध्ययुगीन रीतिरिवाज भी धराशायी हो जाते है, कैसे तूफानी वेग से बहती नदियो को बाधने मे लगे लोग उनकी धाराओ के साथ साथ अपने रहनसहन और जीवन को भी नयी दिशा देते है। तीखोनोव की 'सिमोन-बोल्शेविक', "कुहासे मे ली हुई शपथ' और "कख़ेतिया का गीत' शीर्षक कहानिया और "पहाड' शीर्षक कविता सग्रह सोवियत साहित्य की अमर कृतिया है।

काकेशिया के बारे मे तीखोनोव ने युद्ध के पश्चात भी अनेक रचनाए लिखी।

इसके साथ ही वह काकेशियाई कवियो की रचनाओ के अनुवाद भी करने लगे। उनके अनुवादो का बहुत बडा साहित्यिक व सामाजिक महत्व था। उनकी बदौलत बहुत से काकेशियाई कवियो को न सिर्फ सोवियत सघ मे, अपितु सारे विश्व मे ख्याति प्राप्त हुई।

रूसी क्लासिकल साहित्य की सर्वोत्तम परपराओ को जारी रखना और उन्हे नये अर्थ से अन्वित करना तीखोनोव की काकेशिया विषयक रचनाओ का दूसरा पहलू है। लेर्मोतोव के काव्य मे चित्रित काकेशिया तीखोनोव

को विशेष रूप से प्रिय है। सम्भवत जब उन्होंने अपने "पहाड" कविता-संग्रह के आदशवाक्य के लिए लेर्मोंतोव के इन शब्दा को चुना, कि "काकेशिया के पहाड मेरे लिए अत्यत पवित्र हैं', तो इसके द्वारा वह इस महान रूसी कवि के साथ अपने सानिध्य पर ही जोर दे रहे थे।

चौथे दशक मे जब नये विश्वयुद्ध के काले बादल घिरने लगे, तो तीखोनाव की रचनाओ मे युद्धविरोध का स्वर अत्यत प्रखरता के साथ गजन लगा। युद्ध की विभीषिका से उनका साक्षात्कार यौवन की दहलीज पर पहला कदम रखने के दिन स ही—जसा कि हम ऊपर बता चुके ह, तीखोनोव ने पहले विश्वयुद्ध मे भाग लिया था—हो गया था। तभी से वह अथक रूप से युद्ध और प्रतिक्रिया की काली शक्तियो का पदाफाश करते आये ह। १९३४ मे सोवियत लेखका की एक सभा मे भाषण करते हुए उन्होने कहा "हम अतर्राष्ट्रीयतावाद के प्रचारक हैं।" दूसरे विश्वयुद्ध से पहले उन्हाने यूरोप के देशो की यात्रा की और उसके बाद उनकी जा काव्य-रचना—"मित्र की छाया"—निकली, उसमे उन्होने, उन्हा के शब्दा मे, "फासिस्ट दुस्वप्न के हाथ बिके दिग्भ्रमित और सवनाश के कगार पर खडे यूरोप" को चित्रित करन का प्रयास किया है। "मित्र की छाया" मे आशका है, रक्तपातपूण त्रासदी का पूर्वाभास है, पर वह निराशावादी नहीं है। कवि जडीभूत और भय स स्तभित यूरोप मे ऐसे लोगा का खोजने की कोशिश करता है, जो फासिज्म और युद्ध के सामने कभी घुटने नही टेकेंगे। तीखोनोव को पेरिस की खुशहाली, फूलो और चेस्टनटा के पीछे निश्चित होकर खेलते बच्चो की पीठा पर पडती बदूको की छायाए दीखती है। रोमा रोला, आरी बारब्यूस, थ्योडोर ड्राइजर, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और बहुत से दूसरे प्रबुद्ध और प्रसिद्ध साहित्यकारो के स्वर मे स्वर मिलाते हुए तीखोनोव ने लोगो को विश्व पर मडराते भयकर खतरे से आगाह किया और फासिज्म का विरोध और शाति तथा सारी धरती के लोगा के बीच मैत्री स्थापित करने के लिए ललकारा।

१९४१ का भयानक वष आया। फासिस्ट दरिदा ने विश्वासघात करके सोवियत सघ पर हमला किया। अपनी मातृभूमि की आजादी और समूची मानवजाति की मुक्ति के लिए सोवियत जनता न महान देशभक्तिपूण युद्ध छेड दिया। फासिस्टा के विरुद्ध जीवन-मृत्यु के सघष म सोवियत साहित्यकार भी पीछे नही रहे। अपनी कलम की शक्ति से उन्होंने सोवियत जनता के

मनोबल को ऊंचा उठाया। युद्ध के पहले ही दिनों में तीखोनोव देशभक्त सोवियत साहित्यकारों की पहली कतारों में खड़े हो गये।

नौ सौ दिन लंबे लेनिनग्राद के घेरे के दौरान तीखोनोव अपने लाखों नगरवासियों के साथ, जो उनके शब्दों में, "अपने जीवन के लिए नहीं, अपितु अपने प्रिय नगर के भाग्य के लिए आशंकित थे", कंधे से कंधा मिलाकर शत्रु के विरुद्ध जूझते रहे। बाद में उन्होंने लिखा "लेनिनग्राद के लोग एक परिवार, एक अभूतपूर्व समुदाय में सगठित हो गये थे सब के सब युद्धाक्रांत नगर के सैनिक बन गये थे।" आगे वह लिखते हैं "मैं इतना दुबला था कि सिर्फ हड्डियां ही बाकी रह गयी थीं, मैं हड्डियों और अदम्य आशा से बना हुआ था।" अपने हमवतन लेनिनग्रादवासियों के बारे में तीखोनोव ने जो रेखाचित्र, कहानियां और कविताएं लिखीं, वे जीवनदायी आशावादिता और शौर्यपूर्ण उत्साह से भरपूर हैं। उनके पात्र कल्पित नहीं, बल्कि जीवन से लिये गये हैं। ये मशहूर लोग नहीं, बल्कि आम लोग थे, जिनके लिए वीरतापूर्ण कारनामे जीवन का अंग थे, जीवन की आवश्यकता थे।

तीखोनोव का अनूठा काव्य "कीरोव हमारे साथ" घेरे में पड़े लेनिनग्राद की शौर्यगाथा का एक ज्वलंत पृष्ठ है। १९४१–१९४२ की भयानक सर्दियों में रचित तीखोनोव की इस कृति में अदम्य बोल्शेविक सेर्गेई मिरोनोविच कीरोव, जिन्हें लेनिनग्रादवासी प्यार से "मिरोनिच" कहते थे और जो महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध से सात साल पहले दुश्मन के हाथों वीरगति को प्राप्त हुए थे, मानो पुनः जीवित हो उठते हैं। बर्फीले तूफानों से आक्रांत, ठंड से ठिठुरते, टैंकरोधी कांटों, खाइयों, कवच कोठरियों और बरिकेडों से घिरे, फासिस्टी बमों और गोलों से ध्वस्त लेनिनग्राद में कीरोव अपने प्रिय नगर की रक्षा के लिए छाती तानकर खड़े नागरिकों की सलामी लेते हैं। कवि शत्रु के विरुद्ध घातक संघर्ष के लिए लेनिनग्रादवासियों के आगे आगे जाते कीरोव के सधे हुए कदमों की आवाज साफ साफ सुनता है।

युद्धोत्तरकालीन सोवियत साहित्य में तीखोनोव की रचनाओं का विशेष स्थान है। उनके कृतित्व में शांति और हमारी धरती के सभी लोगों की मैत्री के विषय का आगे विकास हुआ। तीखोनोव ने अनेक देशों की यात्रा की, विभिन्न जातियों के जीवन का अध्ययन किया। हर यात्रा नया

अनुभव सिद्ध होती थी और उसके परिणामस्वरूप कोई नयी कृति जन्म लेती थी। तीखोनोव का यह विश्वास और दृढ हो गया कि सोवियत जनता का भाग्य समूची मानवजाति के भाग्य से अभिन्न रूप से जुडा हुआ है। इसीलिए हम उनकी रचनाओ मे देशप्रेम और अन्तर्राष्ट्रीयतावाद को एक दूसरे से अन्तर्गुम्फित पाते है।

* * *

निकोलाई तीखोनोव के कृतित्व मे भारत का शुरू से ही विशेष स्थान रहा है। भारत के बारे मे बहुत से सोवियत साहित्यकारो ने लिखा है, किन्तु उनमे सर्वोच्च स्थान तीखोनोव का है।

अपनी एक प्रारभिक कविता—"भारत"—मे, जो १६१३ मे छपी थी, उन्होने "पीले सौंदर्यों के बीच नीली रातो का आनन्द लेने" का सपना देखा था और "प्राचीन काल के पवित्र पत्थरो पर चलने" की कामना की थी।

किन्तु युवा कवि उस समय भी भारत को घेरे हुए रूमानियत के कुहासे के बीच से भारतीय जनता के वास्तविक जीवन को, दुख, पीडा और कष्टो, सघर्ष और आशाओ से भरे जीवन को देख पाया था। वह देख पाया था कि भारत जाग गया है और इसे उसने अपनी प्रारभिक कविताओ मे प्रतिबिंबित भी किया। इस सबध मे तीखोनोव की अप्रकाशित कविता 'नरहत्या" (१६१४) महत्त्वपूर्ण है, जिसे उन्होने रूसी चित्रकार वेरेश्चागिन के "भारत मे अंग्रेजो द्वारा नरहत्या" शीर्षक चित्र को देखने के बाद लिखा था। वेरेश्चागिन ने यह चित्र पिछली सदी के नौवे दशक के प्रारभ मे अंग्रेजो द्वारा नामधारी सिखो की हत्या के सिलसिले मे बनाया था। आजादी के लिए लडनेवाले ये वीर अपने देश को गुलाम बनानेवालो को बद्दुआए देते हुए और दिलो मे अपनी जनता की विजय मे विश्वास लिये हुए मौत का आलिंगन कर गये। तीखोनोव की यह कविता उन सैकडो-हजारो भारतीय शहीदो की याद दिलाती है, जिनके बारे मे भारत के कवियो ने भी असख्य कविताए और गीत रचे है।

क्राति के बाद की घटनाओ और सोवियत साहित्य के जन्म और विकास मे सक्रिय रूप से व्यस्त रहने के बावजूद तीखोनोव भारत को भूले नही। वह उसके नये-नये स्वरो को सुनते रहे। तीखोनोव की क्राति के तुरत बाद

की भारत विषयक कविताएं भारत के क्रांतिमना कवियों की रचनाओं से बहुत मिलती-जुलती हैं। ऐसा लगता है कि वे भारत के जन सामान्य के जागरण और भारत में एक नये मानव—अपनी जनता के सुखसौभाग्य के सचेत संघर्षकर्ता—के जन्म के बारे में बतानेवाली काव्य गाथा के दो अभिन्न हिस्से हैं। उन दिनों हमारे देश में तीखोनोव की "सामी" कविता बहुत लोकप्रिय हुई थी, जिसमें कवि ने एक भारतीय बालक की, जो गरीब का बेटा था, आत्मा में पैठने और उसकी दृष्टि से विश्व को देखने की कोशिश की थी। भाग्य इस बालक के प्रति बड़ा क्रूर है, उसे आदमी भी नहीं माना जाता, गोरा साहब उसे डंडे से पीटता है। और तब एक दिन अभागा सामी सुनता है कि कहीं दूर, हिमालय के पार एक देश है, जिसमें लेनिन नाम का एक आदमी रहता है, जो जनता का रक्षक है और उसे भी पिटने और गालियां खाने से बचा सकता है और तब वह भगवान की तरह लेनिन को पूजने लगता है। लेनिन का ख्याल और उनकी असीमित शक्ति में विश्वास उसकी हिम्मत बढ़ाता है और जिंदा रहने में मदद करता है। उल्लेखनीय है कि तीसरे और चौथे दशकों में अनेक भारतीय कवियों ने भी लेनिन को जनता के रक्षक के रूप में चित्रित किया था।

१९२० में लिखित "भारत की नींद" शीर्षक कविता में तीखोनोव ने भारतीयों के बीच क्रांतिकारी चेतना के आविर्भाव का चित्रण किया। हालांकि तब तक उन्होंने भारत को नहीं देखा था, फिर भी वह इस देश का काफी यथार्थपरक चित्र प्रस्तुत कर सके। कवि अब प्राचीन मंदिरों, मस्जिदों और भारतीय प्रकृति के जादुमय सौंदर्य से आकृष्ट नहीं होता था। वह अमृतसर की सड़कों का चक्कर लगाता है, ब्रिटिश उपनिवेशवादियों द्वारा निहत्थे भारतीय प्रदर्शनकारियों पर बर्बर ढंग से गोलियां चलाने का साक्षी बनता है।

वहां अमृतसर में उसे एक युवक मिलता है, जिससे वह "बचपन से ही परिचित है"। हो सकता है कि यह सामी ही हो, जो अब बड़ा हो गया है, या यह वह युवा विद्रोही है, जिसे अंग्रेजों ने अन्य विद्रोहियों के साथ तोप के मुंह से बांधकर उड़ा दिया था और अब रूसी कवि के सपने में पुनर्जीवित हो उठा है। वह युवक का हाथ पकड़कर एक पुराने मंदिर की सीढ़ी पर बैठ जाता है। युवक रूसी कवि को अभाव, संघर्ष और आशा से भरपूर अपने जीवन के बारे में बताता है। कवि का रोम रोम रूप से

पुलकित हो जाता है, इसलिए कि युवक "बडा हो गया है और निश्छलता से ददीप्यमान है', कि वह असली सघषकारी बन गया है और इसलिए कि भारत की स्वाधीनना का ध्यय विश्वस्त हाथा म है।

तीखोनोव पहले सावियत लागा म स थे, जिन्हाने स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद भारत की यात्रा की। उन्होने वहा सोवियत शातिरक्षा समिति के प्रनिनिधिमटल का नतत्व किया। मैं भी इम प्रतिनिधिमडल मे शामिल था। अपन "वसन्त के दिना म" शीषक रेखाचित्र म—यहा शीषक अत्यन्त प्रतीकी है—तीखानोव छठे दशक के भारत का चित्रण करते हैं—उस भारत का नही, जहा लोग "न यश स विचलित होने हैं, न अपमान से," और जिस भारत को देखने के लिए वह अपनी किशारावस्था म इतन आतुर थे, बल्कि उस नये, स्वाधीन भारत का, जिसकी जनता स्वय अपन भाग्य की मालिक है। उन्हाने लिखा "वसन्त के दिन, महान भारत के वसन्त के दिन आ चुके हैं। उन्ह लोगा को प्रकाश और उष्मा देने से अब कोई नही रोक सकता!'

आधी सदी पहले की तरह आज भी तीखानोव के कृतित्व और प्रगति शील भारतीय साहित्यकारा की रचनाओ के बीच बहुत साम्य है। उनके साथ वह भी नये भारत के लिए सघष कर रहे हैं। प्रसिद्ध भारतीय लेखक ख्वाजा अहमद अब्बास न एक बार तीखोनाव को "शातिदूत" कहा था। और यह सच है। हमारे देश म तीखोनोव भारत की सस्कृति के प्रचार और सोवियत तथा भारतीय जनताओ के बीच मत्नी तथा परस्पर समझ के विकास के लिए जो कर रहे हैं, उसका पूरा पूरा मूल्याकन करना असभव है। इस सबध मे उनके द्वारा सावियत सघ मे रवीन्द्र शताब्दी के समायोजन के लिए गठित जयन्ती समिति के अध्यक्ष के रूप मे किय गये महान काय का ही उल्लेख पर्याप्त होगा।

निकोलाई तीखोनोव अपने प्रबुद्ध जीवन के पहले ही दिन स, अपने कृती जीवन के पहले ही क्षण से भारत के स्वर को सुनते रहे हैं। उनकी कलाकार की पैनी दृष्टि भारतीय जनता के जीवन म गहर पठकर सामान्य भारतीय की आत्मा के सौंदय को पहचान लेनी है। तीखोनोव की रचनाए सावियत लोगा को भारत का समथन और प्यार करने मे, उसकी जनता के प्रति आदर तथा सहानुभूति दिखाने मे, उसके उज्ज्वल भविष्य के बारे म आशावान बने रहन मे मदद देती हैं।

तीखानोव का सबसे बडा योगदान यह है कि उन्होने अपनी रचनाओं के लिए पूर्व के जागरण, सोवियत मध्य एशिया और कावेशिया मे सोवियत सत्ता की स्थापना एव समाजवाद के निर्माण के लिए किये गये सघर्ष और भारत के स्वाधीनता सग्राम जैसे विषयो को चुनकर सोवियत साहित्य मे पहले पहल पूर्व के नये मानव का कलात्मक रूप प्रस्तुत किया, एक ऐसे नये मानव का, जो कल तक अशिक्षित था, उत्पीडित था, अभावग्रस्त था, पर आज अपनी मानवीय गरिमा को अनुभव करने लगा है और प्रबुद्ध मन से नये जीवन के निर्माण के लिए सघर्ष कर रहा है।

तीखोनोव ने अपने साहित्यिक जीवन के शुरू से ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रशस्तिगायक रुडयार्ड किप्लिंग के इन दावो का विरोध किया कि आग्ल सेक्सन जाति "पूर्व की पिछडी जातियो" के बीच "सभ्यता" प्रसार का मिशन पूरा कर रही है। वह सदा ही गुलाम और मालिक के सबधो के आदर्शीकरण के विरुद्ध रहे है, जैसा कि किप्लिंग ने किया था। सोवियत साहित्यकार ने पूर्व की "विलक्षणता" सबधी अवधारणाओ का खण्डन किया और दिखाया कि मुट्ठीभर 'श्वेत" शोषको और घोर निराशा के गर्त मे धकेले गये करोडो "अश्वेतो" के बीच सघर्ष खत्म नही किया जा सकता।

इसके साथ ही उन्होने विभिन्न जातियो के बीच, पूर्व और पश्चिम के लोगो के बीच नये, सच्ची मित्रता, बधुत्व और वर्गीय एकता के सबधो पर जोर दिया, जो समाजवाद के अतर्गत वास्तविकता बन गये है।

निकोलाई तीखोनोव ने सोवियत पूर्व के रूसी मानव के बारे मे, जो एशियाई जनजातियो के सच्चे मित्र तथा साथी है, बहुत लिखा और अब भी लिख रहे है। सोवियत पूर्व मे उज्बेक, ताजिक, तुर्कमान, जाजियाई और दागिस्तानी लोगो के साथ रूसी जाति के लोग भी नये जीवन का निर्माण कर रहे है। पूर्व मे रूसी लोगो की भूमिका सिखानेवाले या हुक्म देनेवाले की नही, अपितु सहायक और मददगार की है।

साहित्यकार ने दिखाया कि कैसे सोवियत सत्ता की विजय के लिए किये गये सयुक्त सघर्ष और श्रम के फलस्वरूप नसली और धार्मिक वैमनस्य का खातमा हुआ और पुरानी कुरीतियो का अत हुआ और कैसे नये, समाजवादी मानवतावाद पर आधारित सबधो ने उनकी जगह ली। तीखोनोव की "शोभायात्रा' शीर्षक कहानी मे यह विचार बहुत ही स्पष्ट

रूप मे उभरकर सामने आया है। अपमान, दुख और कष्टों से सोवियत सत्ता द्वारा हमेशा हमेशा के लिए मुक्त पूर्व का मानव स्वयं अपना भाग्यविधाता बनकर साहसपूर्वक भविष्य की ओर देखता है और धरती पर नये जीवन का निर्माण करता है।

निकोलाई तीखोनोव एक प्रमुख सार्वजनिक कार्यकर्ता के रूप मे भी प्रसिद्ध हैं। वह सोवियत शातिरक्षा समिति के स्थायी अध्यक्ष, सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के सदस्य, लेनिन तथा राजकीय पुरस्कार समिति के अध्यक्ष और सोवियत लेखक संघ के सचिव हैं। उन्हे लेनिन पुरस्कार, लेनिन अन्तर्राष्ट्रीय शाति पुरस्कार और जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

कुछ ऐसे भी लोग होते हैं, जिनसे मिलकर आपको सच्ची खुशी, सच्चा आनन्द मिलता है, आपको लगता है कि आपकी प्रतिष्ठा मे वृद्धि हो गयी है, आप मे एक प्रकार की पवित्रता आ गयी है। मै समझता हू कि निकोलाई तीखोनोव भी इन लोगो की कोटि मे आते हैं। उनसे अपने लगभग बीस वर्षों के परिचयकाल मे मुझे पग पग पर ऐसी ही अनुभूति हुई।

महान भारतीय लेखक प्रेमचद ने एक बार कहा था कि वास्तविक लोक साहित्यकार "पथप्रदर्शक" होता है और मेरी दृष्टि मे तीखोनोव इस अभिधान के सबसे बडे पात्र हैं।

निकोलाई तीखोनोव अभी भी शक्ति तथा युवजनोचित उत्साह से भरपूर हैं। उनकी जीवन पिपासा अभी तृप्त नही हुई है। उनकी सृजन योजनाए अभी समाप्त नही हुई हैं। समय और प्रसिद्धि ने उन्हे प्रभावित नही किया है। वह आज भी उतने ही विनम्र, सादे और मिलनसार हैं, जितने कि पहले कभी थे। और इसके लिए सभी उन्हे अपना स्नेह तथा आदर देते हैं। उनकी भद्र दृष्टि और सौहार्दपूर्ण मुस्कान लोगो को अनुप्राणित करती है, उन्हे जीवन और श्रम मे सहायता देती है।

* * *

इस सग्रह मे तीखोनोव की विभिन्न समयो की कुछ गद्य रचनाए सकलित हैं। इनमे क्राति, गृहयुद्ध और सोवियत मध्य एशिया व काकेशिया मे समाजवादी निर्माण से सबधित रचनाए भी है और लेनिनग्राद के रक्षकों

र शौर्यपूर्ण कारनामों के बारे में बतानेवाली कहानियां और रेखाचित्र भी। इनमें लेखक की कतिपय भारत संबंधी लघु रचनाएं भी हैं और कुछ आत्मकथा के ढंग की कहानियां भी।

इस संग्रह से पाठकों को निकोलाई तीखोनोव की गद्य रचनाओं की वैचारिक-सौन्दर्यशास्त्रीय बहुविधता का परिचय मिलेगा। हमें आशा है कि भारतीय पाठक, चाहे अनुवाद में ही सही, तीखोनोव की समृद्ध और अभिव्यक्ति-सक्षम भाषा के सौंदर्य और सरसता का अनुभव कर सकेंगे और इस अग्रणी सोवियत साहित्यकार की प्रतिभा का समुचित मूल्यांकन करेंगे।

प्रोफेसर येव्गेनी चेलिशेव

भारत

बाधा नही डालेगे

"चलिये, उसके पढने मे बाधा नहीं डालेगे," डाक्टर बालिगा ने कहा। मगर बबई की उस अविस्मरणीय शाम से पहले की भी एक कहानी है। यह मेरी कहानी है। म किशोरावस्था से ही भारत की तरफ खिचने लग गया था।

मैं पीटसबग की गोरोखोवाया सडक के एक पुराने घर के एक छोटे और अधेरे से कमरे मे किताबो, नक्शो और चित्रो से घिरा परीकथाओ जसे आकषक सुदूर भारत के इतिहास और प्रकृति मे डूबा रहता था। म अपने किशोरसुलभ विचारो को कापी मे दज करता, नोट बनाता और भारत से अग्रेजो को निकाल बाहर करने के बारे मे लबे लबे उपयास लिखता। एक बार मने फसला किया कि क्यो न अपनी उम्र के स्कूली लडको के सामने, जिहे वसे हमेशा हसी खेल और शरारतो की ही सूझती थी, भारत के बारे मे व्याख्यान दिया करू।

लेकिन इसके लिए कि वे बठकर मेरी बाते सुनले और उहे आम स्कूली पाठा जसा न समझते, पहले किसी तरह उनमे दिलचस्पी जगाना जरूरी था। उन दिनो मजिक लालटेन के पीछे हर कोई पागल था। मगर म उसे कहा से लाता? खरीदने के लिये पसे भी नहीं थे।

मने डिब्बा काटकर मजिक लालटेन से मिलती-जुलती चीज तयार की और स्लाइडो का काम देने के लिए पतले पारदर्शी कागज पर खुद ही गाढ़े रगा से भारत की प्रकृति, जनजीवन तथा ऐतिहासिक घटनाओ के दृश्य, हाथी, बाघ, आदि चित्रित किये। उहे म खुद बनायी हुई लालटेन के चौखटे पर लगाता और पीछे से रसोईघर का लम्प रखता, ताकि मेरे श्रोताओ को उजाले के कारण चित्र और अधिक प्रभावोत्पादक लगते। अगर ये सिफ

चित्र ही होते, तो शायद कोई उन्हें देखता भी न। लेकिन मेरा यह बचकाना तमाशा उन्हे पसद आया। वे अधेरे मे चुपचाप एक दूसरे से सटकर बैठ ध्यान से मेरे बनाये हुए चित्रो को देखते। इस बीच म जो कुछ मन में आता, बताता जाता और वे शायद ही कान लगाकर सुनते।

लेकिन जल्दी ही मेरे इस खेल से वे ऊब गये। तब म मिठाई खरीदने के लिए उन्हे कभी दो तो कभी तीन कोपेक देने लगा, ताकि वे कम से कम इस लालच से तो उस देश के बारे मे मेरी कहानिया सुनें, जिसके बारे मे म न जाने कब तक बोलता रह सकता था।

कुछ ही समय बाद म उन्ह भारत के बारे मे बहुत सारी बातें बता सकता था। मेरी दिलचस्पी ज्यादातर सनिक इतिहास मे थी और म भारत को हडपने के लिए हुई आग्ल फ्रासीसी लडाइयो, मराठा युद्धो, १८५७ के ग़दर, आदि को जानता था। इसलिए म उन्हें श्रीरगपट्टम के घेरे, बाबर के हमलो, अग्रेज़ो के साथ पठानो के सघर्ष और यहा तक कि सिकन्दर के भारत अभियान के बारे मे भी बता सकता था।

इसके अलावा मने भारत के भूगोल को अच्छी तरह से पढा था। मुझे उत्तर मे हिमालय और काश्मीर और दक्षिण मे तामिलो और सिहलियो के बारे मे काफी जानकारी थी। मने प्राचीन महाकाव्य महाभारत और शिवपुराण को भी पढा था। सक्षेप मे, म एक किशोर भारत विशेषज्ञ था, हालाकि अगर उस समय कोई मुझसे पूछता कि इससे मुझे क्या मिलेगा, तो शायद म ठीक-ठीक जवाब न दे पाता।

उन दिनो मुझे नक्शो और किताबो मे खोया देखकर लोग कहते थे कि कोई बात नहीं, बडा होने पर सारी सनक जाती रहेगी।

लेकिन वह गयी नहीं। उल्टे जानकारी मे बढोतरी होने के साथ साथ उन सब चीज़ो को अपनी आखो से देखने की अदम्य लालसा बढ गयी, जिनके बारे मे मने किताबो मे इतने विस्तार से पढा था।

और अब वह चिरप्रतीक्षित साल आ गया था, जब मुझे पहली बार भारत जाने का अवसर प्राप्त हुआ। हमारा हवाई जहाज अभी भारत के तटवर्ती समुद्र के ऊपर ही था कि नीचे पानी मे काग़ज़ के असख्य तिरछे कटे टुकडे दिखायी देने लगे। लेकिन ये कागज़ के टुकडे नहीं, बल्कि मछुआरो की नौकाओ के पाल थे और वे इसका सकेत दे रहे थे कि धरती नज़दीक ही है। बाद मे नीचे दियासलाई की विराटकाय तीलियो के से झुरमुट

नज़र आने लगे। ये ताड के जगल थे। और बाद मे जब हमारा हवाई जहाज जमीन पर उतरा और दरवाजा खुलते ही चेहरे पर गरम हवा का, जिसमे लगता था कि कोई मादक चीज मिली हुई है, थपेडा लगा, तो म समझ गया कि सचमुच भारत की हवा मे सास ले रहा हू।

भारत का पहला शहर जिससे मेरा साक्षात्कार हुआ, वह बबई था, जिसे इस देश का पश्चिमी समुद्री द्वार भी कहते ह।

मने बबई के विश्वप्रसिद्ध धनुपाकार रेतीले समुद्रतट के किनारे-किनारे लगी दूधिया और मोतिया नीली बत्तियो का आश्चयजनक रूप से सुदर दृश्य देखा। मुझे वहा का मशहूर हगिग गाडन भी बहुत पसद आया, जिसमे मालियो ने पेडो और झाडियो को इस कुशलता के साथ छाटा है कि वे तरह-तरह के पशु पक्षिया, हाथियो, भसो, मोरो और यहा तक कि हल चलाते किसान मे बदल गये ह।

चारों तरफ से समुद्र की हरी और भारी लहरो से घिरे द्वीप पर मने गुहामदिरो का दशन किया। इनमे से एक गुहा मे मानो प्रकृतिपूजक भारत की सपूण भव्यता को उदभासित करती हुई त्रिमूर्ति शिव की विशाल प्रतिमा बनी हुई है।

और हैरानी की बात तो यह है कि बबई मे उसके विभिन्न ऐतिहासिक स्थलो की तरह उसकी सडको का सजीव मोज़ाइक, हिमानी की तरह बहती भीड, बको, दफ्तरो और होटलो की आडबरहीन इमारतें, रगबिरगे और चहलपहल भरे बाजार, गरीबो की झुग्गिया और चाले, पार्कों मे और खुले फुटपाथो पर सोनेवाले हज़ारो लोग भी मुझे अपने पुराने परिचित से लगे। म उन्ह पहले से जानता था, ये मेरे और मेरी कल्पना के बहुत नजदीक थे। इन सब ग़रीबो के लिए मेरे मन मे हमदर्दी थी और मुझे वे जाने-पहचाने लगते थे, हालाकि उनका रहन-सहन, उनका जीवन हमारे रहन-सहन और जीवन से बिल्कुल भिन्न था।

डाक्टर बालिगा असाधारण रूप से प्रतिभाशाली, सहृदय, नेक, न्यायप्रिय और समझदार व्यक्ति थे। वे भारत के चोटी के सजनो मे गिने जाते थे, सोवियत सघ के वे अनन्य मित्र थे और शाति तथा जनमत्री के लिए जीवनभर सघष करते रहे थे। उनके मत्रीपूण व्यवहार का परिचय हमे अपनी यात्रा मे कदम-कदम पर मिला। इस शातस्वभाव, तीक्ष्णदृष्टि, सुदर छोटे तथा मजबूत हाथोवाले और समुद्री चिडिया की तरह फुर्तीले

और कभी न थकनेवाले व्यक्ति ने हमारा केवल उसी बंबई से ही साक्षात्कार नहीं कराया, जिसे देखने के लिए यहा दुनिया के कोने-कोने से पर्यटक आते ह।

हम अनेक धनानिकों, व्यवसायियो और बडे उद्योगपतियो से मिले, जो बाद मे एक आर्थिक सम्मेलन मे भाग लेने के लिए मास्को भी आये थे। बंबई मे हमारी मुलाकात बहुत से मशहूर साहित्यकारो, कलाकारों और सिने अभिनेताओ से भी हुई। हमने पाया कि उनमे हमारे देश के बारे मे जानने की बडी उत्कण्ठा है। यह १६५२ की बात है। बबई मे इससे कुछ ही पहले एक बडी प्रदर्शनी हुई थी, जिसमे सोवियत सघ और दूसरे समाजवादी देशो के मण्डप भी थे। सोवियत सघ मे लोगो की दिलचस्पी सचमुच बहुत अधिक थी।

लेकिन डाक्टर बालिगा ने हमे जो दूसरा बबई दिखाया, वह आम मेहनतकशो का बबई था। हम निर्माण मजदूरों, कपडा मजदूरो, चमडा मजदूरो और कुलियो से मिले।

वह हमे हाल ही मे बनायी गयी एक बडी सी इमारत मे ले गये। इसमे वे मजदूर रहते ह, जिनके पहले घरो को घर नहीं, बल्कि उनका विद्रूप ही कहा जा सकता है।

"बेशक, उनके लिए यूरोपीय ढग के फ्लैट अभी बहुत दूर की बात ह। फिर भी ये कमरे तो ह ही, हालाकि जसा आप भी देख रहे ह कि ये उनकी जरूरत को पूरा नहीं कर पा रहे ह। सभी के बडे बडे परिवार ह, बहुत बच्चे ह और इसके अलावा रहन-सहन का ढग अभी इस तरह के मकानो के माफिक नहीं है," डाक्टर बालिगा ने कहा।

हमारे सामने तग, घुटनभरे और अधेरे से कमरे थे, जिनमे एक ओर खाना पकाने के लिए चूल्हा बना था और फर्नीचर के नाम पर कुछ गद्दे और कबल ही फर्श पर पडे दिखायी दे रहे थे। एक आध कमरे मे खाट भी थी। बरतन बहुत कम थे। पर फिर भी हर किसी के पास हवा पानी से बचने के लिए सिर पर छत तो थी।

"इन मजदूरो को जीवन मे पहली बार अपना कमरा, अपना घर मिला है," डाक्टर बालिगा ने कहा। "भारत ने नये रास्ते पर कदम बढ़ाया है और अब वह उसे छोडेगा नहीं। ये उसके पहले कदम ह आइये, म आपको कुछ और भी दिखाऊगा "

वह हमे एक ऐसी जगह ले गये, जिसे क्लब के नाम से पुकारा जाता था। बेशक यह भी पहले कदमो मे से था। बडा, उजला हॉल अभी खाली सा पडा था। फर्नीचर कम था। मगर दीवारो के साथ किताबो, अखबारो और पत्रिकाओ से भरी कुछ अलमारिया अवश्य खडी थीं। एक दीवार पर भारत का नक्शा और कुछ फोटोग्राफ टगे थे। एक मेज पर कुछ लोग करम खेल रहे थे और कुछ लोग दूसरी मेज के पास बठे बातें कर रहे थे। दो आदमी अखबार पढ रहे थे। मगर सबसे अलग कोने मे एक अप्रत्याशित सी चीज को देखकर म चकित रह गया।

वहा मेज के पास, हमारी ओर पीठ किये एक लडका बठा था। उसके सामने कुछ किताबें, पत्रिकाए और एक नक्शा फला पडा था। अनजाने मे ही मेरे कदम उसकी ओर बढ चले, ताकि उसका चेहरा देख सकू।

वह एक मोटी सी पेंसिल को दातो मे दाबे, विचारो मे खोया हुआ एक खुली पत्रिका और कापी के ऊपर सिर झुकाए बठा था। उसके बदन पर आधी बाहो की साफ धुली हुई, सादी सी धारीदार कमीज थी। लगता था कि वह कहीं स्कूल मे पढता है और इस समय किसी दिलचस्प, मगर कठिन पाठ को तयार कर रहा है।

निकट पहुचने पर मने पाया कि उसके सामने जो नक्शा पडा था, वह मेरी मातृभूमि का है। और जो पत्रिका खुली हुई थी, वह "सोवियत भूमि" थी। उसके खुले पृष्ठ पर लेनिन और किन्हीं पहाडा और इमारतो के चित्र बने थे।

मने और निकट जाना चाहा, मगर डाक्टर बालिगा हौले से, मगर दढ़ता के साथ मेरा हाथ पकडकर मुझे दूसरी ओर ले गये। लडका अपने विचारों मे इतना डूबा हुआ था कि उसने हमारी तरफ कोई ध्यान ही नहीं दिया।

जब हम हॉल के दूसरे कोने मे पहुच गये, तो डाक्टर बालिगा ने आहिस्ता से कहा

"म इस लडके को जानता हू। उसने सोवियत सघ के बारे मे सब कुछ जानने और बाद मे वहा की यात्रा करने की कसम खायी हुई है। कभी कभी वह मेरे पास आता है और म उसे आपके देश के बारे मे बताने वाली पत्रिकाए, पुस्तिकाए, आदि देता हू। वह बहुत मेहनती और लगनशील है। मगर साथ ही गुमसुम और अतमुखी भी है। परिवार बडा होने के

कारण घर पर जगह की कमी होने से यह पढ़ने के लिए यहा आता है। यहा आप देख रहे ह कि उसे पूरी छूट मिली हुई है। जो भी विचार उसे प्रभावित और सोचने के लिए मजबूर करता है, वह उसे लिख लेता है। मगर इस बारे मे दूसरो से कहना उसे पसद नहीं। आप देख रहे ह कि वह सोचने मे किस कदर डूबा हुआ है। उस पर ध्यान देने की जरूरत नहीं। चलिये, उसके पढ़ने मे बाधा नहीं डालेगे हा, हा, बाधा नहीं डालेगे "

मने अपनी किशोरावस्था की इस आश्चयजनक प्रतिमूर्ति पर एक बार फिर नजर दौडायी। नाकनक्श तेज, बाल लबे, जिनमें वह अपने बाय हाथ की पतली अगुलिया फसाये बठा था, और भौंहें ऊची। पॅसिल की नोक उसके सुघड होठो के बीच दबी थी। सोचने की मुद्रा ने उसके सारे चेहरे को एक तरह की कोमलता प्रदान कर दी थी और आखें किसी ऐसी चीज पर टिकी हुई थीं, जो मानो हमारी पहुच से बाहर थी।

हा, हा, उसके पढने मे बाधा नहीं डालेगे

अपने किशोर मित्र को डाक्टर वालिगा हमसे बेहतर जानते थे। हमने इस स्वप्नद्रष्टा के सोचने मे और विघ्न न डाला और चुपचाप बाहर निकल आये

बबई के बाद, हमे इस महान देश के अनेक नये-नये दश्य देखने को मिले। तब से म और भी कई बार भारत की यात्रा कर चुका हू और वहा से अनेक गहरे अनुभव लेकर लौटा हू। मगर मेरी स्मृति मे अपने बचपन की इस प्रतिमूर्ति, भारत के महान मित्र लेनिन की मातभूमि और अपने प्रिय देश सोवियत सघ को जानने तथा देखने के लिए कृतसकल्प इस विचारमग्न, स्वप्नद्रष्टा स्कूली बालक की छवि आज भी ज्यो की त्यो बनी हुई है।

१९७०

वसन्त के दिनो में

भारत मे माच के मध्य से मई के मध्य तक वसन्त का मौसम होता है। वसन्त के ऐसे ही एक दिन, अप्रल मे, हम कार से एक बडी नहर के किनारे किनारे जा रहे थे। पक्के किनारो के बीच बधा नागल नहर का पानी शाति से बह रहा था। यह एक आधुनिक नहर थी और निगाह बार बार उसके पीले-सफेद, सब जगह एक से ढलवा किनारो, साफ सुथरे पुलो, और किनारे के साथ साथ दौडती सडक पर जा टिकती थी।

एशियाई सम्मेलन के सिलसिले मे हाल ही मे दिल्ली मे बिताये हुए दिनो के अनुभव और उसकी रगबिरगी बठके स्मति मे अभी ताजा थीं। इन बठको मे पूव का समूचा सौंदय व्यक्त हुआ था और ऐसा प्रतीत होता था कि वक्ताओ के चेहरो की आश्चयजनक अभिव्यक्तिशीलता और शानदार भावभगिमाओ, भाषणों की आवेगपूणता और विचारो की गहनता का अनन्त काल तक आनन्द लिया जा सकता है।

दिल्ली की भीड से भरी, वसन्ती धूप मे नहाती और पुराने पेडो की हरियाली में डूबी सडकें भी अभी स्मति मे ताजा थीं।

विगत पुराने जमाने के असख्य स्मारको के रूप मे हमारे सामने आ खडा होता था। शामा को शहर से बाहर जाकर ठडी हवा मे सास लेने मे बडा मजा आता था। प्राचीन मीनारो और मकबरो के पास मदानो मे बदरो के झुण्ड भूरी छायाओ की तरह कूदते फादते रहते थे। आदमी को देखते ही वे दौडे-दौडे सडक पर चले आते थे और उसके हाथ से मूगफली लेकर बडी गभीरता से कुतरने लगते थे। इस बीच वे अपनी पतली पतली अगुलियो से विश्वास और मजबूती के साथ उसका हाथ भी पकडे रहते थे। होटल मे चिडिया बाल्कनी पर आकर बठ जाती थीं और आदमी की परवाह किये बिना लाल या हरी चोच से अपने चमकीले परो को साफ करने

लगती थीं। वे जानती थीं कि वह उन्हे भगायेगा नहीं, मारेगा नहीं। इस देश मे पशु पक्षियों की चिंता और आदर करने की हजारो साल पुरानी परपरा है। गायें सडको पर कारो और बसो के बीच से होते हुए या चली जाती थीं, मानो इस दुनिया मे उनके अलावा और कोई नहीं ह। उन्हें हान वजाकर या चिल्लाकर डराया भी नहीं जा सकता था।

खेतो और बागो मे नगे और अधनगे लोग काम करते थे। यह कोई आज की ही बात नहीं है, ऐसा हजारो सालो से होता आया है। नवीनता बडी आधुनिक इमारतो, बीसवीं सदी की मशीनो, बक्रो और महाराजाओं के महला, आधुनिक बाजारो के ढके गलियारो, जहा आप दुनिया की कोई भी चीज खरीद सकते ह, सस्थानो एव विश्वविद्यालयो की प्रयोगशालाओं, नौजवानो की कोलाहलपूण भीडो, चौडे परदेवाली फिल्मो के इश्तहारो और हर जगह गूजती रेडियो की आवाज के रूप मे आपसे मिलती थी।

हम आगरा गये, जहा सिकन्दरा मे महान अक्बर के मक्बरे पर चढ़कर पूण निस्तब्धता के वातावरण मे खुले आसमान के नीचे बनी इस महान मुग़ल की कब्र को देखा जा सकता था। कब्र पर दुर्जेय सम्राट की प्रशस्तिया खुदी हुई थीं। हमने नीले आसमान की पष्ठभूमि से एकाकार होते बर्फ से सफेद और नाजुक ताजमहल को एक बार फिर देखा और पुराने क़िले के अनगिनत हॉलो, कमरो और गलियारो की भूलभुलया से निकलने के बाद कुछ देर तक उस बाल्कनी पर खामोश खडे रहे, जहा से शाहजहा हर रोज अपनी बेगम मुमताजमहल की कब्र को देखा करता था। उसकी याद मे उसने एक ऐसा स्मारक खडा किया, जसा दुनिया मे और किसी औरत का नहीं है।

लेकिन उस रोज नागल नहर के किनारो पर हमे दूसरा ही भारत देखने को मिला और वह हमेशा के लिये मेरी स्मृति पर अकित हो गया। दिन भर हम उन जगहो को देखते रहे, जहा विशाल भाखडा नागल बाध बनाया जा रहा था।

हमने वहा एक महान निर्माण मे लगे भारतीयो–ग्राम मजदूरो से लेकर इजीनियरो तक–को देखा। हम उस जगह पर गये, जहा तूफानी वेग से बहती अविजित सतलज को छूती दो खडी चट्टानो के बीच अभी भी रिक्तता मौजूद थी। इस रिक्तता को भरा जाना था। समानातर खडी दो चट्टानों को बाध की मजबूत दीवार से हमेशा हमेशा के लिए एक दूसरे से जुड

जाना था। उस समय इसकी कल्पना भी हमे कठिन लग रही थी कि जहा आज अति महीन काश्मीरी मलमल सी पारदर्शी नीली हवा का राज है, वहा निकट भविष्य मे एक ऊची दीवार खडी हो जायेगी और उसमे बने द्वारो से पानी प्रपात की तरह नीचे बहने लगेगा, क्योकि बाध की ऊचाई दो सौ बीस मीटर होगी।

इससे भी अधिक आश्चयजनक दृश्य पीछे, पहाडो का था, जहा नीली घाटी मे बसे गावो के ऊपर मडराता धुआ उनके निश्चित देहाती जीवन का परिचय दे रहा था। जब इस खाली ऊचाई पर बाध खडा हो जायेगा, तो जहा आज सडको पर लोग, मवेशी, मोटरकारें, तागे, आदि चलते नजर आ रहे ह, वहा एक विशाल झील होगी। कोई तीन सौ पचास गाव झील मे डूब जायेंगे। मगर बाध के प्रपातो का गजन निर्बाध, उच्छखल सतलज के अत्येष्टि गीत का काम करेगा, जो शायद अपने भविष्य को भापकर आज किनारो के बीच गुस्से के मारे सिर पटकते और चक्कर खाते हुए बह रही है।

हमने नदी के पानी को मोडने के लिए बनायी गयी सीलनभरी और ठडे अधेरे से गधाती सुरगें देखीं, पत्थरो को ढोते अनगिनत ट्रक देखे, चट्टानो को काटती मशीनो का गजन सुना, उन मजदूरो को देखा, जिनके हाथा से दिन दिन करके भारत का यह अद्वितीय बाध निमित हो रहा था। यहा के आकडे भी अब तक अनदेखे अनसुने थे। सूखे मौसम मे यहा के बिजलीघर की न्यूनतम क्षमता ४,००,००० किलोवाट और बरसात के मौसम मे अधिकतम क्षमता ६,००,००० किलोवाट होगी।

पहाडो और पानी की तूफानी धारा से सघष मे लगे और उन्हे अपने काबू मे करने के लिए कृतसकल्प लोगो का यह शानदार दृश्य हमे दिन भर अभिभूत किये रहा।

और जब हमारी कार नयी नहर के किनारे किनारे आगे बढी, तो हमने पाया कि आसपास की हर चीज प्रकृति का कायाकल्प करने मे लगी भारत की महान जनता के सकल्प का परिचय दे रही थी।

सडक के किनारे कुछ आदमियो को बठा देखकर हमारे ड्राइवर ने कार की रफ्तार धीमी कर दी। सुस्ताने के लिए बठे इन आदमियो का पहरावा अति साधारण था और चेहरो से लग रहा था कि भारी बोझा ढोने के कारण

वे थक गये ह और यहा ठडे पानी से हाथ मुह धोकर तरोताजा होने और आराम करने बठे हुए ह।

वे अधलेटे बठे थे और उनके बीच मे एक पालकी खडी थी। भारत जसे देश मे ऐसी सजी धजी और सुदर पालकिया कोई खास बात नहीं ह। लेकिन ड्राइवर ने जो बताया, उससे हमारा ध्यान तुरत पालकी की ओर खिच गया।

"ये लोग दुलहन ले जा रहे ह," उसने कहा। और हमने दुलहन को देखा। वह पालकी मे अधलेटी बठी नहर के सरसर बहते पानी को देख रही थी। उसकी रगबिरगी साडी, घुटनो के पास पडे और बालो मे लगे फूलों, पालकी के हल्के अधेरे मे जगमगाते गहनो, चूडियो और अगूठियो को देखकर लगता था कि वह किसी और लोक से अवतरित हुई है। यह प्राचीन समय की गणना भूले और काल की अतल गहराइयो तक अपनी जडें जमाये हुए भारत का रूप था, एक ऐसा रूप, जो अजता की चट्टानो और प्राचीन चितेरो के चित्रपटो मे देखने को मिलता है। मगर यह एक युवा, विकासमान, विजयी और आधुनिक रूप भी था। दुलहन का चेहरा युवा और सावला था। ऐसा लगता था कि मानो वह अदर से प्रेम और दुनिया को जानने के गहरे कौतूहल के प्रकाश से आलोकित है। वह दुनिया को जसे पहली बार देख रही थी और हर नये कदम के साथ उसका नया-नया राज उसके सामने उदघाटित हो रहा था।

बुजुग लोग एक साधारण सी लडकी को इतनी प्रतिष्ठा दे रहे थे, उसे पालकी मे बिठाकर इतना सहेज-सभाल कर ले जा रहे थे। यह जीवन, यौवन और ऐसी हर चीज के प्रति उनके अपने प्रेम का परिचायक था, जिसका वे जीवन मे सबसे अधिक मूल्य करते ह, सबसे अधिक महत्व मानते ह। वे भी कभी जवान थे और हो सकता है कि यह कोई बहुत पहले की बात न हो। तभी मुझे लगा कि म भूत, वतमान और भविष्य, तीनों को एक साथ देख रहा हू। दुलहन अपनी चमकभरी आखो से नहर को, नये युग के प्रतीक को, एक ऐसी चीज को देख रही थी, जिसे उसके पुरखो ने नहीं देखा था। मगर उसकी आत्मा एक अति प्राचीन देश की नारी की आत्मा थी, जिसका विश्वास था कि वह इस समय अपना एक अनिवाय कत्तव्य पूरा कर रही है, एक ऐसे आदमी के पास जा रही है, जिसके साथ वह परिवार बसायेगी, बच्चे पदा कर महान मेहनतकशा का वश जारी

रखेगी, और आगे चाहे कठिनाइया भी क्यो न भुगतनी पड़ें, पर वह अभी जवान है और लोगो की मेहनत से निर्मित इस नहर की तरह वसत अपनी शीतल बयार से उसका हौंसला बधा रहा था।

ये लोग, जो इस समय आराम कर रहे थे, उसे भूत से भविष्य की ओर ले जायेंगे। जब तक हमारी कार उनसे दूर न निकल गयी, हम पालकी के हल्के अधेरे मे चमकते आनदविभोर और विचारमग्न चेहरेवाली इस किशोर वधू को एकटक देखते रहे।

पालकी ढोनेवाले किसानो का पहरावा विशाल बाध के निर्माण मे लगे मजदूरो जसा ही था। यह न केवल उनकी एकता, बल्कि युगों के सन्निकटन का भी परिचायक था।

हम इतिहास की क्रीडास्थली से गुजर रहे थे। यह सिखो का इलाका था। यहा नाना देवी की पहाडी पर सिखो का किला और मदिर बने थे, जहा गुरु गोविन्दसिह ने पथ को सगठित किया था और सिखो से केश, कघा, कच्छ, किरपान और कडा धारण करने की कसम खिलायी थी। आज सिख सबसे बहादुर सिपाही और ड्राइवर माने जाते है। अमृतसर के अपने स्वण मन्दिर की रक्षा के लिए वे कोई भी बलि देने के लिए तयार रहते है। मगर चूकि पुराना अमतसर बदल गया है, इसलिए वे भी काफी बदल गये है।

शाम के नीले धुधलके मे हमारी कार एकाएक रुक गयी। टायर मे कील चुभ जाने से ट्यूब की सारी हवा निकल गयी थी।

दोनो तरफ पेडो की कतारो से घिरी सडक सुनसान पडी थी। तभी कुछ दूरी पर हमे एक छोटा-सा कूआ दिखायी दिया। उसकी पुरानी चरखी के चरचराने की आवाज दूर तक सुनाई दे रही थी। कूए पर पानी भरने आयी लडकियो और औरतो का जमघट लगा था। हमारे ड्राइवर के पास एक फालतू टायर निकल तो आया, पर वह स्वभाव से काफी रोमानी था। फालतू टायर होने के बावजूद उसके पास उसे लगाने के लिए जरूरी औजार नहीं थे। इसलिए वह सडक पर खडा होकर हाथ हिलाने लगा। लेकिन किसी और ड्राइवर के पास भी औजार नहीं निकले। हम बडी दुविधापूण स्थिति मे पड गये थे। शाम को काम के बाद घर लौटनेवाले किसान उत्सुकतावश हमारी कार के पास रुके भी, पर वे भी कोई मदद नहीं कर सके।

कुछ समय बाद एक ट्रक हमारे पास आकर रुका। उससे ड्राइवर के अलावा कुछ तमाशबीन भी उतर और हमें घेरकर खड़े हो गये। इनमें से कुछ हमारे ड्राइवर के साथ कार के नीचे घुसकर उसकी मदद करने लगे और दूसरे हमसे पूछने लगे कि हम कौन हैं, कहां जा रहे हैं, आदि आदि। जब उन्हें मालूम हुआ कि हम सोवियत लोग हैं, तो उनके हर्ष और आश्चर्य की सीमा नहीं रही और हमसे तरह-तरह के सवाल करने लगे। पांच ही मिनट बाद सड़क पर पुरजोश बातचीत चल रही थी। आधे ही घंटे पहले हम सोच भी नहीं सकते थे कि इन पुराने पेड़ों के नीचे, देहाती कूए से कुछ ही दूरी पर हम ऐसे आम लोगों से, ऐसे किसानों से बात कर रहे होंगे, जो कुछ ही मिनटों में जितना ज्यादा हो सके, उतना ज्यादा जान लेना चाहते थे। उन्होंने हमसे पूछा कि क्या यह सच है कि हम भारत को इस्पात कारखाना खड़ा करने और भारतीयों को धातुकर्म की ट्रेनिंग देने में मदद करेंगे, या यह कि हम भारत को तेल और मशीनें बेचेंगे। जब तक हमारा ड्राइवर टायर बदलता, बहुत सी जानकारी का आदान-प्रदान हो चुका था। लोगों ने जिस स्नेह और निश्छलता के साथ हमारे जवाब सुने, वह बहुत ही हृदयस्पर्शी था। हमें लगा जैसे कि हम यहां विशेष रूप से इसी के लिए आये हों और सड़क पर हुई यह मुलाकात आकस्मिक नहीं, बल्कि बहुत पहले से तयशुदा है और बहुत समय से इसका इंतजार किया जाता रहा है।

उनकी गहरी मैत्रीभरी बातें, सोवियत लोगों के प्रति शुभकामना के उदगार, घटनाओं की सही और अच्छी समझ और सोवियत लोगों में विश्वास के भाव ने हमें बहुत प्रभावित किया। प्रभावित इसलिए किया, कि उनका सोवियत लोगों के प्रति यह स्नेह, यह सदभावना कोई कल की ही उपज नहीं थी और उनके शब्दों से छलकनेवाला विश्वास मात्र नम्रता का सूचक नहीं था। सारी बातचीत समझ से भरपूर और गंभीर थी।

मुझे गर्मी महसूस हुई, तो मैं पानी पीने के लिए कूए पर गया। वहां उस समय एक ही औरत थी। उसने अपना घड़ा मेरी तरफ बढ़ाया। जी भर पानी पीने के बाद उसे धन्यवाद देकर ज्यों ही मैं वापस मुड़ा, तो नजर कूए के पास ही बने एक छोटे से, गुमटीनुमा मिट्टी के घर पर पड़ी, जिसका जालीदार दरवाजा बंद था। मगर उसके अंदर चौकी जैसे एक पत्थर पर खड़ी मिट्टी की दो मूर्तियां साफ साफ दिखायी दे रही थीं। उनके पैरों के

पास जगली फूल बिखरे पडे थे। म दोनो देवताओ को, जिनका यह मदिर था, पहचान गया। ये कृष्ण और राधा थे। शाम के झुटपुटे मे विगत की दो महान विभूतियो ने बालकथाओ की दो नन्ही पुतलिया का रूप धारण कर लिया था। दोनो मूतिया, जिन्हे किसी स्थानीय शिल्पी ने बनाया होगा, सादी, सौम्यतापूर्ण और सुदर थीं।

मुझे लगा कि उन्होने शायद कूए पर पानी भरने या उनके नन्हे से मदिर की छाया मे आराम करने के लिए आनेवाले लोगो को सकोच मे न डालने के लिए जानबूझकर लघु रूप धारण कर लिया है। या हो सकता है कि समय ही इतना बदल गया है कि सडक पर हमारी कार को घेरे खडे लोग विशालकाय थे और ये देवता अपने देवत्व और महानता का दभ प्रकट न करने के लिए कथा कहानियो की दुनिया मे लौट गये ह।

और उस दिन मने भूत की समीपता और झाडी के पीछे से उगते पूर्णिमा के चाद की तरह भविष्य के उदग्र को एक बार फिर अनुभव किया। हो सकता है कि इन इलाक़ों के नेक लोगो ने इन पुराने देवताओ पर तरस खाकर सडक के किनारे उनके लिए छोटा सा मदिर बना दिया है, ताकि वे इस बारे मे पूणत निश्चिन्त होकर अपने शेप दिन बिता सके कि आज के भारत की सन्तान, भावी महान देश के श्रमिक और निर्माता राधा और कृष्ण की इन मूर्तियो मे अवतरित अपने पूवजो के चिर सपनो को झुठलायेंगे नहीं।

मुझ अपने भविष्य के प्रति सचेत लोगो के बीच रहनेवाली ये देव मूर्तिया पसन्द आयीं। जब हमारी कार आगे यात्रा के लिए तयार हो गयी और हम अपने किसान मित्रो से विदा लेने लगे, तो उनमे से एक ने मुस्कराते हुए कहा, "कितना अच्छा हुआ कि आपकी कार का टायर फट गया! नहीं तो हमे आप सोवियत लोगो को देखने और जी भरकर बातें करने का सौभाग्य ही कहा से मिल पाता! आपके लोगा के प्रति हमारा स्नेह पुराना है, पर मिल हम आज ही रहे ह। अब उम्मीद है कि आप प्राय आते रहेंगे। हमारे पास भी कुछ दिखाने के लिए है। और कुछ नहीं तो यह बाघ ही सही "

इन शब्दो मे अपने देश के निर्माता और भक्त का गव छिपा हुआ था। हमने एक दूसरे से भावभीनी विदाई ली। शीघ्र ही लोग और नन्हे मदिर के देवता शाम के कुहासे मे छिप गये। लेकिन हम बेशक और भी

कई बार यहा आयेंगे और इन लोगो के पास हमे दिखाने के लिए कुछ न कुछ होगा।

हाल ही मे जब मै जवाहरलाल नेहरू का भाषण पढ़ रहा था, जिसे उन्होंने अमृतसर मे तीन लाख लोगो की एक विशाल सभा मे दिया था, तो भाखडा के विशाल बाध के निर्माताओ और इन अनाम किसान मित्रो के चेहरे मेरी स्मृति मे फिर कौंध गये। बेशक इस सभा मे वे ही साधारण लोग थे, जो अपने देश की आशा और सबल होते है। अपने भाषण में नेहरू ने कहा था "हम भारत के इतिहास मे एक नये अध्याय के साक्षी बनने जा रहे है। यह अध्याय अगले वर्ष दूसरी पचवर्षीय योजना के क्रियान्वयन के साथ शुरू होगा। हमने इस अवधि मे औद्योगिक क्रांति करने और उन देशो के बराबर पहुचने का सकल्प किया है, जिनके यहा यह प्रक्रिया डेढ़ सौ वर्ष पहले शुरू हुई थी " नेहरू के शब्दों को अमृतसर मे उपस्थित तीन लाख लोगो ने ही नहीं, बल्कि सारे भारत, सारे ससार ने सुना।

महान भारत की जनता एक नयी दुनिया, एक नये भारत का निर्माण कर रही है। हम कह सकते है कि हम इस विराट जन चमत्कार के प्रारम्भ के साक्षी थे। यह चमत्कार ऐसे नये लोक महाकाव्यो को जन्म देगा, जिनमें देवता नहीं, बल्कि लोग भावी पीढ़ियो के लिए यशस्वी आदर्श बनेंगे और चिरयुवा तथा चिरमेधावी भारत उस युवती वधू की आखो से, जिसे हमने नहर के किनारे पर देखा था, एक ऐसी नयी स्वतन्त्र पीढ़ी की ओर साभार देखेगा, जो न तो विदेशी दासता ही जानती है और न सुख, ज्ञान और स्वतन्त्रता के पथ की बाधाए ही।

वसन्त के दिन, महान भारत के वसत के दिन आ चुके है। उन्हें लोगो को प्रकाश तथा उष्मा देने से अब कोई नहीं रोक सकता!

१९५५

वारसिक

एक बार बकाक से दिल्ली आते हुए मुझे रास्ते मे कलकत्ते मे रुकना पडा। मेरा साथी एक वज्ञानिक–ओलेग निकोलायेविच बोकोव–था। कलकत्ते मे हम अपने व्यापार प्रतिनिधित्व मे पहुचे। वहा सभी जानकार और अच्छे लोग थे और हर काम मे हमारी मदद कर सकते थे। हमे देखकर वे बहुत खुश हुए। उन्होंने जल्दी ही शाम की ट्रेन से हमारे दिल्ली जाने का इतजाम कर दिया। पर मुझे कुछ पसे बदलवाने की भी जरूरत थी।

व्यापार प्रतिनिधित्व के लोगो ने बताया कि यह काम उनका एकाउण्टेण्ट कर देगा। मगर किसी ने बताया कि वह अपने लडके को चिडियाघर दिखाने ले गया है। आज इतवार है और वह इतवारो के रोज लडके को प्राय चिडियाघर दिखाने ले जाता है।

"क्यो न हम भी चिडियाघर चले?" व्यापार प्रतिनिधित्व के एक कमचारी वसीली इवानोविच ने प्रस्ताव रखा। "आपने कलकत्ते का चिडियाघर नहीं देखा होगा।"

"नहीं, देखा तो है," मने कहा। "मगर एक बार और देखने मे मुझे कोई आपत्ति नहीं।"

और हम तीनो–वसीली इवानोविच, बोकोव और म–चिडियाघर के लिए चल पडे। जब हम टिकट खरीदकर चिडियाघर के अदर दाखिल हुए और एक बाडे से दूसरे बाडे का चक्कर लगाने लगे, तो वसीली इवानोविच ने माथे से पसीना पोछते हुए कहा

"दिन के ऐसे समय चिडियाघर आना बेकार होता है। गरमी तो देखिये कसी है, जसे कि भट्ठी जल रही हो। मगर जसे भी हो, एकाउण्टेण्ट

को खोजना है, नहीं तो बाद मे वह शहर के बाहर चला जायेगा और रात तक नहीं लौटेगा। अफसोस है कि हम नहीं जानते, वह कौनसे जानवरों को ज्यादा पसद करता है। कहा खोजा जाये? चिडियाघर बहुत बडा है।"

"क्यो न हम एक किनारे से देखना शुरू करें?" मैंने सुझाव दिया।

गरमी सचमुच जानलेवा थी। शेर तख्ते की तरह चपट हुए लेटे थे। उनके पजो पर अलसाती हुई दौडती गौरयाए अनखाये गोश्त के टुकडों को ठोग रही थीं।

बगाल टाइगर ने अपने बाडे के सामने खडे लोगो पर नजर जो जमायी तो उसी हालत मे जड हो गया था। उसकी कोयले सी काली पुतलीवाली और जतूनी पीलापन ली हुई पूरी खुली लाल सी आख हाल ही मे शायरों किये द्वारा सभाओ और बठको के लिए आविष्कृत ऐनको की याद दिला रही थीं। वे कुछ ऐसी बनी होती ह कि दूसरो को लगता है कि आख खुली हुई ह, जबकि असल मे आदमी उन्हे बद कर सोता होता है। इसी तरह यह जानवर भी आखें खोले सो रहा था।

हाथी ताड की एक बडी सी डाल को डुला रहा था और शायद विनम्रतावश ही लोगो के दिये हुए गन्ने के टुकडो को ले रहा था और खाने का दिखावा करते हुए उन्हे असल मे चुपके से पीछे कोने मे रवाना कर रहा था। और उसका बच्चा उन्हें क्षणभर के लिए मुह मे लेकर फिर दशको को वापस दिये दे रहा था। यह गन्ना, जो वहीं पास ही में बचा जा रहा था, खराब था या हाथी की खाने की इच्छा नहीं थी, म नहीं जानता। दोनो ही खामोश खडे सूड हिला रहे थे।

दो बदरिया, जो शायद बहुत ही उत्तेजित थीं और गरमी नहीं महसूस कर रही थीं, एक बडे भारी समुद्री कछुए की पीठ पर बठी थीं और वह ऊघता हुआ सा अपने मानो हाथी की खाल से बने मोटे और नाटे परों को बढा रहा था। उसे इसका अन्दाजा भी नहीं था कि उसकी पीठ पर बठी दो सहेलिया आपस मे गप्पबाजी मे मस्त ह।

बातो के जोश मे वे कभी-कभी अपनी लबी, रोयेंदार अगुलियो से कछुए की पीठ भी खरोचने लगती थीं और मूगफलिया खाकर छिलके भी वहीं फेंक देती थीं।

धीरे धीरे वे कौतूहलपूर्ण दशकों पर कोई ध्यान दिये बिना, जो उनकी हरकतो पर ठहाके लगाकर हस रहे थे, ताड की छाया मे पहुच गयीं।

जिराफ पतले और छोटे सींगोंवाले अपने नन्हे से सिर को चाभी भरे खिलौने की तरह हिला रहा था। ऐसा लगता था कि मानो वह अपनी लंबी गरदन पर से, जो उसे असुविधा कर रही थी, सिर को खोलना चाहता है।

बिज्जू की नस्ल के छोटे जन्तु भी, जो हर पिंजडे मे दो दो थे, छाया के छोटे से टुकडे मे एक दूसरे से सटकर यो बैठे थे कि देखनेवाले को लगता था कि कोई दो सिर वाला जन्तु सो रहा है और नींद मे फुफकारे छोड रहा है।

जहा भी नजर जाती थी, चिडियाए और जानवर या तो दोपहर की नींद ले रहे थे या फिर उनींदी हालत मे चल फिर रहे थे। चिडिया तो एक से एक शानदार थीं। कुछ के सिर पर तश्तरीनुमा कलगी थी, जिसका रग चोच और सिर के रग से भिन्न होता था। मिसाल के लिए यदि चोच पीली और सिर नीला या लाल या पीली और लाल धारियोवाला था, तो कलगी कत्थई रग की थी। कुछ चिडिया गरदन तक तो गुलाबी थीं और सिर के भाग मे बरफ सी सफेद। ऐसा लगता था कि किसी ने उन्हे आधा रग दिया है। कुछ रगबिरगे सिरोवाली चिडिया भी थीं। मुझे याद है कि उन्हे पहली बार देखने के बाद उसी शाम मने तेज रगो के इस्तेमाल के लिए प्रसिद्ध एक स्थानीय चित्रकार से कहा था कि शायद चिडियाघर की इन चिडियो को उसी ने रगा है। चित्रकार हस पडा था, पर शायद उसे मेरे शब्द अच्छे लगे थे।

मुराबू एक पर पर खडे सो रहे थे। हरियाले छायादार पानी से निकलकर मगरमच्छ अपनी एक धुधली आख खोले और दूसरी बद किये सो रहा था। उसके मजबूती से बद जबडे से गीली, कत्थई काई के टुकडे लटक रहे थे, मानो वह कहना चाहता हो कि वह विशुद्ध शाकाहारी है।

केवल ऊदबिलाव ही, जिनका पेट भरा हुआ था और इस समय अच्छे मूड मे थे, उनके लिये फेंकी जानेवाली नन्ही मछलियो को या तो तालाब के कोने मे भगाये दे रहे थे या ऊपर हवा मे उछलकर थूथन से पकडते हुए तरह-तरह से खेल रहे थे। गरमी का उनपर कोई असर नहीं पड रहा था। कुछ बदर पुराने अजीर के पेड की हरियाली मे डूबी मोटी शाखों को मजबूती से पकडे हुए तोतो की तरह सिर नीचे किये लटके सो रहे थे।

काले और सफेद हसो ने अपनी लबी गरदनें पानी मे जो घुसायीं, तो वसे के वसे ही रह गये। हमारे इर्दगिर्द हर कोई सो या उघ रहा

3

था। वद बाडा के दरवाजा वे हत्थे गरम होकर आग की तरह तप रहे थे। लगता था कि आसपास की हर चीज गरमी छोड रही है। बचने का कोई उपाय नहीं था।

एक हल्की और घनी जाली के पीछे खुले से मदान मे एक ढूहे पर कानो बगनी रग की कोई चीज लेटी हुई थी। पहले तो मुझे लगा कि कोई नगा आदमी सो रहा है, पर ध्यान से देखने पर पाया कि यह एक बग ला बदर था, जो हाथ का तकिया बनाकर लेटा हुआ था। हमने उसे लाड पुकारा, पर वह टस से मस न हुआ।

दोपहरी की इस नरक जसी गरमी से तग आकर हमारी पलकें भी भारी होने लगी थीं और एकाउण्टेण्ट की खोज मे कदम जिधर पडते, हम बिना सोचे समझे उधर ही चल पडते। लेकिन वह न चिडिया वाले हिस्से मे मिला, न शेर और बाघ वाले हिस्से मे।

तब हम उन बाडो की दिशा मे बढ़े, जिनके समीप बच्चो की भीड लगी हुई थी। साथ मे उनके मा बाप भी थे, जो तरह-तरह की आवाज पदा कर जानवरो को जगाने और कोठरियो से बाहर निकालने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन उनकी सभी कोशिशें बेकार थीं। बच्चे रुआसे होकर जानवरो को दिखाने की माग कर रहे थे। ये अडियल जानवर थे और अपनी लकडी की कोठरियो मे इतनी गहरी नींद सोये हुए थे कि बाहर से उनकी कोख का हल्के से उठना गिरना या फिर कोठरी से बाहर निकले बेजान से पिछले पर ही दिखायी दे रहे थे।

एक पिजडे के सामने लगभग वही दश्य था। इसके सामने भी एक परिवार खडा था, जिसकी लाडली बच्ची रो रही थी और लडका बार बार पिनपिना रहा था। वे चाहते थे कि मा बाप जसे भी हो कोठरी मे सोये जानवर को जगा दें और वह बाहर निकल आये। मा जितना हो सकता था उन्हे रोने चिल्लाने से रोक रही थी। बाप ने मजाक मजाक मे लडके से कुछ कहा, जिस पर वह और भी अधिक पिनपिनाने लगा।

"क्या कहा बाप ने?" मने वसीली इवानोविच से पूछा, जो स्थानीय भाषा जानते थे।

"उसने कहा कि इसके लिए तो किसी योगी या जादूगर की जरूरत होगी," उन्होंने बताया और फिर रुक कर अपनी तरफ से कहा, "क्या करें, योगी बनना ही पडेगा।"

यह कहकर वह बाडे की ओर बढे, जिस पर नोटिस टगा था "नजदीक आना खतरनाक है।" तभी जाकर मने पहली बार देखा कि वसीली इवानोविच के हाथ मे कागज का पकेट और उसमे अखबार मे लिपटी कोई चीज है। पिजडे के पास पहुचकर उन्होने धीमी, खनकती आवाज मे पुकारा "बारसिक! बारसिक!"

"यहा क्या कोई बारसिक* है?" मने आश्चयचकित होकर पूछा।

पिजडे के अदर कोटरी मे एक हृष्टपुष्ट, सुदर, मोटा और गुलाबी चीता सो रहा था। उस पर किसी तरह की आवाज का कोई असर नहीं हो रहा था। लेकिन हमारे वसीली इवानोविच उसे और जोर से पुकारने लगे "बारसिक! बारसिक!"

एकाएक जानवर ने थोडी सी आखें खोलीं, कान लगाकर सुना, मानो कि विश्वास न हो रहा हो, और फिर एक बडी बिल्ली की तरह करवट बदलकर झटके से खडा हुआ और एक ही छलाग मे बाहर बाडे मे जाली के पास आ गया। अब तक उसके मुह से कुछ भारी और लबी सी गुर्राहट निकलने लगी थी।

वसीली इवानोविच को देखते ही चीता जाली से यो चिपक गया जसे कि उनसे सहलाये जाने की माग कर रहा हो। बिल्ली भी जब चाहती है कि उसे सहलाया जाये, तो वह परो से यो ही लिपट जाती है। और जब वसीली इवानोविच ने सचमुच जाली के अदर हाथ डालकर चीते के मोटे कानो के पीछे यो सहलाना शुरू किया कि मानो वह घर की बिल्ली हो, तो सभी हिदुस्तानियो की और मेरी भी आखें आश्चय से फटी रह गयीं।

बच्चे भी एकाएक रोना बद कर मा बाप का हाथ पकडे हुए और मुह बाये बडी-बडी आखों से देखने लगे। वे नींद की इस नगरी मे जादुई कहानी देख रहे थे और वह उन्हे पसद आयी।

वसीली इवानोविच ने पकेट खोलकर उसमे से मुर्गी के गोश्त के टुकडे निकाले और उन्हे तोड तोडकर जाली मे से चीते को देने लगे। चीता अपनी बडी बडी शहद जसी पीली आखो से उन्हे देखते हुए सतोषभरी

---

* रूसी भाषा म पहाडो मे रहने वाले चीते को "बास" कहत हैं। "बास" का स्नेहसूचक रूप "बारसिक" है। रूसी लोग सदा अपने बिल्लो को यही नाम देते ह।—स०

गुर्राहट के साथ उन टुकड़ों को निगलता गया। उसकी मखमली गुर्राहट के बीच सिर्फ हड्डियों के कड़कड़ाने की आवाज ही सुनायी दे रही थी। जब गोश्त खत्म हो गया, तो चीता जीभ से मुंह चाटता हुआ एक बार फिर जाली से पीठ सटाकर खड़ा हो गया, ताकि उसे सहलाया जाये।

मैंने देखा कि वसीली इवानोविच बड़े प्यार से उसकी मोटी खुरदरी पीठ को सहला रहे थे, जो कोई आसान काम नहीं था। उस बिल्ली जैसे जानवर की खाल इतनी सख्त थी कि उसपर सिर्फ हाथ फेरने से ही काम नहीं चल सकता था, उसे मुट्ठी में पकड़ना जरूरी था और यह किसी मोटे कालीन को मुट्ठी में पकड़ने जैसा ही कठिन था।

इस तरह वसीली इवानोविच चीते की खाल को पकड़कर सहलाते रहे। उसे यह अच्छा लग रहा था, इसलिए वह आखें ऊपर चढ़ाये जाली से यों सट गया कि लगता था कि वह अब गिरी तब गिरी। धीरे धीरे वसीली इवानोविच की अंगुलियां उसकी गरदन, सिर, कान तक पहुंच गयीं और फिर ठोडी को गुदगुदाने लगीं। हिंदुस्तानियों को अपनी आखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। मुंह से कोई आवाज निकाले बिना वे जहां के तहां जड़वत खड़े थे।

"यह तो कोई योगी है," आखिरकार बच्चों के बाप के मुंह से कुछ शब्द निकले। "श्श्श चपला मत करो "

सचमुच इस असामान्य दृश्य को देखकर कोई हिलडुल भी कैसे सकता था! सच कहूं, मेरे भी कुछ समझ में नहीं आ रहा था। जानवर का खुला हुआ जबड़ा मेरे इतने नजदीक था और इस जबड़े से वसीली इवानोविच का हाथ इतने करीब था कि किसी भी क्षण दुर्घटना घट सकती थी। लेकिन चीता हल्के से गुर्राता और अपने भारी, काले पंजों से जमीन को खरोंचता हुआ ही खड़ा रहा। उसका सारा धब्बेदार गुलाबी शरीर सुख की अनुभूति से सिमटा जा रहा था।

हिंदुस्तानी वसीली इवानोविच पर यों देख रहे थे, मानो वह सचमुच कोई योगी या जादूगर हो। मैंने अपने पीछे देखा। हमारे चारों तरफ दर्शकों की भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। कोई फुसफुसा रहा था "रूसी हैं! रूसी हैं!"

यह हमारे बारे में था कि हम रूसी हैं।

"रूसी योगी! रूसी योगी!" कोई डर के मारे फुसफुसाया।

मुझे मालूम नहीं कि हम वहा कितनी देर से खडे थे, पर तभी भीड को चीरता हुआ नौ एक साल के लडके का हाथ पकडे एक लबा सा, भूरी मूछो वाला आदमी हमारे पास आकर कहने लगा

"तो यहा है आप लोग! आपकी खोज मे म सारे चिडियाघर को छान चुका हू। वसीली इवानोविच, कहते ह कि आपको मुझसे कोई जरूरी काम है!"

हिंदुस्तानियो ने सोचा कि यह एक और योगी, जानवरो को वश मे करनेवाला आ गया है। लेकिन यह एकाउण्टेण्ट था।

वसीली इवानोविच को जानवर को सहलाता देखकर उसने फिर कहा, "देखो तो, बारसिक कितना भोला-भाला बन गया है और वह भी कितना गया है! पहचाना नहीं जा रहा है! खूब बडा हो गया है "

वसीली इवानोविच ने आखिरी बार उसका कान गुदगुदाया, ठोडी पकडकर हिलाया और नाक पर हाथ फेरा और उसने आखें बद कर मुह से गुर्रान की ऐसी खनकदार आवाज निकाली, जसे कि घटिया बज उठी हों। वसीली इवानोविच ने गहरी सास ली और जाली से हट गये। हिंदुस्तानी उनके लिए रास्ता छोडने लगे। चीता फिर भी जाली से यों चिपका रहा, जसे कि वसीली इवानोविच के हाथ को अभी भी अपने काना को गुदगुदाता और मोटी खाल को सहलाता हुआ महसूस कर रहा हो। मगर कुछ क्षण बाद जब उसने आखें खोलीं और वसीली इवानोविच को अपने सामने न पाया, तो पजे से जाली पर मारकर इतने ज़ोर से चिघाडा कि सभी हिंदुस्तानी बाडे से एकाएक पीछे हट गये।

लौटते हुए हमने सुना कसे चीते का उदास गुर्राना धीरे धीरे बद हो गया।

"तो ऐसा है आपका बारसिक," चिडियाघर के फाटक के पास पहुचने पर मने कहा। "आप सचमुच योगी ह, वसीली इवानोविच!"

"पर एक बात मेरी समझ मे नहीं आयी। आप इस आम चीते को बारसिक के नाम से क्यों पुकारते ह?" ओलेग निकोलायेविच बोकोव ने खामोशी से चलते वसीली इवानोविच से पूछा।

"इसकी अपनी कहानी है," उन्होंने जवाब दिया। मने ग़ौर किया कि वह कुछ उदास से हो गये ह।

"असल मे हमे यहां चाय के व्यापारियों के साथ लेनदेन करना पडता है," वसीली इवानोविच ने कहना जारी रखा। "दार्जिलिंग की चाय अच्छी

होती है। वह पहाडी ढलानो पर उगती है और वहा चारो तरफ अभी भी घने जगल ह। वहीं से एक बार शिकारियो ने मुझे एक छोटा-सा, बिल्कुल नन्हे पिल्ले जसा चीता भेंट किया था। वह इतना छोटा था कि मुझे उसे बोतल से खिलाना पडता था। मगर था वह बहुत नटखट और शरारती। प्राय जूते उठा ले जाता था और जो भी चीज मिलती चबाने लगता था। मेरे लडके को उसके साथ खेलना बहुत पसद था। मगर समय बीतता है, बच्चे बडे होते ह। इसी तरह वह भी बडा होता गया। सब उसका ध्यान रखते थे और वह भी सभी का आदी बन गया था। मगर बाद मे हमारे बच्चा के अलावा वह दूसरे बच्चो के साथ भी खेल खिलवाड करने लगा। प्राय वह झाडी के पीछे पेट के बल लेटकर छिप जाता और चौकन्नी आखों से पहरा सा देता रहता। और ज्यो ही कोई आता दीखता, तुरत उस पर झपट पडता, नीचे गिरा देता और अपने आप दात निकाले ऊपर खडा हो जाता। साफ है कि कुछ बच्चे बहुत डर जाते थे। इससे माओ को भी डर लगने लगा कि कहीं खेल खेल मे वह बच्चो को सचमुच न काट दे। एक बार मने भी उसे देखा। वह घात मे बठा था और ज्यो ही म सामने से गुजरा, वह मेरी पीठ पर यो झपटा कि म समझ गया कि अब उसे बच्चों के साथ अकेले छोडना खतरे से खाली नहीं है। वह भारी हो गया था और नाखून भी काफी बढ गये थे।

"उससे जुदा होने का समय आ गया था। बेशक खुद को अच्छा नहीं लग रहा था, पर और कोई उपाय था भी नहीं। वह 'बारसिक' नाम से पुकारे जाने का आदी हो गया था—यह नाम उसे मेरे लडके ने दिया था। वह हमसे बहुत हिलमिल गया था, इसलिए उसे चिडियाघर मे देते हुए मन को पीडा हो रही थी। फिर भी देना ही पडा। शुरू मे तो वह भी बेहद उदास रहा। लडके को म अब उसके पास नहीं जाने देता था, क्योकि दोनो के साथ दुघटना घट सकती थी। और तो और मने भी उसके पास जाना छोड दिया, ताकि उसे और अपने को उत्तेजित न करू। लेकिन आज एक्साउण्टेण्ट की खोज मे यहा आना ही पडा। मने बहुत समय से बारसिक को नहीं देखा था, इसलिए सोचा कि उसके लिए कुछ लेता चलू। बाडे मे चुपके से रख दूगा और चला जाऊगा। म जानता था कि यह जानवरो के सोने का समय होता है। मगर जब उसे देखा, तो अपने को रोक न पाया और उसे बुला ही बठा। आगे आप जानते ही ह कि क्या

हुआ। अब वह दो-तीन दिन तक बहुत उत्तेजित और नाराज रहेगा, मगर बाद मे शात हो जायेगा। और किया भी क्या जा सकता है? उसके साथ एक ही कमरे मे तो रहा नहीं जा सकता—म जानवरो का ट्रेनर तो हू नहीं "

"ट्रेनर? आप तो उससे भी ऊचे ह," मने कहा। "और तो और, हिदुस्तानी भी आपको योगी या जादूगर समझने लग गये थे "

"क्सी बात कर रहे ह आप?" वसीली इवानोविच ने आपत्ति की। "म भला योगी? और हा, अभी आप मेरे लडके से मिलेगे। मगर कहना नहीं कि हमने बारसिक को देखा था। नहीं तो वह नाराज होगा कि हम उसे भी नहीं ले गये खर, जो हो गया सो हो गया, अब काम की बात करे। ये रहे हमारे एकाउण्टेण्ट। अभी सब काम हो जायेगा "

हम व्यापार प्रतिनिधित्व की इमारत के दरवाजे पर पहुच चुके थे। वहीं पर हमने वसीली इवानोविच से विदा ली। उसी शाम एयर-कण्डीशण्ड ट्रेन से म और ओलेग निकोलायेविच दिल्ली के लिए रवाना हो गये।

सोने से पहले हम देर तक बाते करते रहे—चिडियाघर के बारे मे, बारसिक के बारे मे उस रात सपने मे मने देखा कि बारसिक ने अपनी खुरदरी पीठ मेरी तरफ बढायी और म बडी निर्भीकता से उसे खुजलाने लगा। लेकिन एकाएक उसने नाराजगी के साथ मेरी तरफ मुडते हुए सिर को इतनी जोर से झटकारा कि मेरी आख खुल गयी।

क्पार्टमेण्ट मे हल्का अधेरा था और सब यात्री सो रहे थे। मने खिडकी से बाहर झाका। ट्रेन महान गगा की शात घाटी से गुजर रही थी। पूरनमासी की रात थी। रेलवे लाइन के किनारे चादनी से जगमगाते टीलो पर पडनेवाली दूरवर्ती झाडियो की छायाए सोये हुए बडे से चीते की खाल के धब्बो की याद दिला रही थीं।

१९५६

हाथियो के बारे में

हाथियो का यह आश्चयजनक किस्सा मुझे भारत मे एक ऐसे आदमी से सुनने को मिला, जो बहुत साल बर्मा मे रह चुका था।

बर्मा के घने ऊष्णकटिबधीय जगलो मे सागौन के पेड बहुतायत से होते है। उनकी कीमती लकडी से जहाज, रेलवे वगन, स्लीपर, आदि बनाये जाते ह, क्योकि मजबूती मे बहुत ही कम लकडिया उसका मुकाबला कर पाती ह। सागौन के अलग जगल नहीं होते, उसके पेड और पेडो के बीच जहा-तहा उगे पाये जाते ह। उन्हें काटने का एक खास तरीका है, जिसे छल्ला काटना कहते ह पेड के तने की जड पर चारों तरफ से गहरी खाव काट दी जाती है और सूखने को छोड दिया जाता है। अगर पेड को कच्चा काट लिया जाये, तो उसकी लकडी पानी मे डूब जायेगी। काटने के बाद शहतीरो को नदी के पास लाते ह और धार मे छोड देते ह। फिर नियत जगहो पर उन्हें इकट्ठा कर बेच दिया जाता है।

लेकिन कुछ जगलो के मालिक ऐसे भी होते ह, जो जल्दी से जल्दी पसा कमाने के लालच मे जवान पेडो को ही काट डालते ह। शहतीरो को जगल से नदी तक हाथी ढोते ह। हाथियो के लिए यह काम बहुत मुश्किल है, क्योंकि शहतीर प्राय दूसरे पेडो के बीच फस जाते ह।

कभी सूड से उठाकर, तो कभी परो से और कभी सिर से ठेलकर हाथी इन भारी भारी शहतीरों को कई किलोमीटर दूर नदी तक पहुचाते ह।

ऐसे ही एक जगल की बात है। इससे फायदा उठाकर कि कोई देखने वाला नहीं है, उसका अग्रेज मालिक सागौन के जवान पेडो को काटता था और हाथियो को सास लेने का मौका दिये बिना हर समय शहतीर

ढोने के काम पर लगाये रखता था, ताकि नदी मे पर्याप्त पानी रहते लकडी को बहाया जा सके।

एक सुबह हाथियो का रखवाला दौडा-दौडा उसके पास ग्राया ग्रौर चिल्लाया

"साहब, साहब, जगली हाथी ग्रा गये ह!"

"कहा ग्रा गये ह?" ग्रग्रेज ने पूछा।

"वे हमारे पालतू हाथियो के साथ घूम रहे ह ग्रौर उन्हे काम करता देख रहे ह।"

"उन्हे भगाग्रो मत," ग्रग्रेज ने कहा, "क्योकि ग्रगर वे लडने लगेंगे या ग्रादमियो से चिढ जायेंगे, तो हमे ग्रौर काम को बहुत नुक्सान पहुचा सक्ते ह। जाग्रो, उन पर नजर रखो ग्रौर मुझे बताग्रो।"

जगली हाथी उस सारे इलाके मे फल गये, जहा पालतू हाथी काम कर रहे थे। वे उन्हें काम करता देख रहे थे ग्रौर मन ही मन हैरान हो रहे थे कि ये इन भारी-भारी शहतीरो को क्यो ढो रहे ह। लोगो की तरफ उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया ग्रौर न लोगो ने ही, जसा कि हुकुम था, उन्हे परेशान किया।

इस तरह ग्रनेक दिन तक काम को देखने के बाद जगली हाथी भी पालतू हाथियो के साथ काम पर ग्राने लगे ग्रौर वापस तभी जाते, जब पालतू हाथी भी ग्राराम के लिए लौटते। ग्रग्रेज को उनकी खबर रोज मिलती रहती। एक दिन उसे ग्राश्चयजनक खबर मिली। डर से सहमे ग्रौर ग्रसमजस मे पडे रखवाले ने बताया कि पिछले कुछ दिन से जगली हाथी भी पालतू हाथियो के साथ काम करने लगे ह। वे खुशी-खुशी शहतीरो को ढोते ह, सिर से उनको ठेलते ह ग्रौर पालतू हाथी उन्हें बताते ह कि यह काम कसे करना चाहिए। सभी साथ-साथ काम करते ह। यह ग्रभूतपूव बात थी। ग्रग्रेज मालिक मन ही मन बहुत खुश हुग्रा। उसे मुफ्त ही इतने हाथी ग्रौर मिल गये थे ग्रौर ग्रब वह ज्यादा से ज्यादा पेड काट सकता था।

इस दश्य को ग्रपनी ग्राखा से देखने के लिए वह घोडे पर सवार होकर जगल मे गया, जहा पालतू ग्रौर जगली हाथ साथ साथ काम कर रहे थे। रखवाले की बात सच थी। जगली हाथी ग्रादत न होने के कारण हाफ्ते हुए ग्रपने पालतू भाइयो के साथ कधे से कधा मिलाकर काम कर रहे थे।

साफ दिखायी दे रहा था कि उन्हे यह काम करने मे तकलीफ हो रही है और वे यह नहीं समझ पा रहे ह कि सिर से शहतीरो को ठेलने की क्या जरूरत है। मगर फिर भी पालतू हाथियो की देखादेखी वे यह काम कर रहे थे।

अग्रेज मन ही मन फूला न समाया और हिसाब लगाने लगा कि उसे कितना मुनाफा होगा। पहले तो इससे कि दोगुने शहतीर ढोये जायेंगे और दूसरे काम खत्म होने के बाद नये हाथियों को बेचने से।

कुछ समय बाद महावत और रखवाला जगली हाथियो के, जो काम मे गहरी दिलचस्पी और लगन का परिचय दे चुके थे, इतने आदी हो गये कि आम पालतू हाथियो की तरह उन पर चिल्लाने और यहा तक कि पीटने भी लगे।

तभी एक दिन अग्रेज ने सपना देखा कि वह राजा की तरह अमीर हो गया है, उसके पास बडा सा महल है और हाथी नौकर की तरह उसकी सेवा करते ह। वे ही उसकी रक्षा करते है और बाग मे उसके झूले को, जिसमे वह सोया होता है, झुलाते ह। वह तुरत जगल के लिए रवाना हुआ, जहा जगली और पालतू हाथी इतने हिलमिल कर काम करते थे। मगर वहा किसी को भी नहीं पाया।

आदमियो और हाथियो को न पाकर वह जगल मे और आगे बढा, मगर वहा भी किसी तरफ काम चलने का कोई लक्षण नही था। पेडो के कटे तने हर कहीं बिखरे पडे थे। हर तरफ खामोशी थी। बेशक पूरी नहीं, क्योंकि जगल मे तरह-तरह की चिडिया चहक रही थीं, और खाये हुए फलो के छिलके अग्रेज पर फेंकते बदर पेडो की शाखो पर कूद रहे थे।

उसकी समझ मे कुछ नहीं आया। क्या हो गया है? हाथी और रखवाले कहा चले गये ह? आखिरकार शाम को वे थके हारे, पसीने से तर और डर के मारे कापते उसके पास आये और बोले

"वे सब के सब चले गये ह "

"क्या? सब चले गये ह?" अग्रेज चिल्लाया। "हमारे भी?"

"हा, हमारे भी उनके साथ चले गये ह। सुबह वे सब काम पर आये, इकट्ठे हुए और काम को छोड जगल मे चले गये। हम उनके पीछे-पीछे गये और उन्हे लौटाने की कोशिश भी की, मगर उन्होंने हमे सूडो मे पकडकर जमीन पर पटक दिया और हमारे सिरो पर सूडें घुमाते हुए अपने परो की ओर इशारा किया, जिसका मतलब था कि अगर हम उनका पीछा करेंगे, तो वे हमे परों तले कुचल डालेंगे "

"आखिरकार हुआ क्या था?" गुस्से और डर से कांपते हुए अंग्रेज ने पूछा।

"लगता है कि जंगली हाथियों ने उन्हें अपने साथ चलने के लिए मना लिया था," बूढ़े महावत ने कहा। "मैं हाथियों को बचपन से जानता हूं। इससे पहले भी एक बार मैं ऐसी घटना देख चुका हूं। यह तीस साल पहले की बात है। जंगली हाथी देखने आये कि पालतू हाथी कैसे रहते हैं और उनके साथ काम करके भी देखा। मगर उन्हें लगा कि दिनभर भारी भारी शहतीर ढोते रहने से अच्छा जंगल में आजादी के साथ घूमना है। उन्होंने हमारे हाथियों को भी राज़ी कर लिया कि वे काम छोड़ दें।"

"उन्हें जल्दी से जल्दी लौटाना होगा। हांके का इन्तजाम करो। वे बाग़ी हैं," अंग्रेज चिल्लाया, "और जंगली हाथियों को गोलियों से मार दो!"

लेकिन महावत ने सिर हिलाया

"अब उनका पीछा नहीं किया जा सकता। वे इस जंगल को छोड़कर चले गये हैं। हमारे पालतू हाथी भी वापस नहीं लौटेंगे। जंगल में रहने के बाद वे फिर कभी काम पर लौटना पसंद नहीं करेंगे। उन्हें वैसे भी जंगल अच्छा लगता है। लौटते सिर्फ आदमी हैं, क्योंकि उन्हें अच्छा लगे या बुरा, रहना आदमियों के ही साथ होता है।"

"बेवकूफी की बातें बंद करो और कान लगाकर सुनो, कहीं से कोई शोर सुनायी दे रहा है," अंग्रेज ने उसे टोकते हुए कहा।

सब के कान चौकन्ने हो गये। पर यह कहीं दूर बहती नदी और बंदरों के साथ लड़ती चिड़ियों के चिचियाने का शोर था।

"वे नहीं लौटेंगे," महावत ने फिर कहा। "मैं जानता हूं, वे अब कभी नहीं लौटेंगे।"

अंग्रेज ने गुस्से के मारे लाल आंखों से चारों तरफ बिखरे पड़े और नियम के विरुद्ध काटे गये सागौन के तनों को देखा और सोचने लगा कि कुछ ही दिनों में नदी में पानी बढ़ जायेगा, मगर अब इससे कोई फायदा नहीं और अमीर बनने का उसका सपना सिर्फ सपना ही था।

वास्तविकता अगर कुछ थी, तो वह थी उस पर हंसती जंगल की निःस्तब्धता और भागे हुए हाथी, जो ऊष्णकटिबंधीय जंगलों में कहीं दूर, पहुंच से बाहर चले गये थे।

सोवियत पूर्व

आमू दरिया

१

सन तीस के वसन्त की बात है। रेत के टीले पर आदमी खडा था। वह मोटे, खुरदरे कपडे का हल्का कोट, जिसपर शिकनें पडी हुई थीं, सूती कमीज, जिसका कालर खुला हुआ था, और धूल से सनी सफेद टोपी पहने था। उसकी खिचडी मूछें, गहरा ताबई रग, मुह के किनारो पर पडी गहरी झुरिया और ठोडी पर किसी घाव का निशान उसके चेहरे को लगभग लडाकू रूप दे रहे थे।

उसने रात की चादर मे लिपटे रेगिस्तान को देखा। बजनी हरे आसमान मे चमचमाते और नुकीले हरिताभ तारो के बीच चौडा और भारी चाद लटका हुआ था। पास के सफेद, मानो नमक से ढके, लबे रेतीले ढूहे साफ-साफ दीख रहे थे। उनके पीछे की हर चीज कुहासे मे डूबी हुई थी, अज्ञात थी और लगता था कि इसका कहीं कोई अन्त नहीं। हवा इस अज्ञात, कुहासे मे खोये वीरान इलाके से अजीब सी मीठी और तीखी नमकीन गधें ला रही थी।

रेतो की इस सीमा पर मन उदास और बेचन हो उठता था। यहा पर हरी भरी वासती धरती खत्म होती थी और निर्जीव ढूहो की मनहूस पट्टी के पीछे पागल बनाने की हद तक सुनसान, खौफनाक और अपनी आदिम शक्ति के मद मे डूबा अन्तहीन विस्तार शुरू होता था, जिसके आगे यह सफेद टोपीवाला आदमी और जो इस नि स्तब्ध रात मे उसके साथ थे, सब के सब असहाय थे।

वहा रेगिस्तान था, जिसके अपने कठोर नियम थे—असह्य गर्मी और रातों की हड्डियो को चीरती ठड, नरक जसी नीरवता और रेतीले तूफानों की कणभेदी साय-साय, छलनेवाली और थकाऊ मृगतृष्णा और पानी का

पूर्ण अभाव, जो मानो उसके अग्निराज्य मे घुसपैठ करनेवाले मानव के खिलाफ ढाल का काम करता हो।

रेत पैरो के नीचे चुरमुराती, हल्के बगूलो मे उडती धूल की हवा और तेज धूप से सवारी हुई, खनकती, नमक की सफेद और भूरी की चकाचौंध करती परत से ढकी, तलुओं को जलाती, अजान, नगी पानी की तरह सरसर बहती, कभी टीले बनाती तो कभी भूतपूर्व, सूखी नदियो की दरारो या दर्रों मे जाकर लुप्त होती रेत

टीले पर खडे आदमी के पैरो के पास पानी झिलमिला रहा था। यह एक छोटी सी नहर थी। रात के अंधेरे मे जाकर गायब होती उसकी धारा दुश्मन पर चुपके से टूट पडने के लिए रात को आगे बढ़ती, बख्तरबंद, पुराने जमानो की फौज की याद दिलाती थी। और यह आदमी सेनापति की तरह ऊंची जगह पर खडा देख रहा था कि कैसे हजारो नयी धाराएं रात के अंधेरे के साथ एकाकार हो रही है।

अपने छोटे से सूखे हाथ से अन्तहीन रेगिस्तान की इशारा करते हुए उसने हमसे कहा, "इस नहर से मैने आमू दरिया का अतिरिक्त पानी यहां पहुचाया है। वह इतनी तेजी से, इतनी हडबडी से बहा, मानो यह उसका पुराना जाना-पहचाना रास्ता हो। यह केलिफ थाल का पानी है। यह रेगिस्तान को जीतेगा, दजनो किलोमीटर तक रेतीली जमीन की प्यास बुझायेगा। इस वसन्त मे मैने अपनी आखो से देखा कि यह जहा जहा भी ठहरा है, वहां वहा सरकडे, स्तेपियाई घास, झाऊ, आदि उग आये है और चिडियो की भरमार हो गयी है। यहा का भविष्य इसी पानी मे है। आप मेरा विश्वास मानिये, कुए यहा की समस्या को हल नहीं कर सकते। हो सकता है कि मैं अपनी जिंदगी मे न देख पाऊ, पर मुझे पक्का यकीन है कि यहा से आमू दरिया का यह पानी मुर्गाब तक पहुचेगा। आप लोग अभी जवान है और वह दिन अवश्य देखेंगे, जब केरकोव और मारी के बीच मोटरबोटें या स्टीमर चलने लगेंगे।

"मैं बूढ़ा हो चुका हू और लोग मुझे अधपगला समझते है, क्योंकि मै हर समय केलिफ थाल के पानी की ही रट लगाये रहता हू। लेकिन मेरी नजर वहा है, जहा यह पानी आखिरकार पहुचेगा। पानी समझदार और जीवन्त चीज है। वह जानता है कि उसका पुराना रास्ता कहाँ है, वह उसी रास्ते से जाने के लिए तडप रहा है, जिससे होते हुए प्राचीन नदिया यहा

फरती थीं। म पानी की इस रुपहली चमक को सपनों मे देखता हू और मेरे सामने रेगिस्तान पीछे हटने लगता है, क्योकि म मानव हू और वह मेरी ताकत महसूस करता है "

वह चुप हो गया और देर तक उसी हालत मे खडा रहा, मानो नहर मे बहते मटियाले, झिलमिलाते पानी की मूक आवाज को सुन रहा हो।

रेगिस्तान मे कभी-कभी दूर बिजली सी कौंध जाती। वहा से दबी फुसफुसाहट जसी सरसराने की आवाज आ रही थी—हवा नहर के उस पार कटीली झाडियो के पास बडे-बडे ढेरो मे मरी पडी टिड्डियो को, फलते-फूलते बागो और लहलहाते खेतो को नष्ट करने के लिए हवा मे और जमीन पर कतारें बाधे आगे बढ़ती और छिन्न भिन्न हरे बख्तरो और भिचे हुए लबे हिंस्र पजोवाली इन दहशतनाक फौजो के अवशेषो को हिला डुला रही थी। ये, रेगिस्तान के मरे पडे साथी, वहा राख की तरह, पिछले साल की लडाई की याद की तरह बिखरे पडे थे।

मुझे कुछ समय पहले देखा हुआ एक गाव याद हो आया, जहा रेत चुपके से देहरी और मिट्टी की जजर छत की दरारो से अदर छन छनकर खाली, सुनसान कमरो मे बडे बडे मुलायम ढेरों मे इकट्ठी हो गयी थी। लोगो ने इस बस्ती को छोड दिया था। कुछ ही सालो मे इस जगह पर ऊचे ऊचे रेतीले टीले पदा हो जायेंगे, जिनकी चोटिया गरम, लपलपाती हवा के भभकारे छोडा करेंगी।

आदमी रेतीले टीले पर यो खडा था, जसे कि रेगिस्तान और रात पर मतर फूक रहा हो, जसे कि कुहासे मे फले उसके हाथ मे कोई खास चमत्कार शक्ति हो। म भी देखने लगा, कसे इन उजाड इलाको मे धरती मे जान आ रही है, पेड उग रहे ह, चिडिया चहचहा रही ह, साफ, खुले पानी मे जहाज तर रहे ह।

एकाएक मुझे नहर के पानी को स्पश करने की इच्छा हुई। म अपने को विश्वास दिलाना चाहता था कि यह सपना या मृगतृष्णा नहीं है। म टीले से नीचे उतरा और उकडू बठकर तग, काली घाटियो मे उछाले लेते, जगह जगह पर भवर बनाते और सकरी रेतियो से होते हुए अब रात्रिकालीन रेगिस्तान मे बराबर तेजी से दौडते ऊचे पहाडो से आनेवाले गाढ़, ठडे पानी को हाथो से उलीचने लगा। वह सचमुच रेगिस्तान विजय के अभियान पर जा रहा था

जहा भी निगाह जाती है, पानी ही पानी है। वह कभी हमारी ना से टकराता है, कभी उसे पूरे जोर से, दस किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से दौडती धारा के साथ खींचता है, कभी हमे सकरी रेती पर छो देता है और खुद रेतीले घाट पर, जिसे उसने विश्वासघात सा करते हु बनाया था, उतरने की हमारी कोशिशो पर छन छन कर हसने लगता है कभी मानो खेलते हुए हमारी नाव को दूसरे किनारे की ओर धकेलने के लिए मोडता है, तो कभी नाराज सा होकर उसे पानी के अदर अप्रत्याशित रेतीले ढेरो पर चक्कर खिलाना शुरू कर देता है।

पिछले कई दिनो से हम आमू दरिया मे नावयात्रा कर रहे ह। शाय इस यात्रा से सुदर और कोई चीज नहीं है। किनारे इतनी दूर ह कि दिखायी भी नहीं दे पाते। गरमी के नीले कुहासे मे दूर क्षितिज पर हल्की सी हरी पट्टी अवश्य दिखायी दे जाती है, जो या तो जगल है या सरकंडे के झुरमुट। कभी कभी इस हरी पट्टी के ऊपर आहिस्ता से रेतो के पीले ढेर भी तिर जाते ह, जिन्हे मगतृष्णा की तरह ओझल होते देर नहीं लगती।

नदी मे जगह-जगह पर सपाट टापू मिलते ह, जिनके एकमात्र वाशिंदे घास और झाडियो मे फडफडाती, उडती या तटवर्ती पानी मे तरती चिडिया ह। हम उनकी छपाछप और पखो की झिलमिलाहट को ही देख पाते ह उनके अनवरत चिचियाने का शोर इतना अधिक है कि लगता है कि इस नदी मे सिर्फ उन्हीं का अस्तित्व है और यह सारी दुनिया उन्हीं के लिए बनी है।

पानी मे सूरज की किरणें इतनी घातक नहीं होतीं, जितनी कि रेगिस्तान मे। यहा नदी की शाति और हिचकोले खिलानेवाली खामोशी का मजा लेते हुए लेटा जा सकता है और दुनिया को दूसरी ही निगाहो से देखा जा सकता है।

नाव के पिछले हिस्से पर खडा शायद इस नदी जितना ही बूढ़ा, हर समय गुमसुम रहनेवाला, दुबला, बाज जैसी तेज निगाहोवाला, लाल धागोवाला हरा चोगा पहने हुआ तुकमान इतनी चतुराई के साथ भारी डाड चला रहा है, मानो बचपन से ही यह काम करता आया हो। वह हमारा कप्तान है। उसके सहायक भी हाथो मे बडे-बडे लट्ठे लिये हुए धीरे धीरे

नाव को नदी के गादभरे मुलायम तल से दूर धकेल रहे ह। हमे जल्दी नहीं है। जल्दी नदी को है। तभी तो वह बार बार हमे रेती मे धकेले दे रही है।

हमे यहा हर चीज पसन्द आती है—अपनी नीरवता और भव्यता मे मस्त नदी का असीम विस्तार, सरकडो के हरे झुरमुटो के पीछे छिपे तट का एकाएक दिखना और पानी मे दूर-दूर तक फले कलहसो के झुण्डो की सफेद चादरें, जिन्हे देखकर आप पहले सभ्रम मे पड सकते ह। हमे अपने आज़ाद, सरलहृदय और धूप से सावले पडे तुक्मान मल्लाह मित्र भी पसद हैं। पर फिर भी सबसे अधिक खुशी की बात यह है कि हमारे पास अपनी नाव है। और नाव के सामने एक लक्ष्य है।

हम अपने आप को उन सौदागरो की तरह महसूस कर सकते ह, जो पुराने जमाने मे नावो मे तरह-तरह का माल लादकर खूबसूरत तेरमेज़ से निकटवर्ती बुखाराशरीफ या मशहूर खीवा के लिए रवाना हुआ करते थे, जिसकी सरहदें समुद्र से लगी हुई थीं। बेशक हम जो माल ले जा रहे ह, वह उतना कीमती नहीं है। हमारी नाव मे सिर्फ वे चीजें ह, जिनकी खोजाम्बास और बेशीर के सहकारी फार्मों और उनके रास्ते मे पडनेवाली जगहो को जरूरत है, यानी बहुत सारे टिनबद डिब्बे, दियासलाई की पेटिया, चावल की बोरिया, नमक, साबुन और बक्सो मे बद काच की चादरें।

हमने इस सामान को पहुचाने का जिम्मा इसलिए लिया, ताकि जगह जगह पर रुक सकें, लोगो के साथ उनकी चिताओ, कामकाज, आदि के बारे मे बातें कर सके और उन्हें दीन-दुनिया की खबरो से परिचित करा सके।

पानी और रेगिस्तान। हम आमू दरिया के शुक्रगुज़ार ह कि वह पालने की तरह हमारी नाव को झुला-झुलाकर हमे शाति दे रहा है। वह न होता तो हमे बदन से पानी की अतिम बूद तक सोख लेनेवाली रेगिस्तानी गर्मी की खौफनाक लपटो पर चलना पडता, हम फूली आखें और सूखा गला लिए एक कूए से दूसरे कूए तक भटकते और कहीं भी पानी न मिलता। मगर नहीं, आमू दरिया की बदौलत हम पूरे खुले भूरे पाल के नीचे पानी मे बहे जा रहे ह, ठडी छाया मे बठे हुए रेतीले किनारो को पीछे छूटता देख रहे ह और इसकी चर्चा कर रहे ह

कि इस नदी ने कितना कुछ देखा है, कितनी जातियां और देशों के बेड़े उससे गुजरे हैं। अगर आज ये सब बेड़े पुनर्जीवित हो उठते, तो लगता कि जहाजों की भीड़ के मारे नदी नहर जैसी सकरी हो गयी है और हम पाते कि चीनी और हिंदुस्तानी, यूनानी और ताजिक, मंगोल और शक, ईरानी और अरब, उज्बेक और रूसी, रोम और मेड्रिड के सौदागर, सभी एक दूसरे की ओर हैरानी से देख रहे हैं।

तमूर क्रोधमिश्रित डर से पहले रूसी स्टीमरों को देखता और पहली मोटरबोटों का शोर सिकन्दर के जहाजियों में भगदड़ मचा देता।

लेकिन अब तो सारी नदी खाली पड़ी है। और अपनी नाव पर बैठे हुए, जो लहरों को पूरी आजादी के साथ खेलने दे रही है, हम अपनी सभी इंद्रियों से अनुभव करते हैं कि कोई दुर्निवार, हठीली, कभी खत्म न होनेवाली शक्ति या ऊर्जा इस अपरिमित पानी के साथ पश्चिम की ओर बही जा रही है, इस रास्ते पर आगे बढ़ती जा रही है, जिसका अराल और अरब सागरों के बीच कोई सानी नहीं है।

यहां रेगिस्तान की मौत जैसी खामोशी बराबर एक सी गति से बहते पानी के चिरकालीन शोर से ही भंग होती है। और जब आप उस प्राचीन सभ्यता को याद करने लगते हैं, जिसका कभी इस शानदार और विलक्षण नदी के तट पर विकास हुआ था और आज लोप हो चुकी है, तो आपको लगने लगता है कि इस दुनिया में शाश्वत दो ही चीजें हैं – ऊंट, जो हजारों साल पहले की तरह आज भी रेतीले टीलों और ढलानों पर चलते हैं, और सिकन्दर महान के जमाने की तरह ही, जो नीले एजियन सागर से यहां आया था, धीमी गति और सरलता से बहती नावों के फूले हुए, तने पाल।

पानी और रेत का यह संयोग विचित्र है। वह तब तो और भी अधिक महसूस होता है, जब आप नाव पर कोहनी के बल लेटे सोचते हैं कि यहां ऐसे भी गांव हैं, जो रेगिस्तान की वजह से नदी तट के निकट बसे हैं और नदी लगातार तट को काटती रहती है, उसके बड़े-बड़े टुकड़े ढहते रहते हैं, और इसलिए आदमी को एक साथ दो मोर्चों पर लड़ना पड़ता है। अगर वह चले जायेगा, पीछे हट जायेगा, तो नदी के भारी गदले पानी में रेत भरने लग जायेगी और कुछ समय बाद पानी की जगह पर आग की तरह तपता रेत ही नजर आने लगेगी।

सूर्यास्त होने को आ रहा है। हम तट की तरफ बढ़ने लगे ह। पहले पीली रेत की पट्टी सी दिखायी देती है, बाद मे कहीं-कहीं सरकडो के झुरमुट भी नजर आते ह और फिर हमारी नाव नदी के खडे किनारे से जा टकराती है। तुकमान मल्लाह उसे रस्सियो से बाध देते ह। हम पाते ह कि जगह स्तेपी जसी है। वनस्पति के नाम पर सिफ घास और कुछ कटीली झाडिया ही उगी हुई ह। हमारे सामने अपरिचित इलाका है। वह बजर और बदसूरत है, पर दूर क्षितिज के पास पेड दिखायी दे रहे ह। वहा गाव है और वह सहकारी फाम है, जिसके लिए हम सामान लाये ह।

३

नाव को घाट की तरफ खींच दिया गया है। इस छोटे से चबूतरेनुमा घाट के पीछे किनारा काफी ऊचा है। हम चढाई चढकर ऊपर समतल जगह पर पहुचते ह। हमारे नाविकों ने मस्तूल को किनारे पर रख कर छिछले पानी मे खडी नाव को रस्सियो से उससे बाध दिया है। उसके इदगिद हमारी मुगिया चक्कर काट रही ह। उनके परो मे डोरिया पडी हुई ह, ताकि वे स्तेपी मे भाग न जायें।

पालवाले एक फालतू मस्तूल को तुकमान अपने साथ ले आते ह। रात बिताने के लिए उससे तबू की तरह खडा किया जा सकता है। एक मल्लाह हमारा सदेश लेकर गाव के लिए रवाना हो चुका है। कदीम की नगी, कटीली और छोटी झाडिया के बीच से गुजरती अस्पष्ट सी तग पगडडी पर उसके चलने से उडती धूल हमे देर तक दिखायी देती रहती है।

हम साथ मे लाये हुए मस्तूल से तबू खडा करते ह। वह इतना आदिम ढग का है कि उसके मुकाबले मे अब्राहम के जमाने का तबू भी वास्तुकला की महान उपलब्धि लग सकता था।

रेतीली जमीन पर नमदे बिछ गये ह और आग जला ली गयी है। शाम इतनी खामोशी से उत्तर आयी है और इतनी सुहावनी है कि देर तक आग के पास बठे रहने की, जो बडी खुशी से सकसाउल की टेढ़ी मेढी भूरी टहनिया को निगलती हुई लबी लबी लपटें फेंक रही है, और कत्थई लाल झिल्ली से ढकी नदी, जाफरानी कुहासे मे छिपे क्षितिज और गाववालो की इतजार मे नाव से सामान उतारने मे लगे तुकमानो की दौडधूप को

देखते रहने की इच्छा होती है। म अपने अदर उा राहगीरों जसी शाति और हल्की थकावट महसूस करना चाहता हू, जिनके लिए लबा और व्यथा से भरा दिन खत्म होने को आ गया है।

हम आग के पास बठे या लेटे आसपास जो घट रहा है, उसे देख रहे ह। नदी का शोर कुछ मद सा पड गया है, पर दूसरी तरफ से आदमियो की आवाजें नजदीक आती जा रही ह। घटिया बजती सुनायी दे रही ह – लगता है कि किसान अपने ऊटो के साथ सामान लेने के लिए आ रहे ह।

तुर्कमान आपस मे जोर-जोर से बातें कर रहे ह। शायद गाववाले घर लौटने की जल्दी मे ह। इसीलिए वे तुरत ही बडे जोश से काम में लग जाते ह। खानाबदोशो की झबरली टोपिया और ताक्तवर हाथ हवा में हिलते दिखायी देते ह। साफ लगता है कि ये लोग अपने मूक, गर्वीले और भूरे सिरो को गभीरता से ऊपर उठाये हुए ऊटों पर हर तरह का सामान लादने के अभ्यस्त ह। टिनबद सामान और दियासलाई की पेटिया, चावल की बोरिया ऊपर उछलती दिखायी देती ह। वे लोग कुछ चपटे बक्सों को जिस तरह सावधानी से उठा रहे ह, उससे हम अदाज लगा लेते ह कि उनमे काच की चादरें ह।

काम करनेवालो से थोडी दूरी पर ठीक जहा नदी का खडा किनारा है वहा रेत पर एक ऊटनी खडी है। उसकी कासनी आखें काली हो गयी ह। अधेरा बढ रहा है और आग की लाल लाल जीभें मतप्राय दिन की काली-सीसई पष्ठभूमि पर काफी उची उठने लगी ह। ऊटनी के पास उसका बच्चा भी खडा है। देखने मे वह बिल्कुल खिलौने जसा विचित्र है – रग उजला, टागें लबी और चचल, सिर इतना बडा कि हैरानी होती है कि इतनी नाजुक और कमजोर गरदन पर कसे टिका हुआ है, और कूबड ऐसा हास्यजनक, जसे कि उसने खुद ही जानबूझकर उसे मोड दिया हो।

तभी वह चुपके से अपनी कठोर, विचारमग्न मुद्रा मे खडी मा के इर्दगिर्द नाचने लग जाता है। पहले वह एक ही जगह पर पर चलाता है, फिर मसखरे की तरह अलाव की दिशा मे छलागें लगाता है, लेकिन तभी शायद आग से डरकर ठोकर खा जाता है और उसका भारी सिर जमीन को छूने लगता है। मगर फिर वह उल्टी दिशा मे मुड जमीन पर पर पटकता है, झटके से कूदता है और रुक रुककर चक्कर लगाने लगता है,

मानो जमीन पर हमारे छायाओ के बीच कुछ खोज रहा हो। बाद मे एक दो बार ओर उछलता है और फिर मुडकर मानो पजो के बल खामोशी से चले जाता है। वह इतना प्यारा और उसकी हरकतें इतनी आकर्षक ह कि एकाएक चाद भी, जो आज विशेष रूप से चमकीला और नाजुक लग रहा है, आसमान मे काफी ऊपर उठ आया है और उसे देखने लगा है। और वह मानो उसकी चकचौंध शक्ति को महसूस कर फिर अपनी गुमसुम खडी मा के चक्कर लगाने लगता है, जसे कि इस आसमानी जादूगर के सम्मोहन से बचाने की विनती कर रहा हो। तभी बादल चाद को ढक लेते हैं। अधेरे मे आग फूल की तरह दमकने लगती है। उसकी रसीली लपटें सुनहरी मधुमक्खियो की तरह बिखर जाती ह। अधकार की गहराई से ऊटो की बलबलाहट और आखिरी पेटिया तथा बोरिया लादते तुर्कमानो की अस्पष्ट आवाजें आती ह।

अब ऊट का बच्चा ऊघता] हुआ सा नाच रहा है और ऊटनी कटीली झाडी को चबाती विचार-मग्न खडी आखें सकुचित किये आग को देख रही है।

गरमी और खामोशी ऐसी है कि न सोने की इच्छा होती है न बाते करने की। ऊटो का कारवा रवाना हो चुका है और कदीम की काली झाडियों के पीछे खो चुका है। ऊटनी और उसके पीछे पीछे उसका बच्चा सबसे आखिर मे रवाना होते ह। बच्चे की पतली, लबी, कमजोर टागें हर कदम पर डगमगाती ह और वह डर कर उछल पडता है।

रात की पूण निस्तब्धता किनारे के पास कभी कभी नदी मे किसी चीज के गिरने की जोरदार आवाज से ही भग होती है। यह पानी द्वारा काटे गये किनारे के टुकडो के गिरने की आवाज है। और उसके बाद और गहरी निस्तब्धता छा जाती है।

चाद की सुनहरी किरणो से आलोकित बजनी हरे आसमान मे ऐसी कोमलता और शाति छायी है कि अनचाहे ही छायादार तुर्कमानी बाग याद आ जाते ह, जिनमे रात के फूलों की खुशबू बसी होती है और छोटी छोटी नहरो की अदृश्य धाराए अपनी मुलायम आवाज मे गाया करती ह।

हमारे आसपास कहीं कोई बाग नहीं है। बजर जमीन से धूए जसी तेज, कुछ कडवी सी, अस्पष्ट और अज्ञात गधें ही आ रही ह। आग बुझ चुकी है। सफेद राख की परत ने उसे ढक लिया है। कभी कभार बचे खुचे

कोयलो के चटकने की मद आवाज़ अवश्य सुनायी दे जाती है। सोने का
समय हो गया है।

हम सब अपने कामचलाऊ तबू मे लेट जाते ह। शीघ्र ही हर किसी
की आखें मुद जाती ह। कहीं दूर से गीदडों के रोने की पतली, बच्चों
जसी सुबकती आवाजें आ रही ह सिर्फ बुझे हुए अलाव के पास एक
ऊचे कद का नौजवान तुरमान अधेरे मे काले खभे जसा चुपचाप, सिर
खडा है। वह कुछ सोच रहा है या हमारी चौकीदारी कर रहा है, म कह
नहीं सकता अचानक किसी जोरदार आवाज से म जग जाता हू। मुझे
लगता है कि जसे चारो तरफ से कोई सूखा झरना हम पर टूट पडा है।
म झटके के साथ किनारे होता हू और अपनी ओर आती चिंगारियों की
बौछार के विचित्र से उजाले मे देखता हू कि यह मस्तूल, जिस पर हमारा
तबू टिका था, गिर गया है और दीवारों का काम करनेवाले पाल ने हमारे
सभी साथियो को ढक लिया है। वे टोकरी में बद केकडो की तरह उसके
नीचे छटपटा रहे थे। म उन्हे आवाज देने के लिए मुह खोलता हू, पर
मुह मे गीली रेत भरी हुई है। मेरा चेहरा, कान और सिर भी रेत से
सने ह। हाथ को हाथ न सूझनेवाले अधेरे मे, जो कभी दूर क्षितिज के पास
चमकती बिजली से और कभी हम पर झपटती लबी-लबी चिंगारियों से
खडित हो जाता था, कुछ सिसकार रहा था, खौल रहा था।

पाल के नीचे से साथियो को निकलने मे मदद करने के लिए झुका
हुआ तुरमान चिल्लाया "अफगानी हवा!" मगर आधी के शोर मे उसकी
आवाज डूब गयी।

हमारा बहुत पहले का बुझा हुआ अलाव छोटे से ज्वालामुखी की तरह
चिंगारिया छोड रहा था। आधी ने ठडे, बुझे पडे कोयलो मे आग को फिर
दहका दिया था और वह चिंगारियो की बौछार करती सारी स्तपी में फल
रही थी।

यह दक्षिण से आनेवाली अफगानी हवा थी, सिमूम की तरह गरम
और नम, निमम और घातक। ज्यो ही हम रेत की मार से अपने सिरों
को बचाते हुए खडे हुए, त्यों ही याद आया कि नाव को भी बचाना है।
उसके बिना तो आफत हो जायेगी। मस्तूल गिरने से जिन दो आदमियों
को हल्की सी चोटें लगी थीं, उन्हें जमीन पर पडा छोडकर हम आधी की
थपेडों से बचने के लिए जमीन पर झुकते हुए नदी के तट की ओर भागे।

विन नदी की जगह पर क्रुद्ध, उफनता और आसमान तक झाग उछालता विस्तार नजर आया। रेत के ढेर के नीचे छिपे मस्तूल से बधी नाव रेत से भरपूर और हवा द्वारा मथे जा रहे पानी के सफेद उफान मे ऊपर नीचे फेंकी जा रही थी। हमने उसे और नजदीक खींचा और पहले से और कसकर बाध दिया। हमारे परो के नीचे से कुछ फडफडाता और कराहता हुआ उडकर फिर मस्तूल के पास गिर पडा। यह हमारी मुर्गियां थीं, जो आधी के कारण सकते मे आ गयी थीं और हवा के वेग द्वारा मस्तूल के चारो ओर, जिससे वे बधी हुई थीं, फेंकी जा रही थीं।

हमने शेष समय यहीं बिताने का फैसला किया, क्योकि बोरियो और बक्सो की दीवार तूफान से हमारी रक्षा कर सकती थी। रेंगते हुए हम अपने पुराने पडाव तक पहुचे, पर तभी आधी का प्रकोप कुछ शात हुआ और बिजली की गरज चमक के साथ ठडी, रेत मिश्रित मूसलाधार बारिश शुरू हो गयी। बिजली के बजनी हरे उजाले मे नदी, स्तेपी और किनारा जगमगा उठते थे। बादलो से भारी, अधेरे आसमान मे चाद का कहीं कोई निशान न था।

शात पडी हुई धरती से टकराती बिजली के बडे बडे बूमरेंगो की बेल गाम निममता और किनारो तथा नदी को आप्लावित करती बेइतहा बारिश के ऊधम ने हमे चारो ओर से घेर लिया था। हम बुरी तरह भीग गये थे। हम चल नहीं रहे थे, बल्कि परो तले जमीन न पाकर उस प्रलय कारी बाढ़ मे तर रहे थे। फिर भी जसे तसे हमने बोरियो और बक्सों की दीवार पर पाल तानी और उसके नीचे रेतीली ढलान से चिपक कर बठ गये। ठड के मारे हमारे दात किटकिटा रहे थे। कपडे सभी गीले हो गये थे। हम एक दूसरे से सट गये और प्रकृति के इस तमाशे के खत्म होने का इतजार करने लगे।

बारिश का जोर किसी भी तरह कम न हो रहा था। हमारे ठीक सामने नदी पागल की तरह [अपनी फेनिल लहरें उछाल रही थी। बक्सो के बीच की दरारों मे रात बार बार बिजली की चमक से आलोकित हो उठती थी। फिर भी हम जसे-तसे अपने पर क़ाबू पाने मे सफल रहे और यहा तक कि सो भी गये। लेकिन कुछ घटे बाद जब आधी का प्रकोप स्पष्टत शात हो गया, तो किसी को न जाने क्या सूझी, कि बाहर की झलक लेने के लिए पाल का छोर ऊपर उठाने लगा। उसका ऐसा करना था कि रात

मे उसके ऊपर इकट्ठा हुआ सारा बरफ जसा ठडा पानी सोये हुए लोगो पर ऐसे दुर्भावपूर्ण शोर के साथ गिरा कि सब के सब एकाएक चौंककर उछल पड़।

हम सब मानो किसी के हुक्म पर एक साथ बाहर निकले। सुबह हो गयी थी। आसपास हर चीज आधी के कारण काफी क्षत विक्षत हो गयी थी। रात भर झकझोरे जाने के बाद आमू दरिया अभी तक शात नहीं हुआ था, उसकी ऊची ऊची गदली लहरें एक दूसरे से टकरा रही थीं और अपने अस्तव्यस्त सिरों को किनारो पर पटक रही थीं। हर तरफ गड्ढा से मटमला, रेतीला पानी चमक रहा था। आधी से पिटी हुई कदीम की झाडिया बहुत दयनीय लग रही थीं। हमारे अलाव की जगह पर कीचड ही कीचड हो गया था। गीली चीजें किनारे पर जगह बजगह बिखरी पडी थीं।

हम कपडे बदलने लगे। जिसको जो भी सूखा कपडा—कबल, चादर, बरसाती, नमदे का टुकडा, धूल से बचने का कोट, आदि—मिला, उसने वही ओढ लिया।

कुरान के चौहत्तरवे सिपारे मे एक जगह पर लिखा है "चाद, बीतती रात और नजदीक आती भोर की कसम, दोजख एक सबसे तकलीफदेह जगह है।" इस समय हमारे चारो ओर ऐसा ही दोजख—रेतीला दोजख—था, जिससे बढकर तकलीफदेह और कुछ नहीं हो सकता था।

लबादे ओढकर हम नाव पर सामान लादने लगे। हमने उससे पानी उलीचा, अपने भीगे कपडे सूखने को टागे, नाव पर मस्तूल गाढ़ा और पाल ताना, ताकि पूरी तरह उजाला होने तक का वक्त कट सके और हिलते-डुलते, काम करते हुए ठड भी न महसूस हो। नदी की तरफ से बेहद ठडी हवा बह रही थी। हमने वोदका पी। ठड के मारे हम उसका स्वाद भी महसूस नहीं कर पाये। आग फिर जलायी गयी। मगर उसके भरपूर लपटें छोडने तक आसमान मे गीले, भारी बादल छटने लग गये। उनके किनारे भोर की सशक्त लालिमा से आलोकित थे और कुछ ही क्षण बाद नम, लाल और बादलो को तितर बितर करता सूरज क्षितिज के ऊपर झाक रहा था।

लालिमा के टुकडे आमू दरिया की ऊची ऊची लहरो से खेलते हुए दूर दूर के रेतीले टीला तक फल गये। हमने भी प्राचीन यात्रियो की तरह जीवन के दाता सूय भगवान के अभिवादन से अपने ठड से अकडे हुए हाथ आगे फला दिये और बदन में गरमी लौटती महसूस कर रेतीले टीलो पर नाचने लगे।

हल्के नीले, धूप खिले ग्रासमान तले ग्रामू दरिया की महान धारा हमे फिर बहाये लिये जा रही है। दोनो तरफ रेतीले किनारे खामोश खडे ह, जो इतने ऊचे ह कि पजो के बल खडे होकर भी नहीं देखा जा सकता कि वहा, उनके ऊपर क्या है। वहा से बिना कोई ग्रावाज किये रेत फिसलती हुई नदी मे गिरती है, किनारे के छोर से खिसकी हुई रेत पहले निचले कगार पर गिरती है, वहा से कुछ ग्रौर रेत साथ लेती है ग्रौर ग्रागे बह चलती है ग्रौर इस तरह नदी की मुख्य धार मे रेत की ग्रनगिनत धारें मिलती-बहती रहती ह।

ग्रचानक हमे प्रकाश से ग्रालोकित क्षितिज की पृष्ठभूमि पर किसी जगली जानवर की छाया दिखायी देती है। वह पास ग्रा गया है ग्रौर ग्रब ग्रच्छी तरह देखा जा सकता है। यह रेगिस्तानी भेडिया है। वह गरम रेत मे पजे गहरे गाडता भारी कदमो से चल रहा है। उसकी पुराने, बदरग बालो वाली पीठ ग्रौर ग्रदर को धसी हुई बगले दिखायी देती ह। वह ग्रपनी लबी, मटमले लाल रग की जीभ को निकाले हुए है ग्रौर जोर जोर से हाफ रहा है। ग्राखें नदी को नहीं देख रही ह। लगता है कि उसे कोई हडबडी नहीं है। नदी की ग्रोर से उसे कोई खतरा नहीं है। हम चिल्लाते ह, पर वह गरदन भी नहीं मोडता। कोई ग्रपने को नहीं रोक पाता ग्रौर गोली दाग देता है। वह बगल से निकल जाती है, लेकिन ग्रावाज सुनते ही भेडिया यात्रिक तेजी के साथ गरदन मोडता है, एक क्षण के लिए ग्रसमजसभरी नजरो से हमे देखता है ग्रौर काले धब्बोवाली ग्रपनी गहरी भूरी टागो को कठिनाई से उठाता हुग्रा चलना जारी रखता है।

हम सियारा की माद की बगल से गुजरते ह। यह वह जगह है, जहा शामो को बस्तियो के पास पतली, फटी ग्रावाज मे हुग्रानेवाले ये जगली ग्रावारा रहते ह। पानी की सतह से कुछ ही ऊपर रेतीले कगारो मे उनकी खोहे बनी हुई ह। कगारो की छाह मे पजे पर पजा रखे, रात भर भटकने से थके सियार सो रहे ह। उनकी मादाए पनघट पर झगडती ग्रौरतो की तरह पानी के पास खडी झगड रही ह। हम उनके मुह बनाने, कूदने ग्रौर छोटी छोटी गुस्साभरी झडपो पर ठहाका लगाकर हसते ह, मगर वे हमारी तरफ कोई ध्यान नहीं देतीं। उनके बच्चे कलाबाजिया खाते हुए हड्डियो के साथ खेल रहे ह।

अचानक आसमान से बडी तेज चीखें सुनायी देती है। पहले हम नहीं समझ पाते कि क्या हो रहा है। कौओ का बहुत बडा झुण्ड उल्टा काला पिरामिड बनाये हुए तरह-तरह के आश्चयजनक खेल कर रहा है। वह सतत गतिशील है और हर सेकण्ड सबसे नीचे का कौआ एकाएक ऊपर उठकर पिरामिड की सबसे ऊपरी पात मे आ जाता है। हम रेगिस्तान के ऊपर इस आश्चयजनक दृश्य को देखते है और अचानक पाते है कि कौए एक बडे से बाज का पीछा कर रहे है। हमारे सामने अच्छी खासी हवाई लडाई छिड जाती है। उनकी मार्चाबदी कुछ ऐसी है कि ये पान की तरह दुश्मन पर टूटते है और हर पासवाला ऊपर से उसपर चोच से वार करता है। वार सफल रहे या असफल, वह लडाई से हट बाहर की तरफ उडते हुए फिर पात मे आ जाता है और अपनी अगली बारी का इतजार करता है। बाज पखो से सिर ढककर कहीं किनारे की तरफ भागता है, पर चूकि कौओ का झुण्ड चुबक की तरह उसके पीछे होता है, वह उनके वारो से बच नहीं पाता। केवल कभी-कभी ही वह आख पर से पख हटाकर देख पाता है कि किस तरफ उडना है। कौओ की काव काव और पखो का शोर सारे आसमान को भर लेता है। लगता है कि बाज कौओ को नदी के दूसरी तरफ खींच ले जाना चाहता है।

लेकिन नदी के बिल्कुल नजदीक ही एक टीले के पीछे से एकाएक छोटी सी चीख के साथ बाज की मादा उसकी तरफ उड पडती है, मानो कह रही हो "सभले रहो, म आ रही हू।" वह कौओ के झुण्ड मे खलबल नहीं मचाती, बल्कि उनसे काफी ऊपर उठकर जोर से चीखती है और इतने वेग से उनपर इस तरह आडे टूट पडती है कि काला पिरामिड दो हिस्सो मे बट जाता है। ज्यो ही वह उसके एक हिस्से पर हमला करती है, त्यो ही बाज भी, जो नीचे खुली जगह पर आ गया था, एकाएक ऊपर उठता है और वहा से कौओ के गिरोह के दूसरे हिस्से को, जो मादा बाज के हमले के बाद अभी तक सभल न पाया था, भेदने लग जाता है।

अब कौओ की शामत आ गयी है। हवा काले परों से भर जाती है। इस काले भूरे बादल मे लाल खुर्शडिया की तरह उडते हुए बाज कौओ पर एक क बाद एक चोट करते ह, जो अपनी व्यूहरचना भग हो जाने के कारण

अब तितर बितर हो गये ह और इतनी हताशा के साथ चिल्ला रहे ह कि मानो कोई उनके टुकडे-टुकडे कर रहा हो।

सारे गिरोह मे से सिफ कई छोटे छोटे दल ही बाकी रह गये ह, जो भागकर बचने की फेर मे ह। बाज कभी ऊपर से और कभी नीचे से उनपर हमला करते ह और ये काले ढेले फिर बिखर जाते ह, फिर चीखने लगते ह और हवा फिर नन्हे-नन्हे काले परो से भर जाती है, जो चक्कर काटते-काटते गरम रेत पर आ गिरते ह।

हम किनारे की तरफ बढते ह और खडे रेतीले कगार पर चढ़कर ऊपर पहुचते ह। हमारे सामने वसतकालीन रेगिस्तान फला है—जीवन से परिपूण, हवा मे डोलती हुई झाडिया, हरी घासे, खिले हुए ट्यूलिप और फारगेट-मी-नाट के फूल। नजदीक से एक खरगोश अपने लबे बजनी कानो को पीठ से सटाये और आखें फाडकर देखते हुए ढलान पर भाग जाता है। उसके पीछे पीछे दूसरा खरगोश भी उछलते हुए भाग रहा है। जहा-तहा छिपकलिया भी भागती नजर आती ह। कछुए न जाने कहा, एक ही दिशा मे रेंग रहे ह। उनकी सख्या बहुत अधिक है, रेगिस्तान उनके काले और रहस्यमय चित्तियोवाले खोलो से भरा पडा है।

कुछ हफ्ते बाद ये सारी की सारी घास, सारे के सारे फूल मुरझा जायेंगे। लेकिन इस समय हम नदी के किनारे पर खडे रेगिस्तान की एक ऐसी अनिवचनीय व्यापकता, मधुरता अनुभव कर रहे ह, जो न सिफ अत्यन्त काव्यमय है, बल्कि अगर खानाबदोशो की दृष्टि से देखा जाये, तो किसी हरित वनखडी या खेता और पेडो के झुरमुटो से ढकी घाटी से भी ज्यादा आवश्यक है।

और नीचे आमू दरिया का चौडा पाट फला है। उसमे मटमली लहरें ऐसे हिलोरें ले रही ह, मानो वे कोई जानदार चीज हो। सूरज की किरणें उन्हें भेद रही ह। मेरे साथी अपने को रोक नहीं पाते और ढलान पर नीचे दौड पडते ह। रेत की दुनिया छोड कर वे पूरी शक्ति के साथ पानी की हिलोरें लेती दुनिया मे कूद जाते ह, कुछ क्षण बाद उससे बाहर निकलते ह और पानी की शीतलता और दुपहरी की गरमी का आनन्द लेते हुए मछलियो की तरह फिर उस पीले से पानी मे खो जाते ह

प्राय शामो को हम किनारे पर आ जाते थे और रात वहीं बिताते थे। जब पूरनमासी की रात आयी, तो हमारी नाव पर बाकायदा बहस सी छिड गयी। कुछ लोग जाकर कठोर जमीन पर सोना चाहते थ, तो कुछ को नाव मे ही सोना पसद था। बहस देर तक चलती रही। नाव अपनी सामान्य चाल से बहे जा रही थी। हमारे तुर्कमान दोस्त लट्ठो से नाव को धकेलना रोके बिना बहस के खत्म होने की धय से प्रतीक्षा करते रहे। न भारी चप्पू को चलाते हुए कप्तान ने ही इस सारी जोशीली बहस मे कोई हिस्सा लिया।

आखिरकार जीत उनकी हुई, जो नाव पर ही रात बिताना पसद करते थे। अपने प्रस्ताव के पक्ष मे उन्होंने सबसे बडा तक यह दिया कि नाव पर न सिर्फ नींद अच्छी आती है, बल्कि साथ ही रात भर सफर भी जारी रखा जा सकता है। इस तरह हम चारजोऊ कितनी जल्दी पहुच जायेंगे!

सक्षेप मे, तय यही हुआ कि किनारे की तरफ बढे बिना सारी रात सफर जारी रखा जाये। ज्यो ही कप्तान को हमारे फसले के बारे मे मालूम हुआ, उसने अपने साथियो से कुछ कहा और उसके बाद जो घटा, वह हमारे लिए अप्रत्याशित था। तुर्कमानो ने अपने चप्पुओ और लट्ठो को समेटकर रख दिया और एक दूसरे से सटकर लेटे हुए गहरी नींद सो गये, ऐसी गहरी, निश्चिन्त नींद, जो दिनभर मेहनत करनेवालो को ही नसीब होती है। कप्तान ने उनका अनुकरण किया और भेड की खाल के पुराने कोट को ओढकर सो गया। लेकिन जो जगह उसने चुनी, वह मस्तूल के पास थी, जिस पर हमारा पैबददार पाल चीथडे की तरह लटका हुआ था।

हमारी समझ मे नहीं आ रहा था कि उन्होंने ऐसा क्यों किया। चालन चप्पू से मजबूती से बधी हुई चालक रहित नाव प्रवाह के साथ बह रही थी और उसके काले अग्रभाग से चीरा जाता पानी हल्के-हल्के सरसरा रहा था।

चाद धीरे धीरे उठकर बादलो की पहाडी के शिखर पर पहुच गया था और चारो तरफ सब कुछ उसके हरे उजाले मे नहा उठा था। ऐसा लगता था कि चादनी ने नीली चिंगारियाँ छोडनेवाली पीली हरी किरणों की इतनी भारी वर्षा की है कि उससे न सिर्फ नदी की लहरें चद्रकान्तमणि

जसी चमकने लगी ह, बल्कि आखें भी दुखने लगी ह। रोशनी से तपे चाद के बडे गोले को, जो मानो हमारी नाव को खींचे लिये जा रहा था, देख पाना तो इससे भी अधिक कष्टकर था।

हमारी नाव पिघले हुए पन्ने जसे चमकते भारी पानी मे बराबर आगे बढती जा रही थी। वह नदी के बीचोबीच थी, जिनके किनारे रगबिरगे कुहासे के कारण हमे दिखायी नहीं पड रहे थे। चारो तरफ असाधारण निस्तब्धता छायी हुई थी। कहीं से मीठी, नशीली महके आ रही थीं, जसे कहीं पास ही मे जिधा (एक प्रकार का जगली गुलाब–अनु०) फूला हुआ हो।

जोशीली बहस के बाद कोई भी मध्यरात्रि की इस खामोशी को भग करना नहीं चाहता था। सब लोग मनपसद जगह ढूढ़कर आराम करने लग गये। कुछ लोगो ने वही किया, जो नाविको ने किया था।

म सो नहीं सकता था। नाव की बाड से पीठ टिकाये बठा म देख रहा था कि कसे पानी हरी आग से जल रहा है और कसे फूले हुए जिधा की महक मुझे मस्त बना रही है, हालाकि मेरा दिमाग बेताबी से काम करता हुआ हर कोने मे, इस रात की हर हरकत मे पढना चाहता था, हर आवाज के पैदा होने को, रोशनी मे होनेवाली तब्दीलियो को और कालीन जसी घनी और मुलायम खामोशी मे रगो के बदलाव को समझना चाहता था।

नाव ने, जो धीरे धीरे आगे बढ़ती जा रही थी, एकाएक रुख बदल लिया और तेजी से दायीं तरफ बहने लगी। खामोशी से और विश्वास के साथ नदी को पार करते हुए वह रगबिरगे कुहरे मे भी दीखती जमीन की काली सी पट्टी की तरफ, जो अब बढने लगी थी, वही चली जा रही थी।

सामने नदी की रेती मे उगे जगलो की दीवार थी। ऊचे सरकडो के ऊपर चमकते हुए तारो से भरी रात के उजाले मे पापलर और ऐश के पेडो की चोटिया दिखायी दे रही थीं। आपस मे उलझे घने पौधो के अधकार मे कुछ नहीं दिखायी पड रहा था। किनारे के पास का पानी काला था। सरकडो की छाया हमारी नाव पर पड रही थी, जो तेजी से सीधे किनारे की तरफ बही जा रही थी। लगता था कि वह रेती के जगल मे पहुचकर खडी हो जायेगी। पर उसका आगे का हिस्सा ऊचे किनारे से टकरा जाता और वह पीछे हट जाती और तेजी से मुडकर नदी के बीच चली जाती।

पर बीच मे पहुचकर वह आगे नहीं जाती थी, बल्कि फिर नदी को पार करते हुए पहले की तरह, जब वह दायीं तरफ जा रही थी, विश्वास के साथ बायें किनारे की ओर बहने लगती।

कप्तान का काम अब नदी की धारा कर रही थी। इस सारी यात्रा मे आदिम युग की स्वच्छदता जसा कुछ था। हमारी नाव एक जिन्दा वस्तु की तरह रेती मे उगी झाडियो के करीब पहुच रही थी। सास रोके वह उन जीवो की तरह, जो इस रात को सो नहीं रहे थे और जिनकी सरसराहट और सास लेने की आवाज हमे झाऊ और चीय के बीच काले अधेरे मे सुनायी दे रही थी, सरकडो के झुरमुट मे घुस रही थी।

कहीं नींद मे चिडियो ने पख फडफडाये। कभी कभी नदी के उपर धीमी सी सनसनाहट गुजर जाती। कभी कभी किसी जबदस्त जानवर के भारी कदमो की आवाज भी सुनायी देती, जो सरकडो को रौंदता चला जा रहा था।

उसी तरह बायें किनारे से टकराकर हमारी नाव दायें किनारे की तरफ चलने लगती। बहाव उसे न पीछे फेंक रहा था, न आगे ही ले जा रहा था।

पूरी खुली आखो से मने नये झुरमुट की तरफ देखा, जहा कोई हरकत हो रही थी और शोर और फडफडाहट सुनायी दे रही थी। हमारी नाव का अगला हिस्सा धीमी आवाज के साथ उसे चीरता हुआ एकाएक पानी पीते जगली सूअरो के वडे से झुण्ड के बीच पहुच गया था। धुधली चादनी मे उनकी गीली, खुरदरी पीठें दिखायी दीं, उनकी धीमी सासे, खरखराना और नरम मिट्टी मे धसते भारी परो के चलने की आवाजें सुनायी दीं। उनके थूथन सफेद चिगारियो की तरह चमक रहे थे।

सूअरो ने नाव की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और पानी पीते रहे। वे सरकडो के बीच खडे थे, उनके पेट पानी को छू रहे थे और वे पानी पीने का मजा ले रहे थे। शायद हमारी नाव उन्हे एक अनजान, शातिप्रिय जानवर सी लगी, जिसकी गध से वे तनिक भी नहीं झुझलाये। नाव से गीली लकडी की गध आ रही थी और उनके इदगिद की हर चीज ऐसी ही गध छोड रही थी।

हाथ फलाकर म लाठी से पास खडे जानवर को छू सकता था, जो सिर उठाकर हमारी नाव को सूघ रहा था।

किनारे से टकराकर नाव फिर झुरमुट से दूर हटने लगी। शीघ्र ही सुअर झाड झखाडो के अधेरे मे गायब हो गये, मानो यह भी इस हरी रात मे देखे गये खुशगवार सपनो का एक सिलसिला हो।

इस तरह कई घटे हम छलकती हुई चादनी मे आगे बढते रहे। महान नदी की शक्तिशाली धारा हमे बहाये ले जा रही थी। लगता था कि वह ऊघती हुई अपने अधसोये हाथ से हमारी नाव से एक खिलौने की तरह खेल रही है।

अचानक नाव नदी के मध्य मे पहुचकर फिर किनारे की तरफ नहीं बढी, जसे कि उसने बहुत बार किया था। वह सीधे आगे बढने लगी और उसी क्षण किसी अप्रत्याशित शोर से, जो धीरे धीरे हवा मे भर गया, हर चीज काप उठी। हम मानो किसी ज्वालामुखी के मुह की तरफ बढ रहे थे। यह एक ऐसा दश्य था, जो अलिफलला की कहानियो मे होता है, जिनमें राहगीर एकाएक अपने को जिनो के घरो मे पाते ह। इस शोर से, जो इस हद तक बढ गया था कि उसमे बोलने की नहीं, बल्कि चिल्लाने की जरूरत थी, सब लोग जाग गये। नाविको की नींद भी खुली, पर उन्होंने नदी को देखा, शोर सुना और फिर करवट बदलकर सो गये। पर हम अब सो नहीं सकते थे।

हम नदी को देख रहे थे। इतजार था कि किसी भी क्षण नियाग्रा प्रपात की तरह की कोई चीज देखने को मिलेगी। और हम किसी गरजते हुए भयानक और बडे भवर मे फस जायेंगे।

अब हमारे चारो ओर हर चीज गरज रही थी। हवा कानो को फाड रही थी, अपने दूर के नारगी कुहासे से इस शोर को भेजते हुए किनारे गरज रहे थे, लगता था कि यह शोर नीचे नदी की तली से आ रहा है।

अब नाव सीधे नहीं बह रही थी। वह किसी अदृश्य भवर मे नाच रही थी। कभी उसका पीछे का हिस्सा आगे हो जाता, तो कभी वह मनमाने ढग से चक्कर खाने लगती, कभी वह दरियाई घोडे की तरह उठ जाती, तो कभी पहले की हालत मे आ जाती। उसके हर मोड से गहराइयो मे बडे बडे खभो की तरह कुछ टूट जाता था, और उसकी भारी और खौफनाक आवाज हम तक पहुच रही थी।

हम लोग नदी के सबसे खतरनाक हिस्से मे थे। ऊपर रात का जादुई उल्लासकारी सौंदय चमक रहा था, हरे और नीले कुहासे के पीछे छायी

लहरियादार घटायें, खामोश चादनी और बेचन तथा मदमस्त करनेवाली महके, जो अदश्य किनारो से आ रही थीं, हम घेरे हुई थीं।

नदी की सतह अत्यत विक्षुब्ध थी, पानी मे बड़ी बडी फेनिल लहरें उठ रही थीं, लेकिन वे कोई आवाज़ नहीं कर रही थीं। हवा का गजन इतना भारी और भयकर था कि हम अपने को कुछ उदास का महसूस करने लगे। हम भवरो मे चक्कर काट रहे थे और इन भवरो का कोई अत नहीं था। धीरे धीरे हम समझ गये कि हमारे नीचे टीले टूट रहे ह, नाव के चलने से नदी की तह मे रेतीली दुघटनाए हो रही ह।

हम लोग सास रोके, मुह बाये और अचभे के साथ पागल पानी के गज़बनाक चक्करा को देखते रहे। यह गिनना असभव था कि नाव ने एक ही जगह पर कितने चक्कर लगाये, कितनी बार उसे इधर उधर फेंका गया और उसके आगे के हिस्से को ऊपर उछाला गया। ऐसे मे अगर हमारे रास्ते मे खुश्की आ जाती, तो नाव का टुकडे टुकडे होना अवश्यभावी था।

पर जिस तरह हम अचानक ऐसी भयानक जगह मे फसे थे, उसी तरह अचानक ही यह सब खत्म भी हो गया। हमारे आगे शात पानी के ऊपर चादनी की धारिया तिर रही थीं। धीरे धीरे हमारे पीछे का भयानक शोर कम पडने लगा और फिर कुछ समय बाद बिल्कुल ग़ायब हो गया। हम फिर शात इलाके मे थे। हमारे लिए यह उतना ही आत्मीय, प्रिय और सुदर था, जितनी कि हरी, गम रात और फिर से क़रीब आते रेती के जगल। हमे लगा कि पापलर के पेड सरकडो के ऊपर से अपनी पतली, नुकीली चोटिया हिला हिलाकर हमारा अभिनदन कर रहे ह।

मेरी नज़र नाव के अगले हिस्से पर पडी। उस पर कोई काली सी चीज बठी थी। यह अपने इस्पाती रग के भूरे पखो को समेटकर बठा एक बडा स्तेपियाई उक़ाब था। उडते उडते वह थक गया था और नदी और हमारी काली, शात नाव का सहारा पाकर अब आराम कर रहा था। वह भी रात का हमारा साथी था। उसे भी उसी तरफ जाना था, जिस तरफ हमे।

और हम नदी की ज़िदा, आत्मीयतापूण ताक़त से खिचे आगे बढे जा रहे थे, उन दिनो की तरफ, जब हमे लगा कि सब ठीक होगा, जब हम भी वसी ही आज़ादी से सास लेंगे, जसे कि यहा इस हरी, मस्त कर देनेवाली दुनिया मे ले रहे ह, जो हमारे रास्ते मे अपने रगो, महका और

ग्रनुभवो की नयी नयी झलके पेश कर रही है और जिसकी सपदा और मर्मपूर्ण एव खूबसूरत उपहारो का कोई ग्रत नहीं

हम ग्रागे बढते जा रहे थे और हमे जिसे जो गीत ग्राता था जोर जोर से गाने की इच्छा हुई। पर ग्रगर हम देर तक और ग्रच्छे से ग्रच्छे गीत भी गाते, तो भी उनमे सबसे ग्रच्छा गीत खुद ग्रामू दरिया होता। हमारा प्यार और हमारी मजिल ग्रामू दरिया!

चलो फिर ग्रामू दरिया के किनारे चला जाये! ग्रच्छी सी नाव मे मन के मीत साथियो के साथ बठकर हरी रात मे उसके वासन्ती छटा से जगमगाते भव्य जलविस्तार मे दूर, बहुत दूर निकल पडें

चला जाये, दोस्तो!

१९५७

सिमोन-बोल्शेविक

मने लोगो से तरह-तरह की कहानिया, किस्से और पुराने जमाने की दास्ताने सुनी ह। म नहीं जानता कि वीर किसे कहते ह। पर म आपको एक किस्सा सुनाता हू।

म ओसेतियाई हू। हमारा ओसेतिया ऐसा है कि एक दिन, दो दिन, हफ्ते भर चलते जाओ, पहाड कभी खत्म नहीं होते। कहीं उनके पीछे जगल होते ह, तो कहीं बर्फ जमी होती है, कहीं पानी, कभी न रुकनेवाला पानी गिरता होता है, तो कहीं नदी नाले बहते मिलते ह, और वे भी इतनी तूफानी गति से कि लगता है पगला गये ह, एक दूसरे को सुन पाना भी कठिन होता है। किसी से मिलने जाना होता है, तो पहाड पार करो, दुकान जाना होता है, तो पहाड पार करो, मुर्दों को दफनाने जाना होता है, तो पहाड पार करो, नाच-गाने मे जाना होता है, तो भी पहाड पार करो। कहने का मतलब कि ओसेतिया मे रहना आसान काम नहीं।

किसानो के पास जमीन इतनी थी कि नमदे का लबादा फेंको, पूरी तरह से ढक जाये। और वह भी ठीक आसमान के नीचे, ऊपर पहाड पर। फिर हर तरफ गरीबी ही गरीबी। पत्थरो से बना घर बेहद ठडा। बीच मे जलती आग—हाथ भी सेको, खाना भी पकाओ। फर्नीचर के नाम पर छोटी सी मेज और तिपाई—एशियाई घरो की एकमात्र विलास की वस्तु। इस मवेशीखाने जसी जगह को छोड कर जायें भी तो कहा जायें!

हा, तो म भी पहाडी हू। मेरी जवानी के दिनो की बात है। म लिखना-पढना नहीं जानता था। मगर प्राय सोचता था कि रहना किस तरह चाहिए। क्राति आयी और उसके साथ-साथ गहयुद्ध भी शुरू हुआ। मने भी घोडा-बदूक लिया और आम लोगो की तरफ से लडने लगा। यह

बहुत कठिन लड़ाई थी। हर पहाडो पर, हर स्तेपी मे दुश्मन के भेड़िये, अधराष्ट्रवादी और सफ़ेद गाड बठे थे। व्लादीकाव्काज़ पर जनरल श्कूरो का कब्ज़ा हो गया था। उसने बेता खबायेव को ओसेतिया का हाकिम बनाया। वह बहुत कमीना आदमी था। वह गावो को जलाता, घरो को सूअरो की तरह भूसे से ढककर जलाता और गद्दारो की रिपोर्टें पढ पढकर खुश होता। हम इधर उधर बिखरे हुए थे, फिर भी भेडियों की तरह सफ़ेद गार्डों की नींद हराम किये रहते थे। उस साल सरदियो मे बरफ बहुत पडी। जगल, घर, रास्ते, सब बद हो गये। खबरें भेज पाना, आना-जाना कठिन हो गया। कुछ कहने के लिए मुह खोलते थे कि ऊपर पहाड से बरफ खिसकती दीखती। क्या करें, इस हिम बाधा को कसे पार करें? घोडे खडे हो जाते, मगर लडाई तो जारी रखनी थी। बेता खबायेव खुशी के मारे तालिया बजाता, शराब पीता, कि बोल्शेविक अब पहाडो मे तबाह हो जायेंगे और वसन्त तक किसी तरह जिदा नहीं बच पायेंगे।

म अपने एक साथी के साथ नदी को पार करने की जगह के पास खडा खबर लानेवाले की इन्तज़ार कर रहा था। दिन ढल आयी थी, पहाडो से आती गध से लगता था कि कोहासा घिरने ही वाला है और फिर बरफ गिरनी शुरू होगी। नदी जमी नहीं थी, और केतली मे उबलते पानी की तरह आवाज़ कर रही थी। पानी बुलबुले और झाग उगलता पत्थरो के बीच आगे पीछे होता बह रहा था। समझ मे नहीं आता था कि वह चाहता क्या है, क्यो नाहक बग़ावत सी करने पर तुला हुआ है।

उस तट से आनेवाले आदमी की प्रतीक्षा में मने चट्टान के पीछे पानी की ओर देखा और उसकी प्रचण्ड शक्ति पर हैरान हुआ—वह एक चट्टान का चक्कर पूरा करता तो दूसरी पर झपट पडता, पेडा-पत्थरो को बहा ले जाता, उन्हें पटकता, फेंकता और घाटी कराहती। मेरा मन उदासी से भर उठा। यह विचार उठने लगा कि वसन्त के आने तक बर्दाश्त नहीं कर सकूगा। सोचने लगा कि बेता खबायेव की मनोकामना पूरी कर दूगा, यानी मर जाऊगा।

तभी देखा कि एक ठूठ बहा चला आ रहा है। वह किसी भी तरह डूबना नहीं चाहता था। वह अपने गन्तव्य को भली भाति जानता था, इसलिए कभी छत की तरह लहर के सिर पर दौडता, कभी आगे-पीछे देखकर पत्थरो के बीच डुबकी लगा लेता और कुछ दूर जाकर फिर ऊपर

निकल आता। नदी उसे कभी सिर से तो कभी पर से खींचती, डुबोना चाहती, पर वह नहीं डूबता। कितनी दृढ संकल्पशक्ति थी उसमे! मने मन ही मन अपने से कहा "ऐ सिमोन, तुझे भी इस ठूठ की तरह तरना और बडे दिलवाला होना चाहिए और देख कि बदूक हर दम हाथ मे रहे! तू क्या भालू की तरह पजा चाटने के लिए घर जाने की सोच रहा है! तेरी जरूरत यहा है!" और एकाएक मेरी सारी उदासी खत्म हो गयी। अब यही चिता सता रही थी कि उस तरफ से साथी क्यो नहीं आ रहे ह? तभी देखा कि घाटी मे अधेरा होने लग गया है और उस तरफ से नदी के किनारे की ओर छ आदमी चले आ रहे ह।

नदी के पास आकर वे कुछ ठिठक गये। म समझ गया कि वे या तो इस नदी को नहीं जानते या फिर उन्हे घोडो पर विश्वास नहीं है। घोडे थक गये थे और फिर पानी बरफ की तरह ठडा था, इसलिए उसमे घुसते कुछ डर रहे थे। मने उस तरफ गौर से देखा, यह जानने के लिए कि ये लोग ह कौन। फिर सोचा कि छोडो, अपने आप पार करें नदी को। आवाज देने की कोई जरूरत नहीं। अगर दुश्मन होगे, तो डूबने का कोई अफसोस नहीं और अगर अपने साथी होगे, तो खुद ही आवाज दे देंगे।

घोडे नदी मे घुसे और शीघ्र ही पानी उनसे खेलने लगा। कुछ ठीक चले जा रहे थे, दो पिछड गये थे और एक की हालत डावाडोल थी–पानी उसे जिधर चाहिए उधर नहीं, बल्कि चट्टानो की ओर खींच रहा था। घोडा सभल नहीं पा रहा था और उसकी मौत अवश्यभावी थी। घोडो से भाप छूट रही थी, पर सवारो ने फिर भी आवाज नहीं दी। मने बदूक उठायी और एक पर निशाना साधा–मुझे लगा कि उसके गरम कोट के कधे पर फीतिया बनी हुई ह। मेरे साथी ने मेरी बदूक पकडकर कहा

"सिमोन, यह सबसे किनारे का आदमी, जिसका घोडा आफत मे पडा है, कहीं देबोला तो नहीं है?"

मने गौर से देखा। सचमुच, यह दबोला ही था।

"तब तो हमारे ही लोग ह, उम्रासील। आवाज दो उन्हें कि हम यहा ह!"

"देबोला, यह तुम हो क्या?" वह चिल्लाया।

और म भी चिल्लाया

"देबोला, यह तुम हो क्या?"

मगर वह हालांकि किनारे के नजदीक आ गया था, पर घोड़े को सभाल नहीं पा रहा था—पानी इतनी जोर से उन्हें खींच रहा था। फिर भी हमारी आवाज सुनकर उसने गरदन घुमाकर उसी तरह चिल्लाते हुए कहा

"सिमोन! उप्रासील! ये क्या तुम हो?"

हम चट्टान के पीछे से निकल आये, घोडो पर सवार हुए और फिर चिल्लाये

"हा, हा, हम ह!"

बाकी घुडसवार तो सकुशल निकल आये, पर देबोला लगता था कि अभी उलटा, तभी उलटा। बस एक मिनट और सभले रहने की जरूरत थी। हम अपने घोडो के साथ नदी की तरफ लपके। म और एक, न जाने कौन, जवान। वह अभी अभी पानी से निकला था कि एक बार फिर नदी मे कूद पडा। नदी के गरजने का शोर इतना अधिक था कि सास लेना भी कठिन लग रहा था। हमने दो तरफ से देबोला के घोडे को लगाम पकडकर खींचा, पर उसके पर बुरी तरह लडखडा रहे थे। खर, किसी तरह उसे अपने दो घोडो के बीच दबाकर पूरी ताकत से किनारे की ओर खींचा। देबोला का चेहरा पीला पड गया था। सिर घुमाते हुए वह यही बडबडाता जा रहा था "मा हजर, मा हजर," यानी "हाय म मरा! हाय म मरा!"

ऊपर पहाड पर एक गाव मे पहुचकर गरमाने के लिए आग के गिद बठ गये। मने नजर घुमाकर देखना चाहा कि मेरे साथ नदी मे कूदनेवाला, निर्भीक, दाढी-मूछ रहित चेहरे और आग सी आखोवाला वह नौजवान कौन था, और वह हसते हुए मुझसे कहता है

"क्या नहीं पहचाना, सिमोन? म त्सगोलोव हू। चाहो तो मुझे गियोर्गी पुकार सकते हो।"

"ठीक है," मने कहा। "और अब, खूब खाओ, पियो। यह तो तुमने ठीक किया कि नदी मे कूद पडे। पर पहले यह बताओ, कि तुम हो कौन?"

"म कैरमेनिस्ट हू, क्रातिकारी हू, लोगो की आजादी के लिए लड रहा हू," उसने जवाब दिया, "और ख्रिस्तियास्की गाव का रहनेवाला हू।"

तभी देबोला आ गया और जान बचाने के लिए बडे-बडे और मीठे शब्दो मे, हमारा हाथ दबाते हुए धन्यवाद देने लगा। और फिर गियोर्गी को मेरी ओर दिखाते हुए कहा

"यह सिमोन, हमारा आदमी है।"

"तो ठीक है, बोल्शेविक भाइयो," गियोर्गी ने कहा, "पहले कुछ आराम कर ले, फिर काम की बात करेंगे।"

उस दिन से म प्राय त्सगोलोव को देखता। म जानना चाहता था कि वह है कौन? हम दोनों जवान थे पर फिर भी एक दूसरे से काफी भिन्न। उस जसी आग मुझ मे नहीं थी। फिर वह पढ़ा लिखा भी था, जबकि म निरक्षर था। उसकी आखें पूरी तरह खुली रहती थीं, जबकि म बाद की तरह उन्हें सकुचित कर चुपके से देखने का आदी था। लेकिन म समझता हू कि नदी मे कूदने मे उसे मुझसे अधिक कठिनाई हुई थी। वह शहरी और पहाड़ो के लिए पराया आदमी था। बातें बुद्धिमानो जसी करता था, जबकि मेरी दिमागी दुनिया घोडे को चाबुक मारकर सरपट दौडाने और पीछे न देखने तक ही सीमित थी।

एक बार हम सफेद गार्डों पर हमला करने के लिए घात लगाये बठे थे। तभी एक बूढा आया और इधर उधर देखकर सीधे त्सगोलोव के पास गया—मानो पहचान लिया हो कि वही मुखिया है—और उससे पूछा

"लडोगे? सफेद गार्डों से लडोगे?"

"लडूगा," त्सगोलोव ने जवाब देता है। "और तुम?"

साफ दीख रहा था कि उस फटीचर से बूढे की उम्र सौ साल से कम न होगी।

"म भी लडूगा। मुझे बदूक दो, म गोली चलाऊगा।"

"दादा, जाओ, घर जाकर चन से सोओ। लडाई तुम्हारा काम नहीं।"

बूढ़ा उसके और करीब आया और उसका हाथ पकडकर आग की भाति कापते हुए बोला

"म सोना नहीं चाहता। मुझे तकोयेव ने भी सोने भेजा था, पर म लडा। तकोयेव ने मुझे बदूक नहीं दी, फिर भी म लडा।"

"बदूक के बिना कसे लडे?"

"म ऊपर पहाड़ पर चढ़ा और वहा से दुश्मन के सिर पर पत्थर बरसाये। देखा, इस तरह लडा था!"

तब त्सगोलोव ने बूढे का हाथ पकडा और फिर कहा

"दादा, तुम घर जाओ। तुम्हारे सुखी बुढ़ापे के लिए हम लडेंगे। तुम चन से मरोगे और अंतिम घडी तक घी खिचडी खाओगे।"

मगर दादा ने सिर हिलाते हुए कहा
"बदूक नहीं दोगे? मुझे नहीं चाहिए घी खिचडी! म उन पर पत्थर बरसाऊगा। म बोल्शेविक हू और तू मुझे भगा रहा है। इसके बाद तू हमारा नहीं है और होगा भी कसे!"
त्सगोलोव ने हसते हुए बूढ़े को बाहो मे लेकर चूम लिया। मने इस घटना का जिक्र इसलिए किया, क्योकि आप जानते ह कि उन दिनो बोल्शेविको को बदनाम करने के लिए जानबूझकर कसी-कसी अफवाहें फलायी जाती थीं। एक दिन मेरे पास एक बूढा आया, जिसमे बस इतनी ही ताकत बाकी थी कि लाठी के सहारे खडा रहे, और पूछने लगा
"सिमोन-बोल्शेविक कहा रहता है? मुझे उसे दिखा दो!"
"दादा, म ही हू सिमोन," मने कहा। "हमारी पार्टी मे भरती नहीं होओगे? एकदम जवान बन जाओगे!"
वह कुछ डगमगाया, फिर हाथ और लाठी हिलाते हुए मेरी तरफ देखा और कहा
"जरा अपनी टोपी उतारना!"
मने टोपी उतार दी। उसने सिर पर हाथ फेरते हुए बालो मे उगलिया फसायीं और एकाएक नाराज स्वर मे कहा
"मुझसे झूठ क्यो बोलते हो? शम नहीं आती बूढे आदमी पर हसते हुए? तुम भी कोई बोल्शेविक हो?"
"सच्चा बोल्शेविक हू, दादा। सिर से पर तक। मेरे पास घोडा और बदूक भी बोल्शेविको के ह।"
"तो तुम्हारे सींग कहा ह?" उसने बार बार गौर से देखते हुए पूछा।
"कसे सींग? सींग तो गाय-बलो के होते ह! हम और तुम तो आदमी ह।"
"मुझे लोगो ने कहा था कि बोल्शेविको के सींग होते ह और वे आदमियो की तरह नहीं दीखते," दादा ने कहा। "पर तुम तो आदमियो जसे लगते हो और तुम्हारे सींग भी नहीं ह।"
ऐसे थे हमारे यहा के बूढ़े! हमारे बूढ़े लोग तरह तरह के होते थे और जवान लोग भी तरह तरह के पर म त्सगोलोव की बातें सुनकर बहुत चकित होता था। एक बार हम नदी के किनारे एक झोपडी मे बठे थे। नदी की प्रचण्डता का म बखान नहीं कर सकता। हमारी बातें उसके कणभेदी शोर मे डूबी जा रही थीं। म त्सगोल्तेव से पूछता हू

"गियोर्गी, तुम तो बडे जानकार हो। मगर यह बताओ कि नदी में इतनी ताकत क्या है? देखो, वह पुल काटती है, तो साथ मे घोड, गाडी, नमदे के लबादे, तलवार और औरत को भी बहा ले जाती है। भला दिन रात इसमे इतनी शक्ति छोडने की क्या जरूरत थी? यहा तक कि ठड और बरफ भी उसका कुछ नहीं बिगाड पाते—उल्टे वही बरफ को तोडकर बहा ले जाती है।"

यह मेरी तरफ देखता है और कहता है

"नदी की ताकत लोगो की सेवा मे है, सिमोन।"

"तुम भी क्या बात कर रहे हो, गियोर्गी! अरे वह बुरे लोगो के काम आती है। देखो, डाकू या सफेद गाड किसी को मारते ह, तो नदी मे फेंक देते ह और वह, जसे कि रूसी साथी कहते ह, उसका नामोनिशान बाकी नहीं छोडती। और जब बारिश होती है या बरफ गलती है, तब उसकी ताकत को देखा है? वह चट्टाना, झोपडियो, मवेशियो, लोगों, सब के लिए काल बन जाती है। नहीं, गियोर्गी, तुमने ठीक नहीं कहा!"

उसने फिर मुझ पर देखा और कहा

"अगर इस पर बाध बनाकर सारे पानी को रोक दिया जाये और फिर कुछ खास तरह की मशीनो मे छोडा जाये, तो सारा ओसेतिया बिजली की रोशनी से जगमगा उठेगा। म शायद उस दिन तक जिदा न रह सकू, पर सिमोन, जरा समझने की कोशिश करो, म तुमसे सच कह रहा हू। तुम खुद देखोगे, तुम देखोगे कि कसे अनसधे घोडे की तरह इस नदी को भी काबू मे कर लिया जायेगा और वह जनता की सबसे बडी खिदमतगार बन जायेगी।"

सब चुप हो गये। म कुछ डर सा गया था। अगर भसे और घोडे भी जहा छिछला पानी है वहा जाने से डरते ह—गहरे पानी की तो बात ही क्या, वह निश्चित मौत है—तो वे लोग कसे होंगे, जो इस पानी से जूझेंगे?

गियोर्गी एक बार फिर मुस्कराया।

"तुम, सिमोन, तुम खुद इस पानी से जूझोगे! मेरा मतलब इसी नदी से नहीं है, नदी कोई भी हो सकती है। और म जानता हू कि तुम इस सघर्ष के लिए अपने को पूरी तरह अर्पित कर दोगे।"

मने नदी की ओर देखा और मेरा सिर चकराने लगा।

"सफेद गार्डों के साथ तो म आखिर तव लड़ूगा," मने दढ स्वर मे कहा, "पर पानी के साथ कुछ सावधान रहना होगा।"

पहले गियोर्गी और फिर दूसरे भी मुझ पर हस पड़।

"और यही नहीं," उसने कहा, "दानो ओसेतिया, एक जो पहाड़ के उस पार है और एक जो इस पार है, दोना एक हो जायेंगे। तब सरदियो मे लिग्निस्तियास्की से तिसखिवाली जाना होगा, तो सड़क और सुरग से जाया करोगे।"

"गियोर्गी, छोडो भी ये कल्पना की उडानें। यह उनका समय नहीं है," मने कहा। "बेशक किताबो मे बहुत कुछ लिखा हो सकता है, पर सभी कुछ तो एक घटे मे नहीं कहा जा सकता।"

"नाराज क्यो होते हो?" गियोर्गी ने कहा। "जानते हो, पहाड के उस पार के ओसेतियाई साल मे पाच महीनो के लिए भी अनाज मुश्किल से पदा कर पाते ह और बाद मे बठे-बठे आग को ताकते रहते ह। पकाने के लिए कुछ होता ही नहीं। ऐसी ठड मे बरफ के ऊपर से खुद अपनी पीठ पर अनाज ढोकर लाना पडता है। मगर किस कीमत पर? रास्ते मे लोग मरते ह, घोडे मरते ह। यह किताब मे नहीं लिखा हुआ है, यह सच है और कोई भी कह सकता है कि यह सच है। बोल्शेविक कल्पना के भरोसे नहीं जीते। हम ओसेतिया को आजादी और रोटी देना चाहते ह, न कि सिफ वह कागज, जिसमे आजादी और रोटी क बारे मे लिखा हुआ है। तुम ही बताओ, तुम क्या उस कागज के लिए अपनी जान की बाजी लगाये हुए हो? नहीं, न?"

म चुप बठा सोच रहा था "नहीं, वह दिन शायद ही आयेगा, जब म इस शक्तिशाली नदी से जूझूगा। और फिर म जानता भी तो नहीं कि कसे जूझना है—म ज्यादा से ज्यादा बदूक चलाना जानता हू, जो नदी से जूझने के लिए कोई मतलब नहीं रखता।"

त्सगोलोव हमे छोडकर अन्यत्र चला गया, पर म हर समय उसी के बारे मे सोचता था। म सिफ एक छोटा सा आदमी था—बिल्कुल ककर की तरह, और चारा ओर इतने बडे बडे पहाड खडे थे कि सूरज भी नहीं दिखायी देता था। ऊपर से यह भयकर सरदी। लेकिन, सच कहू, म हिम्मत नहीं हारा। त्सगोलोव जसे बुद्धिमान नौजवान से मिलकर म बहुत खुश था। पर उसने जब यह कहा था कि म तो यह सब देखने के लिए

जिन्दा रहूंगा, पर वह न रहेगा, तो मुझे बहुत दुख हुआ था। क्यों कहा था उसने यह? मैने जब यह बात साथियो से कही, तो वे भी बहुत हैरान हुए थे और मुझे कुछ न कह पाये थे। इस तरह हम दिन रात रात दिन भेडियो की तरह सफेद गार्डों से लडते रहे। जहा भी उन्हे कमजोर पाते, उन पर चोट करते, ताकि वे समझ जायें कि हम वसन्त के आने तक हाथ पर हाथ धरे नहीं बठे रहेगे, कि हम अभी जिन्दा है और हमारे दात मौका मिलते ही काट खाने को तयार है।

एक बार हमने एक जासूस पकडा। यह एक धनी किसान था। मैने उससे पूछा

"क्यो तुम्हारा बेता खबायेव मजे मे है, उसे गम है? चन की नींद सोता है न?"

"वह तो मजे मे है और चन की नींद सोता है और सपने मे तुम्हे फासी के तख्ते पर खडा देखता है इसलिए उसे जरूर गम है। यह तो तुम काप रहे हो और ठड से जान तुम्हारी जायेगी।"

"तुम्हारी जान पहले जायेगी," मैने कहा। "हमारी फिक्र न करो। हम भी मजे मे है, हमे भी बहुत गर्मी लग रही है।"

"कहा के मजे मे," जासूस ने कहा। "तुम्हारे कुछ साथियो की हालत तो मुझसे भी बदतर है।"

"किन साथियो की? तुम्हे बताना होगा, फिर चन से मर सकते हो।"

"चन से तो मरूगा ही," उसने कहा, "क्योकि मेरे साथ तुम्हारा रुसगोलोव और दूसरे भी मरेगे।"

उसके इन शब्दो से, जानते है, मुझ पर गाज सी गिर गयी।

जासूस ने बताया कि प्रतिक्रातिकारी ओसेतियाइयो ने रुसगोलोव के साथ विश्वासघात करके उसे पहाडो मे एक ऐसी जगह पर कद कर रखा है, जहा न तो सफेद गार्ड पहुच सकते है, न बोल्शेविक ही।

मै इतना चिंतित हो उठा कि तुरत अपने एक साथी से कहा "चलो, पता लगाने चले कि यह ठीक कह रहा है या नहीं।" वह राजी हो गया और हम एक ऐसे दूरवर्ती इलाके के लिए रवाना हो गये, जहा मै पहले भी जा चुका था, पर इतना कम कि मुझे यहा कोई नहीं जानता था। हमने रास्ते की सभी जरूरी चीजें भी साथ रख लीं। जानते है, हमारा

ओसेतिया इतना बडा और पहाडी है कि अगर आप को कभी उसे देखने का मौका मिले, तो अपने को कोसने लगेंगे कि क्यो आये यहा। और अगर रोयेंगे, तो आसू की बूदें ठड के मारे बरौनियो पर ही जम जायेंगी। हम शिकारियो की तरह सफर कर रहे थे। ध्यान बटाये रहने के लिए हम गाने गा रहे थे, मजाक कर रहे थे, पर अदर ही अदर डर से ऐसे काप रहे थे, जसे वायलिन के तार कापा करते ह, सो भी खुशी के मौके पर नहीं, बल्कि किसी की मौत पर।

और वहा के पहाड ऐसे थे कि नाते रिश्तेदारो, घरबार, यहा तक कि क्राति को भी भूल जाओ – बिल्कुल लोहे की तरह, काले, भारी और नगे। उन पर बर्फ भी नहीं थी। लोग भी यहा खराब, दूसरी जगहो से ज्यादा खराब थे।

"कहा जा रहे हो?" हमसे उन्होंने पूछा।

"शादी मे जा रहे ह," हमने जवाब दिया।

"तो शराब क्यो नहीं ले जा रहे हो?"

"शादी मे शराब कौन ले जाता है?"

"देखना कहीं शादी मे बदूक न चल जाये!"

हमने कोई जवाब नहीं दिया और अपने रास्ते चलते रहे।

आगे किसी और ने पूछा

"शिकारी हो क्या?"

"हा, शिकारी ह," हमने जवाब दिया।

"तो वह कहावत तो याद ही होगी कि भालू का शिकार हसते हसते किया जाता है, पर जगली सूअर के शिकार मे पादरी की जरूरत पड सकती है। तो क्या पादरी की जरूरत तो नहीं पडेगी?"

हमने कोई जवाब नहीं दिया और अपने रास्ते चलते रहे।

हम उस जगह पर पहुच गये, जिसके बारे मे जासूस ने बताया था। यहा हम अपनी जान-पहचान के एक आदमी के यहा ठहरे। उसने बताया

"हा, उसने ठीक ही कहा। त्सगोलोव और दूसरो को देख तो सकते हैं, पर पहले सब कुछ अच्छी तरह से सोच लेना होगा।"

और हम सोचने लगे। हमारे परिचित ने फिर कहा

"चलो, एक दावत का इतजाम करें। उसमे सभी को बुलायेंगे और शिकार और आजकल के कठिन दिनो की बाते करेंगे और बोल्शेविको को

गालियां देंगे। यहां झोंपड़ी के पीछे पहाड़ में जाने का रास्ता है। वहां एक गुफा है और उसमें उन्हें बंद किया हुआ है। हम उन्हें पता देकर छुड़ाने की कोशिश कर सकते हैं।"

हमारे पास पैसे थे और हम चल पड़े। हमने उस जगह के लोगों से, जो सचमुच बड़े बदमाश थे, जान-पहचान की। मेरे हाथ इन विश्वासघातियों का गला घोटने के लिए कुलबुला रहे थे। मैंने अपने साथी को इशारा किया। हमने खूब सारी शराब और दूसरी खाने की चीजें खरीदीं और आग के पास बैठकर बुरे दिनों को गालियां देते और शिकार की बातें करते हुए खाने-पीने लगे।

कुछ देर बाद सब नशे में मस्त होकर गा रहे थे। मैं उनसे धीरे धीरे बातें करने लगा। शराब से धुत होकर उनमें से कुछ ने डींग मारते हुए कहा "हम बड़े आदमियों को बेचकर रातों रात खूब अमीर हो जायेंगे।"

मैंने भी शराबी होने का बहाना करते हुए कहा कि अगर वे मुझे उन्हें दिखा दें, तो मैं खुशी खुशी उन बड़े लोगों में से कुछ को खरीद सकता हूं। उन्होंने कहा कि अगले दिन दिखा देंगे।

दूसरे दिन भी वे सुबह से फिर पीने लगे और मैं शक-शुबहा से बचने के लिए अपने साथी को उनके साथ छोड़कर शराबी की तरह झोपड़ी के पीछे चला गया। मैंने उनमें से एक को अपने साथ ले लिया था। उसके पैर लड़खड़ा रहे थे। मैंने उसे पकड़ा और लगभग गला घोटते हुए नीचे बर्फ के ढेर में फेंक दिया और गुफा में घुस गया।

वहां मैं देखता हूं कि वे—हमारे साथी—जमीन पर फूस पर बड़ी दयनीय हालत में पड़े हैं, कोई भी हिलडुल नहीं रहा है और सभी खांस रहे हैं, बीमार हैं और चुप हैं। वे शायद सोच रहे थे कि मैं भी डाकू हूं। मैं उनकी तरफ बढ़ा। मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। आवाज गले में ही अटक गयी। फिर ऐसी जगह पर मैं रो भी नहीं सकता था। मैंने देखा कि त्सगोलोव सोया हुआ है और बीमार है। मैंने उसका कंधा हिलाया और वह जागकर बैठ गया। वह अपने को संभाल भी नहीं पा रहा था। मुझे उसकी बातें, उसकी बहादुरी, उसकी जिंदादिली याद हो आयीं। और अब वही त्सगोलोव मेरे सामने दीवार की तरह जड़ बैठा था। उसका उस दिन का चेहरा मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा। मैं खड़ा था और शराबी की तरह मेरी जबान मुंह में घूम कर रह जा रही थी। मैं कुछ भी नहीं बोल

पा रहा था। उसने मरते हुए आदमी की तरह मेरी तरफ देखा और कहा "लगता है सनिपात फिर शुरु हो गया है। म अपने सामने सिमोन को देख रहा हू, पर सिमोन यहा कहा से आ गया?"

मने तुरत उसका हाथ पकड लिया और कहा "यह सनिपात नहीं है। म सचमुच सिमोन हू। मदद के लिए आया हू।" आगे क्या कहना था, म नहीं जानता था। मदद कसे करनी थी? उसके साथी भी सभी मुर्दे जसे पडे थे। गुफा मे ठड इतनी थी कि आदमी तो क्या, बल भी जम जाये। म सोच ही रहा था कि क्या किया जाये, कि तभी वह शराबी, जिसे मने बफ के ढेर मे धकेल दिया था, अदर आया और कहने लगा

"ये सब के सब बहुत बीमार ह और अब अधिक नहीं जियेंगे। जब तक जिन्दा ह लाओ, पसे निकालो।"

वहा अनाज माडने का तख्ता पडा था, जिस पर पत्थर के टुकडे लगे हुए थे। म उसका सिर उस तख्ते से पटकना चाहता था और पसा देना चाहता था, पर वह हाथ झटकाकर बाहर निकल गया। उसके पीछे पीछे म भी मुर्दे की तरह निकल आया। लोगो के पूछने पर कि मुझे क्या हो गया है, मने कहा

"बहुत पी ली है। तबीयत ठीक नहीं है।"

फिर अपने साथी को एक तरफ ले जाकर पूछा

"अब क्या करेंगे?"

उसने बताया कि उसने बातचीत की थी, पर वे बदियो को बेचने के लिए तयार नहीं ह। म वहा एक रात और ठहरना चाहता था पर मेरे परिचित ने कहा

"सिमोन, तुम अभी यहा से चले जाओ। नहीं तो तुम्हे भी इस गुफा मे बद कर देंगे। शराब सारी खत्म हो गयी है और वे होश मे आने लगे ह।"

हम वहा से यो मुह लटकाये चले आये, जसे कब्रिस्तान से चले आ रहे हो। वहा ठहरना भी मुश्किल था और न ठहरना भी मुश्किल। म गुस्से के मारे काप रहा था। म सोचने लगा कि आगे क्या किया जाये, तभी देखता हू कि सोते मे पानी कलकल बह रहा है, बफ धीरे धीरे गलने लगी है, आसमान मे निखार आ गया है। यानी वसत अब दूर नहीं था। मुझे बेता खबायेव के शब्द याद हो आये "बोल्शेविक वसन्त के पहले-पहले

दम तोड देंगे।" मने मन ही मन उसे मोटी सी गाली दी और घोड को एड लगायी। म अब जानता था कि कहा जा रहा हू और क्या करना है। म अपने एक पुराने दोस्त गास्तीयेव के पास पहुचा। उसने मेरा सजीदा चेहरा देखा, तो तुरत औरतो को बाहर जाने को कह दिया। उन दिनों हमारे यहा औरतो से या उनके सामने सलाह-मशविरा नहीं करते थे। यह स्थान न्हे अब जाकर ही मिला है। तब उन्हे सदेह की नजर से देखते थे और मन की बात उनसे कभी नहीं कही जाती थी, हालाकि उन दिनों भी कुछ बहुत कमाल की औरतें थीं।

गास्तीयेव ने कहा

"क्या बात है? म देख रहा हू कि दूर से आ रहे हो। क्या लाये हो?"

म चुपचाप बठकर उसे देखने लगा और शायद इतनी देर देखता रहा कि उसने झुझलाकर पूछा

"क्या देख रहे हो?"

मने कहा

"गास्तीयेव, कुछ बडे लोगो की जान खतरे मे है। उनकी मदद करनी है। या यो ही मरने दें?"

उसने इधर-उधर झाका, मानो अपने कानो पर विश्वास न कर पा रहा हो। फिर कहा

"ठीक है, मदद करनी है।"

"कभी त्सगोलोव का नाम सुना है?"

गास्तीयेव ने मेरी आखो को देखा और पाया कि उनमे दढ़ता झलक रही है।

"तुम बोल्शेविक हो?"

"हां, म बोल्शेविक हू।"

"तो त्सगोलोव भी बोल्शेविक है।"

"म जानना चाहता हू कि उसने क्या किया है। वह बडा आदमी है, यह तो म भी देख रहा हू।"

"वह एक ऐसे पादरी का बेटा है, जिसने भगवान और चोगे को तिलांजलि दे दी थी और क्रांतिकारी बन गया था। त्सगोलोव ने ओसेतिया के कोने-कोने की यात्रा कर बोल्शेविकों के लिए मत इकट्ठे किये।"

"और बाद मे उसने क्या किया?"—मने ऐसे पूछा जसे कि जो कुछ कहा गया था उसे न सुन पाया होऊ। दरअसल मे म शुरू से सभी बाते जानना चाहता था और ऐसी आवाज मे बोलता था जसे कि दुलहन के उपहारो के बारे मे लोग बोलते ह।

"बाद मे वह तिफलिस चला गया। वहा विशेष कमिसार कामरेड शाउम्यान ने   तुम जानते हो कमिसार किसे कहते ह?"

मने सिर हिलाकर बताया कि जानता हू।

"हा, तो विशेष कमिसार कामरेड शाउम्यान ने उसे क्रातिकारी सनिक परिषद का अध्यक्ष नियुक्त किया। तुम जानते हो क्रातिकारी सनिक परिषद का अध्यक्ष किसे कहते ह?"

मने सिर हिलाया।

"और उसका काम तुर्क मोर्चे पर लडाई खत्म करके मेहनतकशो को घर लौटाने की व्यवस्था करना था।"

"तो क्या उसने सभी को घर लौटा दिया?" मने पूछा।

गास्तीयेव ने सहमति मे सिर हिलाया और अपनी बात जारी रखी

"बाद मे शाउम्यान उसे बाकू ले गया, जहा दोनो ने साथ-साथ काम किया।"

आगे उसने यह भी कहा

"और तुम जानते हो कि देबोला कसायेव, अन्द्रेई गोस्तीयेव और कोल्या कसायेव की मौत के बाद त्सगोलोव को ओसेतिया की क्रातिकारी सनिक परिषद का अध्यक्ष बनाया गया। वह भोर के उजाले मे चमकती बर्फ की तरह उज्ज्वल प्रतिभा का आदमी है।"

म अपनी उत्तेजना को छिपाने मे असमर्थ होकर कभी खडा होता था तो कभी फिर बठ जाता था। गास्तीयेव ने कहा

"तुम सोचते हो कि हमे सब बातें मालूम नहीं? तुम समझते हो कि हम अपने उस साथी को भूल गये ह, जिसने लोगो के लिए जान की बाजी लगाकर सघर्ष किया? अगर तुम ऐसा सोचते हो, तो तुम खराब बोल्शेविक हो। तुम क्या मुझे यही बताने आये थे कि ओसेतियाइयो ने, कुछ सबसे बदमाश ओसेतियाइयो ने उसके साथ विश्वासघात कर उसे एक ठडी गुफा मे कद कर रखा है?   "

यहा म और सहन न कर सका और चिल्ला पडा

६

"वह बीमार है और तुम ऐसे बातें कर रहे हो, जसे वह किसी दूसरे लोक मे हो।"

"सिमोन, तुम थक गये हो," गास्तीयेव ने मुझे कहा। "लो यह मेरा लबादा लो, और किसी गर्म जगह पर लेट जाओ। गियोर्गी को टायफस हो गया है और वह सन्निपात मे बडबडा रहा है। पर क्या वह तुम्हें पहचान पाया?"

"इस समय क्या सवाल इसका है?" म फिर चिल्ला पडा। "सवाल इसका नहीं है कि उसने पहचाना कि नहीं पहचाना। सवाल है उसे वहा से निकालने का। म तुम्हारे पास मशवरा करने, मदद मागने आया था, क्योंकि त्सगोलोव को वहा कद देखकर मेरा खून खौल उठा था। और तुमने मा बाप की बात छेड दी। क्या दिलचस्पी है मुझे उसके मा-बाप मे! क्यो तुम मुझे इतना सता रहे हो? साफ साफ बात करो।"

गास्तीयेव ने कहा

"तुम त्सगोलोव को पूरी तरह नहीं जानते थे, इसीलिए मने सब कुछ बताया।"

"तुम जानते हो," म खुद सन्निपात के रोगी की तरह चिल्लाया, "उसने कहा था कि वह दिन देखना उसकी किस्मत मे नहीं है जब नदी आम लोगो की समृद्धि का साधन बनेगी। पर नहीं हमे हर कोशिश करनी है कि वह जिन्दा रहे और वह दिन देख सके—बस यही म कहना चाहता हू।"

"जरा ठहर भी, सिमोन," गास्तीयेव ने कहा। "ओसेतियाई उसके बदले मे दस हजार रूबल मागते ह। हम दे देंगे और त्सगोलोव छूट जायेगा। कामरेड हुसिना, कामरेड उर्तायेव और मीशा केलागोव उसे और दूसरे साथियो को लेने जायेंगे। यह है सारी योजना। समझे?"

"गास्तीयेव," मने कहा, "उस आदमी के लिए कितनी भी बडी रकम दी जा सकती है। कितनी भी! पर पसा हम बोल्शेविकों को भी चाहिए। म अपने आदमियों को लेकर घात लगाऊगा—जब वे रकम के साथ लौट रहे होंगे, हम उन पर टूट पडेंगे, उनका खून पी डालेंगे और सारा पसा छीन कर तुम्ह वापस लौटा दूंगे।"

और गास्तीयेव के चिल्लाने के बावजूद म तुरत बाहर की ओर लपका। लोग मेरा पीछा कर रहे थे, पर म पार्टी के अनुशासन को भूलकर अकेला

ही चल पडा, क्योकि इस आदमी को म बहुत चाहता था। म कुछ आदमी इक्ट्ठा करना चाहता था, ताकि उन लालची ओसेतियाइयो पर हमला कर पसा छीना जा सके। मेरी पुकार पर लोग इकट्ठे हुए। म आम तौर पर अकेला आया जाया करता था। मेरे पास बदूक थी और इसलिए किसी से नहीं डरता था। माच के महीने की एक शाम की बात है। म अपने घोडे पर चला जा रहा था और दोनो ओर फले गुलाबी बादलो जसे पहाडो को देखने मे इतना मस्त था कि अपने से कुछ ऊपर एक तग सी पगडडी से आते लोगो को न देख पाया। घोडा एकाएक रुक गया और मुझे ऊपर से किसी के चिल्लाने की आवाज़ सुनायी दी। मने उस तरफ देखा और पहचान गया कि यह मेरा खानदानी दुश्मन त्सीत्सा था। पर जब से म बोल्शेविक बना था, तब से उससे कभी सामना नहीं हुआ था। यहा तक कि म उसे भूल ही गया था। पर वह ख़ुद ऊपर से चिल्लाया

"ऐ सिमोन, मौत के लिए तयार हो?"

म सभी तरह के शब्दो से उसकी लानत-मलामत करने लगा। बदूक को मने हाथ नहीं लगाया। पर वह ऊपर से चिल्लाया जा रहा था

"तीन साल पहले तुमने मेरे ख़ानदान के दो आदमी ज्यादा मारे थे। अब म तुमसे उन दोनो का बदला लूगा। तो मौत के लिए तयार हो न?"

"त्सीत्सा," म चिल्लाया, "लगता है कि तुम बेवकूफ हो गये हो जो मुझे मारना चाहते हो। आज ओसेतिया को हर आदमी की जरूरत है। तुम देखते नहीं कि सब लोग पुराने बरो को भूल गये ह? तुम जानते हो कि तक्येिव और उरुइमागोव जानी दुश्मन थे, पर सफेद गार्डों के खिलाफ दोनो एक साथ लडे और एक साथ मारे गये। गालीयेव और ज़ारोगोव भी मिलकर लडे, हालाकि दोनो एक दूसरे के ख़ूनी दुश्मन थे।"

लेकिन वह गालिया देता हुआ यही चिल्लाता रहा

"तुमने मेरे दो आदमी ज्यादा मारे थे, तुमने मेरे दो आदमी ज्यादा मारे थे "

तब गुस्से के मारे मेरा रोम रोम काप उठा और म जोर से बोला

"तो मार डाल, बेवकूफ!"

उसने गोली चलायी, जो मेरे कधे मे लगी। म घोडे से गिर गया। इससे चेहरे पर भी चोट आ गयी। फिर भी मने जसे-तसे खडे होकर कधे पर बफ मली, चेहरे को ताजा किया और घोडे पर चढकर, वेता खबायेव

और उसके सभी टुकडखोरो को गालिया देता हुआ अपने ठिकाने पर पहुचा। पर इस हादसे की वजह से मै दस हजार रूबल नहीं लूट सका। ओसेतियाई त्सगोलोव और दूसरे साथियो को फियागदोन के किनारे पर लाये और अपने गदे हाथो से रकम उठाकर चलते बने। म लेटा हुआ चिल्ला रहा था, क्योंकि कधे का घाव बहुत दद कर रहा था। मने लोगो से पूछा मेरा हाथ सलामत रहेगा या नहीं? उन्होने जवाब दिया कि घबराने की कोई बात नहीं। हाथ सलामत रहेगा। और म सो गया। जब आख खुली, तो बहुत अफसोस हुआ कि त्सोत्सा को भी, उसके खानदान के एक और आदमी को भी नहीं मार डाला था।

घाव ठीक होते-होते सूरज भट्ठी की तरह तपने लग गया था। म खुश था कि हाथ फिर हिलने डुलने, काम करने लग गया है। तभी मुझे मालूम हुआ कि बेता खबायेव ने सफेद गार्डों को बुलाया है और वे ख्रिस्तियान्स्की की तरफ बढ रहे ह। हमारा पहाडो मे जाकर छिपना जरूरी हो गया था। मने घोडा लिया और उसे एक हाथ से ही थामे हुए—दूसरा हाथ अभी कमजोर था—ख्रिस्तियान्स्की की तरफ—पहाडो मे नहीं—चल पडा, क्योंकि वहा से त्सगोलोव को भी साथ ले जाना चाहता था।

पर म अभी ख्रिस्तियान्स्की पहुच भी न पाया था कि एक अपरिचित नौजवान मेरे पास आया और कहने लगा

"ख्रिस्तियान्स्की तक पदल जाना ही ठीक रहेगा, क्योंकि कज़ाक आ रहे ह और अगर उन्होंने हमारे पास घोडे देखे तो मार डालेंगे और घोड छीन लेंगे।"

मने कहा कि म ऐसी जगह जानता हू जहा घोडो को छिपाया जा सकता है। और उन्हें छिपाकर हम ज्यो ही बाहर निकले, तो देखा कि चारो तरफ से घिर गये ह और जनरल शादबोल्स्की और उसके आठ हजार घुडसवार कज़ाको ने मदान मे कोई एक सौ तोपें खडी की हुई ह। जब उसके पास एक प्रतिनिधिमडल पहुचा, तो उसने न सिर्फ उनका मजाक उडाया और गालिया दीं, बल्कि सारी आबादी को घरो से निकाल बाहर करने का भी हुक्म दिया। मने विद्यार्थी से (उस नौजवान ने अपने को विद्यार्थी ही बताया था) कहा कि वह घोडो की रखवाली करे और म गाव मे जाकर त्सगोलोव को ले आता हू। पर विद्यार्थी ने कहा कि वह खुद जाकर त्सगोलोव को ले आयेगा, क्योंकि यह काम उसे सौंपा गया

है, और म घोडो की रखवाली करू। म वहीं रुक गया। उस समय मुझे यो लगा, जसे कि म पुल पार करते हुए घोडे समेत नदी मे गिर गया हू और डूबने लगा हू। गोलियो की आवाज सुनकर मेरा कधा और हाथ इतना दद कर उठे कि समझ मे नहीं आता था कि क्या करू। जब म अधिक इतजार न कर सका, तो घोडा को छोडकर खुद गाव की तरफ गया। पर वहा किसी को न पाया। बाद मे कजाको से बचते छिपते घोडो के पास वापस लौट आया। वहा देखता हू कि विद्यार्थी घास पर पडा फफक-फफककर रो रहा है। मने उसे उठाया, पर वह अपने परो पर खडा नहीं हो सका, क्योकि बेहद डर गया था। मने सहारा देते हुए उसे खडा किया। एकाएक मेरा सारा दर्द जाता रहा। मेरे पूछने पर उसने रोते राते कहा

"त्सगोलोव भुसौरे मे छिपा हुआ था। मगर कुछ गद्दारो ने कजाको को इसकी खबर दे दी और वे उस पर गोलिया बरसाने लगे। पर त्सगोलोव को कोई चोट नहीं लगी, क्योकि वह फश पर पडा हुआ था। गोलियो की बौछार के बीच से ही वह खडा हुआ और छत पर चढ गया। उसे कजाक दिखाई दिये, उन्होने गोलिया चलाना बद कर दिया था। तब वह नीचे कूदा और उनके सामने जाकर खडा हो गया। उसकी उम्र इक्कीस साल नौ महीने थी। कजाकों का विश्वास था कि बोल्शेविको के सींग होते ह, इसलिए उन्होंने उसे नहीं सुनना चाहा। फिर भी उसने उन्हे कहा

"'हा, म बोल्शेविक गियोर्गी त्सगोलोव हू। हा, म आजाद ओसे-तियाई हू। आप लोग मेहनतकशो के खिलाफ हथियार क्यो उठा रहे ह? कभी म भी आराम की जिदगी बिताता था, ऐश से रहता था, पर अब सभी लोगो की और आप मेहनतकश कजाको की भी समानता के लिए मर रहा हू। आप लोग क्या अधे ह, जो इस तरह लड रहे ह? आप लोगो को जमींदारों, पूजीपतियो और आपके सफेद गाड अफसरो ने अधा बना दिया है, वे आपको गुलाम बनाना चाहते ह, आपसे बलों और घोडा की तरह काम लेना चाहते ह!'

"तब कजाको ने उस पर गोली चलायी, पर वह गिरे बिना कहता रहा 'आप चाहें या न चाहें, मेरे और दूसरे सघषकारियों के खून से कम्युनिज्म पदा होगा'' और यह कहकर वह शाति से मर गया।"

विद्यार्थी का रोना बद नहीं हो रहा था। तब मने कहा

"चलो, हम दोनो उन पर हमला करें। जितनो को हो सके, मार डाले।"

उसका चेहरा बर्फ की तरह सफेद पड गया। यह बुरी तरह काप रहा था। मने बदूक निकाली, पर मेरा घायल हाथ चाबुक की तरह गिर गया और दद के मारे मेरे दात भिच गये। म बेता खबायेव और प्रतिक्रातिकारियो को कोसता हुआ वहा से चल पडा। दद तीन रात तक लगातार जारी रहा।

बाद मे हमने त्सगोलोव को ख्रिस्तियास्की गाव मे दफनाया और उसकी स्मृति मे एक स्मारक खडा किया। मुझे उसकी सभी बातें याद ह। नदी के बारे मे उसने मुझसे जो कहा था, उसे तो म कभी नहीं भूल पाऊगा। उससे पहले मुझ जसे पहाडी आदमी को किसी ने नहीं बताया था कि नदी से रोशनी भी पायी जा सकती है। यह बात मुझे इतनी विचित्र लगी थी कि म उसके बाद कई दिन तक सो नहीं पाया था और मुझे लगता था कि म पागल होकर नदी मे कूद पडूगा।

मगर तब सफेद गार्डों का खात्मा कर दिया गया और मेरा हाथ और कधा भी भले चगे हो गये। ऐसे ही एक त्यौहार के दिन की बात है। लोग खूबसूरत घोडो को सरपट भगा रहे थे, खा पी रहे थे, भाषण कर रहे थे, गीत गा रहे थे और नाच रहे थे, क्योंकि लडाई कभी की खत्म हो गयी थी और निर्माण शुरू हो रहा था।

तभी देबोला मुझसे कहता है

"सिमोन, तुमने सुना है कि जेम अवचाल के पास कूरा नदी पर बिजलीघर बना रहे ह? जानते हो, इससे आधा काकेशिया जगमगा उठेगा। यहा तक कि कोबी और तिफ्लिस भी इससे बिजली पायेंगे।"

और उसने बताया कि कूरा पर बाध बनाने का काम कभी का शुरू हो गया है। उसका बताने का तरीका वसा ही था, जसा कि त्सगोलोव का। पर शब्द ऐसे थे कि मेरा न सिफ मन, बल्कि पर भी थिरक उठे और नाचते-नाचते म दोहरा रहा था

"सफेद गार्डों को जीत लिया, अब नदी को जीतेंगे, सफेद गार्डों को जीत लिया, अब नदी को जीतगे "

मने अपना सामान इकट्ठा किया और जेम अवचाल के लिए चल पडा। शुरू मे वहां अकुशल मजदूर के तौर पर काम किया, क्योंकि पहले मने मुसीबतो के अलावा और कुछ नहीं जाना था। मगर वहा मने वह-वह बातें जानीं, जो न किसी विश्वविद्यालय मे पढ़ायी जाती ह, न किसी किताब

मे ही लिखी होती ह। इसलिए म आपको थोडा बहुत बताऊगा कि वहा मने क्या-क्या देखा।

यहा दो नदियो का सगम है। एक का, जिसे अरागवा कहते ह, पानी बिल्कुल नीलम जसा नीला है और दूसरी का पीलापन लिये हुए, मानो रेत से किसी बडे कडाहे को साफ कर रहे हो। इस दूसरी नदी—कूरा—पर बडा भारी बाध बना रहे थे। खुदाई का काम दिन रात चलता रहता था। लोग इतने थे कि उनके बीच आदमी भटक सकता था। और सभी चिल्लाते थे "खबरदार! खबरदार!" और बारूद से चट्टानो को तोडने पर ऐसी आवाज होती थी कि नदी का शोर भी उस मे डूब जाता था। मुझे लगता था कि नदी ने अपनी किस्मत के साथ समझौता कर लिया है। जसे कि उसे इसकी कोई परवाह नहीं कि उसके साथ क्या करते ह। पर दरअसल बात ऐसी नहीं थी।

म बाध के निचले भाग मे काम करता था, जहा गसी हथौडो से पत्थर फोडने और हटाने का काम होता था। अब म गिजेलदोन निर्माण-स्थल पर तक्नीशियन हू और इन सब कामों को अच्छी तरह जानता हू। पर तब मेरी हालत उस बकरी जसी थी, जो नमक का ढेर देखकर पहले उसके इदगिद चक्कर लगाती है, फिर सूघती है और फिर चाटने लगती है। हर चीज मुझे दिलचस्प और विचित्र लगती थी। वहा हम भसो-बलो की तरह काम करते थे। कोई पत्थर फोडता था, कोई उसे ढोता था, कोई बरमे से चट्टान मे छेद करता था। और बरमे थरति थे, लोग थरति थे, जसे सरदियो मे ठडी हवा से थरति ह, हालाकि वहा बेहद गरमी थी। नन्हे इजन धूआ छोडते थे, छोटे छोटे वगन ऊपर नीचे आते-जाते थे। पत्थर गिरते थे, तो नदी मानो गुस्से के मारे उफन पडती थी।

हम अपनी परवाह किये बिना काम मे जुटे रहते थे। पत्थरो और छिप्पियो से कपडे ऐसे जजर हो गये थे कि जसे आग मे झुलस गये हो और किसी को भी इसका अफसोस नहीं था। सभी हथेली के पिछवाडे से पसीना पोछते थे और चारो तरफ इतना शोर, इतनी चहलपहल थी कि मानो कोई मेला लगा हो। तब हम अग्रणी टोली जसे शब्दो से भी परिचित नहीं थे, हालाकि हमारी टोली किसी भी अग्रणी टोली से कम नहीं थी। रहने के लिए हमने चार ही दिन मे बरके खडी कीं और यहीं मने बढ़ई का काम सीखा।

मेरे चारो तरफ तरह तरह की जातियो के लोग थे। मुझे हैरानी होती थी कि अब हम सब कितने हिलमिलकर रहते ह, जबकि पहले हर समय कुत्तो की तरह लडते रहते थे। यहा काम करनेवालो मे ओसेतियाई, जाजियाई, आरमीनियाई, अब्खाज, रूसी, स्वीडिश, तातार और दूसरी बहुत सी जातियो के लोग थे। तभी म समझा कि अतर्राष्ट्रीयतावाद यही है, जिसके लिए गृहयुद्ध के दिनो मे सघर्ष किया था। हम कबार्दिनो के लिए प्यातिगोस्क के नजदीक और जाजिया के मेहनतकशो के लिए राचा मे लड थे और अब सब मिलकर शातिमय जीवन का निर्माण कर रहे थे।

वहा इतनी अधिक बोलिया सुनाई देती थीं कि मेरे मन मे सब को समझने की इच्छा पदा हुई और म बहुतो को समझने भी लगा। रूसी म अच्छी बोल लेता था, क्योकि हमारी बोली मे बहुत से शब्द रूसी शब्दों से मिलते-जुलते थे। मिसाल के लिए, हम कहते थे 'माद' (मां) और रूसी मे कहते थे 'मात्य', हम कहते थे 'मित' (शहद) और 'मारुग' (दिमाग) और रूसी मे इन्हे कहते थे 'म्योद' और 'मोज्ग', हम कहते थे 'सेरेदसे' (दिल) और 'जिमेग' (सर्दी), जबकि रूसी लोग कहते थे "सेद त्से" और "जिमा"। पर मुझे यह जानकर हैरानी हुई कि जाजियाई मे मा को "देदा" और पिता को "मामा" कहते ह। फिर भी दूसरे दिन से म काम पर जाजियाई साथियो का उन्हीं की भाषा मे अभिवादन करने लगा "गमरजोवा, अमहानागो" या "खोगासहाद, कात्सो", जिनका मतलब था "नमस्ते, साथियो!" या "कसे हो, भलेमानसो!" और शाम को विदा होते हुए कहता था "न्शीविदोव!" यानी "फिर मिलेंगे!" इस तरह म अनेक जातियो के मेहनतकशो की भाषा बोलने मे मजा लेता था। म हर किसी से हमारे काम के बारे मे बात करना चाहता था।

अगर मुझे कोई नया आया साथी मिलता था, जिसकी भाषा म नहीं समझता था, या अगर वह कोई तुर्क या अब्खाज हुआ, तो सिर्फ "लेनिन!" ही कहता था और वह भी इसी शब्द को दोहराता था। बाकी बातचीत इशारो से या दुभाषिया की मदद से होती थी। पर इतना म जानता था कि यह अपना आदमी है।

एक बार मुझे एक ऐसा आदमी मिला, जो बहुत ही उदास और दुखी था, क्योकि उसका हाथ पत्थर गिरने से टूट गया था। मने उसे बताया

कि क्पाउण्डर क्हा मिल सक्ता है। उसने जवाब मे सिफ सिर हिला दिया ग्रौर जब मने कहा "लेनिन, साथी!" तो उसने ग्रपनी बिल्ली सी बडी बडी ग्राखें उठाकर क्हा "मुहम्मद!" उसने "लेनिन" नहीं कहा। मने सोचा कि यह कट्टर मुसलमान है, इसलिए क्हा

"मुहम्मद को छोडो, उसके बिना भी रह् सक्ते हो।"

पर उसने जाजियाई मे—वह ग्रजारियाई था—न जाने क्या क्हा ग्रौर फिर दोहराया "मुहम्मद! मुहम्मद!" तब मैंने क्हा

"ग्रगर तुम मुझे समझते हो, तो मेरी ही भाषा मे क्यो नहीं बोलते? ग्रगर तुम 'मुहम्मद, मुहम्मद' की रट लगाये रहोगे, तो म समझूगा कि तुम खराब ग्रादमी हो ग्रौर तुम मुल्ला-मौलवियो के बरगलाने मे ग्रा गये हो। तुम्हे हमारे साथ होना चाहिए, न कि उनके साथ, क्योकि हम साथ मिलक्र नदी पर बाध बना रहे ह्।"

उसने मुझे मुक्का दिखाया, पर मने उसका कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन वह ग्रादमी मुझे हमेशा याद रहा ग्रौर सचमुच वह ग्राखिर तक सुधरा नहीं। एक बार हमारे मजदूर गदा पानी पीने के कारण बीमार पडे, तो वह चुपके-चुपके बरको मे कहने लगा कि यह सब ख्ुदा ग्रौर मुहम्मद के खिलाफ काम क्रने का नतीजा है ग्रौर सब मरेंगे। एक बार मने उसे एक कोने मे पक्ड लिया। ग्रनपढ, क्मसमझ लोगो से क्ह रहा था कि टाइफस की बीमारी जानबूझ क्र फलायी गयी है ताकि सभी को मार डाला जाये ग्रौर इसीलिए इतने सारे लोगो को यहा एक जगह पर इकट्ठा किया गया है।

उसने बताया कि टाइफ्स कसे पदा किया जाता है। इसके लिए जानवर की गदन के सडे हुए गोश्त को लिया जाता है ग्रौर तीन दिन, तीन रात तक पानी मे भिगाते ह ग्रौर फिर निचोडकर उबालते ह ग्रौर बाद मे तीन चम्मच चूहो को खिलाते ह, जो टाइफस फलाते ह। मने उससे कहा

"तू कितना बडा बेवकूफ है ग्रौर तुझसे भी बढ़कर बेवक़ूफ वे ह, जो तुझे सुनते ह! हम बोल्शेविक चूहो ग्रौर तुम जसे लोगो पर थूकते ह।"

मेरे इन शब्दो से वह डर गया ग्रौर काम छोडकर ग्रपने घर लौट गया।

मने यह इसलिए बताया, क्योकि म फिर ग्रपने बारे मे सोचने, पढने ग्रौर समझने लग गया था कि श्रम क्या है, मशीनें क्या ह् ग्रौर सवहारा

को कितना कुछ सीखना है। मुझे कामरेड गियोर्गी याद हो आया। उसने कितनी पते की बात कही थीं, पर तब मुझे विश्वास नहीं हुआ था कि म अपने यहा जसी ही किसी नदी को बाधने मे भाग लूगा और उससे पग हुई बिजली कोबी से लेकर तिफलिस तक रोशनी करेगी। और अब सचमच यहा इस जगह पर इतना बडा निर्माणकाय चल रहा था। यहा पालिय हेवी घाटी मे पानी को नलो द्वारा मोडना था, तीस मीटर चौडी और प्राय मीटर गहरी नहर, बाध और पुल बनाने थे, तले को बरमाना था, पत्थरों को हटाना था और काम रात दिन–तीन पारियो मे–चल रहा था। म देखता था कि हमारे काम मे अभी भी कितनी तरह-तरह की बाधाए थीं और किस तरह प्रतिक्रातिकारी ताक्तें अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुई थीं। पहली प्रतिक्रातिकारी ताकत तो खुद नदी थी। वह कभी तो इतनी धीमी हो जाती थी कि मानो है ही नहीं और कभी एकाएक इतनी जोर से अपने रास्ते की हर चीज पर टूट पडती थी, जसे बिल्ली गोश्त पर झपटती है। दूसरी प्रतिक्रातिकारी ताक्त खुद हम लोगो का पिछडापन था। समझदारी से सभी काम नहीं लेते थे। लगता था कि कुछ लोगो के कधो पर सिर नहीं, बल्कि कद्दू रखा है। म कभी कभी पास के म्त्सखेत शहर जाता था, जो इतना कबाडी और पुराना था कि उसे शहर कहते भी झिझक लगती थी। वहा हम दुकान मे साथियो के साथ बठते और पुराने दिनो की याद करते। म नाचना पसद करता हू और उन दिनो मेरी उम्र भी अधिक नहीं थी। पर मुझे नाच तभी अच्छा लगता था, जब वह सचमुच सुदर हो।

एक बार म्त्सखेत मे दुकान के सामने लकडी से भरी दो गाडिया रुकीं। भसे गर्दन घुमाकर सूघते हुए नथुन फुफकार रहे थे। जाजियाई गाडिया से उतरे और दुकान मे घुसे। वहा उन्होंने एक एक गिलास शराब पी और उनमे से एक नाचने लगा। नशे की वजह से नहीं, बल्कि यो ही। बस नाचने की इच्छा हो गयी थी। शायद इसलिए भी कि उसमे फुर्ती बहुत अधिक थी और वह उसे निकालना चाहता था। कमाल का नाच था! पहले वह एक पर से नाचा, फिर दूसरे से और फिर दोनो परो से। बाद मे वह इतनी तेजी से चक्कर लगाने लगा कि देखते ही बनता था। कुछ समय बाद कधे नाच में साथ देने लगे और सिर हिले डुले बिना सिफ मुस्कराता रहा। बाद मे सिर भी कुछ विशेष अदाज से हिला और तरह तरह की हरक्तें करने लगा।

दूसरा जाजियाई, जो उम्र मे छोटा था, उसे देख रहा था। इस पर दुकान का मालिक काउटर के पीछे से निकलकर उसे भी अपने साथी के साथ नाचने के लिए उकसाने लगा। इस बीच पहला जाजियाई हवा मे उड रहा था और लगता था कि वह थकने लग गया है।

अचानक छोटे ने भी कमर पर हाथ रखे और छिपकली की तरह तनते हुए ताली बजायी और मुझे आख से इशारा करते हुए नाचने लगा। दोनो फर्श से छुए बिना साप की तरह उड रहे थे। बाद मे दोनो एक साथ चिल्लाये और अगले ही क्षण अपनी गाडियो पर थे और जिस तरह आये थे, उसी तरह गायब हो गये। इस तरह वे हस-खेल भी लिये और काम को भी नहीं भूले। इसी तरह एक बार मने देखा कि दुकान मे कुछ खेवये बठे ह, जो समोवार सिर पर रखकर नाचना चाहते थे। मालिक उन्हे समोवार देने से इनकार कर रहा था और कह रहा था कि कहीं शराब के नशे मे गरम पानी अपने पर न गिरा ले और जान से हाथ न धो बठें। सचमुच वे घोडो की तरह पी रहे थे, जो ठीक नहीं था।

अचानक उनमे से एक ने कहा

"प्यारे, तुमने बेडो को ठीक से बाधा था?"

"तुम्हारे लट्ठे किसे चाहिए," दूसरे ने जवाब दिया, "चन से बठो और पियो!"

"ठीक से नहीं बाधा होगा, तो नदी बहा ले जायेगी," पहले ने फिर कहा। "कूरा का पानी बढ़ रहा है और रात मे कुछ भी हो सकता है। सुना है, पहाडो मे बारिश हुई है।"

मने सोचा "कितने बेवकूफ ह ये लोग! बिला वजह अपने सब किये-कराये से हाथ धो बठेंगे।" पर वे बठे पीते रहे। उनमे से एक उठकर गया भी, पर जब लौटा तो मुश्किल से परो पर खडा हो पा रहा था। यहा तक कि ठीक से बोल भी नहीं पा रहा था।

"प्यारे, हालत ठीक नहीं है, लट्ठे खुद ही नदी मे बहने लगे ह!"

इस पर सब लोग हस पडे। उन्होने समझा कि मजाक कर रहा है। म भी हसा और उनके साथ देखने निकला। अचानक मेरे सारे बदन मे कपकपी छूट गयी नदी ने बेडे को तोड दिया था और लट्ठो को चट्टानो पर पटक रही थी। सभी लट्ठे नदी मे बह चले थे और उनसे ऐसा शोर हो रहा था, जसे कि कोई तोपें दाग रहा हो। म और दूसरे मजदूर मसखेत

से एसे भागे कि टोपी भी नहीं पहन पाये। शहर से थोड़े ही नीचे पुल था, जिससे होते हुए हम अपने पडाव की ओर जाते थे। वहा पहुचकर हम देखते ह कि बहते हुए लट्ठे पुल से टकरा रहे ह और पुल टूटकर नदी में गिरने को हो रहा है। उसके कुछ तख्ते उखडकर लट्ठो के साथ नदी में बह गये थे।

हम चिल्लाते हुए नदी के किनारे किनारे भागने लगे, क्योंकि वहा कुछ ही दूरी पर एक बेडे पर नदी मे खभे गाडने की मशीन खडी थी और लट्ठे सीधे उसी से टकराने जा रहे थे। अगर वे उससे टकरा जाते, तो मशीन का नदी मे डूबना अवश्यभावी था और तब हम उसे फिर कभी न देख पाते। किंतु सौभाग्यवश, लट्ठे उसकी बगल से गुजर गये। हम फिर चिल्लाये, क्योंकि आगे छिछले पानी मे बरमाई बेडे खडे थे और बरमे नदी के तल मे गढे हुए थे। बहते लट्ठो से उनके लिए भी खतरा पदा हो गया था।

गुस्से के मारे म अपनी बदूक निकालकर इन बेवकूफो को मारने के लिए तयार हो था, मगर देखा कि लट्ठे उनसे कहीं समझदार थे। वे बेडो के नीचे घुस गये थे और वहा से ज्यो त्यो करके, गढे हुए बरमो को नुकसान पहुचाये बिना ऊपर उठाकर आगे निकल गये थे।

इस तरह देखा किस किस तरह के लोग होते ह!

हम दौड रहे थे, चिल्ला रहे थे, अपनी मशीनो, अपने काम के लिए डर रहे थे, पर इन खेवयो ने देखा कि लट्ठे नहीं ह, तो फिर दुकान मे लौटकर समोवार सिर पर रखकर नाचने और अपने सिरो पर गम पानी गिराने लग गये और जब थक गये, तो वहीं फश पर लुढ़ककर सो गये। ये इतने बेहूदे आदमी थे कि उन्हे देखने की भी इच्छा नहीं होती थी।

तब म समझने लगा कि नये और पुराने मे क्या फक है। नये का मतलब था एक सुबह से दूसरी सुबह तक का हमारा अपना काम और पुराने का मतलब था चुपचाप हाथ पर हाथ धरे खडे होकर देखते रहना और यह हमारा दुश्मन था। इसीलिए ज़रूरत थी नये ढग से रहने और सघष करने की, न कि इन खेवयो, या उस आदमी की नकल करने की, जो हर समय "मुहम्मद! मुहम्मद!" की रट लगाये रहता था। इतने अधिक प्रतिभाशाली साथियो और पार्टी नेताओ के होते हुए मुहम्मद की हमे क्या ज़रूरत थी? मेहनतकश जनता के लिए मुहम्मद ने क्या किया था?

एक बार किसी ने मुझसे पूछा

"कामरेड सिमोन, यह कामरेड सेर्गो हर शाम मठ क्यो जाता है? क्या यह ठीक है?"

मने जवाब दिया

"नहीं, ठीक नहीं है। म खुद जाकर देखूगा कि कामरेड सेर्गो, जो वसे समाजवाद के लिए इतनी मेहनत से काम करता है, वहा क्यो जाता है।"

मठ दो थे। एक ऊपर पहाड पर था। वहा पुराने जमाने मे लोग प्रायना करने के लिए मुश्किल से पहाड चढ़कर पहुचा करते थे। और दूसरा मठ नीचे था, जहा आज भी तरह तरह के अज्ञानी लोग रहते ह। शाम को गिरजे का घटा बजने पर म भी इस मठ मे गया। म देखने लगा कि वहा कसे कसे लोग इकट्ठे होते ह और एक बहुत दिलचस्प चीज देखी।

घटा बजा तो सयासिनिया सीढ़ियो से उतरने लगीं। उनमे बुढ़ियाए भी थीं और जवान भी। बुढ़ियाए ऐसी कि चेहरे नींबू की तरह चुसे हुए और सिर पर मुर्गियो जसी कलगिया और जवान सयासिनिया ऐसी कि चेहरे पर खून का नामोनिशान नहीं, मानो मोम की पुतलिया हो। उन्होने पाच पाठ रखा और एक मोटी सी औरत–प्रधान सयासिनी–आकर वाचन करने लगी। पढ़ने का तरीका ऐसा था कि मानो दूसरे लोक पहुचने की जल्दी हो। साथ ही वह अपने बूढ़े दातो मे कुछ चबाती हुई लोगो को भी देखती जा रही थी। लोगो को ज्यो ही उसकी आखो मे असतोप की झलक मिलती थी, सब गाने लगते थे।

पर म आप को बताऊ, हम ओसेतियाई अपने को बुरे ईसाई मानते थे। कोई भी ओसेतियाई बपतिस्मा के लिए कभी पादरी के पास नहीं गया। पुराने जमाने मे बपतिस्मा कराने जाने पर दो रूबल और एक लबादा मिलता था। मेरे दादा चार बार गये और चार बार पानी मे घुसे। पर जब वह पाचवीं बार भी गये तो पादरी उन्हे धिक्कारने लगा।

पहले हम पादरियो के भगवान के विरोधी थे और अब मुझे उनके गाने से भी नफरत हो गयी।

हमारी सहकारी दुकान में माचिसे, सिगरेटें, पिन, वगरह बिकते थे। सुबह कूरा नदी मे पकडी हुई, एक बडी, काली, मुछल "चिनारी" मछली भी बिकने के लिए आयी। वह काउण्टर पर पडी थी। उसकी पूछ

फडफडा रही थी, आखो पर मक्खिया भिनक रही थीं और मुह जल्दी जल्दी खुल रहा था।

अचानक म देखता हू कि सयासिनी भी उस मछली की तरह काली थी और बार बार मुह खोलने पर भी भरपूर सास नहीं ले पा रही थी। म मन ही मन हसने लगा और खोजने लगा कि सेर्गो कहा है। देखा कि एक खभे के पास खडा वह भी चुपके चुपके हस रहा है। मने उसे बाहर निकलने का इशारा किया। और हम कब्रगाह मे जाकर बठ गये।

"कामरेड सेर्गो," मने कहा, "सिनेमा हमारी बस्ती मे भी दिखाते ह। तो यह सब देखने के लिए यहा आने से क्या फायदा? और फिर अगर ऐसे दृश्य बहुत समय तक देखते रहो, तो मति भ्रष्ट हो सकती है। हमारा काम ठोस और मेहनत का है और यहा, जसा कि रूसी साथी कहते ह, बल घुमाते ह।"

सेर्गो मुस्कराया और बोला

"म उन्हे नहीं, बल्कि एक लडकी को देखा करता हू।"

"किस लडकी को?"

"म उनका नुक्सान कराना चाहता हू।"

"कसा नुकसान?"

"एक सयासिनी को फुसलाकर कोम्सोमोल मे भरती कराना चाहता हू।"

ठहाका लगाने की अब मेरी बारी थी। और सचमुच म इतने जोर से हसा कि कब्र पर से गिरते गिरते बचा। सेर्गो ने आखिरकार उस लडकी को वहा से निकाल ही लिया और वह हमारे यहा कपडे धोने का काम करने लगी और अच्छा धोती थी।

म और सेर्गो बाद मे इस पर भी हसे कि म उसे बुरा भला कहने जा रहा था, क्योंकि मुझे गलतफहमी हो गयी थी कि वह जनता के पसों से पुण्य कमाना चाहता है।

तो देखा जीवन मे, खासकर आज के जमाने मे, कसी कसी घटनाए सामने आती ह, क्योंकि एक महान जनता महान काय करने के लिए कमर कस रही है और इसके दौरान वीरतापूण भी और इसके उल्टे भी, हर तरह के कारनामे देखने को मिलते ह।

अचानक मेरी आखो से नींद गायब हो गयी, मन मे एक अजाब सी आशका पदा हुई और मेरा कधा फिर दद कर उठा। म उठकर नदी के

किनारे बठ गया। मेरे सामने कूरा की भूरी लहरे थीं। और मुझे अपनी नदिया याद हो आयीं, जसे कि ककरो का शोरबा हो। और यहा यह कूरा! विश्वास नहीं होता कि ऐसी भी नदिया होती ह!

म बठा पानी को देख रहा था। मुझे लगा कि उसमे आवाजें तिर रही ह, जो मुझे चिढ़ाना चाहती ह और अपनी बात कहते हुए डरती ह। अब म वह सिमोन नहीं था, जो जब देबोला डूबा था, तो नदी को पार करने की जगह के पास बठा था। मुझे अब राजनीति का ज्ञान था, काम मे महारत दिखा चुका था, काम खत्म होने पर किसी कोस मे भरती होने के लिए आतुर था और पूरे ज्ञानबोध के साथ अपने पथ पर आगे बढ़ रहा था। लेकिन यह विकलता क्यो? जसे कि किसी ने लट्ठे से रास्ता बद कर दिया हो। क्या है यह?

रात अच्छी सुहावनी थी और म किये हुए कामों को याद करने लगा। बीस मीटर चट्टान तोडी जा चुकी है, नदी का तल खाली हो गया है और अब उसमे कक्रीट भरना शुरू करना है।

इन अच्छे विचारो मे खोया हुआ म सोने के लिए वापस चल पडा। पर बरक मे पहुचा ही था कि सोने की इच्छा फिर जाती रही। तभी सेर्गी मिल गया और दोनो बठकर सिगरेट पीने और बाते करने लगे। थोडी ही देर मे दोनों इस बुरी तरह ऊध रहे थे कि सोने के लिए लेटे, तो नींद एकदम आ गयी। रात को पारी के कामगारा को छोडकर सब सो गये।

और यहा पर मेरे किस्से का सबसे खौफनाक हिस्सा शरू होता है। पहले म सपना देखता हू। वह अच्छा नहीं है। म देखता हू कि म पगडडी पर चला जा रहा हू कि एकाएक सामने त्सोत्सा दिखायी देता है। वह कहता है "मने तुम पर गोली चलायी थी, अब तुम मुझ पर चलाओ।" "म नहीं चाहता," म जवाब देता हू। "चलाओ, नहीं तो म तुम्हे डुबो दूगा," वह धमकी देते हुए कहता है। तभी म देखता हू कि पगडडी पर घुटने घुटने पानी है। त्सोत्सा मुझे पानी मे धकेलता है और म घुटना तक पानी में खडा हू। मगर तभी आंखें खुल जाती ह। सेर्गी मुझे हिलाते हुए चिल्ला रहा था

"पानी घुटनों तक आ गया है!"

"क्या, कहा का पानी?"

सेर्गी काँप रहा था।

"सब जगह पानी ही पानी है!"

"क्या हुआ, क्या हुआ?"

"कूरा मे पानी बढ़ गया है! सब उधर भाग रहे है। सब चीजें पानी मे डूबने लगी है।"

चारो तरफ ऐसा शोर मचा था, जैसे कि रेलगाडी का इजन स्टार्ट हो रहा हो। जो भी बरको मे रहते थे और जो भी निर्माणस्थल पर काम करते थे, सब के सब अपनी अपनी बोलियो मे चिल्लाते हुए भाग रहे थे और एक ही ओर भाग रहे थे हमारे इन्चाज बग्रात मिखाइलिच के घर की ओर। विभिन्न बोलियो मे एक साथ गूज गया। "बग्रात मिखाइलिच, बचाओ! बग्रात मिखाइलिच, बचाओ!" मुझे अचानक त्सगोलोव की याद आ गयी। "तुम नदी से लडोगे, कामरेड सिमोन!" उसने मुझसे कहा था। मुझे लगा कि म चिल्ला रहा हू, "त्सगोलोव, बचाओ!" तभी बग्रात मिखाइलिच कमीज और पाजामा पहने ही नीचे हमारी तरफ दौडता दिखायी दिया।

तब कूरा पर मेरी नजर जो पडी, तो म समझ गया कि विश्वासघात किसे कहते ह। उसकी वे भूरी लहरें और अनजान तिरती आवाजें न जाने कहा गायब हो गयी थीं और उनकी जगह पर थी गुस्से से पागल, दात निकाली हुई, गरजती हुई कूरा। साथी सभी पानी मे थे, मशीनें सभी पानी मे थीं और नदी थी कि उसका किनारा ही नहीं दिखायी देता था। सिर्फ खोह से निकलती हवा के सीत्कार की तरह पानी की आवाज ही सुनायी दे रही थी।

"यह किया प्रतिघाति ने वार!" मने मन ही मन कहा।

और म भी फावडा लेकर कमर-कमर पानी मे कूद पडा। पानी लोगो और औजारो को धकेल रहा था, पर हमे यहा उसके बीचोबीच ही बाध की दीवार बनानी थी।

निर्देश देते देते बग्रात मिखाइलिच का गला बठ गया। सभी लोग मानो नहाने के लिए पानी मे कूद गये थे। औरतें भी दौडधूप कर रही थीं। लोगों की भीड के मारे सब कुछ काला लगने लगा था। इस्पात, पत्थर, रेत, मिट्टी, लकडी, सब कुछ पानी मे जा रहा था। पत्थरों के बीच पानी साप की तरह फुफकार रहा था। लगता था कि रात कभी खत्म नहीं होगी और

हम पानी के सामने टिक नहीं पायेंगे। दीवार मे एक के बाद एक दरार पदा हो रही थी और हम पागलो की तरह पानी मे भी पसीने-पसीने हुए, हाथो से, परो से पत्थर धकेल रहे थे और जहा तक बन पाता था, दीवार को मजबूत बना रहे थे। हर कोई यही कह रहा था "नदी को रोक कर रहेगे!" कोई भी अपनी जगह से नहीं टला। यहा इस भीड मे सभी साथ साथ काप रहे थे, साथ-साथ कष्ट झेल रहे थे।

"सिमोन," मने अपने से कहा, "तू गोली से नहीं मरा, तो अब इस नदी से क्या मरेगा! डटे रह, सिमोन! रसगोलोव तुझे देख रहा है, लेनिन तुझे देख रहे ह, सारा सवहारा तुझे देख रहा है!"

और म कधे का दद, सपना, थकावट, सब कुछ भूल गया। इस तरह हम भोर होने तक काम करते रहे। मेरी हालत ऐसी हो गयी थी कि मुझे कुछ भी याद नहीं था। और इस तरह की गहरी बेसुधी मे म पत्थरो को आगे थमाता रहा, आगे थमाता रहा। अचानक सेर्गो कहता है "सिमोन, जरा देख!" मगर म देखने पर भी नहीं देख पा रहा था। सेर्गो फिर कहता है "देख!" पर मेरी हालत फिर भी वही। तब वह मेरा हाथ पकडकर नीचे परो के पास ले गया और हाथ से मने देखा कि पानी घुटने से भी नीचे उतर गया है। यानी हम जीत गये थे।

मने अपने चारा तरफ देखा। सुबह हो रही थी।

उसके बाद सभी—दो हजार लोग—घोडे बेचकर सो गये और कूरा हाथ की नस की तरह नीली और बढी हुई, मगर कुछ भी करने मे असमथ बह रही थी।

बाद में हमने बाध और पनबिजलीघर का निर्माण पूरा किया, स्लूइसो से पानी छोडा, पहाडो की ओर देखती लेनिन की एक विशाल प्रतिमा स्थापित की और तिफलिस को बिजली पहुचायी। और तिफलिस के लोग रात मे भी दिन की तरह देखने लगे। यह कारनामा हमारा था।

एक बार छुट्टियो मे म घर गया, नाते रिश्तेदारो से मिला और सब जगह देखा कि मजदूर काम कर रहे ह, यानी कोई नयी चीज बन रही है। मने पूछा

"क्या बना रहे हो?"

"तिखिवाली तक सडक बना रहे ह," जवाब मिला।

म सोचने लगा अब दक्षिणी ओसेतियाइयों के भी दिन फिर जायेंगे।

अचानक मेरा दिल उछल पड़ा। ठीक उसी तरह, जैसे एकाएक प्राग को देखकर घोड़े की आँख उछलती है। बैठे बैठे ही ऊपर जस्त करते हुए मैंने पूछा

"सुरंग भी बनेगी ?"

"तुम कहां से जानते हो?"

"जानता हूं," मैंने जवाब दिया। "एक आदमी ने मुझसे कहा था।"

"तो इसका मतलब है कि यह आदमी किसी बड़ी जगह पर है," उन्होंने कहा।

"हां, बहुत बड़ी जगह पर है, पर मेरे दिल में!"

"कौन है वह?"

"हमारा ही एक भाई। वह बोल्शेविक था," मैंने जवाब दिया।

"तब तो सब ठीक है।"

"मैं भी यही सोचता हूं," मैंने कहा, "कि सब ठीक है।"

१९३३

लेनिनग्राद

द्वन्द्वयुद्ध

जमन हवाबाज़ अपने शिकार को साफ साफ देख रहा था हरे केक जसे जगल के बीचोबीच से एक तग और पीली पट्टी गुजरती थी। वहा मिट्टी के पुश्ते पर सनिक सामान से लदी लम्बी गाडी आहिस्ता आहिस्ता रेंग रही थी, इसलिए जगल की तरफ झपटने की कोई ज़रूरत नहीं थी। बस दो जगलों के बीच खुले मदान तक गाडी के पहुचने का इतज़ार करना था और फिर ठीक निशाना बाधकर उस पर बम गिराया जा सकता था।

हवाई जहाज़ ने घूमकर सूरज की किरणो से चमकते हुए एक और चक्कर लगाया और ऊचाई पर जाकर सीधे नीचे की ओर ग़ोता लगाया। जिस जगह पर गाडी को होना था, वहा पर पुश्ते के दोनो ओर कीचड और मिट्टी के फौवारे आसमान मे उठ गये। लेकिन जब हवाबाज़ ने जगल की तरफ देखा, तो पाया कि गाडी खुले मदान तक पहुचकर तेज़ी से वापस जगल की ओर लौटी जा रही है। बम निशाने पर नहीं पडे थे।

हवाबाज़ ने यह सोचकर कि अब का उसका वार खाली नहीं जायेगा, एक और चक्कर लगाया। गाडी खुले मदान मे भागी जा रही थी। उसे क्या पता था कि आगे जगल मे उस पर सहसा हमले की तयारी की जा रही है और ज़ोरदार धमाके से उखडकर सनोबर के बडे बडे पेड उस पर गिर पडेंगे! मगर सनोबर भी बेकार मे गिरे। गाडी उस जगह को भी पार कर गयी। बम फिर से बेकार गये।

हवाबाज़ के मुह से गाली निकल गयी। क्या यह कमबख्त गाडी सज़ा पाये बिना ही निकल जायेगी? उसने जगल मे गाडी के ऐन बीच के हिस्से पर बम गिराये थे। पर या तो हिसाब ग़लत था या फिर सयोगवश ही

बम गाडी पर न गिर जगल पर गिरे थे। पकड मे न ग्रानेवाली गाडी दृढ़ता के साथ ग्रागे बढी जा रही थी।

"कोई बात नहीं!" जमन हवाबाज़ ने कहा। "ग्रब के ज़रा गभीरता से बात करेंगे।"

ग्रौर वह इलाक़े को बडे ध्यान ग्रौर बारीकी से देखते हुए हिसाब लगाने लगा। इस ग्रसाधारण शिकार मे उसे मजा ग्राने लगा था।

बादलो से निकलकर वह फिर ज़मीन की तरफ लपका, जहा गम हवा मे धूए की झिलमिली पट्टी काप रही थी। लगता था कि वह सीधा गाडी से जा टकरायेगा। लेकिन ऐन मौके पर मानो किसी ने गाडी को उससे दूर कर दिया। कानो मे धमाके की ग्रावाज़ ग्रभी भी गूज रही थी, पर यह ग्रहसास भी साफ था कि निशाना फिर खाली गया है। उसने नीचे देखा। सचमुच ऐसी ही बात थी। गाडी चली जा रही थी ग्रौर उसे ज़रा भी खरोच नहीं ग्रायी थी।

हवाबाज़ समझ गया कि जिससे उसका पाला पडा है, वह उससे इक्कीस ही है, उन्नीस नहीं। गाडी के ड्राइवर की नजर बाज़ जसी है ग्रौर हिसाब ग्राश्चयजनक रूप से सही ग्रौर इसीलिए उसे पकड पाना इतना ग्रासान नहीं।

द्वद्वयुद्ध चलता रहा। बम गाडी के कभी ग्रागे, तो कभी पीछे ग्रौर कभी बग़ल मे गिरते, पर वह शतान—जमन उसे यही कहकर पुकार रहा था—स्टेशन की तरफ या बढ़ती जा रही थी, जसे कि कोई ग्रदृश्य शक्ति उसकी रक्षा कर रही हो।

गाडी कुछ ग्रजब सी छलागें लगा रही थी, डिब्बो के जोड ग्रजीब ढग से चिचिया रहे थे, ढलान पर वह मुह मे दहाना लिये हुए घोडे की तरह उतर रही थी ग्रौर जब भी बम गिरने को होते थे, तो एकाएक रुक जाती थी। कभी यह पीछे हटती, कभी रुक जाती, कभी ग्राहिस्ता ग्राहिस्ता रेंगती ग्रौर कभी तीर की तरह ग्रागे दौडती। ग्रपने ड्राइवर के हुक्म से वह क्या क्या खेल नहीं दिखा रही थी! ग्रौर बम बच्चो के पटाखो की तरह फटकर रह जाते थे।

हवाबाज़ पसीने पसीने हो गया था। वह नीचे थूकता ग्रौर फिर हमला करने को झपट पडता। ग्रतत उसने ठीक निशाना बाधा। बस ग्रब वह बचकर नहीं जा सकती! ड्राइवर से पहली बार ग़लती हो गयी। पर

फासिस्ट के सूखे होठो से फिर गाली निकल पडी "स्सा   बम खत्म हो गये ह   अब क्या किया जाये।"

तब वह मशीनगन से गाडी पर गोलिया बरसाने लगा, पर तभी जगल फिर शुरु हो गया। मानो किसी शतान ने बेमौक़े उसे सामने कर दिया हो। गाडी फिर से हरे धुधलके मे सही-सलामत आगे बढी जा रही थी। लगता था कि वह किसी का निशान ही नहीं बनी थी। फासिस्ट बौखला उठा। उसने इजन पर, उसकी पतली दीवार के पीछे छिपे दुश्मन पर, उस भयानक रूसी मजदूर पर निशाना बाधा, जो उसकी बहादुरी पर हस रहा था और पागल की तरह मदानो और जगलो से होता हुआ गाडी को आगे लिये जा रहा था   गाडी के ऊपर गोलिया बरस रही थीं, उनमे से कुछ नीचे पहियो तक भी पहुच जाती थीं, जिनसे पटरिया बज उठती थीं, पर गाडी आगे बढती गयी

हवाबाज थकावट के मारे अपनी सीट पर एक ओर लुढक गया। आसमान चमक रहा था। नीचे जमीन पर हर तरफ पतझड की बहुविध रगीनी छायी हुई थी, जो वेस्टफाल के पतझड से काफी मिलती-जुलती थी। गोलिया खत्म हो गयी थीं। और द्वद्वयुद्ध भी खत्म हो गया था। वहा नीचे रूसी जीत गया था। तो क्या अब हवाई जहाज से उस पर टक्कर मारू? पागलपन का जवाब पागलपन से दिया जाये? फासिस्ट को कपकपी छूट गयी।

वह नीचे आया और नफरत के साथ गाडी के ऊपर से गुजर गया। वह नहीं देख पाया कि गाडी के ड्राइवर की तेज आखें उसका पीछा कर रही ह। ड्राइवर ने इतना ही कहा "क्यों, कमीने, कुछ हाथ लगा?"

और गाडी लाइनो पर पडी दुश्मन के हवाई जहाज की काली छाया को नफरत के साथ कुचलती हुई आगे निकल गयी।

समुद्र दुर्घटना

जहाज डूब रहा था। उसका पीछे का हिस्सा पानी मे ऊचे उठ गया था और उसके ऊपर कोयले की धूल व। बादल छाया हुआ था। बम ने जहाज के बीचोंबीच गिर कर कोयला रखने के गढो से इस धूल को बाहर फेंक दिया था, जो अब तरनेवालो के सिरो और डूबते जहाज के टकडों और समुद्री गहराई मे जाते पीछे के हिस्से पर बठ रही थी।

फिनलण्ड की खाडी के शरदकालीन ठडे पानी मे कूदनेवाले जहाज के मुसाफिरा मे एक फोटोग्राफर भी था। उसके कधे पर लटका हुआ भारी केस, जिसमे उसका कमरा और फोटोग्राफी की दूसरी चीजें थीं, उसे नीचे खींच रहा था। गदला हरा पानी कानो मे शोर कर रहा था और आसमान मे जमन बमबार के इजनो का गजन सुनायी दे रहा था, जिसने इस छाट असनिक जहाज पर हमला किया था। जहाज पर एक भी बदूक या तोप नहीं थी और मुसाफिर भी अधिकाश बच्चे, औरत, बूढे और बीमार लोग थे। सिपाही एक भी नहीं था।

फोटोग्राफर ने सोचा कि जीवन का अत आ गया है, इसलिये बचने के लिये हाथ पर मारना भी अब बेकार है। उसने यह कल्पना करने की कोशिश की कि यह नीरस और भयानक सपना है, पर अफसोस कि उसके मुह, आखो मे पानी भर जाता था, बदन अजीब ढग से सुन हो गया था और अब ठड भी असर नहीं कर रही थी।

छाती पर हाथ आडे रखकर उसने आखें बद कीं और अन्तिम बार पत्नी और बच्चो की याद करने लगा।

वे चेतना मे अस्पष्ट रूप से आये और शीघ्र ही गायब भी हो गये, मानो लहरें उन्हें धो ले गयी ह। डुबकी लगाकर वह नीचे तले की तरफ

बढने लगा। पर वह थहा तक पहुचा नहीं। पानी ने उसे ऊपर फेंक दिया। मुश्किल से सास लेता हुआ और लहर से आधा दबा वह फिर ऊपर आ चुका था। उसने आखें खोलकर समुद्र, जिसमे बहुत से सिर दिखायी दे रहे थे, डूबते सूरज और सुरमई बादलो को देखा और मशीनगनो की तडतडाहट सुनी।

यह जमन हवाई डाकू था, जो डूबनेवालो पर गोलिया बरसा रहा था।

नफरत के मारे उसे यह इतना असहनीय लगा कि उसने फिर पानी के नीचे चले जाना चाहा। उसने एक वार फिर सीने पर हाथ बाधे और फिर भारी केस, जो उसके लिये सबसे महगे हथियार की तरह प्यारा था, उसे हरी गहराई मे खींचने लगा। शरीर पर कमजोरी छा गयी, पर सुस्त पड गये और दिमाग़ गडबडा गया।

मगर लहर ने फिर उसे ऊपर फेंक दिया, पर अब की बार भी कोई नया भयानक दश्य देखने के डर से उसने आखें नहीं खोलीं। फेनिल लहरो मे आखें बद किये चढ़ता उतराता वह मानो दो लहरो के बीच फस गया था, जो उसे कभी एक तरफ, तो कभी दूसरी तरफ खींच रही थीं। इसी तरह वे कुछ देर तक उससे खेलती रहीं और अजीब बात है कि उसका दिमाग़ साफ हो गया।

"यह निस्सदेह विचार की आखिरी कौंध है," उसने सोचा। "यह वही है जिसे पूरे होश मे रहते हुए मरना कहते ह।"

तभी उसे बडी तेजी से ऊपर उठा दिया गया और उसने हालाकि अब तक कोई दद नहीं महसूस किया था, एकाएक कधे पर किसी भारी चीज के टकराने को अनुभव किया। आखें खोलकर उसने देखा कि उसे एक बेडे के पास फेंक दिया गया है। इस कमजोर और मामूली बेडे को देखकर, जो मृत्यु के क्षणो मे बिना सोचे-समझे और हडबडी मे बनाया गया था, और मुसाफिरो पर नजर घुमाकर वह उस पर चढ़ने की हिम्मत न कर सका और केवल हाथ से उसका किनारा पकडकर ताजी हवा फेफडों मे भरने लगा।

ताजा होकर माथे से गीले बालो को हटाते हुए उसने बेडे पर नयी आंखों से देखा। उस पर तीन मर्द और एक औरत बठी हुई थी। मद बुरी तरह भीग गये थे। ये खामोश और उदास थे और बेडे को मजबूती

के साथ पकडे हुए थे। औरत पर कोई ध्यान नहीं दे रहा था। वह लगातार बुरी तरह चिल्लाती जा रही थी–कभी जोर से तो कभी चमनी हुई और कभी ददनाक और दयनीय आवाज़ मे। पर समुद्र की वीरानगी मे कोई उसे नहीं सुन रहा था।

उसके खरोचों से आहत गाल, बिखरे बाल और पूरी तरह खुली हुई आखें सब घोर निराशा की सूचक थीं, जिसका कोई इलाज नहीं था। मर्दों के फटे कपडे, नाराज चेहरे, भिचे हुए होठ–यह सब फोटोग्राफर के इतना करीब था कि वह न चाहते हुए भी कभी उनकी खामोश निश्चलता को देखता तो कभी औरत की ऐंठनभरी हरकतों को, जो इतने जोर से चिल्ला रही थी कि उस जसे अधबहरे, पानी के नीचे के निवासी के कान भी फटने लग गये थे।

तख्तो के ऊपर उठकर और कडवे नमकीन पानी को मुह से थूकते हुए फोटोग्राफर ने निश्चल बठे मर्दों से कहा

"आप लोग क्या इस औरत को शात नहीं करा सकते?"

उन्होने अपनी निर्विकार और उदास नज़रें उसकी तरफ घुमा दीं। बेडा बुरी तरह से हिचकोले खा रहा था और फोटोग्राफर को तख्तों को हाथ से न छूटने देने के लिये पूरी ताकत लगानी पड रही थी। तभी उसके सर के ऊपर से गुजरे ज्वार ने उसकी घबराहट को कम कर दिया। इसके अलावा सख्त तख्तो को पकडे रहना इतना अच्छा लग रहा था

उसने ऊची, चिल्लाती आवाज़ मे–उसे लगा कि अपने कपडों को फाडती और कहीं दूर, जहा शाम का धुधलका होने लगा था, उधर देखती हुई औरत की चीख को दबाने के लिये ही इतने जोर से बोला था–पूछा

"आप मे कोई कम्युनिस्ट है?"

पास मे खडे आदमी ने उसे ऊपर से नीचे तक गौर से देखा और कहा "म " और बेडे पर चढने मे मदद करने के लिये फोटोग्राफर की ओर हाथ बढ़ाया।

"आप लोग भी कसे ह, कामरेड!" फोटोग्राफर ने धीरे से कहा। "यह औरत इतना चिल्ला रही है, उसे तसल्ली देने की जरूरत है और आप "

तभी एक बडी सी लहर ने बेडे को ऊपर उठाया और उस पर बठे लोग कहीं अधेरे में गायब हो गये और फोटोग्राफर इतनी गहराई मे चला

गया, जितना कि पहले चाहने पर भी नहीं जा पाया था—यह नयी डुबकी उसे बहुत भारी लगी।

जब वह फिर ऊपर उठा, तो पास मे उसने कोई बेडा नहीं पाया। उसकी तरफ केवल तीन तख्ते चले आ रहे थे, जिन्हें उसने अपने लिये पसद कर लिया। पर उन्हे पकडना आसान नहीं था। वे हाथ से फिसल जाते थे, उलट जाते थे। एकाएक उसकी समझ मे आ गया कि अगर वह अपने केस को, जो उसका स्थायी साथी था, नहीं फेंकेगा, तो तख्ते उसके बिना ही अपने रास्ते चले जायेंगे, जबकि उसके बचने का यही आखिरी मौका था, क्योंकि शाम करीब आती जा रही थी।

उसने कराहते हुए फीता खोला और वह कधे से गिर गया। केस अकेला समुद्र तल की तरफ चला गया। एक क्षण बाद फोटोग्राफर तख्तो के गीले किनारो से गाल सटाये उन पर पडा हुआ था और पानी उसके आसुओ से मिल रहा था। वह अपने कमरे के लिये रो रहा था

जिस दफ्तर मे फोटोग्राफर नौकरी करता था, वहा एक दिन एक ऊचे कद का और माथे पर घाव के निशानवाला आदमी आया और पूछने लगा कि वहा का सबसे बडा अफसर कौन है। उसने कहा कि वह फोटोग्राफर की मृत्यु के बारे मे बताना चाहता है, कि किस प्रकार एक जर्मन हवाई जहाज द्वारा उनका जहाज डुबो दिये जाने के बाद वे—तीन मर्द और एक औरत—एक बेडे पर अपनी जान बचा रहे थे कि फोटोग्राफर भी समुद्र मे डूबता-उतराता उनके पास पहुचा और जब कुछ बोलने लगा, तो पानी ने उसे उनसे दूर फेंक दिया। वह इस फोटोग्राफर से वहीं मिला था, जहा से जहाज आ रहा था। वह लायक आदमी और अच्छा कर्मचारी था और उस भयानक घडी मे भी अपने आपको सभाले रहा था।

तभी किसी ने उसकी बात बीच ही मे काटते हुए कहा

"यह सब आप खुद फोटोग्राफर को बता सकते है। वह पास ही के कमरे मे है।"

"कैसे पास के कमरे मे?" आगन्तुक चिल्लाया। "वह बच गया था?"

"बच गया था!"

फोटोग्राफर को बुलाया गया। उसने आगन्तुक को पहचान लिया। यह वही आदमी था, जिसने बेडे पर उसके सवाल का जवाब दिया था।

फोटोग्राफर ने मुस्कराते हुए पूछा

"और वह औरत कैसी है? आप लोगो ने उसे चुप करा दिया था?"

आगन्तुक एक क्षण के लिये सकपका गया। उसने कहा

"हा। अपने को सभालकर उसे तसल्ली दी। आपकी आवाज़ से हम सब होश मे आ गये। आप एकाएक समुद्र से आये और एकाएक ही गायब भी हो गये। बाद मे जब हम सकुशल किनारे पर आ गये, तो बहुत देर तक आप ही के बारे मे सोचते और बातें करते रहे। इस समय म आपके मानवीय व्यवहार के बारे मे बताने के लिये खास तौर से आया हू "

"अरे कसा व्यवहार," फोटोग्राफर बोला। "अपने कमरे से मुझे हाथ धोना ही पडा। काश आप जानते कि वह कितना बढिया कमरा था! "

मा

"चलो, उससे मिल लें," मा ने कहा और ओल्या समझ गयी कि उसका मतलब किससे है।

वह, यानी उसका बेटा, ओल्या का भाई, बोर्या, वालंटियर। उसने बताया था कि अपनी कक्षा के साथियों के साथ वह फौज में भरती होने जा रहा है। मा उसके सामने खडी थी—छोटी सी, सीधी, परेशान।

"तुम्हारी आखें कमजोर हैं और सेहत भी," उसने कहा था। "तुम्हें डर नहीं लगता?"

"कोई बात नहीं, मा," बोर्या ने जवाब दिया था।

"तुमने कभी लडाई नहीं देखी है, तुम्हारे लिए बहुत कठिन होगा "

"कोई बात नहीं, मा," अपना सामान बाधते हुए बोर्या ने दोहराया था।

मा ओल्या के साथ अनेक बार उस गाव गयी थी, जहा बोर्या फौजी ट्रेनिंग पा रहा था। पढाई के बाद वह उत्तेजित, थका-मादा, धूल से सना हुआ उनके पास आकर बैठ जाता और वे शहर, जान-पहचान के लोगों और मित्रों के बारे में बातें करने लगते। युद्ध की बातें वे नहीं करते थे, क्योंकि वैसे भी चारों तरफ माहौल युद्ध का था।

ओल्या के लिए शहर के बाहर भाई से मिलने जाना गरमियों में रहने के बंगले की या जानी पहचानी और उपनगरीय जगहों की सैर जैसा लगता था। खेतों में फूल चुनकर वे शाम को बिजली की ट्रेन से शहर लौट आते थे, जो दौडधूप और सैनिक सरगमियों से भरा होता था।

केवल पिछले दिनों में ही सब गडबडा गया।

मोर्चा कहीं पास ही में था और ओल्या को इस बात की चिंता थी कि आज वे भाई को कैसे खोज पायेंगी, क्योंकि उन शात, सैर के लायक

रविवारों के मुकाबले मे, जब वे बोर्या से मिलने आया करती थीं, अब हर चीज बदली हुई नजर आती थी।

वे खेतो से गुज़र रही थीं, जिनमे शरद का सा सूनापन था। गरमियों मे रहने के बगले बद थे, सामने से गाडिया, ट्रक आ रहे थे, सडक के किनारे बच्चो और सामान की गठरिया से लदे विस्थापितो का ताता लगा हुआ था, नाले मे मरा हुआ घोडा लक्डी की तरह टागें आसमान की तरफ उठाये पडा था, राशन डिब्बो को झनझनाते हुए सिपाही गुज़र रहे थे और कहीं पास ही मे ज़ोरदार गोलाबारी हो रही थी।

सडक के शोरशराबे से वे दूर निकल आयी थीं।

वे परिचित पगडडी से जा रही थीं, पर चारो ओर कुछ भी पहले जसा नहीं था—बाड टूटी पडी थी, लोग नहीं थे, सब तरफ एक तरह की सतर्कता थी, बेचनी थी, किसी खौफनाक चीज़ का इतजार था। खेतो मे झाडियो के नीचे गाडियो की ओट मे तोपो के पास लाल सनिक छिपे हुए थे और जब उन्होंने पहले गाव मे प्रवेश किया, तो वह खाली, एक्दम खाली पडा था। गौरयाए तक धूप मे नहीं नहा रही थीं। कहीं एक भी मुर्गी या कुत्ता नजर नहीं आ रहा था। चिमनियो से धूआ नहीं उठ रहा था। घरो के सामने टेढी, खाली बेंचें पडी हुई थीं। पहले गाव का यह रूप केवल सफेद रातो मे ही देखने को मिलता था, जब हर चीज सोयी हुई होती थी। पर इस समय तो कोई भी सोया नहीं था—सारा गाव वीरान हो चुका था।

ओल्या इस वीरानगी की खामोशी मे निर्भीक होकर मा के पीछे-पीछे चल रही थी, जो शात, लेकिन जमे हुए कदमों से आगे बढ़ती जा रही थीं।

दूसरा गाव जल रहा था। जब वे टीले पर पहुचीं, तो अनजाने में ही एकाएक पर रुक गये। छतें आग की लपटो से घिरी थीं और कोई उन्ह बुझा नहीं रहा था। बहुत सारे मकान मलबे के ढेर बन गये थे और यह बडा विचित्र दृश्य था।

ओल्या ने मा की कुहनी को छुआ, लेकिन उसने शात स्वर मे कहा "हमे उस झुरमुट की तरफ जाना है," और वे जलते हुए घरो के बीच से सडक पर चलने लगीं।

जब वे गाव को पार कर गयीं और एक छोटी सी घाटी मे उतरीं, तो एक जोरदार चीख सुनायी दी, जो लगातार बढ़ती और नजदीक आती जा रही थी और उससे कानो मे दद होने लगा था।

मा रुक गयी और सिर झुका लिया। ऐसा ही ओल्या ने भी किया। वह जानती थी कि वे ठीक नहीं कर रही ह, कि उन्हे रास्ते की तरफ लपक कर मुह के बल जमीन पर लेट जाना चाहिए, पर उन्हे बोर्या की तलाश करनी थी और अगर वे हर गोले के सामने लेटेंगी, तो कभी नही पहुच पायेंगी, उसे कभी नहीं देख सकेंगी।

गोला टीले के पीछे फट गया। मिट्टी का फौवारा धीरे धीरे हवा मे गिर रहा था। उसके बठते ही एक और गोला फटा।

अब वे झाडियो से उलझते हुए दौडने लगीं, क्योंकि सडक पर लाल बिजली से फटते हुए एक के बाद एक काले गुबार उठ रहे थे। ओल्या का शरीर काप रहा था, उसके ओठ सूख गये थे, पर मा बडी बेरहमी से आगे बढ़ती जा रही थी और ओल्या उसके पीछे-पीछे चल रही थी, इस बेतुके विचार के साथ कि गोला हम पर नहीं पडेगा, नहीं पडेगा, नहीं

वह गाव जिसमे बोर्या रहता था, अब नहीं था। उसकी जगह पर खभो के काले ठूठ ही बाकी रह गये थे और कहीं-कहीं पर अधजले तख्ते विचित्र ढेरो का रूप लिये हुए पडे थे। यहा तक कि पेड भी या तो जल चुके थे या जड से उखडे हुए गदे, हरे पानी से भरे बडे बडे गढ़ो के बीच पडे हुए थे।

"मा," ओल्या ने कहा, "अब कहा जाना है?"

मा चुप खडी रही। ओल्या को उसपर दया आ गयी – वह इतनी छोटी, थकी और जिद्दी लग रही थी।

"मा," उसने फिर कहा, "चलो, घर लौट चलें। अब आगे कहा जायेंगे?"

"नहीं, थोडा आगे चलेगे," मा ने जवाब दिया। "वहा पूछ लेगे "

और वे फिर चल पडीं। अब उन्हे हर जगह घास मे, नालो मे लेटे बायीं तरफ देखते हुए लाल सनिक दिखायी दे रहे थे। अचानक एक छोटे से हमाम से तीन सनिक बाहर आते दीखे।

मा उनकी तरफ बढ़ी और प्रसन्न होकर उनमे से एक से, जो लबा, दुबला और झाइयो से भरे चेहरेवाला था, कहा

"अगर म ग़लत नहीं हू, तो आप पावलिक ह न?"

8—2044

सनिक की आखो मे आश्चर्य झलक उठा। एक क्षण तक वह अपने सामने खडी इस छोटी सी औरत को ताकता रहा और फिर बोला

"और आप बोर्या की मा है न?"

"हा," उसने जवाब दिया। "म उसे देखना चाहती हू। कहा है वह?"

"कहा है?" कुछ परेशान स्वर मे पावलिक ने दोहराया। "आप सीधे चले जाइये, जसे कि जा रही थीं, उस टीले की ओर। लेकिन बेहतर होगा कि न जायें उससे मिल पाना आपके लिए मुश्किल होगा, और फिर " अचानक वह मुस्करा दिया, "हर जगह लडाई छिडी हुई है, हम लोग करीब करीब घिरे हुए ह और आप यहा कसे घूम रही ह? "

"हम घूम नहीं रही ह," मा ने जवाब दिया। "मुझे बोर्या से मिलना है जरूर मिलना है "

यह बात उसने इतनी जोशीली और गभीर आवाज मे कही कि पावलिक, जो बोर्या की ही इस्टीटयूट और बटालियन से था, इतना ही कह सका

"तो फिर जाइये "

मा ऊची घास पर हमाम की शहतीरी दीवार से पीठ टिकाये हुए बठी थी। ओल्या भी सास रोके हुए पास ही मे बठी थी। लाल सनिक नीचे दलदली, लबे से मदान की ओर इशारा कर रहा था, जिसमे झाडिया उगी हुई थीं और कहीं कहीं पर बल खाते हुए उजले पानी के नाले चमक रहे थे। मदान जगल के किनारे जाकर खत्म होता था और वहा जगल के दूसरी ओर टीले पर गाव दिखायी दे रहा था। ऐसा कहा जा सकता था कि इस सारी जगह पर चकाचौंध करनेवाला धमाका छाया हुआ था। हमारी बटरी कहीं पीछे से गाव पर गोलाबारी कर रही थी और जमन तोपें उस मदान और उस टीले के आसपास की जगहो पर गोले बरसा रही थीं, जहा मा और ओल्या बठी थीं।

"उन्होंने अभी-अभी हमला शुरु किया है," लाल सनिक कह रहा था। "आप चाहे तो इतजार कर सकती ह, चाहें तो जा सकती ह। वे वहा, उस तरफ गये ह हमला करने के लिए "

"आप बोर्या को जानते ह?" मा ने पूछा।

"कसे नहीं? जानता हू। वह भी वहीं है "

"और वह गोली कसे चलाता है?"

"अच्छा चलाता है "

"बुजदिली तो नहीं दिखाता?"

लाल सनिक ने बुरा सा मानते हुए कधा उचकाया

"बुजदिली दिखाता, तो हम उसे अपने साथ न लेते "

वे दोनों खामोश हो गयीं और चुपचाप वहा टीले पर गाव का जलना देखती रहीं। जगल के अदर से हुर्रा की आवाज और दूसरा अस्पष्ट शोर सुनायी दे रहा था। आग की लाली मे चमकता जगल खूनी सा लग रहा था।

मा खडी हो गयी और टीले के किनारे पर आ गयी। वह मानो अपने बेटे को देखना, जगल की गहराई मे, जो लडाई से फटी जा रही थी, उसे ढूढ लेना चाहती थी—बदूक के साथ दौडते हुए, उधर, जलते गाव की तरफ।

वह देर तक खडी रही।

बाद मे ओल्या से कहा

"चलो।" और फिर मुडे बिना ही पगडडी से सडक की तरफ बढ चली।

"इतजार नहीं करेगी?" लाल सनिक चिल्लाया।

"नहीं," उसने कहा। "बातचीत के लिए शुक्रिया। चलो, ओल्या।"

अब वे सडक पर आ गयी थीं।

"ओल्या," मा ने कहा, "तुम थक गयी हो "

"नहीं मा, म डरती हू कि हम घर कसे पहुच पायेंगे। पता नहीं क्यो, म कुछ बुजदिल होने लगी हू "

मा के पतले ओठ कुछ मुस्करा दिये।

"कुछ नहीं होगा हमे, ओल्या।" और कुछ देर चुप रहने के बाद बोली, "अब मुझे कोई चिता नहीं। मेरा मन शात हो गया है। मुझे डर था कि वह लडेगा कसे—वह कमजोर है, कम देखता है। और मने जाच करने का फसला किया। मेरा बेटा औरो की तरह लड रहा है। अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। चलो, घर चले।"

और वह तेज, छोटे कदमो से घर की तरफ चल पडी। वह छोटी, हल्की और सीधी

बौने आ रहे हैं

नन्हा वीत्या बडो के कामो को कम समझ पाता था। पर उस सुबह उसे भी यह साफ हो गया था कि कुछ अशुभ और खतरनाक घटने जा रहा है। गाव मे भेडो और गायो को हडबडी मे हाका जा रहा था, घरेलू सामान से लदी गाडिया गुजर रही थीं, बच्चे चिल्ला रहे थे, औरतें रो रही थीं और कहीं पास ही मे तोपें गरज रही थीं।

उसकी मा खोयी खोयी सी गठरिया बाध रही थी और बार बार कहती जा रही थी "चुप बठो! तग मत करो! मेरा सर मत खाओ!" बाद मे वह खिडकी से बाहर झाकती, घर से निकलती और दूर दूर तक गौर से देखने के बाद निराशा से कहती "चाचा कोस्त्या क्यो नहीं आ रहे ह? हम यहा कसे रह सक्ते ह! यह नहीं हो सकता! "

वीत्या छडी उठाकर धीरे से बरामदे मे आकर कौतूहलपूवक गाव की सडक को देखने लगा, जहा ऐसे वक्त पर कभी भी इतनी भीड, इतना शोर, हगामा नहीं होता था। पर तोपों की गडगडाहट मे सब डूब गया था। वे कभी टीलो के पीछे गूजतीं, तो कभी कहीं बिल्कुल पास ही मे हवा को फाडकर रख देतीं।

लोगों के मुह से एक ही शब्द सबसे ज्यादा सुनायी दे रहा था जमन! वीत्या नहीं समझ पाया ये कौन ह और कहा से आये ह। इस भीडभाड मे किसी से पूछना भी बेकार था। बडो के पास वसे भी काम ज्यादा था। किसे फुरसत थी उसे समझाने की कि क्या हो रहा है। पर मा के घबराने से वह भी घबरा गया था। वह चुपचाप नहीं बठ पा रहा था। कमरे मे सफाई नहीं हुई थी, चीजें इधर उधर बिखरी हुई थीं, मेज पर नाश्ते के बाद गदे बरतन अभी भी ज्यो के त्यो पडे थे। वीत्या देख रहा था कि

बिल्ली खिडकी पर रखी हाडी से दूध पी रही है और मा देखते हुए भी उसे भगा नहीं रही है, जैसे कि वह ठीक ही कर रही हो।

वह गहरे सोच मे डूबा हुआ छडी हिलाता बरामदे मे खडा था। बोरका चुपके से उसके पास आया और उसे खींचने लगा। वीत्या ने बोरका की ओर देखा। वह सोचता था कि बोरका भी आज बदला हुआ होगा, पर वह पहले जसा ही था, सिफ उसके बाल ज्यादा बिखरे हुए थे और आखों मे ऐसी चमक थी, जो हमेशा ऐसे मौको पर हुआ करती थी, जब कोई खास ख़ुराफात, जिसकी तुलना किसी से नहीं हो सकती थी, उसके दिमाग़ मे आती थी। वह प्राय इस तरह की ख़ुराफातें सोच लेता था। घरवालों से पूछे बिना जगल, दलदल या स्टेशन की तरफ चला जाना उसका सबसे प्रिय काम था।

इस समय भी वीत्या का हाथ पकडकर उसने कहा

"चलो, म तुम्हें एक चीज़ दिखाता हू जल्दी करो!"

वीत्या मन्त्रमुग्ध सा उसके पीछे हो लिया। बोरका नगे परो से धूल मे फिसलता, वीत्या का हाथ थामे उसे जानी-पहचानी सडक से गाव के छोर पर ले गया। वहा टीले पर एक पुराना गिरजा था। उसका घटाघर बहुत ऊचा था। बच्चे उस पर नहीं चढ़ सकते थे, क्योंकि बूढ़ा पहरेदार हर समय उसे बद रखता था। बच्चे सिफ सिर उठाकर ही उसकी छत को देख सकते थे, जहा रग बिरगे कबूतरो ने घासले बना लिये थे तथा कानिस पर भटकते रहते थे। इन कबूतरो तक गुलेल का ककर भी नहीं पहुच पाता था।

पर आज तो मानो हर कोई पागल हो गया था। घटाघर का दरवाजा भी खुला पडा था और कहीं कोई पहरेदार नहीं था। पहले बोरका गया और उसके पीछे पीछे टूटी हुई सीढ़ी पर ठोकरें खाते हुए वीत्या ने भी कदम रखा। वे देर तक दबे पाव ऊपर, और ऊपर चढ़ते गये। बोरका बारबार वीत्या की तरफ मुडकर भयानक चेहरे बनाता हुआ चेतावनी के तौर पर हाथ ऊपर उठा रहा था। वीत्या कौतूहल से भूरी दीवारो को देख रहा था, जिन पर तरह तरह के चित्र बने हुए थे। पर इस समय उन्हे ध्यान से देखने का मौका नहीं था। आखिरकार वे सबसे ऊपर पहुच गये। सूरज की रोशनी उनके चेहरो पर पडी। टीलो के ऊपर नीला, चमकता हुआ आकाश फला था। दूर के जगल, मदान और नदी, सब कुछ तस्वीर

जैसे दिख रहे थे। वीत्या ने रेलिंग के बीच से सिर बाहर निकाला और ऊंचाई का अहसास कर सकने में आ गया।

एक मिनट तक वह कुछ नहीं समझ सका। उसे शून्य का नया अनुभव हुआ।

बोरका ने अंगुली से दिखाते हुए उसका ध्यान घाटी की तरफ खींचा। वहां से समय समय पर धूएं के बादल उठ रहे थे, भारी धमाकों की आवाज आ रही थी और आग छूट रही थी।

"यह क्या है?" डरते हुए वीत्या ने पूछा।

"बेवकूफ कहीं के," बोरका ने जानकार आदमी जैसे गर्व से कहा, "ये तोपें हैं। और वहां देखो, हमारी मशीनगनें हैं।"

बोरका उम्र में वीत्या से बड़ा था। वह सभी लड़कों का रिंग लीडर था और सब कुछ जानता था। अचानक घंटाघर के बिल्कुल ऊपर कुछ अस्पष्ट सी आवाज सुनायी दी। हवा में कुछ बिखरा, पास की छतों और पेड़ों से टकराया, पत्ते गिरने लगे, कांचों के टूटने की आवाज आयी और कहीं नीचे झोपड़ियों के बीच से चिल्लाहटें सुनायी दीं।

डर के मारे वीत्या फर्श पर बैठने ही वाला था कि बोरका उसका हाथ पकड़ते हुए चिल्लाया

"देखो, बौने आ रहे हैं, बौने आ रहे हैं ..."

वीत्या आहिस्ता आहिस्ता करीब आया और टकटकी लगाकर उस तरफ देखने लगा, जिधर उसका साथी इशारा कर रहा था। नदी के बिल्कुल पास झाड़ियों के बीच मैदान में नीचे झुके हुए और काले कपड़े पहने कुछ नीचे कद के लोग आगे बढ़ रहे थे, जो दूरी के कारण बहुत छोटे लग रहे थे। वीत्या को भी वे दुष्ट, भयानक बौने लगे, जो बोरका, वीत्या, मां और गांववालों को मार डालने के लिए गांव की ओर बढ़ रहे थे। वे कभी रुककर कुछ अजीब सी हरकतें करते, कभी गिर पड़ते और फिर उठकर झाड़ियों में छिप जाते और फिर गढ़ों से बाहर निकल आते। बौनों की संख्या बहुत थी। किस्से-कहानियों के जिन्नों की तरह वे न जाने कहां से आ गये थे।

यह सब इतना अवास्तविक था कि वीत्या डर को भूलकर टकटकी लगाये उन्हें देखता जा रहा था। जब भी बौनों के बीच काला धूआं ऊपर उठता और वे नीचे गिरते, बोरका वीत्या का हाथ पकड़ लेता और उत्तेजना

के मारे चिल्ला उठता। अब गोले लोहे की झनझनाहट और सनसनाहट के साथ घटाघर के ऊपर से गुजर रहे थे।

कहीं बायीं तरफ से मशीनगन के चलने की आवाज़ आयी और बौने बचने के लिए ज़मीन पर गिर गये।

बाद मे वे फिर धीरे धीरे रेंगने लगे। वीत्या को याद आया कि मा गाव मे उसे ढूढ रही होगी, और शायद रो रही होगी। उसने सोचा कि बोरका ने फिर, जसा उसके बारे मे कहा जाता था, "अपनी कारस्तानी" दिखायी है। बस काफी हो गया। अब यहा से जल्दी से जल्दी भाग जाना चाहिये। यह ठीक था कि वह बौनो को और भी देखना चाहता था, उनसे, उनकी हरकतो से, उनके कूदने और गिरने के ढग से नजरें हटाना मुश्किल था, लेकिन अब भागना चाहिये, क्योकि गोला कहीं पास ही मे फटा था और घटाघर चकरघिन्नी के घोडे की तरह कापने लगा था। वीत्या नीचे भागा। बोरका दीवारो का सहारा लेते हुए उसके पीछे पीछे भागने लगा।

जब वे बाहर गाडियो और लोगो के बीच पहुचे, वीत्या बोरका से अलग हो गया था। पर वीत्या को उसके बारे मे सोचने की फुरसत नहीं थी। शोर और गोलाबारी के धमाके यहा नीचे कहीं ज्यादा भयानक लग रहे थे। लोग घबराहट के मारे चिल्ला रहे थे। वीत्या ऐन मौके पर घर पहुचा। मा, जिसकी आखें रोते रोते फूल गयी थीं, उसे देखते ही चिल्लायी

"तुम कहा थे? चाचा कोस्त्या आ गये ह। यह सामान उठाओ, हमे यहा से जल्दी से जल्दी निकलना है। जमन पहुच रहे ह "

"मा," वह बोला, "मने उन्हे देखा है। मा, डरो नहीं, वे बौने ह "

पर मा ने उसकी बात नहीं सुनी। पीठ पर थला और हाथ मे गठरिया उठाये वह बाहर भागी। बाहर सडक पर ट्रक खडा था।

चाचा कोस्त्या औरतो और बच्चो को उसमे बिठा रहे थे। वह पूरी तरह धूल मे सने हुए थे और मूछें भी धूल से सफेद बन गयी थीं। वह चिल्ला रहे थे

"हडबडी मत दिखाओ, सब के लिए जगह हो जायेगी! कोई भी नहीं छूटने पायेगा!"

ड्राइवर गाडी स्टाट कर रहा था। और जब मा भी अपनी गठरियो पर बठ गयी और वीत्या भी ट्रक का किनारा पकडकर खडा हो गया,

उसने देखा कि गाव की सडक पर धूल के बादलो के बीच से बडी बडी मोटरगाडिया आ गयी थीं और उनसे लाल सनिक उतर रहे थे। उनके हाथों मे बदूकें थीं और नीचे आकर वे वहीं सडक पर ही लाइन मे खडे हो जा रहे थे।

वीत्या ने लाल सनिको के ऊचे, चौडे कधो वाले बदन, सवलाये युवा चेहरों और मशीनगनें थामे मजबूत हाथो को देखा। उसे वे असाधारण कद के लगे। उनमे सबसे छोटा भी उन बौनो से, जो मदान की तरफ से गाव की ओर बढ रहे थे, कद मे कहीं ऊचा था।

उसने मा से कहा

"अब बौनो को छट्ठी का दूध याद आ जायेगा "

मा उसे कुछ कहनेवाली थी, पर तभी ड्राइवर ने गाडी स्टार्ट कर दी और वह थर्राता हुआ लाल सनिको की मोटरगाडियो की बग़ल से तेजी के साथ आगे निकल गया।

धूल की वजह से अब वीत्या को कुछ भी नहीं दीख रहा था। झटका लगने से वह मा की गठरिया पर गिर गया और उसने उसे अपने सीने से लगा लिया। वह वसे ही बठा रहा। पर जो कुछ उसने घटाघर से देखा था, और बोरका के साथ दौडते हुए महसूस किया था, उसे वह भूल नहीं सकता था। उसका नन्हा सा दिल धक धक कर रहा था। इसके बाद थकावट की वजह से वह सो गया। बाद मे बहुत शोर मचा, बारिश होने लगी, घर दिखायी देने लगे, सपाट सडक आने से ट्रक ढग से चलने लगा। वह जाग जाता था और फिर सो जाता था। मा ने उसे मक्खन लगी रोटी दी, जिसे वह कच्ची नींद मे ही खा गया। पर एक चीज उसकी स्मृति मे जीवन भर के लिए रह गयी नदी के किनारे मदान मे रेंगते दुष्ट भयानक बौने और चौडे कधा वाले, सुदर, ऊचे क़द के लाल सनिक, जो इन न जाने कहा से आये अजनबियो का सामना करने के लिए आये थे।

अलाव

मेडिकल यूनिट की कमिसार आना सिसोयेवा को बस एक ही काम नहीं आता था लबे लबे भाषण देना। इस समय भी कटे पेड के ठूठ पर खडी होकर, ताकि उसे हर तरफ से देखा जा सके, चट्टानों के बीच सनोबर के पेडो के नीचे पथरीले मदान मे एकत्र स्वयसेविका लडकियो की रगबिरगी भीड पर नज़र दौडाते हुए उसने बस इतना ही कहा

"लडकियो, कल सुबह ही हमे सभी घायलो और सारे सामान को हटाकर नीचे जहाज़ मे पहुचाना है। रास्ते यहा ह नहीं। चट्टानो और पगडडियो से होकर जाना होगा। सभव है, बम गिरेंगे। हो सकता है, गोलाबारी होगी। हमारे लिये यह नयी चीज नहीं है। एक बात और। जहा तक निजी सामान का सवाल है, उसे छोडना होगा। म जानती हू कि इसका हर किसी को अफसोस होगा। हम मे से सब ने तरह तरह की चीजें इकट्ठी की ह, पर यह नहीं सोचा था कि लडाई मे उन्हें फेंकने की नौबत भी आ सकती है। हा, तो ध्यान मे रहे कि निजी चीजें, कपडे वगरह छोडने होगे। सबसे पहली चीज़ है घायल लोग और मेडिकल यूनिट का सामान! तो क्या सोचती हो? "

मरुस्या वोलकोवा ने सब की तरफ से उत्तर दिया

"कामरेड कमिसार, सब वसा ही होगा, जसा आप कहती ह, पर "
यहा वह कुछ रुक गयी, पर फिर कहा, "कोई बात नहीं! हम लोगो ने कपडे नहीं देखे ह क्या? भाड मे जायें वे ज़िन्दगी रहेगी तो बाद मे भी खरीद सकते ह।"

"ठीक है!" चारो तरफ से आवाज़ आयी।

पर उनमे दृढ़ता की कुछ कमी थी, जिससे सिसोयेवा समझ गयी कि कपडो से जुदा होना लडकियो के लिए मुश्किल है और केवल यूनिट का

अनुशासन ही उन्हें इस भारी नुक्सान को सहने मे मदद दे सकता है।

"बडी अच्छी बात है," सिसोयेवा ने कहा। उसने जाहिर नहीं किया कि वह उनकी दुविधा को भाप गयी है। "अब जाइये, खाना खाइये और सामान पक कर सो जाइये। हमे कल सुबह ही चल पडना है।"

मकान खाली हो गया। अभी अधेरा नहीं हुआ था। सिसोयेवा ने पगडडियो की जाच की, जिनसे होकर सुबह उन्हें जाना था। नीचे पानी के करीब ऐंबुलेंस अर्दलियो के साथ घायलो को जहाज मे चढ़ाने के लिए बदोबस्त करने मे मदद दी, इसके बाद डाक्टरो के साथ सूचियां तयार की और फिर अपना सामान और दस्तावेज रखने का केस बद किया। इस केस को वह अपना चलता फिरता दफ्तर कहती थी। और अचानक उसने देखा कि अधेरा छा गया है, रात हो गयी है।

चारो तरफ खामोशी थी। वह खमे से निकलकर ख्याला मे डूबी हुई पहाड पर चढ़ने लगी। फिर पति की याद आयी, जो वहा आगे मोर्चे पर लड रहा था। कल उससे एक पर्चा मिला था, जिसमे उसने अपनी कुशलता का समाचार लिखा था। पर्चा लानेवाले ने अपने अफसर जसे ही अन्दाज मे बताया था कि वहा उनके यहा गरमी बहुत है। बस। घायल लोगो से, जिनका दिनभर ताता लगा रहता था, उसे मालूम था कि तटवर्तीय इलाके के लिए भीषण लडाई हो रही है। कल सुबह घायलो को किसी भी कीमत पर हटाना होगा। कल दिन मे यूनिट के पास के जगल मे गोले फटे थे। सुबह तक इस सारे इलाके की बमबारी होने लगेगी।

वह अपनी लडकी के बारे मे, जिसे लेनिनग्राद मे चाची के पास भेज दिया गया था, और स्वयसेविका लडकियो के बारे मे सोचने लगी। यह सुनकर उन्हे कितना दुख हुआ होगा कि कपडे, जूते, बरसाती, टोपिया, सब कुछ छोडना पडेगा। यही उनकी एकमात्र सपत्ति थी, जिसे उन्होने लडाई से पहले स्थल डमरूमध्य के नये शहरो मे काम करते समय इकट्ठा किया था।

ऐसी सुदर शरद मे नाचगान और सर सपाटो की जगह उन्हे घायलो को आग मे से निकालना पडा, खून और ... लथपथ होना पडा, दलदलो मे भटकना पडा ... बारि ... और हर तरह की तकलीफें सहते हु ... १। ... । सभी बडी अच्छी और जोशीली ... । मिसाल के

लिए, यही मरुस्या वोल्कोवा ही गोली चलाने मे किस निशानेबाज से ब
थी! उन लोगो ने अपने सामान का क्या किया होगा? शायद चुपके चुप
आसू बहा रही होगी! उन्हे कहना होगा सामान यो ही न फेंककर किसी
के गड्ढे मे या और कहीं छिपा दें।

तभी दो आवाजें, जो जगल की सघनता के कारण साफ नहीं सुना
दे रही थीं, उस तक पहुचीं और झाडिया के ऊपर किसी अलाव
चिगारिया दीखीं। चट्टान पर खडे होकर एक मोटे सनोबर की टहनि
के परदे के पीछे से उसे एक आश्चयजनक दश्य दिखायी दिया, जो आरं
के दश्य से बहुत मिलता-जुलता था। उसे लगा कि वह बाल्कनी मे
एक अत्यन्त सुदर बले देख रही है।

स्वयसेविका लडकिया चट्टानो से होते हुए नीचे गढे की तरफ उ
रही थीं, जहा बडा सा अलाव जल रहा था। उनके हाथो मे सूटके
पकेट, आदि थे और सब अलाव के गिर्द पत्थरो पर खडी होकर उस
लपलपाती ज्वालाओ मे तरह तरह की चीजें फेंक रही थीं। सुनह
फीतियोवाले जूते, रगबिरगी पेटिया, तरह-तरह के कपडे, जिन पर फू
तितलिया, जहाज, आदि बने थे, नीले, हरे, लाल रुमाल, जो आग मे
अपना रग नहीं खो रहे थे—सब कुछ आग के अपण किया जा रहा थ
रूमाल, हार, मालाए, खुले गले के ब्लाउज, जिनपर धातु के बने ह
और बिल्लिया चमक रही थीं, आग मे जले जा रहे थे। अलाव अपने ल
हाथो को भूखे की तरह फलाकर पत्थर से फेंकी जाती हर चीज को ह
रहा था। धूआ पूरे जगल मे छा गया था और चट्टानो के बीच की
दरारो से होकर नीचे झील की तरफ जा रहा था।

और सब चीजें आग के गढे मे तरती हुई धीरे धीरे कम होती
रही थीं। जले हुए कपडो से चीथडे गिर रहे थे, और ये रगबिरगे ची
धीरे धीरे मद पडती लपटों मे, जो मानो इसकी सूचक थीं कि उसकी
तृप्त हो गयी है और अब वह जमुहाइया ले रही है, अजीब सी डोरि
की तरह उड रहे थे।

सनोबर के नीचे बठकर सिसोयेवा मत्रमुग्ध होकर देख रही थी
लडकिया जोश मे आकर एक दूसरी को धकेलती हुई एक बडी सी लक
से आग को कुरेद रही ह। अत मे सूटकेसो और बक्सो के ढेर ने उन
इतनी सारी हल्की और खूबसूरत चीजो की राख को मकबरे की तरह

लिया। अलाव बुझने लगा था। लड़कियो ने अगारो को कुरेदा, ताकि अलाव आखिर तक जल जाये और जब अगारे नीले रग के पड गये, तो वे उन पर मुट्ठिया भर भरकर रेत फेंकने लगीं। सी-सी करती हुई रेत अगारो पर गिर रही थी और उसकी तह लगातार मोटी होती जा रही थी। और जब अलाव की जगह पर केवल छोरो पर जली हुई घास ही बाकी रह गयी, चाद निकल आया।

सिसोयेवा टकटकी लगाकर इस अजीब से रात्रिकालीन दृश्य को देख रही थी। मरूस्या घोलकोवा रेतीले टीले के ऊपर खडी होकर जोर से बोला

"मेरा विचार ठीक नहीं था क्या? हम अपना सामान क्या फासिस्टो को दे देते, ताकि वे शेखिया बघारें? कभी नहीं! और अब आओ थोडा नाचे, लेकिन धीरे, धीरे "

"जसे कि एक चुटकुला है," किसी ने उसे जवाब दिया, "थोडा गोलिया चलायें, पर धीरे, धीरे "

और लडकिया गढ़े मे कूद कर हाथो मे हाथ लिये राख के इर्दगिर्द नाचने लगीं। बडे बडे चीडो और सनोबरो के नीचे चादनी मे वे झूम रही थीं, इकट्ठा होकर फिर बिखर जाती थीं और उनकी छायाए रेतीली दीवारो पर दौड रही थीं।

बिल्कुल जसे ग्रापेरा मे होता है, सिसोयेवा ने सोचा और वह सो गयी। कसे, यह खुद उसे भी पता न था। थकावट ने उसे गिरा दिया, सनोबर की घनी शाख ने उसे ढक लिया और वह हल्की मीठी, पर सतक नींद सो गयी। नीचे नाचनेवाली लडकियो का शोर अब उस तक बहुत कम पहुच रहा था।

पेड से एक छोटी सी सूखी टहनी गिरने से उसकी नींद खुल गयी। हवा मे ठडक बढ गयी थी। पेडो की चोटिया सरसरा रही थीं। चाद भी आसमान मे काफी ऊपर चढ़ आया था। चारो तरफ सन्नाटा था। "हो सकता है कि म सपना देख रही थी?" सिसोयेवा ने सोचा और ठड से अकडे परो को रगडते हुए उठी और टहनियों का सहारा लेते हुए रेतीले गढ़े की ओर चल पडी। चादनी मे अलाव की जगह पर बने रेत के ढेर पर छोटे छोटे परो के बहुसख्यक निशान साफ साफ दिखायी दे रहे थे। रेत गम और मुलायम थी।

नीचे, दूर, झाड़ियों के पीछे बड़ी सी झील चमक रही थी। कहीं बहुत ऊपर हवाई जहाज चक्कर काट रहा था।

"मने उनके बारे मे ठीक नहीं सोचा था," सिसोयेवा ने अपने आपसे कहा। "सोचा था कि वे रोयेंगी। पर ऐसी कोई बात नहीं हुई। म उन्हे बहुत चाहती हू। पर कभी कहूगी नहीं। नहीं तो उन्हे इसका घमण्ड हो जायेगा। वे सोच रही थीं कि सब काम चुपके से कर लेगी। पर म सब जानती हू। और फिर मुझसे वे छिपा भी क्या सकती हू? म उनकी कमिसार हू!"

इस विचार से वह खुश हुई और तेज क़दमो से मेडिकल यूनिट के सफ़ेद, चमकते खेमो की ओर उतरने लगी।

कुक्कू

रुबाखिन हमेशा की तरह विश्वास के साथ खंभे पर काम कर रहा था। आदतन उसने जूतों पर लगी चढ़ने की कीलों को महसूस किया, जो खंभे में चुभकर उसे लटके रहने में मदद दे रही थीं। आदतन ही उसने ऊंचाई से अपने चारों तरफ देखा। नीचे एक ट्रक दिखायी दी, जिस पर फालतू पहिया, एक कनस्तर, रस्सियां और कुछ चीथड़े पड़े हुए थे। सिज़ोव इंजन ठीक कर रहा था, पखोमोव दराज से औज़ार निकाल रहा था। चारों तरफ जाना पहचाना दृश्य था, जिसे उसने बहुत बार देखा था दूर किसी गोदाम की छिपी हुई टंकियों का ढेर, नुक्कड़ पर संतरी की गुमटीवाली ऊंची, पीली चहारदीवारी, मोड़ खाता हुआ पुश्ता, धूल से सने तनहा पेड़ों की छाया में अनेक छोटे छोटे घर और बरियर तथा गुमटी के पास जाकर खत्म होती पक्की सड़क।

सुबह की ठंडी हवा शरद की नज़दीकी का अहसास करा रही थी और अगर गोलाबारी से टूटे हुए तार न होते तो लाइनमन रुबाखिन को सब कुछ सामान्य लगता। मज़े से काम करते जाओ! कोई पहली बार तो नहीं कर रहे हो!

सड़क पर इक्के-दुक्के राहगीर जा रहे थे, लारियां दौड़ रही थीं, कहीं उधर, दूर के टीलों के पास मशीनगनें गड़गड़ा रही थीं, और अगर वह पीछे मुड़कर देखता, तो नीले धुंधलके में शहर की इमारतों का सागर पाता। घरों की चिमनियों से रंगबिरंगे धुए की लहरें निकल रही थीं, ठीक उसकी बेटी की बनायी हुई तस्वीरों जैसे। "बड़ी होकर वह चित्रकार बनेगी," रुबाखिन ने सोचा। काम के वक्त वह हल्की-फुल्की चीज़ों के बारे में ही सोचता था, क्योंकि ध्यान दूसरी चीज़ पर होता था।

यह कसे शुरु हुआ, वह तुरत नहीं समझ पाया। शुरु मे कोई अनजान, लगातार बढती हुई आवाज उसके कानो तक पहुची, जिससे सर एकाएक कधो के बीच छुप गया। इसके बाद चारो तरफ भयानक धमाके की आवाज गूजी और उसे लगा कि वह कहीं उड रहा है। पर जल्दी ही वह होश मे आ गया और आसमान की ओर उठते बडे से फाखतई रग के बादल और उबकाई से वह समझ गया कि क्या हुआ था। बाद मे उसे चीखें सुनायी दीं। ध्यान से, कान लगाकर सुनने पर उसने पाया कि पखोमोव चीख रहा था "रुबाखिन, नीचे उतरो! तुरत उतरो!" उसमे हठ और डर, दोनो का पुट था।

तभी चीख के ऊपर से फिर एक जबदस्त घरघिट सुनायी दी। ऐसा लगा कि सब कुछ को मिलाकर एक करनेवाले तूफान की तरह उसने बाकी सभी आवाजो को, जो कधो और पीठ को भेद रही थीं, दबा दिया है। और उसने देखा कि रास्ते पर धूल इस तरह उठ गयी थी, जसे कि उसपर कोई बडी-सी कघी फेरी जा रही हो।

नहीं, वह नहीं उतरेगा! ऐसा कोई पहली बार तो नहीं हो रहा है। रुबाखिन दुश्मन को नहीं देख पाया, जो उसके ऊपर से गुजरा था, लेकिन वह पूरी तरह अनुभव कर रहा था कि वह सडक के इस खभे की तरह ही, जिससे वह जकडा हुआ था, असहाय हवा मे लटक रहा है। अब वह नीचे और इर्दगिर्द नहीं देख रहा था। अपना सारा ध्यान केंद्रित करके वह काम मे लीन हो गया, मानो वह जो ऊपर था, उसका कुछ नहीं बिगाड सकता। रुबाखिन जानता था कि "वह" वापस आयेगा, पर कितनी बार, इस बारे मे उसने नहीं सोचा।

उसके माथे पर पसीना झलक आया, मासपेशिया तुरत ढीली हो गयीं और मुह मे धूल और रेत भर गयी। उसके पीछे, कुछ दूर से फिर धमाके की आवाज आयी। काली लहर की तरह मिट्टी उसके कधो पर गिरी। अब रुबाखिन अधखुली आखो से काम कर रहा था। रगबिरगा कोहरा सडक के ऊपर उड रहा था। उसकी हालत अजीब सी हो गयी थी और वह बस एक ही चीज को देख रहा था और एक ही चीज उसे याद थी-बिजली लाइन को ठीक करना है। "यथाशीघ्र ठीक करना है!" उसे आदेश मिला था। तो ठीक है यथाशीघ्र ठीक करूगा। इस क्षण से चारो तरफ हर चीज सपने मे जसी अवास्तविक बन गयी।

हुआने मे बदलती हुई गडगडाहट उसके ऊपर चक्कर काट रही थी। लगता था कि खभे के अभी टुकडे-टुकडे हो जायेंगे। गुस्से से भरी गूज सारे आसमान को चीर रही थी। लोहे की प्लेटो पर उछलते हुए तपे छरा की तडतडाहट कानो मे गूज रही थी। सारा बदन दद कर रहा था। पर एसा तो कई बार हो चुका है। आज कहीं आखिरी बार तो नहीं है? और हो सकता है कि रुबाखिन को भ्रम हो गया है कि वह जिदा है, जबकि असलियत मे वह जिदा नहीं है और यह कुहरा, यह गडगडाहट, यह तडतडाहट अभी जिदा चेतना का केवल सिलसिला ह बची खुची ताक्त को समेटकर वह पता नहीं किसे सबोधित करते हुए फटी आवाज में चिल्लाया। पर क्या वह सचमुच चिल्लाया था? कहीं ऐसा तो नहीं है कि फुसफुसाहट की तरह उसका चिल्लाना सुनने के लिये आसपास कोई नहीं है। वह चिल्ला रहा था

"नहीं उतरूगा! नहीं उतरूगा! "

उसे अपनी हरकते याद नहीं थीं और वह यह भी नहीं बता सकता था कि उसके हाथो ने क्या क्या किया था। पर ये हाथ भी ग़जब के थे—उनकी जिदगी मानो उससे अलग थी और शायद इसीलिये वे अपना काम करते जा रहे थे। उसे उन पर विश्वास था, वह जानता था कि वे अपना काम अच्छी तरह कर रहे ह। चारो ओर सन्नाटा छा गया। अचानक उसने चिडिया की पतली और साफ़ आवाज सुनी। उसने पहचान लिया कि कुक्कू कुहुक रही है। वह इन अदभुत और असाधारण आवाजो को गिनने लगा। उसे लगा कि वह जगल के बीच मदान मे खडा है और उसके चारो तरफ़ हरा शीतल अधंधकार है, कहीं पास ही मे झरना बह रहा है, सनोबर की शाखें सरसरा रही हे और शात चिडिया मानो उसे तसल्ली देते हुए उससे बातें कर रही है।

उसने उसकी कुक्कू कुक्कू की आवाज़ा को गिना। खुशी की लहर उसने सारे बदन मे दौड गयी। छ, सात, आठ, नौ, दस!

"म जिदा रहूगा! म जिदा रहूगा!"—उसने धूल से सने होंठों को हिलाया और गहरी सास ली।

भयानक गुजार फिर सुनायी दिया और चिडिया की आवाज ग़ायब हो गयी। पर भय उसे डर बिल्कुल नहीं था। कुछ देर के लिये खामोशी छा गयी और उसे कुक्कू की उत्साहवधक कुहुक फिर सुनायी देने लगी

हो सकता है कि वह अब नहीं गा रही थी, यह शायद उसका भ्रम ही था। पर यही सोचना काफी था कि फिर से अपने कधा, हाथो का अनुभव करे और चमकती हुई कीला को देखे, जो खभे की मुलायम और हल्की लकडी मे चुभी हुई थीं।

कुक्कू यहा कहा से आ गयी? यहा न तो जगल है, न जगल की सी खामोशी। उसने इस बारे मे सोचा ही नहीं। कुक्कू का होना अच्छी बात है, शुभ शकुन है। जीना! जीना! यह विचार उसकी कनपटी पर चोट कर रहा था, इससे घिसी हुई पोशाक के नीचे छिपा उसका दिल सिकुड गया था। और गरजती हुई मूर्च्छा की लहरे फिर आने लगीं—सडक पर धूल के बगूले उड रहे थे और कहीं दूर, मानो तस्वीर मे, पेंसिल से आस मान को लाल और सडक को हरा बनाती हुई बेटी बठी हुई थी। वह इतनी दूर थी कि अगर वह खभे से उतरकर चलने भी लगे, तो एक पूरा दिन, या इससे भी ज्यादा, लग जाये।

ताजी हवा ने उसके चेहरे को छुआ। वह नहीं बता सकता था कि उसने कितनी देर तक खभे पर काम किया। पर जो जरूरी था, उसने कर दिया बिजली लाइन फिर काम करने लगी थी। अब जमीन पर उतरा जा सकता था।

कुक्कू की मीठी, शुभ कुहुक उसके कानो मे तब भी गूज रही थी, जब उसने अपने सुन्न पडे हुए परो को मुश्किल से उठाते हुए खभे की बुनियाद के धब्बेदार पत्थर को छुआ। चकाचौंध करने वाली धूप मे आखो पर हाथ की ओट करके उसने इधर-उधर देखा। उसकी नजर उखडे हुए जवान पेडो पर पडी, जिनके भूरे सिरे सडक पर गिरे हुए थे। उसे जली हुई लारी दिखायी दी, जो अजीब ढग से लुढक गयी थी। उसे औंधा गिरा हुआ आदमी भी दिखायी दिया, जिसके सिर के नीचे से अस्फाल्ट पर तीन काली धारे बह रही थीं।

उसने खभे को देखा। उसका निचला हिस्सा ऐसा लग रहा था मानो उस पर लोहे की छड से चोटें की गयी हो, लेकिन एक भी निशान आदमी की ऊचाई के ऊपर नहीं था।

"रुबाखिन!" कोई चिल्लाया, "तुम जिन्दा हो?"

वह डगमगाता हुआ आवाज की दिशा मे जाने लगा। झाडियों के पीछे से पीला पडा हुआ और करीब करीब चोथडो मे एक आदमी निकला।

यह अद्रेयेव था। यहीं उसे पिक अप भी दिखायी दी, जिससे लोग उतर रहे थे। पास ही एबुलेंस कार भी खडी थी और स्ट्रेचर पर एक आदमी लेटा पडा था, जिसके मुह से कभी कभी कराह फूट पडती थी।

"सिज़ोव को गोली लगी है!" क़रीब क़रीब उसके कान मे अद्रेयेव चिल्लाया।

वह सडक पर पडे आदमी के पास आया, उसके सामने झुका और न जाने क्यो अपने छिले हुए घुटने पर हाथ फेरते हुए धीरे से बोला

"सिज़ोव! हाय सिज़ोव!"

"और तुम, रुबाखिन, पूरी तरह ठीक हो?" अद्रेयेव फिर चिल्लाया।

रुबाखिन ने अपने को ध्यान से देखा। पट पट गयी थी, क़मीज़ की बाहे भी चिथडे बनकर लटक रही थीं। नहीं, वह ठीक ही था उसने फिर से क़रीब क़रीब ग्रीष्मकालीन बादलो से घिरे आसमान को देखा, छोटे घरो को देखा, जो पास ही मे थे, पक्की सडक को देखा, जिसपर मोटरें चल रही थीं, और रेलवे लाइन पर करीब आती हुई गाडी के धूए को देखा।

"आगे जाना चाहिये," उसने गभीरता से कहा। "काम अभी खत्म नहीं हुआ है।"

"म जानता हू," अद्रेयेव ने जवाब दिया। "यह रही पिक अप।"

पिक-अप मे बठते हुए रुबाखिन ने देखा कि कसे निर्जीव सिज़ोव को ले जाया जा रहा था और कसे घायल पखोमोव को अदर रखकर एबुलस कार का दरवाजा बद हुआ। पिक अप चलने लगी। चारो तरफ सनाटा छा गया। रुबाखिन का दिल यो धडक रहा था, जसे कि वह देर तक पहाडियो पर दौडता रहा हो।

पिक-अप सडक के मोड तक पहुची और अपनी जगह से उठकर पहली बार रुबाखिन चिल्लाया "ठहरो! ठहरो!" वह इतनी ज़ोर से चिल्लाया था कि ड्राइवर ने एकदम ब्रेक लगा दिया। रुबाखिन उतरा और झूमते हुए भारी कदमा से छोटी सी खुली खिडकीवाले घर की तरफ बढा। घर की दीवार पर बेले फली हुई थीं। पास ही हरी क्यारिया थीं और एक क्यारी मे एक सूखता हुआ फूल सर ऊपर उठाये हुए था। खिडकी से एक छोटी लडकी का सर दिखायी दे रहा था।

और बग़ीचे की खामोशी मे, जिसमे एक भी पेड नहीं था, कुक्कू साफ और मीठी आवाज मे कूक रही थी। उसकी नपी-तुली और विश्वास

मरी आवाज मानो रुबाखिन को लबी आयु बख्श रही थी। यही थी वह रहस्यमय आवाज, जिसने उसे वहा खभे पर उन भयानक मिनटो मे शक्ति दी थी, जब धरती काप रही थी और गोलिया से सडक की धूल उडी जा रही थी।

नन्ही लडकी के बालो मे बधा रिबन क्यारियो की तरह हरा था और उसके पीछे कुक्कू हर चीज को अपनी विजयी कुहुक से भरते हुए गा रही थी।

लडकी अचमे से, भौंहो को सिकोड कर देख रही थी कि किस तरह फटी हुई पोशाक वाले बडे और भारी भरकम चाचा ने हल्के से उसे एक तरफ किया और अदर कमरे मे झाका। अलग हटकर और यह न जानते हुए कि उसे रोना चाहिये कि चिल्लाना, उसने देखा कि यह चाचा, जो पिक अप से उतरा था, उस पुरानी घडी को एकटक देख रहा है, जिसके नीचे पेंडुलम झूम रहा था और ऊपर छोटी सी चिडिया अपनी खिडकी से सिर निकालकर कूकती हुई बता रही थी कि इस समय ग्यारह बजे है।

"यह तुम्हारी कुक्कू है?" रुबाखिन ने उससे पूछा।

लडकी ने, जो घबराहट की वजह से रोना भूल गयी थी, धीरे से जवाब दिया

"मेरी है।"

"तो इसे बचाकर रखना, मेरी नन्ही गुडिया," रुबाखिन ने कहा।

और लडकी को चूमकर वह तेजी से पिक अप की तरफ चला गया, जिसमे बठे लोग अचभे के साथ उसे देख रहे थे। पिक अप मे बठकर उसने कहा

"चलो, चले "

"परिचित है क्या?" एक बडे से चारखानादार रूमाल से नाक साफ करते हुए और माथे की धूल पाछते हुए अद्रेयेव ने पूछा।

"हा, परिचित कुक्कू है," रुबाखिन ने कुछ रुककर जवाब दिया।

"क्या मतलब तुम्हारा?" अद्रेयेव बोला। "वह लडकी तो कुक्कू बिल्कुल नहीं लगती। बेशक खिडकी से झाकते हुए ऐसे लग रही थी, मानो घासले से देख रही हो। पर कुक्कू से तो बिल्कुल नहीं मिलती।"

पिक अप चल पडी।

वह छत पर पहरा देती थी

वह एक बहुत साधारण सी लडकी थी, जसी कि लेनिनग्राद मे बहुत ह। आजकल उनके गिरोह के गिरोह देखे जा सकते ह। उनमे से कुछ शान के साथ कवायद करती और लाल सनिको के गीत गाते हुए चल रही होती ह, तो कुछ बेलचे-फावडे कधो पर रखे आपकी बचपन की जानी पहचानी सडको के कोनो पर बकर बनाने जाती ह और कुछ लडकिया "धनी दुलहन" फिल्म देखने के लिए सिनेमाघर के सामने लाइन लगाये खडी होती ह। उनके गाल धूप से तपे हुए, आखें चचल और हाथ मजबूत होते ह। उनम एक खास तरह की एकाग्रता होती है। वे आसानी से शर्मा तो जाती ह, पर घबराती मुश्किल से ही ह। किसी भी बात का पना जवाब उनके पास हर समय तयार रहता है। लेनिनग्राद के घेरे के दौरान उन्होंने ऐसी ऐसी चीजें देखी ह कि उनका अनुभव उनकी माओ और दादियो के अनुभव से टक्कर ले सकता है। करीब करीब सभी को बदूक चलाना या नस का काम करना आता है। जो फौजी वर्दियो मे होती ह, उनसे उनकी नागरिक पोशाकोवाली सहेलियो को ईर्ष्या तो होती है, पर फिर भी मन ही मन वे नये फशनेबुल कपडो की कल्पना करना नहीं छोडतीं और खाली समय मे नाच-गानो मे हिस्सा लेने से भी नहीं चूकतीं।

नताशा भी ऐसी ही लडकी थी। हजारो की तरह। मेरी उससे बात चीत सयोगवशात ही हुई और वह भी सवाददाता के रूप मे नहीं। जेब से पेंसिल और नोटबुक निकालने की मेरी काई इच्छा नहीं थी। फिर भी म उससे पूछ ही बठा

"इस साल आपने क्या किया?"

"म छत पर बठी रही," उसने गभीरतापूवक जवाब दिया और उसकी साफ, भूरी आखें बता रही थीं कि वह सच कह रही है।

"उसे बिल्ली की तरह छत पर दौडना पसद है," उसकी सहेली ने हसते हुए कहा।

"म बिल्ली नहीं हू," उसने जवाब दिया। "शहर मे अब बिल्लिया नहीं रहीं। मेरा काम छत पर पहरा देना था और मने पिछले शरद से अपने ठिकाने की रक्षा की।"

"आपकी ड्यूटी दिन को थी या रात को?"

"जब भी खतरे का अलाम बजता था, तभी। याद है, पिछले शरद मे हवाई हमले का खतरा कितने लबे समय तक बना रहता था? खडे खडे टागें अकड जाती थीं, मगर ज्यो ही वह शुरू होता था, एकाएक गरमी लौट आती थी "

"वह, यानी क्या?"

"यानी जब गोलाबारी शुरू होती थी और 'वह' सिर के ऊपर गूजता था, गूजता था और उसके बाद ज्यो ही अग्नि बम या दूसरा बम गिरता, तब पहला काम अपने को सभालना होता था "

"आपने बम देखे ह?"

"और क्या! किसने नहीं देखे ह? मेरी छत से सब कुछ हथेली पर रखे काच की तरह साफ साफ नजर आता है पहले जब बमबारी नहीं होती थी, हम चादनी रातो मे छत पर चिमनी के पास बठे हुए शहर को देखते थे, चादनी मे बायरन को भी पढ लेते थे। हवा मे पूरी खामोशी होती थी, सडको पर कभी कभार एक दो मोटरगाडिया गुजर जाती थीं। विचित्र सी अनुभूति होती थी कि आप शहर के ऊपर उड रहे ह और वह इतना सुनहरा और तराशा हुआ सा है। उसकी हर छत, हर शिखर दूर तक दिखायी देता था। म आखो को चीजें, जगह पहचानने की आदत डाल रही थी। आसमान मे बलून तिर रहे होते थे। दिन मे धरती पर वे झाड़े जसे मोटे और हरे लगते थे और रात को हवा मे, बादलो की छाया मे, सफेद ह्वेलो की तरह तरते थे। चाद ऐसे उगता था कि पेत्रोपाव्लोव्स्क किले का शिखर उसे बीचोबीच भेदता लगता। अगर वह आधा चाद होता, तो गुलाबी रग का और सतरे की फाक जसा लगता, और अगर हल्की सी बदली से ढका होता, तो दूर के नीले बादबान जसा दीखता। छत पर हमे लगता कि जसे हम देत्स्कोये सेलो के पाक मे घूम रहे हो।"

"और सरदियो मे शहर कसा लगता था?"

"जब बरफ गिरी और सर्दी बढ़ी, तो छत पर फिसलन भी बहुत हो गयी। चलना मुश्किल था और गिरना आसान। लेकिन उस समय मने पर्वतारोहियो का तरीका इस्तेमाल किया। म पर्वतारोही रह चुकी हू। मेरे पास बरफ पर चलने के खास तरह के जूते थे। जसे ग्लेशियरो में होता है, उसी तरह मकानों से भी बर्फीली कार्निसें लटक रही थीं। शहर किसी पर्वतश्रृंखला की तरह लगने लगा था—पूरा का पूरा बर्फ से ढका हुआ, घर चट्टानो की तरह काले। और कभी अचानक बम के धमाके से हर चीज चमक उठती थी, आग लग जाती थी। आप देख सकते थे कि कहा क्या जल रहा है। बडा डर लगता था! इच्छा होती थी कि इस बदमाश जमन को भी ऐसे ही मार डाला जाये, लेकिन वह दीख ही नहीं रहा था। सचलाइटें खोजतीं, पर वह नहीं मिलता। और गोलाबारी ऐसी होती था कि कानो मे अगुलिया ठूसे बिना काम नहीं चलता था। बाद मे अपने ही गोलो के टुकडे छत पर गिरते। चिमनिया पर खरोंचें लगतीं, इटें टूटतीं। उस वक्त म फौलादी टोप पहना करती थी। पर आग को तुरत बुझा दिया जाता था और फिर अधेरा बढ़ आता था। सर्दिया खत्म ही नहीं होती थीं। दिन इतने लबे लगते थे कि जसे उत्तरी ध्रुव मे रह रहे हो। एक बार फासिस्टो ने इतने अग्नि बम फेंके कि लगता था कि पागल हो गये ह। ये हरे, बैंजनी, लाल और नीले आग के गोले खतरनाक तो नहीं थे, पर उन्हें तुरत बुझाना जरूरी था। उनमे से कुछ को म बुझा देती थी और कुछ को छत से नीचे गिरा देती थी। सडक पर वे भयानक आग की तरह जलते। अपनी साथिनो के साथ मिलकर मने बहुत से बम बुझाये। एक को तो म घर पर भी लायी थी, पर बाद मे उसे फेंक दिया शुरू मे उससे बू आ रही थी, बाद मे बेहद घिनौना लगने लगा। मरी हुई छिपकली की तरह। और फासिस्ट समझ गये कि उन्हें बेकार फेंक रहे ह, क्योंकि उनसे कोई नहीं डरता था, बल्कि उल्टे यहा तक कहते थे कि अग्नि बम गिरे तो गिरें, पर सुरगी बम कभी न गिरें।"

"और वसत मे शहर कसा लगता था?" मने सवाल किया।

"म क्या कोई लेखिका हू कि शहर का वणन करू?" नताशा ने जवाब दिया। "वसत मे म हर चीज को इतनी अच्छी तरह से नहीं समझ पाती थी। उन दिनो म ज्यादातर जिंदगी के बारे मे सोचती थी। छत से म ऊब गयी थी। मेरी सहेलियो मे से कोई वालटियरो की टोली मे भरती

हो गयी थी, तो कोई मिलिशिया मे, किसी को शहर छोड़ना पड़ा था, तो कोई बीमार थी। मगर मुझसे कहते थे तुम्हारी यहा जरूरत है। तुम इन्स्ट्रक्टर हो। वसन्त मे छत पर शायद म हवा से मदहोश हो गयी थी। शहर पहचानना भी कठिन था। ज्यों ही बर्फ पिघलने लगी, आसमान रक्ताभ नीला हो गया और शहर ऐसा कि मानो उसे काले बक्से से निकालकर रोजाना साफ किया जाता हो। वह धुला हुआ, साफ सुथरा होता था। सभी छतें साफ-साफ दिखायी देती थीं। केवल कुछ छतो पर गोलों से सूराख बन गये थे। दूरबीन से देखने पर दीवारो मे भी गोला से बने छेद दीखते थे, खिडकियो दरवाजो के सभी काच टूटे पड़े थे।"

"छत पर आप क्या सोचती थीं? मेरा मतलब है कि जिन्दगी के बारे मे क्या "

"म सोचती थी कि हमारा रूस कितना तबाह हो गया है। म अपनी चाची से मिलने कालीनिन गयी थी और बाद मे एक पर्यटक टोली के साथ सेलीगेर झील को भी देखा। हर जगह खडहर ही खडहर नजर आये। लेनिनग्राद से किसी भी दिशा मे जाइये, हर तरफ तबाही के निशान दिखायी देते ह। पार्क उजड गये ह, महल लूट लिये गये ह, शहर और गाव भस्म हो गये ह। मानो कोई रेगिस्तान हो! बाशिदो को या तो मार डाला गया था या कैद करके कहीं ले गये थे। जो बच पाये, वे जगलों मे भाग गये थे। इसलिए म सोच रही थी कि लडाई के बाद म कौनसा पेशा अपनाऊ, ताकि इन सब की बहाली मे मदद कर सकू। मने पाया कि इस काम के लिए अनेक पेशों को जानने की जरूरत होगी, जो एक आदमी के बस की बात नहीं है। वास्तुकार, इजीनियर, तकनीशियन, डाक्टर, अध्यापक, कृषि विशेषज्ञ, आदि सभी की जरूरत होगी। और यह सब हम नौजवानो को ही करना होगा। फासिस्ट जलीलो ने जो भी गदगी फलायी है, उसे हमे ही साफ करना होगा। म छापामारो की टोली मे शामिल होना चाहती थी, पर इजाजत नहीं मिली। कहते ह कि छत पर बठो। सो बठी रहती हू। उनके टोह लेनेवाले हवाई जहाज आया करते ह। लगता है कि वे किसी गदे ईंधन को इस्तेमाल करते ह। उनकी पूछ से गदा धूआ छूटता है और म खुश होती हू कि उनके पास उडने के लिए बढ़िया ईंधन नहीं है। हमारे हमले के सामने उसे भागना ही पडता है। मेरे देखते-देखते बहुत से मार गिराये गये ह "

"सचमुच आपने यह सब देखा है?"

"और क्या! कोनस्तान्त के ऊपर जब भी हवाई लडाई होती है, मेरी छत की बुर्जी से सब दिखायी दे जाता है। वह ऐसी जगह पर है इतनी ऊंची है कि वहा से समुद्र का किनारा, शहर, सब दिखायी है। अनेक बार मने जमन हवाई जहाजो को जलकर मुह के बल गि देखा है, पर ठीक किस जगह पर जाकर गिरे, यह नहीं मालूम कर सब हर बार म खुशी के मारे तालिया बजाती थी और दूसरे लोग भी, ड्यूटी पर होते थे, तालिया बजाते थे "

"और गरमियो मे आपने क्या किया?"

"प्यार।"

"छत पर?"

"नहीं जमीन पर। छत पर किससे प्यार किया जा सकता है? क्या बेवकूफी की बात कर रहे ह? म एक बार ड्यूटी पर थी। तभी कि एक हवाई जहाज उड रहा है। गोलाबारी शुरू हो गयी और वह उधर चक्कर काटने लगा अचानक कोई पराशूट से उतरता दि दिया। मैने दूरबीन से देखा, यह कोई छतरीबाज ही था—बडा सा, सा। मने सोचा कि वह कहीं पागल तो नहीं है, जो सब की आखो सामने शहर मे उतर रहा है। पर वह कहा गिरा, म न देख सकी। श कहीं पास ही मे। ड्यूटी खत्म होने पर मने अपनी एक सहेली से पू 'वह छतरीबाज कहा उतरा है?' वह जवाब देती है 'बेवकूफ कहीं कौनसा छतरीबाज? चलो म तुम्हे दिखाती हू।' हम गलियो को करती हुई एक घर की तरफ भागीं। वहा कुछ जाने पहचाने नाविक थे। वे चिल्लाये 'खबरदार, पास न आना!' 'क्या बात है?' मने पू उन्होने कहा 'जमनो ने पराशूट से टारपीडो फेंका है। वह सीधे इस से घर की छत पर गिरा है। पराशूट से बधे होने के कारण वह अपने व से केवल छत को ही तोड सका और अब अटारी में पडा हुआ है। एक विशेषज्ञ गया है। कहते ह कि कोई नौसनिक अफ्सर है। इतनी से उसी के पीछे सिर खपा रहा है, क्योकि उस तक पहुच पाना मुि है। वह चुबकीय है, इसलिए आसपास का सारा लोहा, सारी छत उ तरफ खिच गयी है। देखकर हसी आती है। पर वह कमबख्त फूट भी स है! उसमे टाइम मकेनिज्म लगा हुआ है।' हम खडे होकर उस घर

तरफ देख रहे थे और काँप रहे थे। और मैं उस वीर नौसैनिक अफसर की कल्पना कर रही थी—सुंदर, लंबा, हल्के रंग के बाल, नीली आँखें। यह अकेला उस शैतान से लड़ रहा है। कितना बहादुर है! मैं वहाँ से हट नहीं सकी। हम सब बुरी तरह घबरा रहे थे।

"अचानक किसी की आवाज आयी 'बस, अब डरने की कोई बात नहीं। अब उसे हटाया जा सकता है। नौसैनिक अफसर ने उसे खाली कर दिया है। अब यह आराम करने जा रहा है।' मैं आगे लपकी। लोग चिल्ला रहे थे 'कहाँ जा रही हो?' पर मैंने कुछ न सुना। मैंने देखा कि एक नौसैनिक अफसर चला जा रहा है—इतना शांत, छोटा, थका और अपने हाथों को देखता हुआ। उसके हाथों में खरोंचें लग गयी थीं। उसने घड़ी देखी और फिर उसकी नजर मुझपर पड़ी। मैं निर्भीकता के साथ बोली 'क्या मैं आपके हाथों पर पट्टी बाँध सकती हूँ? मुझे यह काम आता है।' वह मुस्कराकर बोला 'कोई बात नहीं, शुक्रिया। जल्दी ही ठीक हो जायेंगे। मेरे पास समय नहीं है। अभी इस तरह की एक और चीज को ठिकाने लगाना है।' और वह कार में बैठकर चला गया। मैं उसके पीछे देखती हुई बेवकूफ की तरह रो पड़ी। मुझे लगा कि उसे कभी नहीं भूल पाऊँगी। पर इस समय हम सब को लड़ना है। क्या करें, लड़ेंगे। हो सकता है कि कहीं मुलाकात हो जाये। तब मैं उससे अपने मन की सारी बात कह दूँगी। मगर इस समय ड्यूटी पर रहना जरूरी है। मेरी चौकी से, छत से सभी नौजवान भाग गये थे। पर मेरे लिए यह मुमकिन नहीं था। मैं इन्स्पेक्टर थी। मैंने दूसरी टोली तैयार की। अब इस साल भी अपने ठिकाने की रक्षा करूँगी। मेरा ठिकाना महत्त्वपूर्ण है, पर कौनसा है, यह नहीं बता सकती—यह सैनिक भेद है। युद्ध खत्म होगा, तो मैं छत से उतरकर जमीनी कामों में लग जाऊँगी। बस एक ही तसल्ली है—जब अपने हवाई जहाजों को देखती हूँ, तो सोचती हूँ कि वे भी आसमान में ही रहते हैं, नीचे नहीं आते, दिन रात हमारी रक्षा करते हैं, मुझसे कहीं ऊपर, जमीन से और भी दूर।"

"तब तो आप भी वीर हैं, नताशा?"

"छोड़िये, हम लेनिनग्रादवासी वीर कहलाते-कहलाते ऊब गये हैं। हम अति साधारण हैं। जानते हैं, वीर कहलाने के लिए हमें और कितनी कुशलता, लगन और बहादुरी की जरूरत होगी? पहले दुश्मन को भगाना

है, तभी देखा जायेगा कि कौन उसे सबसे अच्छा मारता था। पर तब तक अपने को तयार रखना है, तयार रखना है! एक बार जब म बेहद परेशान होकर झल्ला रही थी, तो एक परिचित नाविक ने कहा था 'परेशान न होओ। मेरी डयूटी जहाज के डेक पर है और तुम्हारी छत पर। तुम्हारी छत जसे जहाज का डेक है और जहाज तुम्हारा ठिकाना है। इसलिए तरते जाओ, तरते जाओ। मगर रास्ता सही हो, विजय की ओर ले जाता हो।' कितना अच्छा कहा था उसने। तबसे मने झल्लाना छोड दिया। अब खडी रहती हू और बिना कोई शिकायत किये अपनी ड्यूटी पूरी करती हू। केवल यही कोशिश रहती है कि काम और ज्यादा अच्छा हो "

निज़ामी

निज़ामी आज़रबजान के महान कवि थे। उनका पूरा नाम काफी बडा और आडम्बरपूण था शेख निज़ामी उद्दीन अबू मुहम्मद इलियास इब्न-यूसुफ गजवी, पर वह बहुत ही नम्र और सादे व्यक्ति थे। उनका जम आठ सौ साल पहले गज चाइ नदी के किनारे गज शहर मे हुआ था।

उन दिनो रक्तपिपासु शासक पूरे के पूरे मुल्को को तहस नहस कर डालते थे। लेकिन शायर को किसी भी तरह के वभव का लालच नही खरीद पाया। वह कालीन के बजाय अपने फटे हुए नमदे पर बठते थे और उनके सामने हीरे-जवाहरातो के बजाय किताब और कलम होती थी और पास ही मे उनकी लाठी पडी रहती थी। सुलतानो के महलो के कालीन राख बन गये, महल खडहर हो गये, हीरे जवाहरात जहा-तहा बिखर गये, पर शायर की रचनाए, मानवप्रतिभा की अमर निधि, ज्यो की त्यो रहीं। इस तरह निज़ामी ने न सिफ सुलतानो और अमीरा को, बल्कि काल को भी जीता।

घेरे मे पडे हुए लेनिनग्राद मे हमने निज़ामी की वषगाठ मनायी। हमिताज के ठडे हालो मे विद्वाना के भाषण हुए, शायर की प्रशसा मे अन गिनत बातें कही गयीं। बाद मे जब सब खत्म हो गया, मुझे वसीलेव्स्की ओस्त्रोव नामक इलाके मे एक शात से कमरे मे मेहमान बनने का मौका मिला। कमरा शायद उस कोठरी से बहुत भिन नहीं था, जिसमे निज़ामी रहते थे। पूव की विलासवस्तुओ के नाम पर उसमे केवल एक छोटा सा ग़लीचा और ऊट की शक्ल की राखदानी थी। आलमारियो मे बहुत सी किताबें थीं, जिन पर धूल जम गयी थी। मेजबान ने, जो फौजी कमीज़ पहने हुए था और जिसके सिर पर पट्टी बधी हुई थी, पुरानी पत्रिकाओ को फाडकर अगीठी जलायी, ताकि चाय बनायी जा सके।

मने पट्टियों के नीचे से लटकते उसके काले बालो को देखा, जिनमें कहीं कहीं सफेदी भी आ गयी थी। आग की लपटो के उजाले म उसकी कमीज़ के कालर पर दो हरे वर्गाकार निशान दिखायी पडे। वह लेफ्टिनेंट था और लेनिनग्राद के नजदीक ही घायल हुआ था। इस समय वह दो हफ्ते की छुट्टी पर था। यह मस्त पूर्व प्रेमी, जो रूसी की तरह फारसी शायरी से भी बेहद प्यार करता था, याददाश्त से नज्मे घटो सुना सकता था हालांकि लेनिनग्राद के इस छोटे से कमरे मे उन्हे सुनना कुछ अजीब सा लगता था।

हम शायरी, निज़ामी, उन युवा वज्ञानिको की पीढी, जिन्होने मोर्चे की खाइयो के लिये शात अध्ययनकक्षो को छोड दिया था, आज के य के महाकाव्य, मानवता के शत्रुओ, दूरवर्ती आज़रबजान और फिर निज़ामी के बारे मे बाते करते रहे।

मेज़बान ने लपटो से घिरी केतली और पुरानी पत्रिकाओ के जल पन्नो को, जिन पर छपे शब्द और चित्र काले पडते जा रहे थे, देख हुए भारी और शरदकाल की रातो मे सर्दी खायी हुई आवाज़ मे कहा

"निज़ामी मारकाट और खूरेज़ी के जमाने मे रहे थे।" वह कुछ प के लिये चुप हो गया और फिर फीकी सी मुस्कान के साथ आगे कह लगा, "जसे कि हम। पर उन्हे अपनी जनता की ताक्त मे, उसके कठो सत्य मे कभी कोई सन्देह नहीं था "

"हा, जसे कि हमे भी," मने कहा।

"वह जानते थे," कोरोल्योव ने (मेरे मेज़बान का ना निकोलाई फ्योदोरोविच कोरोल्योव था) कहना जारी रखा, "निज़ामी जान थे कि दुनिया जल्लादो के नहीं, नेक लोगो के बूते पर आगे बढती है आपने सासानी शाह अनुशेरवान के बारे मे सुना है?"

मै उसके बारे मे कुछ नहीं जानता था।

"हा, तो निज़ामी अपने 'राज़ो का खज़ाना' मे इस शाह के बा मे बताते है," कोरोल्योव ने कहना जारी रखा। "एक दिन अनुशेरवा शिकार खेलते हुए अपने साथियो से अलग हो गया। उसके साथ उसक एक वज़ीर ही था। शाह और वज़ीर एक ऐसे गाव मे पहुचे, जो खडह हो गया था। चारों तरफ सन्नाटा था। हर तरफ खडहर ही खडहर थे आदमी वहीं नहीं दिखायी दे रहे थे। सिर्फ एक गिरी हुई दीवार पर दं

शाह और वज़ीर को दो उल्लू दिखायी दिये, जो आपस मे बात कर रहे थे। इन सुनसान खडहरो के बीच उल्लुओ की आवाज़ सुन कर सासानी शाह डर गया। 'वे क्या बातें कर रहे ह ?' उसने वजीर से पूछा। वज़ीर चिडियो की भाषा जानता था। उसने कहा कि एक चिडिया अपनी बेटी को दूसरी चिडिया के बेटे को दे रही है और बदले मे इस बरबाद हुए पडे गाव और पास के दो और गावो को माग रही है। दूसरी चिडिया कहती है कि जितने गाव वह कहती है, वह ख़ुशी ख़ुशी देने को तयार है, क्योंकि जब तक अनुशेरवान जिदा है, तब तक लोग गरीब और गुलाम बने रहेंगे और इन तीन गावो मे वह और भी सकडा नये उजडे घर और गाव मिला सकती है। इस तरह वज़ीर ने जवाब दिया। निजामी ने उन दिनो के अधकार का एक टुकडा, बरबादी की राख हम तक पहुचायी। और बहुत ही दुखी होकर लिखा "अब न बोलो, निज़ामी, क़िस्सा टूट गया है और दिल कभी से ख़ून से लथपथ है "

कोरोल्योव कुछ क्षण के लिये खामोश हो गया। बाद मे उसने नेवा नदी की ओर देखा। वह शारदी कोहरे से ढकी हुई थी।

फिर उसने कहा

"नया अनुशेरवान और भी खौफ़नाक है। वह सारे रूस और सारी दुनिया को खडहर बनाना चाहता है। क्यो हमारी कला मे इस भयानकता को उस तरह चित्रित करने की क्षमता नहीं है, जिस तरह निज़ामी ने अपने समय की भयानकता के बारे मे लिखा है ? आपने आज के महाकाव्य का उल्लेख किया, पर अभी वह अलिखित पडा है। यह कितने अफसोस की बात है "

"पर वह लिखा जायेगा," मने कहा। "समय बीतेगा और हिटलर और उसके मानवद्रोही गिरोह की सभी महान कवियो और चित्रकारो द्वारा भर्त्सना की जायेगी। दुनिया जल्लादो के सरदार, नये अनुशेरवान को देर तक याद रखेगी। पर बाद मे उसका नाम भी वसे ही भूल जायेगी, जसे उस सासानी शाह के कामो को भूल गयी है।"

"चाहते ह म फारसी मे कुछ सुनाऊ ? निज़ामी फारसी मे ही लिखते थे।"

"सुनाइये, पर म कुछ नहीं समझ पाऊगा " मने कहा।

"म अनुवाद कर दूगा।"

और वह ऊची गभीर आवाज मे सुनाने लगा। उस अधेरे से कमरे मे दीवारो से गिरती ढालो जसे खनकते, स्तेपियाई नदी की तरह मन्द और पहाडी भूस्खलन जसे कोलाहलमय शब्दो को सुनकर मुझे एक विचित्र सा सतोष प्राप्त हुआ। वह घुटनो के बीच हाथ दबाये और सिर को लय के साथ थोडा थोडा हिलाते हुए सुना रहा था। उसकी दृष्टि मेरे पीछे दीवार पर टिकी हुई थी, जहा एक छोटा, रगबिरगा, पुराना गलीचा लटका था। खत्म करने पर उसने सिर की पट्टी ठीक की और अनुवाद बताने लगा उसमे निजामी ने किसी रात्रिकालीन लडाई का जिक्र किया था।

"और यह निजामी की नक्ल है। सुनिये। इस पृष्ठ पर नजर डालनेवाला नीचे इन शब्दो को पायेगा यह वह लडाई थी, जिसमे जमीन छ रह गयी और आसमान आठ "

"रुकिये," मने कहा, "इसका क्या मतलब है?"

"इसका मतलब है कि जमीन की एक पूरी परत उठकर आसमान मे पहुच आसमान की आठवीं परत बन गयी, जबकि जमीन की छ ही परते रह गयीं। आगे सुनिये। अभी जगल के पीछे सुबह होने ही लगी थी कि लडाई शुरू हो गयी और लडाई के शोर ने दोपहरी के सूरज को भी ढक लिया। वे तब भी लडते गये, जब शाही महल के बागों मे साझ उतर आयी और महल की मीनारो को नहीं देखा जा सकता था। एक मीनार लडाई के अधेरे मे गिर गयी और मुझे इसका इतना अफसोस हुआ कि म रो पडा, आसू चेहरे पर बहने लगे। लेकिन धूल और खून ने उन्हें गालों पर ही रोक दिया। मेरी आखो मे खून उतर आया। मुझे दुश्मनो के काले चेहरे नजर आये, क्योंकि मेरी नफरत की आखें रात के अधेरे मे भी उन्हें पहचान सकती थीं। वे अधेरे से भी ज्यादा स्याह थे और इसी से उनका पता चल गया। हमने उनमे से न जाने कितनो को मार डाला। वे घिघियाते हुए पहले घुटनो पर और फिर औंधे मुह जमीन पर गिर पडते। जब तक हमारे हाथ न थक गये, हम उन्हें मारते रहे। पर रात उन्हें और और पदा कर रही थी। हम तब तक लडते रहे, जब तक शहर पर आग न लग गयी। ऐसा लगा कि किसी ने हजारों मशाले जला दी हू। उनके उजाले मे मने न सिर्फ अपना बल्कि अपने वतन का रौंदनेवाले दुश्मनों का भी खून देखा। उस दिन मने भी बबरों को मारा। वे मुह खोले पड़े हुए थे, मानो अपनी मौत पर हैरान हो रहे हो। और हालांकि मेरा

चेहरा फिर खून और अंधेरे से नहा गया था, फिर भी मेरा हृदय अब गुलाबजल के चश्मे की तरह था। मेरे हाथ से मरनेवाला आखिरी दुश्मन एक अफसर था। मने देखा कि वह एस० एस० की वर्दी पहने हुए था और मेरा दिल खुशी से उछलने लगा कि चलो दुनिया मे एक जल्लाद और कम हो गया "

अश यहीं पर खत्म हो जाता था।

"हैरानी की बात है," मने कहा, "कविता मे एस० एस० की वर्दी पहने आदमी का जिक्र है किस सदी की है यह कविता?"

"बीसवीं सदी के पूर्वाध की। १९४१ के शरद की। मने गातचिना की लडाई का वणन किया है, जिसमे म घायल हुआ था। गातचिना मेरी आखो के सामने जला था।"

"आपको यह शहर इतना प्रिय था?" मने पूछा। "म समझता हू कि केवल याददाश्त से ही ऐसी कविता नहीं लिखी जा सकती।"

"म वहा पदा हुआ था," उसने जवाब दिया। "आप कहेगे कि दुनिया मे इससे भी सुदर शहर ह। पर म निजामी के शब्दो मे जवाब दूगा। वह कहते ह कि शायर का सबसे बडा कारनामा प्रेम है। और इसी प्रेम को वह अपनी सबसे बडी, सबसे सुदर काव्य रचना, लला और मजनू की दास्तान, समपित करते ह। निजामी लिखते ह कि इसके शेर सारी दुनिया मे, जहा भी प्रेम मे विश्वास करनेवाले लोग रहते ह, सब जगह फल जायेंगे। और इस तरह वे हमारे मुल्क तक पहुचे। लला कसी थी? क्या वह सचमुच इतनी खूबसूरत थी? महान शायर सादी ने इसका बहुत बढ़िया जवाब दिया है। वह लिखते ह शाह ने लला से मजनू के दीवाना प्रेम का किस्सा सुना। उसने लैला की खूबसूरती को देखना चाहा। पर देखने पर उसे लगा कि लला इतनी मामूली है कि उसके हरम की सबसे मद्दी बादी भी उससे कहीं ज्यादा खूबसूरत होगी। मजनू इसे समझ गया। उसने शाह से कहा 'ओ शाह! लला की खूबसूरती देखनी है तो मजनू की आखो से देखो!' म अपने प्रेम के लिए, अपने शहर के लिए लडा और उसका और भी बदला लूगा।"

उसने खिडकी से बाहर देखा। आसमान मे काली घटाए छा गयी थीं, सेंट इसाक के गिरजे की विराट इमारत अस्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी और मस्तूल और चिमनिया स्याह होती जा रही थीं।

इस क्षण इस अधेरे कमरे मे म समझ गया कि हम सब महान प्र
के वश मे ह और उसके लिए हम अपनी जान भी देने को तयार ह। इस
याद हमारे आज के अदश्य मेहमान—महान निजामी—ने दिलायी। व
ऐसे समय पर हमारे शहर मे आये, जब चारो तरफ युद्ध की उत्तम
छायी हुई थी, और हमने मित्र, साथी और सहयोगी के रूप मे उन
स्वागत किया।

जसे कि पूव मे परपरा है, हमने उनकी सेहत का जाम उठाया। शग
के नाम पर हमारे पास सिफ सौ ग्राम वोदका थी, जिसे कोरोल्योव
मालूम कहा से लाया था। उसे हमने निजामी की और मजनू की प्रम
आखो की याद मे पिया।

सरदियो की रात में

बाहर से वकशापो की दीवारे आर्कटिक खाडी की हिमाच्छादित चट्टानो की तरह धुधली थीं। लगता था कि जसे सारी जगह पर, जो धातु के बफ जसे ठडे टुकडों, पीपो और खगर के ढेरो से भरी हुई थी, जिन्दगी जहा की तहा जम गयी है। जमी हुई लहरो की तरह चारो तरफ बफ के ढेर बढ़ रहे थे। जनवरी की रात के अधेरे मे उजाले की कहीं एक भी किरण नहीं थी।

ऐसे मे अगर किसी अनजान आदमी को अहाते की इस खामोशी मे खडा कर दिया जाता, तो वह कहता कि आदमी के रहने की जगह से दूर किसी बफ के रेगिस्तान मे आ गया है। लेकिन फिर भी यह एक विराट कारखाने का अहाता था।

और अगर छोटे से दरवाजे की तलाश कर उसे खोल दिया जाता, तो अदर आनेवाला आदमी कहता कि यह तो स्टेलक्टाइट की गुफा है। पर यह वकशाप था। गोलो से बने सूराखो से स्याह आसमान दिखायी दे रहा था। छत और दीवारें अतलासी बफ से ढकी हुई थीं। कुछ कुछ जगहे बिजली की फीकी रोशनी से, जो अच्छी तरह से ढकी हुई थी, प्रकाशित थीं। और अगर ध्यान से देखा जाये, तो बडे से हाल के विभिन्न कोनों मे लोग कुलबुला रहे थे। वे काम कर रहे थे।

वे तरह तरह के कपडे पहने थे। फीकी रोशनी मे उनकी छायाए बडी अजीब लगती थीं। उनके लटके हुए तथा थके-मादे चेहरो की कठोर रेखायें किसी भी नये आदमी को डरा सकती थीं, पर पोतेखिन यहा सब को जानता था और यह बात कि यह कल्पनातीत दृश्य रात की पारी कहलाता था, उसके लिए अपरिचित नहीं थी।

इस क्षण, इस अधेरे कमरे मे म समझ गया कि हम सब महान प्रम के वश मे ह और उसके लिए हम अपनी जान भी देने को तयार ह। इसकी याद हमारे आज के अदृश्य मेहमान—महान निज़ामी—ने दिलायी। वह ऐसे समय पर हमारे शहर मे आये, जब चारो तरफ युद्ध की उत्तजना छायी हुई थी, और हमने मित्र, साथी और सहयोगी के रूप मे उनका स्वागत किया।

जसे कि पूव मे परपरा है, हमने उनकी सेहत का जाम उठाया। शराब के नाम पर हमारे पास सिर्फ सौ ग्राम वोद्का था, जिसे कोरोल्योव न मालूम कहा से लाया था। उसे हमने निज़ामी की और मजनू की अमर आत्मा की याद मे पिया।

सरदियों की रात में

बाहर से वकशापों की दीवारें आर्कटिक खाडी की हिमाच्छादित चट्टानों की तरह धुधली थीं। लगता था कि जैसे सारी जगह पर, जो धातु के बर्फ जैसे ठडे टुकडो, पीपो और खगर के ढेरो से भरी हुई थी, जिन्दगी जहा की तहा जम गयी है। जमी हुई लहरों की तरह चारो तरफ बर्फ के ढेर बढ रहे थे। जनवरी की रात के अधेरे मे उजाले की कहीं एक भी किरण नहीं थी।

ऐसे मे अगर किसी अनजान आदमी को अहाते की इस खामोशी मे खडा कर दिया जाता, तो वह कहता कि आदमी के रहने की जगह से दूर किसी बर्फ के रेगिस्तान मे आ गया है। लेकिन फिर भी यह एक विराट कारखाने का अहाता था।

और अगर छोटे से दरवाजे की तलाश कर उसे खोल दिया जाता, तो अदर आनेवाला आदमी कहता कि यह तो स्टेलक्टाइट की गुफा है। पर यह वकशाप था। गोलो से बने सूराखो से स्याह आसमान दिखायी दे रहा था। छत और दीवारें अतलासी बर्फ से ढकी हुई थीं। कुछ कुछ जगह बिजली की फीकी रोशनी से, जो अच्छी तरह से ढकी हुई थी, प्रकाशित थीं। और अगर ध्यान से देखा जाये, तो बडे से हाल के विभिन्न कोनो मे लोग कुलबुला रहे थे। वे काम कर रहे थे।

वे तरह तरह के कपडे पहने थे। फीकी रोशनी मे उनकी छायाए बडी अजीब लगती थीं। उनके लटके हुए तथा थके-मादे चेहरो की कठोर रेखायें किसी भी नये आदमी को डरा सकती थीं, पर पोतेखिन यहा सब को जानता था और यह बात कि यह कल्पनातीत दृश्य रात की पारी कहलाता था, उसके लिए अपरिचित नहीं थी।

10—011

भेड की खाल के कोट मे भी उसे सर्दी लग रही थी। बर्फ जसे ठड लोहे से झिल्ली से ढके तपे हुए इस्पात जसी फीकी चमक निकल रही थी। चारो तरफ भूरे, धुधले काले और हल्के रगो के ढर दिखायी पड रहे थे। यह साचो की मिट्टी, या जसे कि पोतेखिन शांति के दिना की याद मे मजाक मे कहना पसद करता था, साचो की पवित्र मिट्टी थी।

इस मिट्टी को तयार करना बहुत बडा कारनामा था। हल्के अधेरे में उसे कुछ खास अनुपात मे मिलाया जाता था और इस अनुपात के सही होने पर ढलाई निभर थी, इस ढलाई पर गोलो का उत्पादन निभर था और गोलो के उत्पादन पर शहर की सुरक्षा निभर थी। उस शहर का सुरक्षा, जिसका सरदियो की इस काली रात के विस्तार मे केवल अदाजा ही लगाया जा सकता था।

दिन मे कारखाने मे कहीं दूर से आती लबी लबी चीखें सी सुनायी पडतीं। ये मोर्चे की आगे की लाइनो मे होनेवाले जवाबी हमले की आवाजें थीं।

गोलो की जरूरत दिन रात होती थी। इसलिये अगर कारखाने के अहाते मे अपने तूफानो तथा ठड सहित उत्तरी ध्रुव भी आकर बस जाता, तो भी गोले तयार करने थे।

और उनके साचो के लिये मिट्टी तयार करना जरूरी था। जब फोरमन और डिजाइनसाज पोतेखिन भूरे ढेरो के पास पहुचा, यहा एक औरत सिर झुकाये बठी बेलचे से एक ढेर से दूसरे ढेर मे मिट्टी फेंक रही थी। पोतेखिन देखता रहा कि किस तरह वह धयपूण लगन के साथ नये ढेर को बढ़ा रही है।

औरत ने पहले पोतेखिन की ओर नजर डाली और फिर कुछ कहे बिना उस ओर देखने लगी, जहा तख्ते पर हाथ सीने पर रखे हुए एक आदमी आधा झुका हुआ लेटा था। पोतेखिन को लगा कि वह गहरी नींद सोया हुआ है। पर तभी उसने देखा कि औरत के हाथ मे बेलचा कापने लगा और वह उसकी तरफ झुक गया।

"पाशा चाची," उसने कहा, "तिमोफेयेविच थक गया है, उसे बहुत मेहनत करनी पडी थी।"

औरत ने पहले उसकी तरफ सख्ती से देखा, फिर उसका लोहे की ठडी धूल से सना चेहरा कुछ नम हुआ और कुछ क्षण बाद वह बोली

"हा, तिमोफेयेविच बेहद थक गया था। अब आराम करने दो "

"पाशा चाची, वह घर चला जाये तो ठीक होगा। या खडा भी नहीं हो सकता है क्या? कहीं उसे यहा सर्दी न लग जाये–यहा भी तो खुली सडक जसी ठड है "

पाशा चाची ने इतनी तेजी और सख्ती से उसका हाथ खींचा कि पोतेखिन उसके पास घुटनों के बल बठने को मजबूर हो गया। तब अपना चेहरा उसके बहुत ही क़रीब लाकर ठड से पत्थर बने होठो को हिलाते हुए वह कहने लगी

"बताओ मुझे, तुम रूसी आदमी हो?"

"बेशक रूसी हू," पोतेखिन ने कहा। "पर तुम्हे क्या हो गया है, पाशा चाची?"

"रूसी हो तो ठीक है। तुम्हे ज्यादा नहीं बताना पडेगा। खुद समझ जाओगे। मेरा तिमोफेयेविच बहुत कमजोर हो गया था, फिर भी चलता फिरता था, काम करता था। मुझसे कहता था 'मेरी आत्मा जल रही है, पाशा। चलो, जल्दी करें!' पर जल्दी कसे करें? हाथ चलते ही नहीं। और फिर भूख से सिर अलग चकराता है। अभी कुछ देर पहले उसने फिर कहा 'मेरी तबीयत ठीक नहीं लगती।' मने कहा 'ऐसा मत कहो। बेहतर होगा कि कुछ देर लेट लो। तबीयत सभल जायेगी।' पर उसने कहा 'नहीं, म लेटूगा नहीं। और सुनो जो म कहता हू हम जिस मिट्टी को तयार कर रहे ह, वह बहुत महत्त्वपूण है! तुम तो जानती नहीं कि कौनसी मिट्टी कितनी चाहिये, उन्हे कसे मिलाना है, वगरह, वगरह। मुझे देख देखकर सीखो '"

और औरत फफक फफककर रो पडी। पोतेखिन देख रहा था कि पाशा चाची कसे अपने धातुई चेहरे से उजली धारियो की तरह बहते आसुओ को पोछ रही थी।

"म काम सीख रही थी और वह बताता जा रहा था। फिर उसने कहा 'अब ठीक है। बस सब बाते याद कर लो।' और फिर वह लेट गया। और बस। अब म ही काम कर रही हू," बेलचा हाथ मे थामे हुए वह बोली और फिर सिसक उठी।

पोतेखिन ने लेटे आदमी की तरफ देखा। पाशा चाची ने उसकी बाह को छुआ।

"उसने कहा था 'मेरी आत्मा जल रही है।' आत्मा मेरी भी जल रही है, बेटा! मने उससे कहा था 'तिमोफेयेविच, तुम सो जाओ। काफी काम कर लिया है तुमने। म तुम्हारे बदले का भी काम कर लूगी।' और देखो कितनी मिट्टी है। पर फिर भी कम है। मेरे लिये कम है और मुझे सर्दी भी नहीं लगती।"

पोतेखिन उठा और मुर्दे के पास आया। तिमोफेयेविच सिर और ठढ से जमी हुई दाढ़ी को सीने पर झुकाये हुए पडा था। उसके दोनो हाथ भी रस्सी से बधे हुए सीने पर आडे पडे हुए थे।

"पाशा चाची, ऐसे मे भला मै क्या कह सकता हू," पोतेखिन ने कहा। "खुद जानती हो कि शब्द भी "

"हां, शब्द भी," बेलचा चलाते हुए उसने दोहराया। "कोई बात नहीं है। जाओ, बेटे, काम करो। म यहा उसके साथ बैठकर अपना काम पूरा करती हू। गडबड नहीं करूगी। जाओ, बेटे, जाओ। मुझे अकेली रहने दो "

कचशाप मे, उसकी अतहीन, अधेरी सर्दी मे चलते हुए पोतेखिन सोच रहा था "क्या कहा था उसने? 'महत्त्वपूर्ण मिट्टी?' हा, ठीक ही कहा था। यह मिट्टी सचमुच बहुत महत्त्व रखती है। हमारे लेनिनग्राद की मिट्टी, अजेय मिट्टी!"

पहाडो की सन्तान

हम ऊपरी गुनीब मे एक छायादार हरी जगह पर आराम करने के लिए ठहरे थे। हमारे नीचे किसी प्राचीन मशहूर गाव के खडहर थे और ऊपर पहाडो का साध्यकालीन सन्नाटा छाया हुआ था। अपनी पसन्द का कबाब बनाने के लिए हम मे से हर किसी ने अपना अपना अलाव जलाया। जल्दी ही अलावो का जलना बद हो गया और छोटी सी घाटी हल्के नीले, मीठे से धुए से भर गयी। कोयलो पर नीली सी झिल्ली बन गयी थी। लबी, पतली और अपने हाथो से बनायी हुई सीखो पर गोश्त सिसियाने लगा। हाथ तापते और खुशी खुशी बात करते हुए पहाडी लोग खाने के लिए बैठ गये।

मेरे अलाव के पास एक छोटी लडकी बठी हुई थी, जो अपनी बडी बडी और काली आखो से हसती हुई मेरी ओर देख रही थी। हालाकि उसका नाम रेजेदा था, पर वह असली पहाडिन थी और अपने पहाडो मे उगनेवाले उजले और रूखे फूलो से बहुत मिलती-जुलती थी। उसे फेनिल नालो को फादते और पुरानी पगडडियो के पत्थरो पर कूदते देखकर बहुत खुशी होती थी। ऐसा लगता था कि गुनीब की सारी पहाडी प्रकृति उसके खिलते कशोय के लिए एक अदभुत पृष्ठभूमि का काम कर रही है। उसकी उम्र केवल दस साल थी, पर उसमे एक ऐसी सच्ची गभीरता थी, जो बताती थी कि वह बडी होने पर स्वावलबी और सकल्पशील निकलेगी। वह जानती थी कि मुझे पहाड बहुत पसद ह और वह कुछ कुछ बच्चो की तरह इसका मजाक भी उडाती थी। हम लोगो की मित्रता के बावजूद उसके लिए म बाहरी आदमी था, जो कल दागिस्तान की घाटियो और दर्रो को छोडकर दूर उत्तर के अज्ञात, सद और धुधले लेनिनग्राद लौट जायेगा।

"उसने कहा था 'मेरी आत्मा जल रही है।' आत्मा मेरी भी जल रही है, बेटा! मैंने उससे कहा था 'तिमोफेयेविच, तुम सो जाओ। काफी काम कर लिया है तुमने। मैं तुम्हारे बदले का भी काम कर लूंगा।' और देखो कितनी मिट्टी है। पर फिर भी कम है। मेरे लिये कम है और मुझे सर्दी भी नहीं लगती।"

पोतेखिन उठा और मुर्दे के पास आया। तिमोफेयेविच सिर और ठंड से जमी हुई दाढ़ी को सीने पर झुकाये हुए पड़ा था। उसके दोनों हाथ भी रस्सी से बंधे हुए सीने पर आड़े पड़े हुए थे।

"पाशा चाची, ऐसे में भला मैं क्या कह सकता हूं," पोतेखिन ने कहा। "खुद जानती हो कि शब्द भी "

"हां, शब्द भी," बेलचा चलाते हुए उसने दोहराया। "कोई बात नहीं है। जाओ, बेटे, काम करो। मैं यहां उसके साथ बैठकर अपना काम पूरा करती हूं। गड़बड़ नहीं करूंगी। जाओ, बेटे, जाओ। मुझे अकेली रहने दो "

बर्फशाप में, उसकी अंतहीन, अंधेरी सर्दी में चलते हुए पोतेखिन सोच रहा था "क्या कहा था उसने? 'महत्त्वपूर्ण मिट्टी?' हां, ठीक ही कहा था। यह मिट्टी सचमुच बहुत महत्त्व रखती है। हमारे लेनिनग्राद की मिट्टी, अजेय मिट्टी।"

पहाडो की सन्तान

हम ऊपरी गुनीब मे एक छायादार हरी जगह पर आराम करने के लिए ठहरे थे। हमारे नीचे किसी प्राचीन मशहूर गाव के खडहर थे और ऊपर पहाडों का साध्यकालीन सन्नाटा छाया हुआ था। अपनी पसन्द का कबाब बनाने के लिए हम मे से हर किसी ने अपना अपना अलाव जलाया। जल्दी ही अलावो का जलना बद हो गया और छोटी सी घाटी हल्के नीले, मीठे से धुए से भर गयी। कोयलो पर नीलो सी झिल्ली बन गयी थी। लबी, पतली और अपने हाथो से बनायी हुई सीखो पर गोश्त सिसियाने लगा। हाथ तापते और खुशी खुशी बात करते हुए पहाडी लोग खाने के लिए बठ गये।

मेरे अलाव के पास एक छोटी लडकी बठी हुई थी, जो अपनी बडी बडी और काली आखो से हसती हुई मेरी ओर देख रही थी। हालाकि उसका नाम रेजेदा था, पर वह असली पहाडिन थी और अपने पहाडो मे उगनेवाले उजले और रूखे फूलो मे बहुत मिलती-जुलती थी। उसे फेनिल नालो को फादते और पुरानी पगडडियो के पत्थरो पर कूदते देखकर बहुत खुशी होती थी। ऐसा लगता था कि गुनीब की सारी पहाडी प्रकृति उसके खिलत कशोय के लिए एक अदभुत पृष्ठभूमि का काम कर रही है। उसकी उम्र केवल दस साल थी, पर उसमे एक ऐसी सच्ची गभीरता थी, बताती था कि वह बडी हाने पर स्वावलबी और
वह जानती थी कि मुझे पहाड बहुत पसद ह और वह
तरह इसका मजाक भी उडाती थी। हम लोगो की मित्रता
लिए म बाहरी आदमी था, जो कल दागिस्तान को
छोडकर दूर उत्तर के अज्ञात, सद और धुधले

"उसने कहा था 'मेरी आत्मा जल रही है।' आत्मा मेरी भी जल रही है, बेटा! मने उससे कहा था 'तिमोफेयेविच, तुम सो जाओ। काफी काम कर लिया है तुमने। म तुम्हारे बदले का भी काम कर लूगी।' और देखो कितनी मिट्टी है। पर फिर भी कम है। मेरे लिये कम है और मुझे सर्दी भी नहीं लगती।"

पोतेखिन उठा और मुर्दे के पास आया। तिमोफेयेविच सिर और ठड से जमी हुई दाढी को सीने पर झुकाये हुए पडा था। उसके दोनो हाथ भी रस्सी से बधे हुए सीने पर आडे पडे हुए थे।

"पाशा चाची, ऐसे मे भला म क्या कह सकता हू," पोतेखिन ने कहा। "खुद जानती हो कि शब्द भी "

"हा, शब्द भी," बेलचा चलाते हुए उसने दोहराया। "कोई बात नहीं है। जाओ, बेटे, काम करो। म यहा उसके साथ बठकर अपना काम पूरा करती हू। गडबड नहीं करूगी। जाओ, बेटे, जाओ। मुझे अकेली रहने दो "

वकशाप मे, उसकी अन्तहीन, अधेरी सर्दी मे चलते हुए पोतेखिन सोच रहा था "क्या कहा था उसने? 'महत्त्वपूण मिट्टी?' हा, ठीक ही कहा था। यह मिट्टी सचमुच बहुत महत्त्व रखती है। हमारे लेनिनग्राद की मिट्टी, अजेय मिट्टी!"

पहाडो की सन्तान

हम ऊपरी गुनीब मे एक छायादार हरी जगह पर आराम करने के लिए ठहरे थे। हमारे नीचे किसी प्राचीन मशहूर गाव के खडहर थे और ऊपर पहाडो का साध्यकालीन सन्नाटा छाया हुआ था। अपनी पसन्द का कबाब बनाने के लिए हम मे से हर किसी ने अपना अपना अलाव जलाया। जल्दी ही अलावो का जलना बद हो गया और छोटी सी घाटी हल्के नीले, मीठे से धुए से भर गयी। कोयलो पर नीली सी झिल्ली बन गयी थी। लबी, पतली और अपने हाथो से बनायी हुई सीखो पर गोश्त सिसियाने लगा। हाथ तापते और खुशी खुशी बाते करते हुए पहाडी लोग खाने के लिए बठ गये।

मेरे अलाव के पास एक छोटी लडकी बठी हुई थी, जो अपनी बडी बडी और काली आखो से हसती हुई मेरी ओर देख रही थी। हालाकि उसका नाम रेजेदा था, पर वह असली पहाडिन थी और अपने पहाडो मे उगनेवाले उजले और रूखे फूलो से बहुत मिलती जुलती थी। उसे फेनिल नालो को फादते और पुरानी पगडडियो के पत्थरो पर कूदते देखकर बहुत खुशी होती थी। ऐसा लगता था कि गुनीब की सारी पहाडी प्रकृति उसके खिलते कशोय के लिए एक अदभुत पृष्ठभूमि का काम कर रही है। उसकी उम्र केवल दस साल थी, पर उसमे एक ऐसी सच्ची गभीरता थी, जो बताती थी कि वह बडी होने पर स्वावलबी और सकल्पशील निकलेगी। वह जानती थी कि मुझे पहाड बहुत पसद ह और वह कुछ कुछ बच्चो की तरह इसका मजाक भी उडाती थी। हम लोगो की मित्रता के बावजूद उसके लिए म बाहरी आदमी था, जो कल दागिस्तान की घाटियों और दर्रों को छोडकर दूर उत्तर के अज्ञात, सद और धुधले लेनिनग्राद लौट जायेगा।

आखिरकार यही हुआ। आठ साल बीत गये। इस अवधि मे मुझे उसके बारे मे बहुत ही कम सुनने को मिला और फिर धीरे धीरे म उसे लगभग भूल ही गया।

लेनिनग्राद की नाकेबदी के जमाने की सरदिया थीं। सडको पर बफ के ऊचे ऊचे ढेर लगे हुए थे, हवा की थर्राहट से टूटी खिडकियो से ठडी हवा के झोको के साथ बफ भी अदर चली आ रही थी, कमरे मे मिट्टी के तेल का लप जल रहा था। तभी दरवाजा खुला और ऊचे कद की एक सावली और दुबली सी लडकी ने कमरे मे कदम रखा। यह रेजेदा थी।

"आपका घर बिल्कुल हमारे पहाडी घरो जसा है," उसने कहा। "खिडकी के बाहर बफ, अदर मिट्टी के तेल का लम्प, नमदे का लबादा और ठड!" वह हस पडी। "वैसे तो इस वक्त हर जगह ठड है "

"रेजेदा, तुम लेनिनग्राद मे क्या करती हो? यहा कसे आयी?" कुशलमगल पूछने के बाद मने सवाल किया।

"म पढ़ती थी और अब अस्पताल मे काम करती हू। मुझसे जो हो सकता है, करती हू। हमारा पूरा परिवार लड रहा है। सभी मद किसी न किसी मोर्चे पर ह। और म घेरे मे पडे लेनिनग्राद मे हू। मेरे साथ मा भी है। घर हमारा करीब करीब खाली है, उसके सब लोगो को लेनिनग्राद के बाहर भेज दिया गया है। कम से कम इसी वजह से तो जगह ज्यादा मिली "

"पर तुम दक्षिणवालो को तो इस सर्दी मे बडी तकलीफ हो रही होगी?"

"आजकल तकलीफ के बारे मे कोई नहीं सोचता। सब को काम करना है और बर्दाश्त करना है [आपके पास म इसलिए भी आयी हू कि हमारे मकान का दरवाजा बद नहीं होता और आगन की चहारदीवारी भी जगह जगह से टूट गयी है दूसरी तरफ गरेज और पेट्रोल की टकी ह। आप जानते ह कि कुछ भी हो सकता है। अभी हाल ही मे हम लोगो ने खुद देखा कि हमले के दौरान किस तरह राकेट छूट रहे थे। म सोचती हू कि कुछ करना चाहिये।"

"हां, करना तो चाहिये," म बोला। "म गभीर पहाड़िन को पहचान रहा हू। पर तुम लोग फौजी घर मे क्या रह रहे हो?"

"मेरे पति मोर्चे पर ह। वह डाक्टर ह "

"अच्छा! तुम्हारी शादी भी हो गयी? बहुत दिन हो गये क्या?"

"नहीं," वह थोडा सा शर्माते हुए बोली। "अभी हाल ही मे हुई। मेरे पति छाता सनिक भी ह। वे छाता सनिका के साथ कूदते भी ह और उनका इलाज भी करते ह। यह सुविधाजनक है, है न? मोर्चे पर वह हर जगह उनके साथ रह सकते ह। उन्हे छतरीबाज का बज भी मिल चुका है। वह सत्तर बार कूदे थे।"

"आपके पति बहादुर ह! वह भी पहाडी ह?"

"हा, हमारे ही इलाके के हैं। पहाडी और बहादुर ह। हमारे परिवार मे ऐसा कोई नहीं, जो बहादुर न हो। इस समय वह कहा है, मुझे नहीं मालूम। पर वह काम के बिना नहीं रह सकते।"

हम जान-पहचान के लोगो और पहाडो के बारे मे बाते करते रहे। फिर वह उसी चाल से, जिससे वह गुनीब के पहाडो पर चढा करती थी, लेनिनग्राद की बर्फीली सडकों पर निकल गयी।

इसके बाद भी हम कभी-कभी मिलते रहे। धीरे धीरे मुझे उसकी क़दम कदम पर कठिनाइयों से भरी जिन्दगी के बारे मे मालूम हुआ। लेनिनग्राद मे उन दिनो न रोशनी थी, न पानी और न लकडी ही और जो राशन मिलता था, उसे वीरो का राशन तो कहा जा सकता था, पर उससे उसमे वृद्धि कोई नहीं होती थी।

वह दिन रात काम करती थी। रात की ड्यूटी और भारी काम से वह बेहद थक जाती थी। पर लेनिनग्राद छोडने के लिए वह किसी भी हालत मे तयार नहीं थी। उत्तर का निमम मौसम तकलीफ के आदी हो चुके लोगा को भी तोड देता था, पर वह कहा करती थी "म मजबूत हू। फिर मोर्चे पर भी कम तकलीफें नहीं ह।"

वह हर समय मजाक करती रहती थी और कभी भी हिम्मत न हारती थी। पर साफ था कि वह बहुत ही जबदस्त कठिनाइयो मे रह रही है। वह दुबली पड चुकी थी। उसका चेहरा और गभीर हो गया था और केवल काली और बडी आखें ही पहले की तरह चमक रही थीं। एक बार वह बोली

"जानते ह, हमने मास का डिब्बा और कुछ चावल बचाकर रखे ह। कभी हमारी तरफ आइये, और हम गुनीब के कबाब की याद

दोहरायेंगे। उस ख्वाब को म कभी नहीं भूलूगी, क्योंकि वह किसी भी चीज से नहीं मिलता था। हम लाल सेना दिवस मनायेंगे।"

कभी वह उन चिट्ठियो के बारे मे बताती, जो कभी कभी घर से उसे मिल पाती थीं। उनमे उससे वापस आने का अनुरोध किया होता था और बताया होता था कि दागिस्तान मे किस तरह मोर्चे पर जानेवालो को बढ़िया घोडा पर बिठाकर और अच्छे से अच्छे हथियार देकर ऐसे विदाई दी जाती थी, जसे कि शादियो के मौके पर देते ह। उनमे यह भी लिखा था कि इस साल वहा फल और साग-सब्जिया बहुत हुई थीं और फसल भी अच्छी रही थी। पति से बहुत दिनो से कोई चिट्ठी नहीं आयी थी। वह पहले ही दिन से मोर्चे पर थे। वह जन्म से ही सनिक थे। आराम करना वह जानते ही नहीं थे, शायद इसीलिए चिट्ठी लिखने के लिए भी उनके पास वक्त नहीं बच पाता था।

लाल सेना दिवस मने दूसरे शहर मे मनाया, जहा म सरकारी काम से गया। जब म लेनिनग्राद लौटा, तो पाया कि साफ, सुनियोजित सडको के किनारे खडे पेडो पर हरियाली लौट रही थी। नेवा नदी मे बफ के अतिम टुकडे बह रहे थे। लादोगा झील से ठडी वसन्ती बयार आ रही थी।

मोर्चे पर अशुभ सन्नाटा छाया हुआ था। बीच बीच मे दोनों तरफ से खौफनाक गोलाबारी की आवाज सुनायी द जाती थी। म मई की धूप मे अपने एक साथी के साथ एक मदान मे बठा हुआ था। सामने झील चादी की तरह चमक रही थी। भूज और सनाबर के दरख्तो से शहदी महक आ रही थी। झाडियो के ऊपर तितलिया उड रही थीं। हमे कोई ताजे अखबार दे गया था और हम दोनो ही उन्हे पढ़ने मे मशगूल थे।

एकाएक साथी ने कहा

"ये हुआ डाक्टर! डाक्टर भी और छाता सनिक भी! और ऊपर से पहाडी। छतरी से उतरा और दूसरे सनिको के साथ लडने चला गया "

"क्या?" म चिल्ला उठा। "यह तो रेजेदा का पति है!"

"रुको भी," साथी बोला। "बडी दिलचस्प घटना है। वह प्राथमिक सहायता केन्द्र का बदोबस्त कर रहा था कि बुरी तरह घायल हो गया और इसी हालत मे ही आपरेशन करने लगा। बडा बहादुर है "

"बात खींचो नहीं," म फिर चिल्लाया। "आगे क्या हुआ?"

"म तो अखबार मे लिखी खबर पढ रहा हू," साथी ने कहा। "वह सचमुच बडा बहादुर है! सुनो उसके जख्म से खून बहता जा रहा था, फिर भी उसने एक के बाद एक करके छ ऑपरेशन किये। तभी उसके एक दोस्त को उसके सामने लाया गया, जिसे उसने मुसीबत मे मदद करने का वायदा दिया था। और वह आखिरी शक्ति समेट कर कहने लगा 'मेरा हाथ कापेगा नहीं, दोस्त। मने तुमसे वायदा किया था!' और उसने अच्छी तरह से ऑपरेशन कर दिया "

यहा पर मेरे साथी ने रुककर आह भरते हुए अखबार मुझे दे दिया और कहा "आगे खुद पढ़ लो "

और मने पढ़ा "अत्यधिक मेहनत से थके शरीर का तनाव ज्यो ही शिथिल हुआ, त्या ही उसके हाथ से औज़ार गिर गया। वह डगमगाया और निष्प्राण होकर गिर गया। वीर डाक्टर ने अपनी बलि देकर उस दिन सात आदमियों की जान बचायी "

म आगे नहीं पढ सका और अखबार को अलग फेंक दिया। बेचारी रेज़ेदा! उस दिन म बार बार उसी के बारे मे सोचता रहा। मने तय किया कि शहर पहुचते ही उसके घर जाऊगा।

जब म वहा पहुचा, तो उस बडे से घर मे परित्यक्त मकान की तरह का सवेदनाहीन सन्नाटा छाया हुआ था। टूटी हुई खिडकिया खाली मदान की तरफ देख रही थीं, जिसमे धूल के बगूले उठ रहे थे। घर मे कोई नहीं था। एक पहरेदार ने बताया कि उसके अतिम निवासी—दो औरतें—बहुत पहले उसे छोडकर चली गयी ह। मुख्य दरवाज़ा बद था। गरेज से, जिसकी रेज़ेदा को इतनी फिक्र थी, कारें निकल रही थीं। लेकिन वह नहीं थी। मुझे वहा करने को कुछ नहीं था।

म विचारो मे डूबा हुआ सडक पर आ गया। गोलो की उदासीभरी सनसनाहट भी मेरा ध्यान नहीं हटा पा रही थी। घर लौटने पर मुझे ढेर सारी चिट्ठिया मिलीं, जो वसत की छटाई के बाद आयी थीं। इन सफेद, भूरे और पीले लिफाफो के ढेर मे एक छोटी सी चिट्ठी रेज़ेदा की भी थी।

उसमे उसने एक छोटे से कस्बे तक के अपने सफर के बारे मे लिखा था, जहा उन्हे दागिस्तान जाते हुए सुस्ताने के लिए रुकना पडा था। उसने लिखा था "हमे गव है कि हमारा देश दुनिया मे एकमात्र देश है, जहा आदमी की इतनी चिता की जाती है।"

मैं खुश था कि वह अपने पहाड़ों में वापस लौट रही है। पर साथ ही ताज्जुब भी हुआ कि उसने अपने पति के बारे में एक भी शब्द नहीं लिखा है। या तो उसे अभी इसके बारे में मालूम नहीं था, या जन्मजात संयतता के कारण वह इस ग़म को झेल गयी है और अपने दिल की गहराई में उसे दफ़ना लिया है। लेकिन इतनी मज़बूत और आत्मविश्वासी होते हुए भी वह लेनिनग्राद से चली क्यों गयी?

मैंने फिर से उस अख़बार को उठाया, जिसमें पहाड़ी डाक्टर अबूसईद इसायेव की वीरतापूर्ण मृत्यु का समाचार छपा था। और अचानक मेरी नज़र उस हिस्से पर गयी, जिसे मैंने नहीं पढ़ा था और जो अब एकाएक ही इतने स्पष्ट रूप से ज़िन्दा हो उठा था।

जब वह घायल अवस्था में एम्बुलेंस अर्दलियों और घायलों से भरे घर में पड़ा हुआ था, उसने अपनी पत्नी, जो लेनिनग्राद में थी और उसे नहीं छोड़ना चाहती थी, और उनके होनेवाले बेटे की चर्चा की थी।

गंभीर और नाज़ुक रेज़ेदा! यह बात उसने मुझसे नहीं कही थी। वह अपने पहाड़ों में बच्चे को जन्म देने और एक नन्हे पहाड़ी का पालन करने गयी है, जो बड़ा होकर अपने वीर पिता की तरह, जो मास्को के निकट मरे थे, और अपनी बहादुर मां की तरह, जिसने लेनिनग्राद में रहते हुए अपने वतन के आज़ाद लोगों के कट्टर दुश्मनों से लोहा लिया था, अपनी मातृभूमि का निर्भीक रक्षक बनेगा।

दाग़िस्तान के पहाड़ों, उनकी बर्फ़ीली चोटियों और हल्के कुहासे से ढकी नीली घाटियों और उनके दिल तथा आत्मा से सुंदर तथा सुदृढ़ बेटे बेटियों की कीर्ति अमर रहेगी।

"अभी जिन्दा हू"

ऐसा बहुत कम होता था कि उसे काम से छोड दिया जाये। उसे एक छोटी सी सभा मे अपने काम के बारे मे भाषण करना था।

"मुझे बोलना नहीं आता," उसने गभीरतापूर्वक कहा था।

"जाओ भी," जवाब मिला। "तुम हमारे अग्रणी मजदूर हो। सक्षेप में बता दो कि किस तरह तीसरे दर्जे का मजदूर होने पर भी तुम पाचवें दर्जे के मजदूर का काम पूरा कर लेते हो, किस तरह फिटर बने, वगरह, वगरह।"

सभा बहुत कम समय चली।

"यह लडाई का समय है," उसने एक अनुभवी कामकाजी आदमी की तरह भारी और गभीर आवाज मे कहना शुरू किया। "पुराने मजदूरो मे से मेरे प्रभाग ने केवल दो आदमी बचे है – म और स्तेपानोवा।" उपस्थित लोगों के चेहरे मुस्करा पडे। "बाकी या तो मोर्चे पर चले गये ह, या बीमार ह, या मर चुके ह या लेनिनग्राद से बाहर पहुचा दिये गये ह। स्तेपानोवा मुझसे बडी है। उसकी उम्र कोई १६ २० साल होगी और मेरी कोई १५ १६ साल "

सभा उसे अच्छी लगी थी, क्योंकि उसमे बहुत दिलचस्प लोगो ने भाषण दिये थे और हर एक ने अपने पेशे, नाकाबदी के दिनो, सरदियो और झेले गये खतरो के बारे मे बहुत सी कौतूहलभरी बाते बतायी थीं।

वह कुछ सोचता हुआ धीरे धीरे एक छोटी सी नदी के किनारे किनारे जा रहा था। पेडों की हरियाली लौट आयी थी। किनारा साफ सुथरा, धुला धुला लग रहा था। शहर भी सर्दियों के उन कष्टकर दिनों की याद नहीं दिला रहा था। वह एक बेंच पर बठ गया और आह्लादित मन से इधर उधर देखने लगा।

सरदियो भर उसे अपने बारे मे सोचने की फुरसत नहीं मिल पायी थी। और अब सभा मे कही गयी बातो ने यादो का बाध तोड दिया। उसने अपने आपको अपने गाव मे देखा, बाल्टिया उठाये अहाते मे चलती बहन को देखा, भाइयो को देखा, एक को, जो छोटा है, सामूहिक फाम के घोडे पर सवार, और दूसरे को फौजी वर्दी और बूट पहने हुए – उस समय वह फौज से लौटा था और अब फिर जमनो से लड रहा है। घर से चिट्ठिया नहीं आतीं। वे भी शायद उसकी तरह देश की रक्षा के लिए दिन रात काम कर रहे ह। फिर लेनिनग्राद मे व्यावसायिक शिक्षा स्कूल के पहले दिन याद आये। इसके बाद वकशाप याद आया – उस रूप मे, जिसमे उसने उसे पहली बार देखा था बडा सा ठडा हाल, धातु की छीलन के ढेर और खरादो की गडगडाहट।

उसे सब कुछ अच्छा लगता था। सब ठीक-ठाक चल रहा था। उसके हाथ किसी के कहे बिना भी मानो जानते थे कि किस तरह और क्या करना है। उसे अपना काम बेहद पसद था। कभी कभी वह अपने बनाये हुए पुर्जों को देखकर खुद हैरान हो जाता था। यह मेरी रचना है, इसके अहसास से उसकी छाती गव से चौडी हो जाती थी। वह कारखाना छोडने, गाव लौटने, जसे कि उसके कुछ साथियो ने किया था, और शहर बदलने के लिए किसी भी क़ीमत पर तयार न था। शहर इतना बडा था कि कितना भी उसमे क्यों न घूमो, हर बार कोई न कोई नयी चीज जरूर दिखायी दे जाती थी। किसी भयानक फिल्म की तरह उसने उसे देखा था जब लडाई शुरू हुई थी, रातो को घर जलते थे, बम गिरते थे, सचलाइटें आकाश को छानती फिरती थीं, विमानभेदी तोपो के गरजने की आवाजें बराबर आती रहती थीं। वह खडहरो के नीचे से लोगो को निकालने मे मदद देता था।

यह कठिन और खतरनाक काम था। उसके साथ परफेनी इवानोविच – वह नेक फोरमन – भी काम करता था, जो उसे, तिमोफेई स्कोबेलेव को "अभी जिन्दा हू" के अजीब नाम से पुकारता था।

किस्सा कुछ ऐसा है एक बार परफेनी इवानोविच होस्टल मे आकर लडको के हाल-समाचार पूछने लगा। जब तिमोफेई से बातचीत शुरू हुई, तो उसे मानो शम के दौरे पडने लगे और वह शब्दो को गडबडाने लगा।

"कहो, कसे हो?" सवाल के जवाब मे "ठीक हू" कहने के बजाय, जो वह कहना चाहता था, घबराकर वह बठा "अभी जिन्दा हू!"

इस पर सब हस पडे थे। बाद मे परफेनी इवानोविच से उसकी गहरी दोस्ती हो गयी, और जब भी फोरमन उनसे मिलने आता, तो मजाक मे जरूर कहता "यह 'अभी जिन्दा हू' अभी जिन्दा है?"–"जिन्दा है," उत्तर मिलता और तिमोफेई को उसके पास कर दिया जाता।

वह शानदार वसन्तकालीन बाग के सामने एक हरी बेंच पर बठकर पुरानी बातें याद कर रहा था। सर्दियो मे बिजली न होने से कारखाने का काम रुक गया था। वह बर्फ के ढेरो के बीच से होते हुए पीपा मे पानी लाता, रसोई मे बठकर अजमोद की जडें चबाता, ओवरकोट ओढकर सोता और लकडी के लिए पुराने लकडी के मकानो को चुनता। बाद मे कारखाना फिर काम करने लगा, या जसे कि वह कहना पसद करता था, मोर्चे के लिए "रहस्य" बनाने लगा। वह कसे जिन्दा बच पाया, वह खुद नहीं जानता था। सर्दी थी, खाने का अभाव था, पर उसने सब अच्छी तरह सहा और जब वसन्त की गर्मी का पहला झोंका आया, तो वह बिल्कुल भला-चगा हो गया।

"कसे हो?" उन सरदियो मे हाथो मे कुल्हाडी लिये परफेनी इवानोविच आखो तक मफ्लर ओढे हुए उसे मिलता, तो पूछता था। "सब ठीक-ठाक है न?"

"अभी जिन्दा हू," वह सर्दी लगी आवाज मे जवाब देता। "मुझे होने भी क्या लगा है!"

"सहते जाओ, सिपाही मेरे, शीघ्र ही जनरल बन जाओगे!" परफेनी इवानोविच कहता।

जनरल तो नहीं, पर वह धातुकर्म वर्कशाप का सबसे कुशल मजदूर जरूर बन गया और उसके पास अपने शागिर्द भी हो गये।

उस हरी बेंच पर बठे हुए तिमोफेई को यह सब एकाएक याद हो आया। वह विचारो की भीड और विविधता से थक गया था। उसने सोचना छोड दिया और पेडो, नदी और राह चलते लोगो को देखने लगा। जिन्दगी भी कितनी अजीब थी। उसने अपने आप को देखा–उसके कपडे साफ सुथरे थे, वह हमेशा अच्छी तरह से काम करता था, कभी कभी तो समय की परवाह किये बगैर दो दो दिन तक वर्कशाप को नहीं छोडता था। उसने

महसूस किया कि वह सुखी है। मगर नगर से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर जमन बैंठे थे, हवा मे गश्ती हवाई जहाजो की गूज भरी थी और कभी कभी एकाएक, अप्रत्याशित रूप से गोलाबारी होने लगती थी।

उसके सामने से वसन्त के मौसम के कपडे पहने लोग गुज़र रहे थे। एक लडका नदी मे बसी डाले हुए था, मगर अब तक एक भी मछली नहीं पकड पाया था। वह लडके की तरफ देखन लगा।

लडका दुबला-पतला, नुकीली नाकवाला और भूरी जाकेट पहने हुए था। शुरु मे तिमोफेई खोया खोया इस मछलीमार को देख रहा था, लेकिन बाद मे जब वह उठ गया और बसी कधे पर रखकर सीटी बजाता हरी बेंच की तरफ आने लगा, तो वह एकाएक चौंक सा पडा। लडके के पास आने के साथ-साथ उसके गाल का कत्थई दाग़ साफ साफ दिखायी देन लग गया था।

जब वह तिमोफेई की बगल से गुजरने लगा, तो तिमोफेई ने कहा

"ऐ लडके, एक मिनट ठहरना!"

लडके ने पहले तिमोफेई को ऊपर से नीचे तक देखा, फिर बोला

"क्या बात है?"

"अगर जल्दी नहीं है, तो एक मिनट बैठो," तिमोफेई ने कहा।

"नहीं, जल्दी नहीं है।" और वह बेंच पर उसके साथ बठ गया।

तिमोफेई चुपचाप उसे देखता रहा। लडका इससे तग आ गया।

"म क्या कोई तसवीर हू, जा इस तरह देख रहे हो?" उसने कहा। कोई काम है, तो बोलो। नहीं तो म चला "

"बडे उतावले हो," तिमोफेई ने जवाब दिया। "म बहुत धीरे सोचता हू।"

"पर जल्दी सोचो।"

यह कहकर लडका हस पडा। तब तिमोफेई ने पूछा

"सुनो, तुम सर्दियो मे कहा रहते थे?"

"कहा रहते थे?" लडके ने सीटी बजायी। "वहा इस समय चूहे तक नहीं रहते। हमारा घर बमबारी मे पूरी तरह नष्ट हो गया। म खुद भी बम से उडते-उडते बचा।"

"हा, हा," तिमोफेई खुशी से बोला, "यही तो म पूछ रहा था। बाल्कनीदार चारमजिला घर, वहा उस नुक्कड पर न?"

"ठीक है। लेकिन क्या तुम भी वहा रहते थे? या वहा किसी को जानते थे?"

"म वहा नहीं रहता था," तिमोफेई ने कहा। "और तेरा नाम क्या है?"

"शूरा निकीतिन "

"शूरा, तुम आजकल क्या करते हो? कहीं पढ़ते हो क्या?"

"मा मर गयी है, पिता को फौज मे ले लिया गया है, म अब चाची के साथ रहता हू। काम करना चाहता हू, पर मालूम नहीं कहा, क्या करना है। छोटा हू म "

"कितनी उम्र है?"

"पद्रह साल पूरे होनेवाले ह "

"तो छोटे कहा हो! चाहो, तो म तुम्हारे लिए काम का इतजाम कर सकता हू।"

"तुम?" लडके को विश्वास नहीं हुआ।

"और क्या!" तिमोफेई ने गव से कहा। "म तुम्हे अभी एक आदमी के नाम पर्ची लिख देता हू।"

"और तुम खुद कौन हो?"

"म फिटर हू और तुम भी फिटर बनोगे। अब उम्र पर मत देखो। सदिया तो ठीक बीतीं न?"

"गरमी आने से सब ठीक हो गया है। अब दौड भी लेता हू, पर भी फूले-फूले नहीं लगते "

"तो मतलब है कि काम कर सकते हो। पुल के पासवाले कारखाने को जानते हो?"

"जानता हू।"

"म वहीं काम करता हू। अभी म तुम्ह एक पर्ची लिख देता हू।"

उसने जेब से एक नोटबुक निकाली, जिस पर उसे बडा गव था, पेंसिल को थूक से गीला किया और बडे बडे सीधे अक्षरो मे लिखा "प्रिय परफेनी इवानोविच, शूरा निकीतिन को मेरे वकशाप मे काम पर लगाना है। बाद मे म आपको सब कुछ बता दूगा। वह भी बता देगा।"

उसने पर्ची शूरा को थमा दी। शूरा ने आश्चर्यपूर्वक कहा

"तुमने दस्तखत कैसे किये हैं 'अभी जिन्दा हूं।' क्या मतलब है इसका?"

"यह मेरा और परफेनी इवानोविच का रहस्य है। तुम डरो नहीं, मैं धोखा नहीं दूंगा। मैं बाद मे बता दूंगा। पर तुम जरूर आना। देखना, धोखा नहीं देना!"

"मुझे धोखा देने की क्या जरूरत है? बेशक आऊंगा। पिता ने मुझे थोडा बहुत मिस्तरी का काम सिखाया था। पर यह बताओ, तुमने मुझे क्यो रोका था? तुम क्या मुझे जानते हो?"

"थोडा सा जानता हूं," अचानक झिझकते हुए तिमोफेई ने कहा। "मैं यहीं पास ही मे रहता हूं, इसलिए बहुत बार देखा था"

"मुझे भी तुम जाने पहचाने से लग रहे हो। खुदा की कसम!" शूरा ने कहा। "पर याद नहीं कर पा रहा हूं। जानते हो, उस समय से, जब घर टूटने से मैं दब गया था, मेरा सिर अक्सर दुखता है। मैंने तुम्हें कहीं देखा है, मैं सच कह रहा हूं"

"हा शायद देखा है," बात को टालते हुए तिमोफेई बोला। "हम एक दूसरे के पास ही रहते हैं, तो क्यो नहीं देखा होगा! हा, तो जरूर आना"

तिमोफेई ने उसे समझा दिया कि परफेनी इवानोविच कहा मिल सकता है।

"हा, हा, जरूर आऊंगा," शूरा ने कहा और बसी को हिलाते हुए तट पर आगे बढ़ गया।

तिमोफेई उसके पीछे देखता हुआ सोचने लगा कि उसने शुरू मे ही सब कुछ क्या नहीं बता दिया। पहले मिनट उसे शक जरूर हुआ था कि यह और कोई तो नहीं है, पर नाम और गाल पर के दाग से पुष्टि हो गयी थी कि यह वही लडका है।

सर्दियो की रात थी। भारी, बर्फीली घटाओ से घिरे काले आसमान से भीषण बमबारी हो रही थी। उस टोली को, जिसमे तिमोफेई काम करता था, अभी अभी गिरे हुए एक घर के पास बुलाया गया था। बम घर के बीचोंबीच गिरा था और अब अधेरे मे एक दूसरे पर गिरी पडी लोहे की बल्लियां और ईंटों का ढेर अजब दहशतनाक लग रहा था। लालटेन

के उजाले मे लोग मलबे के नीचे से ढूढ-ढूढकर दबे पडे लोगो को निकाल रहे थे।

शुरू मे तिमोफेई ऊपर के ढेर को हटा रहा था। लेकिन बाद मे उसे नीचे बुलाया गया और इलाकाई हेडक्वाटर के कमिसार ने लालटेन के उजाले मे उसे ध्यानपूवक देखते हुए पूछा कि क्या वह पहली मजिल पर मलबे के नीचे दबे पडे लडके को निकालने की हिम्मत कर सकता है? वे एक काले सूराख के पास आये, जहा से एक कमज़ोर सी आवाज़ सुनायी दे रही थी। सूराख इतना बडा नहीं था कि कोई बडा आदमी उसके अदर घुस सके। तिमोफेई ने टोप पहना, जरूरी औजार और जेबी टाच ली और सूराख के अदर रेंगने लगा।

उसे पूरा विश्वास था कि वह लडके को लेकर ही वापस लौटेगा। लेकिन बाहर खडे लोगो के लिए यह बहुत मुश्किल लग रहा था। मलबा बठने लगा था। कमिसार ने ऊपर के कामो को बद करने का आदेश दिया और सभी लोग सूराख के सामने इकट्ठे हो गये। वे सूराख के सामने घूम रहे थे, उनके परो के नीचे बरफ चरमरा रही थी। वे धीमी आवाज़ मे बातें कर रहे थे और सिफ कमिसार ही लालटेन हाथ मे लिये कभी कभी सूराख के पास मुह ले जाकर कुछ चिल्ला रहा था।

तीन घटे तक एक एक कदम करके तिमोफेई उस तग रास्ते से आगे बढा। तारो, कीलो और ईंटो के नुकीले टुकडो से उसके बदन पर जगह बजगह खरोचे लग गयीं। अतत वह लडके के पास पहुच गया और पीठ के बल लेटे-लेटे ही उसके हाथ पर पडी इटो को हटाने लगा। जब हाथ आज़ाद हो गया, तो उसने उसे बोतल से पानी पिलाया। तिमोफेई को ताकत जवाब देने लगी थी। उसने चारो तरफ टाच घुमायी, ताकि स्थिति को ठीक-ठीक याद कर सके। फिर वह वापस रेंगने लगा। जब वह बाहर निकला, तो पसीने से, बारिश मे भीगे चूहे की तरह तर था।

उसने कुछ सास ली और फिर लडके को निकालने के लिए सूराख मे अदर घुस गया। छ घटे तक जूझने के बाद आखिरकार वह लडके को मलबे से निकालने मे सफल रहा। जब उसे बाहर लाया गया, तो थकावट के मारे तिमोफेई बोल भी नहीं पा रहा था। बचाये गये लडके के इदगिद शोर मचाते लोगो की आवाजें ही उसके कानो तक पहुच पा रही थीं। तभी किसी ने तिमोफेई के कधे को थपथपाते हुए कहा

"हे, बड़े ताक़तवर हो! शाबाश!"

उसने सुना कि लड़के का नाम शूरा निकीतिन है। कुछ आराम करके वह लड़के के पास आया। उसे अस्पताल ले जाने के लिए स्ट्रेचर पर लिटाया जा रहा था। तिमोफ़ेई को एक पीला सा चेहरा दिखायी दिया, उसके गाल पर कत्थई रंग का बड़ा सा दाग़ था। यह उसने याद कर लिया। पर काम अभी खत्म नहीं हुआ था। दूसरों को भी बचाना था। और उसने केवल यही देखा कि कैसे एंबुलेंस कार नुक्कड़ पर जाकर मुड़ गयी।

और आज वही शूरा निकीतिन, हट्टा-कट्टा और स्वस्थ, बसी लिये हुए जब उसके सामने से गुज़रा, तो वह उसे रोके बिना नहीं रह पाया।

कुछ दिन बीत गये। मध्यान्तर के वक्त तिमोफ़ेई को वर्कशाप के दफ्तर में बुलाया गया। अंदर घुसते ही उसने परफ़ेनी इवानोविच को कागज मोड़कर बनायी गयी मोटी सी सिगरेट दांतों में लिये देखा। तिमोफ़ेई को देखते ही उसने मुंह से सिगरेट निकाली और मुस्कराते हुए कहा

"क्यों बुढ़ऊ, अभी जिन्दा हो? लो, इन नये आदमियों को संभालो।"

"शुक्रिया, परफ़ेनी इवानोविच," तिमोफ़ेई ने कहा। "अभी जिन्दा हूं! और इन आदमियों को संभाल लूंगा।"

और तभी लोगों के सामने ही, जिनसे दफ्तर भरा हुआ था, शूरा ने कहा

"तुमने छिपाया क्यों कि तुम स्कोबेलेव हो? मैं तुम्हें पहचान नहीं पाया। माफ़ करना। मैं सच कह रहा हूं! सदियों से हम दोनों कितने बदल गये हैं। तुमने तो मुझे पहचान लिया, पर मैं नहीं पहचान पाया। पर तुमने मुझे सड़क पर कैसे पहचाना?"

तिमोफ़ेई नहीं कहना चाहता था कि उसने उसे गाल पर बने दाग़ से पहचाना था। शर्माते हुए वह कुछ बुदबुदाया और दफ्तर से बाहर निकल गया। शूरा और परफ़ेनी इवानोविच उसके पीछे-पीछे चल रहे थे।

जब वे वर्कशाप के धातु की चमक से जगमगाते शीतल हाल में पहुंचे, तिमोफ़ेई ने शूरा से कहा।

"जो हुआ, सो हुआ अब यहां हम दोनों मिलकर काम करेंगे!" और उसने मालिक और उस्ताद के अंदाज़ में अपना छोटा मजबूत हाथ लेथ के ठंडे इस्पात पर रख दिया।

वसन्त

मकान बुरी तरह से उपेक्षित पडा था। उस पर बमबारी का ज्यादा असर नहीं हुआ था। सिफ कहीं-कहीं पर शीशे और चौखटे निकल गये थे। गोलों की बौछार से अटारी और ऊपर की मजिल कुछ जगहो पर जल जरूर गयी थीं। सदियो मे वह गदगी से भर गया था, पाइप टूट गये थे, टबों और वाशबेसिनो मे हल्के भूरे रग की बर्फ जम गयी थी, बरामदे गदगी मिली बफ से ढक गये थे, फश जगह-जगह पर टूट गया था, क्योकि सदियो मे लकडिया इसी पर फाडी जाती थीं, दीवारें धूए से काली पड चुकी थीं और हर तरफ ठड और सीलन की बू समाई हुई थी।

मरम्मत का काम खुद ही बडे जोश और उत्साह के साथ शुरू किया गया। इस गदे काम के लिए इवान निकोलायेविच को किसी ने नहीं बुलाया और अगर बुलाते भी तो उन्हे आश्चय जरूर होता—सजन क्या मजदूर का काम करेगा! मकान की मरम्मत करके इसमे अस्पताल खोला जा सकता था। वह अच्छा और मजबत था। पर मरम्मत के लिए ताक्त की जरूरत थी। सब लोग दौडते दौडते बहुत थक गये थे, खास तौर पर कमिसार, जिसे न दिन और न रात, कभी भी दम लेने का मौका नहीं मिलता था।

मकान लोगो से भरा हुआ था। कहीं बढ़ई काम कर रहे थे, तो कहीं रगनेवाले। पर उनमे से कोई भी पेशे से बढ़ई या रगनेवाला नहीं था। वे अस्पताल के ही कमचारी थे—डाक्टर, नर्स, वालटियर, नर्सिंग अरदली, आदि, जो बाहे चढ़ाकर रगडने, धोने, रदा फेरने, रगने और सफाई करने मे व्यस्त थे। खुली हुई खिडकियो से शहर का शोर अदर आ रहा था सदियो के बाद पहली बार चलनेवाली ट्राम की घडघडाहट, मोटरगाडियो

के भोंपुग्रो की ग्रावाज, गश्ती हवाई जहाजो की दूर से ग्राती घर्राहट, तोपो की गोलाबारी का धमाका।

एक सुबह इवान निकोलायेविच ने सिर तक चूने से सनी एक नर्सिग ग्रदली से पूछा

"डाक्टर कातोनिन कहा मिल सकते है?"

उसने बता दिया। देर तक चौडी सीढिया ग्रौर इसके बाद काली ठडी रेलिगवाले तग जीना चढने के बाद इवान निकोलायेविच छत पर पहुचे। छत चौडी ग्रौर सपाट थी। उसके एक किनारे पर एक मडवा बना था। शहर काफी दूर तक साफ-साफ दिखायी दे रहा था। लाल छतो के सागर के ऊपर कहीं कहीं शिखर उभरे हुए थे। क्षितिज वसतकालीन, हरे-नीले कोहरे मे छिपा हुग्रा था। सारी छत बफ, लकडी ग्रौर कूडे के मिले-जुले मलबे से पटी पडी थी।

डाक्टर कातोनिन गती से इस हरे, गदे बख्तर को तोड रहे थे। हर चोट के साथ उससे कुछ टुकडे सनसनाते हुए छिटक जाते थे। डाक्टर ने गरदन नहीं मोडी। इवान निकोलायेविच चुपचाप खडे उनकी जोरदार हरकतो को देखते रहे। तभी कातोनिन ने सीधे होकर जमी हुई बफ मे गती मारी ग्रौर हाथ फटकाते हुए पीछे मुडकर किसी भी तरह का ग्राश्चय व्यक्त किये बिना इवान निकोलायेविच की ग्रोर देखा ग्रौर कहा

"दिलचस्प काम है न, सहयोगी! शतान ले जाये उसे! पर इस बेहूदगी को जल्दी से जल्दी हटाना होगा, क्योकि हमे यहा रहना ग्रौर काम करना है "

उन्होने हथेली पर थूक मला ग्रौर फिर खान मजदूर जसे जोश से जमी हुई बफ को तोडने लग गये। इवान निकोलायेविच हाथ पीठ पीछे किये कभी डाक्टर को देखते तो कभी नीचे फले शहर को। वह उसे इतने ध्यान से देख रहे थे कि मानो पहली बार देख रहे हो। वसे ग्रपने जीवन मे वह पहले भी कई बार इस छत पर ग्रा चुके थे। कभी यहा एक रेस्तरा हुग्रा करता था—हर समय चहल-पहल से भरा ग्रौर हसी-ठहाको से गूजता हुग्रा

कातोनिन इधर उधर देखे ग्रौर कमर सीधी किये बिना बफ तोडने मे लगे थे। इवान निकोलायेविच दबे पाव छत से चले गये। उनके माथे की झुरिया ग्रौर गहरी हो गयी थीं ग्रौर विकलता के मारे कधा फडक रहा था।

दूसरे दिन वह गोदाम मे आये और यो ही कोने की ओर दिखाते हुए, जहा औज़ार पड़े हुए थे, उसके इचाज से कहा

"मुझे भी देना क्या कहते ह इसे? खर, आप ख़ुद जानते ह वहा छत पर बफ साफ करने के लिए "

"लेकिन आपके हाथ, डाक्टर?" इचाज ने आपत्ति की। "नहीं, नहीं, आप रहने दीजिये। आपके बिना काम चल जायेगा।"

"मेरे हाथो की आप चिता न कीजिये," इवान निकोलायेविच चिल्लाये। "म ख़ुद उनकी चिता कर लूगा। लाइये, दीजिये औज़ार। म कमिसार से बात कर चुका हू। सब ठीक है।"

कधे पर गती रखे और हाथ मे बेलचा लिये वह छत की तरफ चल पड़े। वहा उन्होने कातोनिन के दूसरी तरफ अपने लिए एक कोना चुन लिया।

यह भूरे से रग का मलबे का ढेर था, जिसमे तरह-तरह की चीज़ें जमी पड़ी थीं। किसी टूटी हुई कुर्सी का पर बफ मे से हड्डी की तरह उभरा हुआ था। इवान निकोलायेविच ने धीरे-धीरे गती चलाने का आदी होते हुए काम शुरू किया। शुरु मे हाथ बहुत दुखे। चोटें ठीक तरह नहीं लग रही थीं, जिसकी वजह से वह बहुत थक गये।

तब वह ढेर की चोटी की तरफ बढ़े। गती से उन्होंने उसमे सीढी सी बनायी और फिर बेलचे से कूड़े और बफ को नीचे फेंकने लगे। दो एक घटे काम करने के बाद वह एकाएक किसी सख्त चीज़ से टकराया और बफ के नीचे से, जो हल्के से बाल मे ढलक गयी थी, एक सिर दिखायी दिया।

आश्चय के मारे वह घुटनो के बल बठकर सगमरमर के सिर को यो देखने लगे, जसे कि वह कोई अजबा हो। और सचमुच यह आश्चय की बात थी भी। कहा जमे हुए मलबे का अवणनीय ढेर और कहा यह सुदर, तनिक गर्वीला स्त्री सिर! मूतिकार ने उसके बालों को जूड़े की तरह सजाया था।

"सचमुच!" माथा पोछते हुए वह बुदबुदाये, "किसी से कहो भी तो विश्वास नहीं करेगा। ठीक है, आगे काम जारी रखें।"

और वह बडे एहतियात से बर्फ और पत्थर के टुकडों को हटाने-तोडने लगे, जिनके बीच मूर्ति छिपी हुई थी। वह नीचे उतरते, खाना खाते, बठते, साथियो के साथ बातें करते, मगर विचित्र सी बात थी कि बार बार अपने विचारा को छत पर मिली उस मूर्ति की ओर लौटता पाते, हालांकि हो सकता है कि वह इतने अधिक ध्यान की पात्र नहीं थी। रोजाना वह ऊपर जाते और जब एक दिन एक नर्सिंग अदली ने उनके बदले काम करना चाहा, तो उन्होंने दूर से ही गती हिलाते हुए गुस्से से कहा

"काम की कोई कमी नहीं है। जरूरत है, तो डाक्टर कातोनिन के पास जाइये, यहा म अकेला हो सब कुछ कर लूगा।"

पर एक दिन वह बर्फीले टीले से उतरकर डाक्टर कातोनिन के पास आये और एहतियात से उनकी बाह खींची।

"क्या बात है, इवान निकोलायेविच?" कातोनिन ने पूछा।

"आपसे मशविरा करना है"

"इसके लिए तो आज शाम हम मिलनेवाले ह"

"नहीं, नहीं, मशविरे की यहा जरूरत है," इवान निकोलायेविच ने बीच ही मे टोक दिया। "यहीं दो क़दम पर। आपसे अनुरोध करता हू"

कातोनिन उनके साथ जब उस कोने मे पहुचे, तो उन्हें गदी बर्फ के बीच से निकला हुआ खूबसूरत सा धड दिखायी दिया, जो धूए से काली पडी दीवार की पृष्ठभूमि पर अजीब ढग से चमक रहा था।

"क्या सोचते ह आप, किसकी मूर्ति है यह?" इवान निकोलायेविच ने पूछा। "जानते ह, म यहा पर अचानक ही पुरातत्त्ववेत्ता बन गया हू"

"मेरे ख्याल मे यह वीनस है, इवान निकोलायेविच," जानकार के से लहजे ने कातोनिन ने कहा और दो कदम पीछे हटकर हथेली से आखों पर ओट करके फिर देखने लगे।

"म भी यही सोचता हू," इवान निकोलायेविच बोले। "जिन्दगी भर मने किताबो मे यही पढ़ा था कि वीनस समुद्र की लहरों के बीच से पैदा होती है और यहा भगवान जाने किससे, पर पदा हो रही है और पदा करनेवाला जीयस नहीं, बल्कि हाथ मे गती थामे हुए बूढ़ा सजन है, लेकिन फिर भी जन्म देनेवाला ही है। देखिये, मेरा काम जल्दी ही खत्म होनेवाला है"

"आपका काम जल्दी हो रहा है," कातोनिन ने ईर्ष्यापूर्वक जवाब दिया। "और फिर आपके यहा वीनस भी है, जबकि मेरे यहा ऐसी कोई चीज नहीं है।"

उस दिन इवान निकोलायेविच धीरे-धीरे, थके हुए, पर सतोष के साथ मुस्कराते हुए विभिन्न मजिलो से गुजरे, जहा मरम्मत का काम जोरो से चल रहा था। हर चीज उनका ध्यान खींच रही थी। कई बार वह फर्श की दरारो के बारे मे कुछ कहने के लिए रुके और दो नर्सों को, जिनके चेहरे मेहनत से लाल पड गये थे, सलाह दी कि उन्होंने दरारो को भरने के लिए जो मसाला बनाया है, उसमे कुछ वार्निश मिला ले। फिर उन्होंने एक घबरायी हुई नर्सिग अर्दली के हाथ से ब्रश लेकर चौखटे को रगते हुए कहा

"आप लाइन ठीक से नहीं खींच रही ह। देखिये, इस तरह ऊपर से शुरू करके नीचे आने पर खत्म करना चाहिए। और आपके करने से, देख रहो ह, कसी धारिया छूट रही ह? सब बराबर बराबर होनो चाहिए।"

एक साफ सुथरे और अभी अभी रगे हुए वाड मे उन्होने कहा

"सब ठीक है। दिल को छूनेवाला है। हर चीज नीली है। इस रग के इस्तेमाल के लिए किसने कहा था?"

लाल गालोवाली एक युवा वालटियर ने खनकती आवाज मे जवाब दिया

"कामरेड सजन, दूसरा कोई रग था नहीं, इसलिए नीला रग ही इस्तेमाल करना पडा।"

"म आलोचना थोडे ही कर रहा हू," उन्होने कहा। "उल्टे, बडा अच्छा लग रहा है और मख्य चीज है कि साफ है "

शाम को खाना खाते हुए डाक्टरो के छोटे से डाइनिग रूम मे वह कहने लगे

"अजीब बात है, वसन्त वसा ही असर कर रहा है, जसे कि कोई स्वास्थ्यगाह। देखिये सडक पर चलना कितना खुशगवार हो गया है। लोग खुश नजर आ रहे ह। चेहरे बुझे बुझे नहीं ह। बच्चे खेल-तमाशो मे लगे ह, डर लगता है कि रोलिग स्केटो से किसी को कुचल न दें। लडकिया मुस्करा रही ह और खडहर भी इतने खराब नहीं लगते, जसे कि सदियों

मे लगते थे। हवा की तो म बात ही नहीं करता   मने देखा कि एक मकान मे, जिसमे पहले शायद कोई दफ्तर था और जिसकी छत पर तरह तरह का लकडी की खुदाई काम का किया हुआ था, एक बुढिया ने पहले एक बडी मेज रखी, फिर उस पर एक छोटी मेज और रखी और तब उसके ऊपर सीढ़ी खडी कर, ऊपर चढ़कर झाडन से लकडी के काम को साफ कर रही थी। जसे कि कोई सरकस का तमाशा हो   "

दिन बदिन मकान की हालत सुधरती गयी। साफ दिखायी दे रहा था कि सफाई का काम सफल रहा है। पलगो के पास अभी अभी रगी गयी छोटी मेजें खडी थीं, खिडकियो के धुले हुए शीशे चमक रहे थे, नहाने के टब पहले की तरह ही जगमगाने लगे थे, वाशबेसिनो मे पानी बहने लगा था, सब सतुष्ट दिखायी दे रहे थे और याद कर रहे थे कि जब शुरू म उन्हे इतना उपेक्षित घर मिला था, तो वे कितना डर गये थे।

पिछले कुछ समय से सजन इवान निकोलायेविच को ठीक से नींद नहीं आ रही थी। वसत मे वह हमेशा ही जल्दी जाग जाते थे, पर इस बार तो नींद बिल्कुल खत्म ही हो गयी थी। भोर होने तक वह लेटे रहे, फिर उठकर कपडे पहने और नमक लगी रोटी खायी, ताकि खाली पेट सिगरट न पियें, और फिर सिगरेट बनाकर छत पर चढ गये।

वहा वह स्कूली बच्चे की तरह पर नीचे लटकाकर रेलिग पर बठ गये और अपनी खोजी हुई वीनस को देखने लगे, जो भोर के गुलाबी उजाले से नहा उठी थी। बाकी मलबे को उन्होंने कल हटा दिया था और अब मूर्ति अपने चबूतरे पर उसी तरह शात खडी थी, जसे कि इन भयानक सदियो से पहले, जो न आदमियो और न मूर्तियो, किसी पर भी रहम नहीं खाती थीं।

शहर सुबह के पारदर्शी उजाले के अग्निमय सागर मे नहा रहा था। लगता था कि इमारतो के विशाल समूह से, जो क्षितिज के उस पार तक फले थे, कोई प्रकाशीय शक्ति पदा हो रही हो। शहर इतना युवा, इतना शक्तिशाली और इतना वासती था कि इवान निकोलायेविच चलने की अदम्य लालसा का अहसास कर तुरत रेलिग से कूद पडे और बडे बडे डग भरते हुए छत पर चलने लगे। हर बार मूर्ति के पास आकर उनके कदम रुक जाते। उन्हें लगता कि यह अभी उनकी हास्यास्पद अनुभूतियों, उनके

बेडौलपन और इस समय, जब सब लोग अभी सोये हुए है, उनके तेज डग भरते हुए चलने पर खिलखिलाकर हस पडेगी।

लेकिन सुबह इतनी सुहावनी थी कि वह कभी बैठ जाते, तो कभी फिर चल पडते और सिगरेट पीते हुए सोचने लगते जिदगी, शहर, लडाई और उन लोगो के बारे मे जिनकी जिदगी उन्होने खून से लथपथ मेज पर बचायी थी। वह सोचने लगते कि कैसे इतने दिनों तक गैती और फावडा हाथ मे लेकर मलबे, कूडे और बर्फ के ढेरो को हटाते रहे थे।

मूर्ति के सामने रुककर उन्होंने धीरे से कहा

"तुम्हे पता है कि आदमी कितना मजबूत है! उसकी स्वतन्त्र इच्छा शक्ति से बढकर शक्तिशाली दुनिया मे कुछ नहीं है। और प्रतिभाशाली कितना है! उसी ने ऐसे शहर का निर्माण किया, ऐसी मूर्ति की रचना की! कुछ टुच्चे कमीने यह सब बरबाद करना चाहते है। कोशिश करके देखें तो! पता चल जायेगा कि कौन जीतता है! "

"अपनी मेहनत के फल को देख रहे है क्या?" पीछे मे कमिसार की जानी पहचानी आवाज आयी। "मूर्ति बडी अच्छी है। मुग्ध हो गये है क्या इस पर, डाक्टर? आज इतनी जल्दी उठ गये!"

डाक्टर कमिसार के साथ साथ चलने लगे। वह शर्मिंदगी महसूस कर रहे थे कि कमिसार ने अचानक पहुचकर उनके विचारो को भाप लिया था। उसकी निश्छल हसी का जवाब देते हुए उन्होने कहा

"छोडिये, मुग्ध होने के लिए इसमे ऐसी क्या चीज है? कधा टेढा है और हाथ का जोड भी निकल गया है "

"इवान निकोलायेविच, आप सर्जन के दृष्टिकोण से देख रहे है क्या?"

"अवश्य, सर्जन के दृष्टिकोण से," इवान निकोलायेविच ने कहा और कमिसार का हाथ पकडे हुए छत से जाने लगे। कमिसार इस समय अच्छे मूड मे था, क्योकि वह जानता था कि अस्पताल निर्धारित समय से दो हफ्ते पहले खुल जायेगा।

बूढा सिपाही

वह बहुत बूढा था और उसकी आखें बहुत कमजोर हो गयी थीं। सब लोग खुली खिडकियो के पास खडे थे। वह भी पास आया, पर कुछ भी न देख सका। तब उसने औरो से पूछा

"मुझे भी बताना, वहा क्या हो रहा है।"

"वहा, शहर के बाहर, कहीं दूर आसमान मे धूआ उठ रहा है। सफेद धूए के पहाड जसे बडे बादल। सूर्यास्त की वजह से उनके किनारे गुलाबी हो गये ह। और अब धूआ नीला बनता जा रहा है, वह आधे आकाश तक छा गया है "

"आग लग गयी है क्या?" उसने पूछा। "जमनो ने लगायी है?"

"हा," जवाब मिला।

हवामार तोपा का रक रुककर गोले बरसाना अभी जारी था।

शामो का सारा वक्त वह नक्शो के सामने बठा बिताया करता था। वह पुराना सनिक अध्यापक, भूगोलवेत्ता और आविष्कारक था और उसके पास बहुत नक्शे थे। उनकी रगबिरगी लाइनो, तरह-तरह की धरातल सूचक परिरेखाओं और विचित्र उभारो से उसे हमेशा एक तरह का सुकून मिलता था। इन नीले डिजायनो, कत्थई धब्बा और नीली पीली पट्टियों मे वह अपने शक्तिशाली देश की महान, सरगर्मियों से भरी, स्वतत्र और निरन्तर विकासमान जिन्दगी को देखा करता था। उसे पता था कि किस तरह साल बसाल यह नक्शा बदलता जा रहा है।

लेकिन इस समय वह लेनिनग्राद के आसपास की जगहों का नक्शा देख रहा था। परेशानी के मारे उसके माथे पर बल पड गये थे और नजर बुझी-बुझी तथा उदास थी।

कहीं पास ही से मशीनगनों की गरज सुनायी दे रही थी।

"नहीं, यह नहीं हो सकता," उसने अपने आप से कहा, "नहीं हो सकता।"

आवेग मे आकर उसने मेग्नीफाइग लेंस को नक्शे पर फेंक दिया और लबे-लबे डग भरता कमरे मे चहलकदमी करने लगा।

"और करना भी किसके हवाले है? नाजियो के! बेवकूफ, असभ्य और बच्चो और औरतो के हत्यारे फासिस्टों के हवाले " वह बडबडाया। "हा, हा, ये गुडियाओ की तरह खुदपसद जमन जनरल इतजाम करने मे बुरे नहीं ह, उन्हें लडना आता है लडना आता है?" अगले ही क्षण वह चिल्ला पडा "दुस्साहसी कहीं के, उनकी सब योजनाए लुटेरो का झासा ह। उनका एक ही उद्देश्य है अधा बनाना, हथियार छीन लेना और हौसला गिराना नहीं, यह नहीं होगा! हमे चकमा नहीं दिया जा सकता रूसी जनता बहकावे मे नहीं आयेगी। लेनिनग्राद आपको नहीं मिलेगा!"

वह बिस्तर पर लेट गया, पर नींद नहीं आयी। वह अपने पूरे तन-मन से उस लडाई को महसूस कर रहा था, जो नगर के इर्दगिर्द छिडी हुई थी। आखें मूद कर वह उन सभी शातिमय जगहो को देखने लगा, जहा उसने जवानी के दिनो मे कमाडर के तौर पर युद्धाभ्यासो मे हिस्सा लिया था। ये शात कोने अब एक के बाद एक करके आग के धूए मे गायब हो रहे थे और हालांकि सोचते हुए भी डर लगता है, हो सकता है कि दुश्मन के टक अब शहर के छोर तक बढ आये ह। तब ग्रेनेड फेंकने लायक ताकत उसमे अभी बाकी है। यह कम देखता है, यह ठीक है। पर वह यह नहीं पूछेगा कि दुश्मन कितने ह। वह पूछेगा वे कहा ह? पर नहीं, यह मुमकिन नहीं—हमारी पाक सडको और चौराहो पर जमन पर कभी नहीं पडेंगे! कभी नहीं!

हवाई हमलो के समय वह बचावस्थल मे छिपने नहीं जाता था। घर के ऊपर हवा थर्रा उठती थी, छत बम के टुकडों से बजने लगती थी, खिडकिया झनझना जाती थीं और घर इस तरह हिल उठता था कि मानो लकडी का टप्पर हो। लेकिन वह यही कहा करता था

"उडो, उडो, जल्दी तुम्हारा भी काल आ जायेगा "

लडाई खिच गयी थी। दुश्मन ने लेनिनग्राद की दीवारो के पास ही मोर्चा बाध लिया था। सरदिया आ गयी थीं। घर मे ठडक और अधेरा

था। लोहे की छोटी सी अगीठी मे जलती हुई गीली छिपटिया ही कुछ गरमी देती थीं। बूढ़े की सेहत दिनोंदिन खराब होती जा रही थी। वह एक पुराने कबल के नीचे पडा रहता था और सारी जिन्दगी उसकी कल्पना की आखो के सामने से गुजर जाती थी। यह लबी, मेहनत से भरी, दिलचस्प जिन्दगी थी और अगर उम्र ज्यादा न हो गयी होती और कठिनाइयां न बढ़तीं, तो वह काफी देर तक जिन्दा रह सकता था। पर अब उसके हाथ पाव कमजोरी से जकड गये थे और इस छोटी सी अगीठी के लिए लकडी भी दूसरे लोग फाड दिया करते थे। खुद वह इस बच्चा जसे काम से बहुत थक गया था।

वह केवल अपने शहर के बारे में सोचा करता था, महान, अद्वितीय और शानदार लेनिनग्राद के बारे मे।

भावुकता के क्षणो मे जब वह पिछली जिन्दगी के बारे मे उदास मन से याद करता, तो मेज की दराज से सोने की घडी निकाल लेता और देर तक उसे हाथ मे पकडे रहता। यह घडी उसे मिलिशिया ट्रेनिंग स्कूल मे अच्छे काम के लिए इनाम के रूप में मिली थी। वहा उसने बहुत समय तक पढाया था और बहुत से कुशल और बहादुर अफसर तयार किये थे उसे उनके मुस्कराते चेहरे, उनका जवान जोश और उत्तेजनापूर्ण बातचीतें याद आतीं। और अचानक वह भी अपने को जवान, घोडे पर सवार, पहाडो पर चढ़ते, काकेशिया के दर्रों को लाघते, फेनिल प्रपातो का आनन्द लेते जिज्ञासु मानचित्रकार, घुमक्कड और पहाडी युद्धो के इतिहास के विशेषज्ञ के रूप मे देखता कितने साल बीत चुके ह तब से!

वह बहुत कमजोर हो गया था। अब वह सूप खाते हुए चम्मच भी मुश्किल से पकड पाता था। उसे बेटी खिलाती थी, वही उसे मोर्चे की खबरें भी सुनाती थी।

"हट रहे ह, पीछे हट रहे ह," वह गहरी सास लेता और बडे कष्ट से अपनी क़रीब क़रीब अधी आखों से बेटी की ओर देखता।

मकान के दूसरे किरायेदारों का कहना था कि बूढ़ा अब ज्यादा दिन का मेहमान नहीं है।

उस ऐतिहासिक सुबह को अपने-अपने कमरों मे प्राइमस-चूल्हे जलाने मे व्यस्त औरतों और बूढ़े सिपाहो की लडकी को कुछ अजीब सी आवाजें सुनायी दीं। बूढ़े के कमरे से आरी की आवाज आ रही थी। इसके बाद

कुल्हाडी की आवाज आयी और बाद मे गाना भी सुनायी दिया हा, कमरे मे कोई गा रहा था। शब्दों को पकड पाना मुश्किल था और फिर शायद इस गाने मे कोई शब्द थे भी नहीं। यह एक तरह का बेसुधी और सतोष से भरा गुनगुनाना था।

सब सोचते थे कि बूढ़ा अपना पुराना कबल ओढ़े पडा हुआ है, शात, असहाय और कमजोर।

बेटी दरवाजे के पास आयी और कुछ क्षण कान लगाकर सुनती खडी रही। पर जब आखिरकार दरवाजा खोला, तो देखा कि उसका बूढ़ा, बीमार पिता आरी से लकडी काट रहा है और कुछ गुनगुना रहा है। हा, यह उसी की आवाज थी। उसकी आखें चमक रही थीं और हालाकि वह पुराना फटा ओवरकोट पहने था, फिर भी किसी सरदार की तरह महान लग रहा था।

"पापा, यह तुम्हें क्या हो गया है?" डरते डरते बेटी ने सवाल किया। "तुम उठ क्यों गये? और यह क्या काट रहे हो? तुम्हे तकलीफ हो रही होगी!"

बाप ने बेटी की ओर देखा और धीरे धीरे, साफ और ऊची आवाज मे पूछा

"तुमने आज रेडियो सुना है? "

"नहीं तो," लडकी ने जवाब दिया। "क्या बात है?"

और अचानक बूढ़ा एक हाथ मे आरी और दूसरे मे लकडी का टुकडा थामे हुए क़रीब-क़रीब उछल पडा।

"तुमने नहीं सुना? सारी दुनिया सुन चुकी है और तुमने नहीं सुना। मास्को के नजदीक जमनो को हरा दिया गया है, वे खाक मे मिल गये है, टुकडे-टुकडे हो गये ह बदमाश दुस्साहसी कहीं के! मने बहुत पहले कहा था कि ये केवल डाकुओ की तरह लड सकते ह। भला यह भी कोई तरीक़ा है? यह बेहयाई है, लुटेरापन है! बेटी, अब वे धूल चाट रहे ह, समझ रही हो लेनिनग्राद उन्हे कभी नहीं मिलेगा! मुझसे अधिक लेटा नहीं जा रहा था। इसलिए जब मने यह खबर सुनी तो उठ खडा हुआ। 'हमारी जीत जिन्दाबाद!' चिल्लाने के लिए उठ खडा हुआ। यह लेटे हुए तो चिल्लाया नहीं जा सकता था, समझ रही हो न तुम?"

क्षण

कुछ ऐसे भी क्षण होते हैं, जब हमारे आसपास की प्रकृति सहसा अपनी संपूर्ण जीवनदायी शक्ति, अपनी समूची कांति, अपने अक्षय वैभव, अनूठेपन और अपने उन असंख्य रूपों में हमारे सामने प्रकट होती है, जो उस क्षण में हमें एकमात्र और केवल हमारी ही अनुभूति की पहुंच के भीतर लगते हैं।

और इसे अनुभव करने के लिए न तो महासागर के तट पर ताड़ के वृक्षों के कुंज की आवश्यकता है, न बादलों से घिरे विलक्षण पर्वतों की ही। इसके लिए जिस देश या स्थान पर हम जन्मे हैं, वहां के भूदृश्य का छोटा सा अंश ही काफी है। यह भूर्जवृक्षों का झुरमुट या विशाल मैदान भी हो सकता है, जिस पर शरदकालीन कोहरे से घिरा आसमान काफी नीचे झुक आया है। यह अनुभूति शहर या बाग में भी पायी जा सकती है, जहां पेड़ों की शाखा के बीच से ट्रामगाड़ियों की घंटियों और मोटरगाड़ियों के भोंपुओं की आवाजें हम तक पहुंचती हैं। हम कहीं भी क्यों न हों, हर कहीं इस गंभीर क्षण का साक्षी बना जा सकता है।

और चीजों की प्रकृति में और सृजन की अंतिम गहराइयों को खोजनेवाले शिल्पी की एकाग्रता में रंगों और शब्दों के सूक्ष्म अंतर एकाएक उस वास्तविक अद्वितीय क्षण से अभिभूत हो जाते हैं, जिसे हम प्रेरणा के नाम से पुकारते हैं।

यह क्षण, जीवन के प्रस्फुटन का यह पूर्ण अनुभव, जिससे नौजवान व्यक्ति का, जिसने अभी अभी जाना है कि उसके लंबे पथ में सबसे मुख्य क्या है, जीवन में इतना कम साक्षात्कार होता है, कभी कभी चरम और अत्यंत उद्धत रूप में प्रकट होता है। शायद इसी को हम कारनामा कहते हैं।

इसी सिलसिले मे म आपको एक मामूली सी लडकी, जेया स्तास्यूक के बारे मे बताना चाहता हू।

वह नौवीं कक्षा मे पढ़ती थी। सेहत ठीक न होने से उसे दूसरे साल भी उसी कक्षा मे रहना पडा था। यह इसका एक सबूत है कि वह देखने मे भी बहादुर नहीं लगती थी। और सचमुच शहर की आम लडकियो मे शायद उस पर सबसे आखिर मे ही नजर पडती। वह छोटे कद की और दुबली, जसा कि उसके नाते रिश्तेदार और जानपहचान के लोग उसे कहते थे, लडकी थी। उसका चेहरा सुडौल, नाजुक और निष्प्रभ, आखें बडी और नीली और बरौनिया पतली तथा लबी थीं।

वह औरो से अलग दीखने से बचती थी, क्योंकि उसे अपनी शारीरिक कमी का बहुत अहसास था। उसका एक पर लगडा था, जिसका उसे बहुत दुख था और उसे वह कभी नहीं भूल पाती थी। इसलिए वह अपनी उम्र की लडकियो की तरह खेलकूद भी नहीं सकती थी। वह न दौड सकती थी, न नाच सकती थी। लगडापन—यह एक ऐसा शब्द है, जिसे जवान लडकिया सुनना पसद नहीं करतीं।

मगर वह मरहमपट्टी करने के काम मे काफी कुशल थी। उसने नर्सिंग का प्रारंभिक कोस किया था। वह लेनिनग्राद के निकट एक कस्बे मे रहती थी, जिसके पास एक छोटी सी नदी बहती थी। क़स्बे मे सभी घर छोटे-छोटे थे और बडी इमारत के नाम पर सिफ एक विशाल कारखाना था, जो किसी किले जसा लगता था। कस्बे मे चहलपहल और नये जीवन का स्रोत भी वही था। उसका लगातार विस्तार हो रहा था और उसका कभी न रुकनेवाला शोर दूर दूर तक सुनायी देता था।

पर मेहनत की नियमित सरगमियो से भरपूर ऐसे छोटे कस्बे मे भी लोगो के सपने बडे शहर के निवासियो से कम महत्त्वाकाक्षी नहीं होते। वसन्त की शामा को उसकी फिजा नौजवानों की आवाजो, उन के कहकहो और नाचगानों से गज उठती थी। कोई नहीं कह सकता कि अगर तूफान की सी तेजी से वे भयकर और विपत्तिया लानेवाली घटनाए इस क़स्बे को भी न घेर लेतीं, तो इस स्कूली बालिका का जीवन आगे कसा रहता।

हिटलरी दरिंदा द्वारा हमारे देश की सीमा पार करने के पहले ही दिन से जेया को भी दूसरी स्वयसेविकाओ के साथ फौजी जीवन अपनाना पडा।

दिन दुःस्वप्ना की तरह बीतने लगे। तोपो की गड़गड़ाहट कभी नहीं रुकती थी। किताब-कापिया, स्कूल, सर-सपाटे, मस्ती की शामे दूर की बातें लगने लगीं। बिजली की बत्तिया गायब हो गयीं—शाम होते ही कस्बा शरद के मौसम की बरसाती, उदास और उबाऊ रातो के अधेरे मे डूब जाता।

और वह अपने उन हाथो से, जिनसे स्याही के धब्बे कुछ ही दिन पहले जाकर पूरी तरह धुल पाये थे, घायलो के पट्टिया बाधती, खून से सनी हुई उनकी कराहे और प्रलाप सुनती, दवाइया खिलाती, ढाढस बधाती, कभी कभी पस्तहिम्मत मरीजो पर चिल्लाती भी और अपने आपको कस्बे के ऊपर उठी आधी मे उडते रेत के कण जसी अनुभव करती।

इससे पहले उसने मदान मे, खड्डे मे रात कभी नहीं बितायी थी, कभी इस तरह अपने थले को ऊनी ओवरकोट से सटाकर और हाथो को उसकी बाहो मे घुसाकर गरमाने की कोशिशें करते हुए कई कई घटे गीली जमीन पर नहीं लेटी थी। अब उसकी दुनिया वही थी, जो उसके इदगिद थी। बाकी दुनिया का कोई अस्तित्व नहीं था। उस दुनिया मे उजाला था, गर्मी थी, खुशिया थीं और इसमे, जो अब है, उसने केवल कष्ट और कठिनाइया ही देखी ह, जिनके बारे मे वह सोचती थी कि और नहीं सह पायेगी। पर इसे छोडकर वह और कहीं जा भी नहीं सकती थी।

तग और जल्दबाजी मे खोदी गयी खाइयो मे लगडाते हुए चलती, और गीले मदानो मे रेंगती, बुरी तरह से भीगी और ठड से ठिठुरती वह तब मन ही मन फूली न समाती, जब कोई दद के मारे मुश्किल से हिलते होठो से फुसफुसाते हुए कहता "शुक्रिया, प्रिय!" या "अरे तुम कितनी छोटी हो!" कुछ, जो उम्र मे बडे थे, उसे बहन कहकर पुकारते थे।

वह इन सिपाहियो और कमाडरो के कामकाज को नहीं समझ पाती थी, जो दिन रात हथियारो, थलो, हथगोला से लदे उसके इदगिद आते जाते रहते थे। जब भी कभी पास मे कोई गोला फटता, वह बहुत डर जाती, उसका धमाका देर तक उसके काना मे गुजता रहता और पर एकाएक कमजोर और मोमियाई बन जाते।

वह इतनी थक गयी थी कि खाई की दीवार से गाल टिकाये हुए जमीन पर बठे बठे ही सो गयी। पास ही मे उसका थला, गस-मास्क और कटोरा पडा था, जिसमे उसके लिए थोडे से उबले हुए आलू लाये गये थे। वह मरहमपट्टिया करने के मध्यातर मे सो रही थी। उसने सपना देखा कि उनके

स्कूल मे उत्सव है, जिसमे उसके सभी साथी आये ह। फूलो की भरमार है। तभी कोई पटाखे छोडने लगा। आसमान मे लाल और हरी पतगें उडने लगीं। बाद मे बडा सा नारगी रग का चाद उगा और सभी स्टेशन की ओर चल पडे। स्टेशन साफ-सुथरा और फूलो, झडियो आदि से सजा हुआ था। गाडी से बहुत लोग उतरे थे और सभी हस रहे थे, मजाक कर रहे थे। बाद मे वह कहीं उडी थी और सपने मे ही हस पडी थी, क्योकि उसे आया की कही बात—तुम अभी बडी हो रही हो!—याद आ गयी थी। लेकिन रेलगाडी, जो तरह तरह के फूलो से सजी हुई थी, एकाएक बहुत सारी काली मोटरगाडियो मे बदल गयी, जो उसे कुचलने के लिए खडखडाती हुई चारो तरफ घूमने लगीं। वह उनके बीच मे दौड रही थी और नहीं समझ पा रही थी कि ये काली मोटरगाडिया मजाक कर रही ह या सचमुच उसे कुचलना चाहती ह। उनका शोर इतना अधिक बढ़ गया कि उसकी आख खुल गयी।

एक मिनट तक वह याद न कर पायी कि वह कहां है। अधेरा हो चुका था, चारो ओर जबदस्त शोर मचा हुआ था, गोलो के फटने की आवाजें मशीनगनो की तडतडाहट से घुलमिल रही थीं। हाथ दीवार के साथ दबा रहने से सो गया था और उसमे सूइया सी चुभ रही थीं। वह अपने आपको इतनी असहाय, अकेली और ठडे, मिट्टी के खड्ढे मे परित्यक्त लगी। रात सद और भयावह थी। उसने अपने आसपास लोगों की भीड को महसूस किया और उनकी बहुत सारी आवाजो और दूसरे तरह तरह के शोरो के बीच केवल इतना ही समझ पायी कि जबदस्त लडाई शुरु हो गयी है। तभी कोई चिल्लाया "जेया, घायल के पट्टी बाधो!"

और उसकी एक सहेली किसी घायल को सहारा देते हुए लायी। वह बोरी की तरह उसके परों के पास गिर पडा। लेकिन ध्यान से देखने पर उसने पाया कि वह हाथ मे टामी गन को कसकर दबा रहा है और अधेरे मे भी उसकी आखें लगभग चमक रही ह। वह जानती थी कि यह चमक दद की है, जिसे वह दात भींचकर बदाश्त कर रहा है। वह झटके से पूरी तरह होश मे आयी और पिछले दिनो से उसमे जो अद्भुत फुर्ती आ गयी थी, उससे घायल को दीवार से टिकाया और पट्टी बाधने लगी। चोट उसके कधे मे लगी थी। जेया ने उसके खून से गीले और चिपचिपे ओवरकोट से डरे बिना उसे अपनी बाहो मे लेकर पट्टी को कसा। टामी गन को उसने

सावधानी से अपने पास रख लिया, ताकि वह अडगा न बने और साथ ही मौका पडने पर, जब घायल को हटायेंगे, अधेरे मे तुरत पायी भी जा सके।

जब उसने पट्टी बाध दी, घायल ने जोर से सास ली और कुछ नहीं कहा। केवल दाया हाथ ही हर समय हिलता रहा, मानो वह देखते रहना चाहता हो कि वह सही-सलामत है और कहीं वह भी धीरे धीरे बायें हाथ जसा न हो जाये, जिसे छूते भी डर लगता था।

कुछ न कुछ बाते करते रहने के लिए उसने घायल के मिट्टी से सने और पसीने से गीले चेहरे के पास झुककर कहा

"वहा, लडाई के मदान मे क्या हालत है?"

"खराब हालत है!" घायल ने एकाएक स्पष्ट आवाज मे कहा। "हा, खराब हालत है," उसने फिर दोहराया और चुप हो गया।

"क्या बात करते हो!" वह आशकित स्वर मे बोली।

इस स्पष्ट आवाज से वह विचलित हो उठी। वह जानती थी कि घायल सिपाही अभी अभी उसने जो भुगता है, उसके प्रभाव मे आकर हालत को निराशावादी दृष्टिकोण से ही देखता है। गोलियो का चलना अपने चरम पर पहुच गया था। लगता था कि अभी इस काली, दलदली और अधेरी जमीन पर भी गोलियो की बौछार शुरू हो जायेगी।

लेकिन राकेटो के उजाले मे उसने देखा कि वहा से, जहा गोलिया सनसना रही थीं, कुछ काली छायाए आ रही ह, जो उसकी बग़ल से होते हुए पास के गढ़ो मे कूदकर कहीं ग़ायब हो जा रही ह।

वह सहम गयी। उसने खाई के किनारे से सिर ऊपर उठाया और बाद मे उससे लगभग बाहर निकलकर अधेरे मे चारा तरफ नजर घुमायी। लोग सीधे उसकी तरफ बढे आ रहे थे। वे झुककर और सिर को कधो के बीच छिपाये हुए चल रहे थे। उनमे से जो सबसे आगे था, वह उसकी खाई के पास आकर रुक गया, शायद यह देखने के लिए कि उसे फादा तो नहीं जा सकता।

"यहा क्या हो रहा है?" उसने पूछा। "आप लोग कहा जा रहे ह?"

उसके ठीक ऊपर खडे सिपाही ने, जो इससे और भी ऊचा लग रहा था, फटी आवाज मे कहा

"कौन है यहा?"

"म स्वयसेविका नस हू। सावधानी से, यहा गढा है," जेन्या ने जवाब दिया। "वहां क्या हो रहा है?"

"वहा हालत बिगड गयी है," सिपाही ने कहा और उसके हाथ की बदूक कुछ अजीब ढग से हिल गयी। "जमन गोलिया चला रहे ह और शायद कोई भी बाकी नहीं बच पाया है "

"तुम्हारे कमाडर कहा ह?" उसने उसका ओवरकोट पकडते हुए पूछा।

"कमाडर मारे गये ह," सिपाही ने लगभग न सुनायी देनेवाली आवाज मे जवाब दिया और झुककर उसका छोटा सा गरम हाथ दबा दिया। "मुझे मत पकडो, और देखो भागो यहा से, नहीं तो मारी जाओगी!"

और एक ही छलाग मे वह अधेरे मे खो गया। वह पास की खाई मे कूद गया था।

"क्या हो गया है?" उसने अपने से पूछा। "वे भाग रहे ह, भाग रहे ह। और उनके पीछे पीछे जमन आ रहे ह। अभी वे यहा पहुचेगे और इस सिपाही की तरह सबसे नजदीक की खाई मे कूदेंगे, फिर आगे और आगे, शहर की तरफ, और फिर सब खत्म "

एक पूरा गिरोह पास आ गया था। राकेट के उजाले मे इन हिलती छायाओ को देखकर गुस्से और दद से उसका पूरा बदन काप गया। क्या किया जाये? उसने रात्रिकालीन विस्तार को देखा, जो इतना उजाड, उदासीभरा और अन्तहीन था, कि उसके सामने वह कुछ भी नहीं थी, या थी भी तो घास के उस तिनके की तरह, जिसे पहले ही गोले का छोटे से छोटा टुकडा जला देगा।

पर अचानक उसने महसूस किया कि वह इस रात से भी, जो उस पर मौत बरपा कर रही थी, इस काले विस्तार से भी, जो उसे डराकर दबा रहा था, बदूकें झुकाकर भागते इन बडे लोगो से भी, और उस अदश्य दुष्ट दुश्मन से भी, जो राकेटो से इस अधेरे मे उजाला कर रहा है और इतने जोरदार और भयानक ढग से लगातार गोलिया चला रहा है, अधिक ताकतवर है।

किसी चीज ने उसके दिल को दबाया, पर यह न डर था न दद। यह उस सपने जसी उडान की अनुभूति थी, जिस पर वह तब खुद भी

हस पडी थी "म अभी बडी हो रही हू!" उसके परा मे अनजानी दढता आ गयी, उसके छोटे हाथो ने कसकर मुट्ठिया बाध लीं। वह किसी आश्चर्यजनक अहसास से कापी अब कुछ भी हो! उसे अब परवाह नहीं थी कि गोलिया चल रही ह, कि गोलो के टुकडे उसके सिर के ऊपर से उड रहे ह, कि वह छोटी और कमजोर है, कि वह कमाड करना नहीं जानती। यह वह क्षण था, जब उसका सारा बदन किसी चरम उत्साह से ओतप्रोत हो गया था। यह छोटी सी स्कूली लडकी जीवन के बारे मे क्या जानती थी? और अचानक वह समझदार, उद्धत, निमम और बेहद गर्वीली बन गयी। और बेरहम भी। उसने टामी गन उठायी और उनके सामने सीधी खडी हो गयी, जो पीछे हटते हुए लगभग उसके पास ही आ गये थे।

"ठहरो!" वह इतने तेज और इतने दृढ़ स्वर मे चिल्लायी कि सब के सब खडे हो गये। उसने अधेरे मे टामी गन से खाई के किनारे किनारे कुछ गोलिया बरसायीं।

"ठहरो!" वह फिर चिल्लायी और उनकी तरफ भागी, जो रुक गये थे, पर समझ नहीं पा रहे थे कि यह ऊबड खाबड मदान मे भागती लगडी लडकी उनसे क्या चाहती है। वे पास आये। वह उनके चेहरे तो नहीं देख पायी, पर इतना अवश्य जान गयी कि वे सब उसे देख रहे ह। उनके पीछे से उसने अधरे मे से आते और लोगो को भी देखा।

"ठहरो!" वह एक बार फिर चिल्लायी। "भाग रहे हो? मुडो वापस! देखूगी, तुम लोग कसे बहादुर हो! बढ़ो आगे!"

और वह टामी-गन उठाये खडी हो गयी। उसे कुछ याद नहीं था कि वह क्या कह रही है, क्या कर रही है। उसे सिर्फ बडे ध्येय मे, उस अनुभूति मे विश्वास था, जिसने उसके सारे शरीर मे हलचल पदा कर दी थी। और वे, यानी ये हाफते हुए सिपाही, आज्ञाकारी की तरह, जसा कि उसे लगा, मुड गये। वह उनके साथ साथ, वापस उधर बढ़ रही थी, जहा से गोलिया सनसना रही थीं और गोले उड रहे थे।

वे अगले गिरोह तक पहुचे। उसने एक छोटे कद और नौजवान जसी हास्यजनक दाढ़ीवाले सिपाही का कधा पकडा।

"कहा से आ रहे हो? कहा थे तुम लोग?"

"वहा," उसने हाथ से दायीं ओर दिखाते हुए कहा।

"चलो वापस! ये भी क्या तुम्हारे साथ हैं? सभी वापस! फुर्ती से!"

किसी ने जवाब नहीं दिया। सभी धीरे धीरे वापस मुड गये और अब वह टामी गन हाथ मे कसकर पकडे हुए, लगभग मुस्कराते हुए उन्हे लिये जा रही थी। वह खुद भी नहीं जानती थी कि वह मुस्करा रही है और अधेरे मे कोई इसे देख भी नहीं पा रहा था। उसने एक के बाद एक करके कई गिरोहो को वापस मोडा। और सीधे उनकी खाइयो तक, जिन्हे उन्होने कुछ ही समय पहले छोडा था, ले गयी।

"यहा बठे थे न? अब पीछे एक कदम नहीं!" उसने आदेश दिया।

उसने यह नहीं कहा कि पीछे हटे तो मार डालूगी, पर वह पूरी तरह जानती थी कि अगर कोई सचमुच पीछे हटा, तो वह गोली चला देगी और कुछ भी उसे नहीं रोक पायेगा, कि ये थके-मादे, उदास सिपाही उसका, उसकी ताकत का, उसकी इच्छाशक्ति का और उस छोटी स्कूली लडकी का विरोध करने की हिम्मत नहीं करेंगे, जिसे गीले ओवरकोट, जिसके कालर से उसका गला छिल गया था, तेज चलने और अत्यधिक उत्तेजना के कारण सास लेने मे भी कठिनाई हो रही थी।

शायद उनके चारो तरफ, सवाददाताओ की भाषा मे, नक था। और बात ऐसी ही थी भी। एक बार उसके बराबर चलनेवाले सिपाही ने उसे जोर से धक्का देकर जमीन पर गिरा दिया और उनके सिरो पर इतने जोर का धमाका हुआ कि लगा कि सिर इस चोट से टुकडे टुकडे हो जायेगा, पर दूसरे ही क्षण वह फिर परो पर खडी थी और वह, जिसने उसे गिराया था, शर्मिंदा होते हुए कह रहा था

"माफ करना, बहुत जोर से धक्का दिया। नहीं तो बच नहीं पातीं। चोट तो नहीं लगी है?"

लेकिन उसने जवाब नहीं दिया और पीठ झुका कर आगे बढ चली। उसने खाइयो का चक्कर लगाया, घायलो की मरहमपट्टी की, ध्यान रखा कि कोई पीछे हटने की कोशिश न करे, पूछा कितनी गोलिया बाकी रह गयी है, उधर गोलिया चलायीं जिधर से लगातार राकेट और गोले बरस रहे थे, जमीन से चिपकी हुई खड्डो मे लेटी रही, पत्थरो और लोहे के टकडा से हाथो को छीलती हुई ठडी जमीन पर रेगी। रात थी कि खत्म ही होने को न आती थी।

गोला की बौछार रुकी नहीं। ज़ोर से धमाका करती हुई सुरंगें फटीं, बहुरंगी रेखायें बनाती हुई गोलियां उसके ऊपर से गुजरीं।

खाई के अंधकार में ज़ोर से हांफते हुए एक नौजवान से उसने पूछा

"तुम्हें मालूम है कि बटालियन का हेडक्वाटर कहां है?"

"उसे कुछ नहीं मालूम," उसके पीछे से किसी की आवाज़ आयी। "क्यों क्या बात है, कामरेड कमांडर?"

इस जवाब से वह आश्चर्यचकित हुई। उसको कामरेड कमांडर पुकारते हैं! शायद जब ये लोग उसे दिन को, तेज़ धूप की रोशनी में देखेंगे, तो खूब हंसेंगे। फिर भी उसने कड़कती आवाज़ में कहा

"तुम जानते हो कि हेडक्वाटर कहां है?"

"जानता हूं। लेकिन वहां जाना अब बहुत मुश्किल है "

"तुम्हें वहां मेरी एक पर्ची ले जानी होगी। सुना?"

"सुना, कामरेड कमांडर!" सिपाही ने कहा। "लिखिये।"

उसने नोटबुक निकाली और संक्षेप में लिखा कि तुरंत किसी अफसर को भेजें।

सिपाही खाई से निकला और अंधेरे में खो गया। रात खत्म नहीं हुई थी। हड्डियों को चीरती ठंडी हवा चल रही थी। आंखें कुछ नहीं देख पा रही थीं। थकावट के मारे हाथ पर जवाब देने लगे थे। पहले मिनटों का जोशीला उत्साह ठंडा पड़ चुका था। गिरकर सो जाने की इच्छा हो रही थी। लेकिन वह टामी-गन को घुटनों के बीच रखे बैठी रही और गोलाबारी की गरज से बहरी हुई सामने देखती रही और निर्विकार भाव से कहीं पास ही टकराती हुई गोलियों की सनसनाहट को सुनती रही।

बाद में उसने अपनी बची खुची इच्छाशक्ति को समेटा और जमुहाई लेकर अपनी खाइयों की जांच करने के लिए रेंगने लगी। सिपाही लेटे हुए थे, घुटनों को छाती से लगाये बैठे थे, फुसफुसा रहे थे, खांस रहे थे, गोलियां दाग रहे थे और कभी कभी घायल होकर चिल्ला रहे थे।

उसके सामने कमांडर खड़ा था। लंबा, पेटियां पहने, कमर पर रिवाल्वर बांधे, चौड़े चेहरे वाला और आंखें सिकोड़े हुए, मानो जो देख रहा है, उस पर विश्वास न कर पा रहा हो।

"कमांड किसके हाथों में है?" खाई के मोड़ से सटी, टामी-गन हाथ में लिये उस लड़की को देखते हुए उसने पूछा। दो बड़ी-बड़ी आंखें उसे

पोल्या

अंधेरे मे एक बेडौल सी औरत, जो सिर पर बडा फलालनी रूमाल पहने हुई थी, उससे टकराकर डर के मारे चिल्ला उठी

"हाय, कौन है यहा?"

"म हू!" सीढ़ियो पर बठी लडकी ने कहा। "म हू पोल्या।"

"तू भागती क्यो नहीं? खतरे का अलार्म नहीं सुन रही है? अभी मेरे सिर पर बम गिरेंगे "

"उन्हीं का तो मुझे इतजार है " पोल्या ने शान्ति से जवाब दिया।

"इतजार क्या करना है? बचावस्थल की ओर भाग!"

"मेरा काम यहीं है। और तुम अब जाओ, नहीं तो सचमुच मारी जाओगी "

"हा, हा, जाती हू। देखो उसे, सीढ़ियो पर बठी हुई है—कितनी निडर है! "

"म निडर नहीं, बल्कि टोह लेनेवाली हू।"

सीढियो पर बठे हुए पोल्या बडे ध्यान से आकाश को देख रही थी, जिसमे सचलाइटें एक दूसरे को काट रही थीं, राकेट फूटकर लाल फौवारो की तरह बिखर रहे थे, चलती गोलियो की सुनहरी लकीरें रात्रिकालीन आसमान के नीले गुबद मे जाकर गायब हो रही थीं और इन सब के ऊपर दुश्मन के जहाजो की गूज छायी हुई थी। पूरे बदन को सिकोडे हुए वह उस भयानक सनसनाहट, गडगडाहट और आग की छपाछप का इतजार कर रही थी, जो अभी शुरू होनेवाली थी, और यह सबसे पहले वहां पहुचेगी, ताकि इलाकाई सुरक्षा विभाग को सिगनल दे सके कि बम कहा गिरा है।

सिर को अपने दुबले कधो के बीच सिकोडकर आखें मूदे हुए वह बढती हुई सनसनाहट को सुन रही थी। अचानक सडक पर कोई ऐसा जोरदार धमाका सुनाई दिया कि सिर फटता लगा। कानो और छाती पर गरम हवा का थपेडा लगा। पोल्या डगमगाती हुई खडी हुई और उधर भागी, जहा अभी अभी दीवारें गिरी थीं और धूए का अनबिखरा बादल छाया हुआ था। रात के अधेरे मे नये खण्डहर साफ साफ दीख रहे थे। ताजी टूटी दीवार की नोके काली पडी हुई थीं। सडक पर तरह-तरह के टुकडे, टूटे शीशे, कूडा-करकट, आदि फले पडे थे। एक मिनट बाद ही वह पडोस के किसी घर से टेलीफोन पर दुघटना के घमाने की सूचना दे रही थी। और फिर तुरत खडहरो के अधकार की तरफ लपकी, जहा से चीखने, कराहने और रोने की आवाजें आ रही थीं।

और ऐसा लगभग हर रोज हुआ करता था। कोई भी पोल्या से जल्दी बम गिरने की जगह का पता नहीं लगा सकता था, इतनी बहादुरी से काम या घायलो की इतनी सेवा नहीं कर सकता था और इस तरह सारी राते हिलती हुई दीवारो, गिरते हुए शहतीरो और भयभीत तथा ददनाक चेहरो के बीच नहीं बिता सकता था। बच्चो को तो वह खास कुशलता के साथ खोद निकालती थी।

कभी कभी उल्टी हथेली से पसीना पोछते हुए वह बठ जाती और दूर से बचाव टोलियो को काम करते देखती। ढहे हुए घर, अधेरे मे डूबा हुआ नगर, लोगों के हाथों मे हिलती हुई लालटेनें—यह सब उसे भारहीन, अस्तित्वहीन और अभूतपूव लगता।

और पहले कितनी गजब की रातें थीं—शातिमय, खुशियो से भरी हुई, ट्राम की रोशनियो से जगमगाती, नाच-गानो और नौजवानों के कहकहो से गूजती   हा, यह सब था और आगे भी होगा। मगर इस समय

"यह क्या, म इतनी देर से बठी क्यो हू ?" वह अपने आप पर झल्ला पडती और खडी होकर फिर से मलबा हटाने मे मदद करने लगती।

वह बेहद शात, दढ़सकल्प और मजबूत बन गयी थी। अब उसे किसी भी बात पर हैरानी नहीं होती थी।

एक दिन दौडते हुए आकर उसने चादनी के उजाले मे देखा कि एक ढहे मकान मे बहुत ऊपर, मानो हवा मे, एक औरत केवल शमीज मे ही दीवार के इत्तिफाक से सलामत रहे हिस्से से सटी हुई कोने मे खडी है किसी

बुत या मुर्दे की तरह। उसके दोनो हाथ दीवार के रहे-सहे टुकड़ा पर टिके हुए थे। पोल्या टकटकी लगाकर उसकी शमीज़ के सफेद धब्बे को देखता रही। वह यही सोच रही थी कि किस तरह उसे जल्दी से जल्दी वहा से निकाला जा सकता है।

दूसरी बार ग्रस्त व्यस्त बालोवाली एक जवान औरत से, जो अपने बच्चे को सीने से चिपकाये हुए थी, उसका सामना हुआ। धमाके से डरी हुई और अपने बच्चे को बचाने के लिए आतुर वह सब कुछ भूलकर इस रूप मे सारे शहर मे दौड सकती थी। पोल्या ने उसे अपनी बाहों मे लेकर, सिर पर हाथ फेरते हुए कहा

"अब डरने की कोई बात नहीं, सब खत्म हो गया है।"

"क्या? क्या खत्म हो गया है?" वह औरत बडबडायी।

"सब कुछ," पोल्या ने कहा। "सब खत्म हो गया है। अब डरने की कोई बात नहीं। उठो, आराम करो। अभी म तुम्हें कुछ ओढाती हू "

और वह शात हुई औरत को एम्बुलेंस केन्द्र मे ले गई।

यह दुबली पतली, हल्के से आश्चर्य से भरी बडी आखोंवाला लडकी न जाने कितने घायलो और अपाहिजो को उठाकर ले गयी थी, न जाने कितनो को उसने ढाढ़स बधाया या, हौसला बढ़ाया था और समयानुकूल विनोदपूण बातों से हसाया था।

"पोल्या, अब तुम जल्दी ही अपनी जयन्ती मनाओगी," एक बार सहेलियो ने उसे कहा। "तुम्हारे द्वारा बचाये गये लोगो की सख्या जल्दी ही सौ तक पहुचनेवाली है।"

बमबारी के बाद गोलाबारी शुरू होती थी। इसमे शोर उतना नहीं होता था, पर अधेरे मे सडक पर से घायलो को उठाना, जबकि सर के ऊपर गोलिया सनसना रही हो, आसान काम नहीं था। लेकिन वह दर्सियों घायल लोगों को अपनी पीठ पर उठाकर ले गयी।

उस घिनौनी, ठडी और हवादार शाम को तो जो धावा हुआ, वह विशेष रूप से निमम था। पोल्या रेत से भरे बक्सा के पीछे दीवार से सटी बठी थी और उसके सर के ऊपर से गोला के टुकडे घर पर बरस रहे थे। ईंटो का चूरा झडने लगा और टूटे हुए शीशे तथा पलस्तर के टुकडे सडक पर गिरने लगे। तभी पास ही से किसी के कराहने की आवाज़ आयी।

सडक वीरान पडी थी। सिर्फ इक्के दुक्के राहगीर ही जमीन पर लेटते, उठकर घर की तरफ भागते और फिर सडक पर लेटते दीख रहे थे।

पोल्या ध्यान से सुनने लगी। कोई सचमुच पास ही मे कराह रहा था। वह सतर्कता के साथ उस तरफ दौडी। नये गोले की रोशनी से सडक जगमगायी। वह तुरत लेट गयी। गोला फुटपाथ पर गिरा था और उसके धमाके की आवाज देर तक उसके कानो मे गूजती रही। उसका दिल धकधक कर रहा था। पोल्या को मकान के पास एक युवक पडा दिखायी दिया। उसे लगा कि उसने उसको पहले भी कहीं देखा है। मगर कहा? हा, फुटबाल के मच मे, जिसे उसने पिछले वसत मे देखा था। फीरोजे की तरह का हरा मदान। चारो तरफ हसी। रगबिरगी बनियाइनें। जवानी। सूरज। मोहक सगीत। आसमान मे रूई के फाहो जसे बादल। और यह नौजवान। उसके साथी चिल्ला रहे थे

"ऐ हाफबक, डटे रहो!"

अब वह अचेत पडा था। जब पोल्या ने उसका जख्म टटोला – उसकी जाघ मे गोले का टुकडा लगा था – तो वह और जोर से कराहने लगा। उसके पट्टी बाधते हुए पोल्या ने कहा

"हाफबक, डटे रहो! सुन रहे हो?"

नौजवान शान्त हो गया और उसने उसे उठने मे मदद दी। पर वह चल नहीं सकता था। वह क़रीब-क़रीब पूरा पोल्या पर झुका हुआ था और वह लाल लबी तलवारो द्वारा चीरे जाते अधेरे मे उसे ले जा रही थी।

पर शायद इस बार के बम से सडक, मकान और सब कुछ दो भागो मे बट गये थे, क्योकि पोल्या बेहोश हो गयी थी। वह मुलायम घास के मदान मे पडी थी और कोई अनजानी आवाज उसके कानो मे कह रही थी "ऐ हाफबक, डटे रहो!" पर वह न हस सकती थी और न हिल ही सकती थी। "यह मेरा अठानवेवा घायल है," उसने न मालूम क्यो यह बात सोची और फिर अचेत हो गयी। पर अपने हाथ मे वह उस नौजवान का हाथ पकडे रही, जो पास ही मे गिरा पडा था।

बाद मे जब लोग आये, उन पर झुके, तो पोल्या ने साफ, कडकती आवाज मे कहा

"उसे ले जाइये, उसकी जाघ बुरी तरह " और आगे वह बोल सकी।

बुत या मुर्दे की तरह। उसके दोनो हाथ दीवार के रहे-सहे टुकड़ो पर टिके हुए थे। पोल्या टकटकी लगाकर उसकी शमीज के सफद धब्बे को देखती रही। वह यही सोच रही थी कि किस तरह उसे जल्दी से जल्दी वहा से निकाला जा सकता है।

दूसरी बार ग्रस्त व्यस्त बालोवाली एक जवान औरत से, जो अपने बच्चे को सीने से चिपकाये हुए थी, उसका सामना हुआ। धमाके से डरी हुई और अपने बच्चे को बचाने के लिए आतुर वह सब कुछ भूलकर इस रूप मे सारे शहर मे दौड सकती थी। पोल्या ने उसे अपनी बाहों मे लेकर, सिर पर हाथ फेरते हुए कहा

"अब डरने की कोई बात नहीं, सब खत्म हो गया है!"

"क्या? क्या खत्म हो गया है?" वह औरत बडबडायी।

"सब कुछ," पोल्या ने कहा। "सब खत्म हो गया है। अब डरने की कोई बात नहीं। उठो, आराम करो। अभी म तुम्हें कुछ ओढाती हूं"

और वह शात हुई औरत को एम्बुलेस केन्द्र मे ले गई।

यह दुबली पतली, हल्के से आश्चय से भरी बडी आखोवाली लडकी न जाने कितने घायलो और अपाहिजों को उठाकर ले गयी थी, न जाने कितनों को उसने ढाढस बधाया था, हौसला बढ़ाया था और समयानुकूल विनोदपूण बातो से हसाया था।

"पोल्या, अब तुम जल्दी ही अपनी जयन्ती मनाओगी," एक बार सहेलिया ने उसे कहा। "तुम्हारे द्वारा बचाये गये लोगो की सख्या जल्दी ही सौ तक पहुचनेवाली है।"

बमबारी के बाद गोलाबारी शुरू होती थी। इसमे शोर उतना नहीं होता था, पर अधेरे मे सडक पर से घायलो को उठाना, जबकि सर के ऊपर गोलिया सनसना रही हो, आसान काम नहीं था। लेकिन वह दर्जनो घायल लोगो को अपनी पीठ पर उठाकर ले गयी।

उस घिनौनी, ठडी और हवादार शाम को तो जो धावा हुआ, वह विशेष रूप से निमम था। पोल्या रेत से भरे बक्सा के पीछे दीवार से सटी बठी थी और उसके सर क ऊपर से गोलो के टुकडे घर पर बरस रहे थे। ईंटो का चूरा झडने लगा और टूटे हुए शीशे तथा पलस्तर के टुकडे सडक पर गिरने लगे। तभी पास ही से किसी के कराहने की आवाज आयी।

सडक वीरान पडी थी। सिर्फ इक्के दुक्के राहगीर ही जमीन पर लेटते, उठकर घर की तरफ भागते और फिर सडक पर लेटते दीख रहे थे।

पोल्या ध्यान से सुनने लगी। कोई सचमुच पास ही मे कराह रहा था। वह सतकता के साथ उस तरफ दौडी। नये गोले की रोशनी से सडक जगमगायी। वह तुरत लेट गयी। गोला फुटपाथ पर गिरा था और उसके धमाके की आवाज़ देर तक उसके कानो मे गूजती रही। उसका दिल धक्धक कर रहा था। पोल्या को मकान के पास एक युवक पडा दिखायी दिया। उसे लगा कि उसने उसको पहले भी कहीं देखा है। मगर कहा? हा, फुटबाल के मच मे, जिसे उसने पिछले वसन्त मे देखा था। फीरोज़े की तरह का हरा मदान। चारो तरफ हसी। रगबिरगी बनियाइनें। जवानी। सूरज। मोहक सगीत। आसमान मे रूई के फाहो जसे बादल। और यह नौजवान। उसके साथी चिल्ला रहे थे

"ऐ हाफबक, डटे रहो!"

अब वह अचेत पडा था। जब पोल्या ने उसका ज़ख्म टटोला – उसकी जाघ मे गोले का टुकडा लगा था – तो वह और ज़ोर से कराहने लगा। उसके पट्टी बाधते हुए पोल्या ने कहा

"हाफबक, डटे रहो! सुन रहे हो?"

नौजवान शान्त हो गया और उसने उसे उठने मे मदद दी। पर वह चल नहीं सकता था। वह क़रीब-क़रीब पूरा पोल्या पर झुका हुआ था और वह लाल लबी तलवारो द्वारा चीरे जाते अधेरे मे उसे ले जा रही थी।

पर शायद इस बार के बम से सडक, मकान और सब कुछ दो भागो मे बट गये थे, क्योकि पोल्या बेहोश हो गयी थी। वह मुलायम घास के मदान मे पडी थी और कोई अनजानी आवाज़ उसके कानों मे कह रही थी "ऐ हाफबक, डटे रहो!" पर वह न हस सकती थी और न हिल ही सकती थी। "यह मेरा अठानवेवा घायल है," उसने न मालूम क्यो यह बात सोची और फिर अचेत हो गयी। पर अपने हाथ मे वह उस नौजवान का हाथ पकडे रही, जो पास ही मे गिरा पडा था।

बाद मे जब लोग आये, उन पर झुके, तो पोल्या ने साफ, कडकती आवाज़ मे कहा

"उसे ले जाइये, उसकी जाघ बुरी तरह " और आगे वह बोल सकी।

"पर," किसी ने अधेरे मे कहा, "उसके पर मे चोट लगी है।"

उसने नहीं सुना। मुलायम घास के मदान मे वह किसी से कह रही थी

"मुझे सर्दी लग रही है। घास कितनी हरी और ठडी है "

उस रात उसने और कुछ नहीं देखा

लेकिन वह बच गयी। जब वह पहली बार होश मे आयी, तो सचमुच ही दिन बहुत सुहावना और धूप से भरपूर था और खिडकिया से बाहर बडे बडे हरे चीड दिखायी दे रहे थे।

नया इन्सान

वह खडा हुआ हाफ रहा था। उसके चेहरे से स्पष्ट था कि वह झुझलाया हुआ और परेशान था।

"म आपको बडी मुश्किल से खोज पाया। इस अधेरे मे तो आदमी अपना घर भी न खोज पाये," टोपी से बफ झाडते हुए उसने कहा। "जच्चाघर यही है न?"

"हा, यही है," जवाब मिला। "क्यो क्या बात है?"

"क्या बात है? वहां गली मे एक औरत को बच्चा होनेवाला है, यह बात है "

"आप कौन ह?"

"म राहगीर हू। रात की पाली से लौट रहा हू। चलिये, जल्दी करिये। म आपको दिखा देता हू। देखो, क्या क्या होता है! म आ रहा था और वहा वह और मेरे अलावा और कोई नहीं पर म दाई तो नहीं हू।"

एक मिनट बाद इरीना, अरदली और यह आदमी तेजी से बफ के ढेरो पर चल रहे थे। चारो तरफ घना अधेरा था। मकान काली चट्टानो की तरह लग रहे थे। कहीं एक भी रोशनी नहीं थी। बफ तूफान की तरह उड रही थी। हवा मे बफ की धूल समायी हुई थी। लगता था कि सडक पर जासूसो के पारदर्शी, ठडे और तेज साये दौड रहे ह।

बफ के एक ढेर के पास वे सब बठ गये, एक दूसरे की पीठ से पीठ टिकाये हुए। वहीं नुक्कड के पीछे से एक जसी पतली सनसनाहट की आवाज निकट आयी, जो लगातार बढ़ती जा रही थी। तभी गोले के फटने का धमाका सारी सडक पर गूज गया। एक घर से जमी हुई बफ की लडिया गिरीं और झनझनाहट के साथ जमीन पर टकराकर टूट गयीं।

"कहीं उसे न लग जाये!" इरीना ने कहा।

"नहीं, वह दूसरी तरफ पडी हुई है। वहा खोजिये," राहगीर ने कहा। "उस खभे के पीछे खोजिये। म अब चला। देख रहे ह, आज कितने गोले बरस रहे ह। कहीं मारा न जाऊ।"

इरीना प्रसूतिविशेषज्ञ नहीं थी। उसकी ड्यूटी जच्चाओ को भरती करने की थी। लेकिन इस समय रात के वक्त वहा जाना पडा, जहा गोले फट रहे थे और जच्चा को किसी भी कीमत पर खोजकर उसकी मदद करनी थी। यहा इतजार करने से कोई फायदा न था। मदद के लिए और कोई नहीं आयेगा। गजब की सुनसान रात थी–तूफान, सर्दी और ऊपर से गोलाबारी भी। सिर के ऊपर से गोले सनसनाते हुए गुजर रहे थे। इरीना अर्दली के साथ बफ के कभी इस ढेर की तरफ भागती, तो कभी उस ढर की तरफ। बार बार रुककर वह कुछ सुनने की कोशिश कर रही थी।

कराहने की आवाज दायीं तरफ से आयी। वे उधर लपके। और सचमुच ही खभे के पीछे, जसे कि उस आदमी ने बताया था, एक घर की दीवार से पीठ टिकाये, बद फाटक के पास बफ पर एक औरत बठी हुई थी। इरीना ठीक उसके सामने घुटनो के बल झुक गयी। औरत ने अपने गरम, कापते हाथ से उसका हाथ पकड लिया।

सचमुच उसे जच्चाघर ले जाने के लिए देर हो चुकी थी। प्रसव शुरू हो गया था। वह फटते गोलो की रोशनी से आलोकित काली सद रात को बफ पर एक नये प्राणी को जन्म दे रही थी। इरीना ने चारो ओर देखा। सब तरफ सन्नाटा था। बफ कालर के अदर तक घुसे जा रही थी। चेहरे पर हवा थपेडे मार रही थी, हाथ ठडे हो गये थे और घबराहट के मारे दिल इतनी जोर से धकधक कर रहा था कि वह उसे साफ-साफ सुन सकती थी। लगता था कि यह लेनिनग्राद नहीं, बल्कि कोई वीरान, अधेरा रेगिस्तान है, जिसमे दुश्मन के गोलो के धमाको के साथ बफ का तूफान उठा हुआ है। पूरी तरह से बद फाटक को खटखटाना, किसी को सहायता के लिए बुलाना बेकार था–सडक सुनसान थी। सुबह तक हो सकता है कि एक भी आदमी यहा से नहीं गुजरेगा।

और यहा, इस अधकार मे, हवाओ के लिए हर तरफ से खुली जगह पर नया जीवन पदा हो रहा था। उसे बचाना था, सर्दी, अधेरे और तोपों के गोलो से उसे छीनना था। उसके कानो तक अभी गोलिया चलाने या

फटने की आवाजें नहीं पहुची थीं। इरीना उस औरत की ऐसे सहायता कर रही थी, मानो यह सब किसी कमरे मे हो रहा हो, जसे कि हमेशा होता है

उसने दोना हाथो से बच्चे को ऊचा उठाया, मानो अधेरे से घिरे अपने महान शहर को दिखा रही हो। यह उसे, गम-गम, रोते हुए लोथड़े को अपने फर के कोट मे अदर सीने से चिपकाये हुए ले जा रही थी। वह उस बफ पर चल रही थी, जिस पर से अभी कोई नहीं गुजरा था।

उसके पीछे अदली का सहारा लेकर एक बडी, पख फडफडाती चिडिया की तरह जच्चा चल रही थी। यह बफ के ढेरो पर बार-बार गिर पडती थी और उसके सूखे हुए होठ बुदबुदा रहे थे

"म खुद "

अदली, जो काफी थक गया था और परेशान लगता था, केवल यही दोहराता रहा

"अभी पहुचते हैं, अब थोडी ही दूर रह गया है "

तूफान उनके चेहरो पर सूखी बफ की बौछार कर रहा था। कहीं भयानक धमाके के बाद टूटे हुए काच झनझनाकर गिरे। मगर वे रात, सर्दी और गोलाबारी के विजेताओ की तरह चलते गये।

मा को पता था कि लडकी पदा हुई है। वह कभी-कभी इरीना की तरफ हाथ बढ़ाती, मानो उसे रोकना चाहती हो, पर फिर से हाथ नीचे कर देती।

आखिरकार जच्चाघर आ ही गया। और जब जच्चा को पलग पर लिटा दिया गया और उसके इदगिद लोगो की भीड लग गयी, जो उसके बदोबस्त मे मदद दे रहे थे, उसने इरीना को अपने पास बुलाकर सूखी सी, फुसफुसाती आवाज मे कहा

"आपका नाम क्या है?"

"किसलिए जानना चाहती ह?" इरीना ने पूछा।

"जानना चाहती हू!"

"मेरा नाम इरीना है। पर मेरा नाम जानकर आप क्या करेंगी?"

"म अपनी लडकी को यह नाम दूगी, ताकि यह आपको हमेशा याद रखे। आपने उसे बचाया है आपका बहुत बहुत शुक्रिया "

और उसने इरीना को तीन बार चूम लिया इरीना मुह फेरकर रो पडी। मगर क्यो रोयी, यह यह खुद भी नहीं जानती थी।

मुलाकात

वह विचारो मे खोया जमी हुई बफ से ढके फुटपाथ पर तेजी से चला जा रहा था। कभी कभी उसकी नजर अधेरे मे डूबे हुए शाम के, सरदिया के, लडाई के जमाने के घरो की तरफ चली जाती। खडहरो की बगल से गुजरते हुए भी उसने चाल धीमी नहीं की। पर चौडे दरवाजा वाली एक इमारत के पास आकर उसके पर बरबस रुक गये। यह बाल थियेटर की इमारत थी। कभी इसकी दीवारा के अदर कितना शोरशराबा और चहलपहल होती थी, कितनी उल्लासपूण आवाजें सुनायी देती थीं, कितनी मुग्ध और चमकती आखें स्टेज की ओर देखती थीं, छोटे दशक कितने हप और उत्साह के साथ तालिया बजाते थे और बडे लोग – इस शानदार थियेटर के प्रतिभाशाली कलाकार – बच्चो के आह्लादित चेहरा को देखकर अपने को धय मानते थे।

मगर अब सब सुनसान और उजाड पडा था। केवल पोस्टरा और रग उडे कागजो के टुकडे ही अधेरी सडक पर फडफडा रहे थे। चौंककर निर्देशक ने कदम तेज कर दिये। उसकी कल्पना मे कुछ ही समय पहले तक यहा हसी-मजाक मे मग्न, बडे बडे आईनो के सामने बठे मेक अप करते और उसी चाव के साथ अपनी भूमिकाओ को दोहराते कलाकारा के चित्र उभर आये, जिस चाव के साथ इस बडे शहर के बाल नागरिक स्टेज की उनकी जिदगी को देखा करते थे।

कुछ कलाकार चले गये थे और कुछ   बडी बेरहम स्पष्टता के साथ उसे वे दो कलाकार याद हो आये, जो मोर्चे पर उसकी *ब्रिगेड* मे *काम* करते थे। जिदगी कितनी साधारण बन गयी थी! वे तग खदका मे भी, जहा थके हारे और हवा की मार से रूखे पडे चेहरो वाले सनिक उनकी कला की भूरि भूरि प्रशसा करते थे, कलाकार बने रह सके। वे बडे बडे

बर्फीले मदानो के बीच टूबो को खडा कर बनाये गये कामचलाऊ स्टेजो पर, कुछ ही मीटर लबे चौडे तहखानो मे सनिको का मनोरजन करते थे। वे जिदादिल, नेक और सरलहृदय लोग थे। उनके नाम भी बडे साधारण थे सेम्योनोव, येमेल्यानोव फटती हुई सुरगा और गोलो के भयानक धमाका के बीच से भी वे अपना रास्ता बना लेते थे और मदानो मे दौडते हुए अग्रिम मोर्चा पर पहुच जाते थे। खतरे के सामने से वे कभी पीछे नहीं हटे थे।

मगर सरदियो की एक शात सुबह दोनों एकसाथ वीरगति को प्राप्त हो गये और दूसरे कलाकारो ने कला के लोगो के लौह अनुशासन का परिचय देते हुए उनके बिना ही कसट पेश किया।

निर्देशक ने खुद देखा था कि कसे दो काले बगूलो ने उन्हे निगल लिया था और उस जगह पर सारी बफ लाल हो गयी थी। हा, अब सब कुछ उतना ही सामान्य बन गया है, जितना कि यह अधेरे मे डूबा नगर, जो कभी उजाले से नहाता और छलकता रहता था। शाम, अधेरी इमारतो, वीरान सडको की महान सामान्यता – और वसी ही सामान्यता जिदगी और मौत की।

एकाएक निर्देशक ने कदम और तेज कर दिये। उसके आगे आगे चलनेवाला राहगीर लडखडाते हुए हाथ हिला रहा था। उसका हाथ हिलाना डूबते हुए आदमी की कमजोर हरकतो जसा था। निर्देशक ने दौडकर उसे थाम लिया। राहगीर का सर उसके कधे पर लुढ़क गया और वे कई क्षण तक उसी हालत मे खडे रहे। यह एक बूढ़ा था। निर्देशक ने देखा कि उसका चेहरा दुबला और बडी बडी आखें बुखार से जल रही थीं और वह पूरा मुह खोलकर बडी अधीरता से हवा निगलने की कोशिशें कर रहा था।

आखिरकार एक बार और हिलकर बूढ़ा कुछ होश मे आ गया। उसने मदद देनेवाले की तरफ देखते हुए फटी आवाज मे कहा

"माफ कीजिये, कमजोरी के मारे म अपने को सभाल नहीं पाया था "

"आप दूर रहते है?" निर्देशक ने पूछा।

"नहीं," उसका कुछ ऐसे ढग से सहारा लेते हुए कि मानो वह कोई भीमकाय आदमी हो, बूढ़े ने जवाब दिया और सचमुच उस दुबले पतले बूढ़े के सामने वह भीमकाय ही लग रहा था।

"नहीं," बूढ़े ने दोहराया। "म उस घर मे रहता हू, वह, जो सडक के आखिर मे है "

"म आपको पहुचा देता हू," निर्देशक ने कहा। "म उसी तरफ जा रहा हू।"

उसने बूढे का हाथ थामा और वे चल पड़े।

बूढा गहरी सासे लेता हुआ और कुछ फुसफुसाता हुआ चल रहा था। निर्देशक उसे ऐसे थामे हुए था, मानो वह उसका बूढ़ा बाप हो। इस तरह वे चुपचाप, बर्फीले फुटपाथ पर लडखडाते हुए घर के फाटक तक, उसके गुफा जसे अधेरे दरवाजे तक पहुचे।

"हा, यहीं," बूढे ने कहा और दरवाजे के सहारे टिक गया। निर्देशक उसके सामने खडा था। बूढ़े ने धीरे से सिर उठाते हुए पहले सडक पर और फिर अधेरे, ठडे आसमान पर नजर दौडायी और बाद मे बडे ध्यान से अपने हमसफर को देखा।

"ऐ नौजवान," उसने कहा और उसके पतले, लगभग रक्तहीन होठो पर मुस्कान की फीकी सी छाया दौड गयी, "जानते ह आप किस शहर मे रहते ह?"

निर्देशक खामोश रहा। बूढा अपना दुबला चेहरा उसके करीब ले आया।

"आप इलियोन मे रहते ह," बूढ़े ने जोर से कहा।

"इलियोन मे," निर्देशक ने दोहराया, "मगर हमारे शहर और प्राचीन यूनानी शहर ट्राय के बीच क्या साम्य है?"

"माफ कीजिये, म प्राचीन इतिहास का पुराना अध्यापक हू म ऐसे और किसी शहर को नहीं जानता, जिसकी दास्तान ट्राय की दास्तान जितनी महान हो। और आप भी मानेंगे कि आज हमारा शहर न सिर्फ इलियोन की बराबरी करता है, बल्कि सच कहू तो वीरता के मामले मे उससे कहीं आगे भी निकल गया है "

निर्देशक तुरत कोई जवाब न दे पाया। वे गुफा की तरह काले दरवाजे की निस्तब्ध खामोशी मे आमने सामने खडे रहे। आसपास के घर उन्हे क़िले की दीवारो की तरह घेरे हुए थे।

"शायद आप ठीक कह रहे ह," निर्देशक ने कहा। "लेकिन हमारे ट्राय मे कोई ट्राय का घोडा नहीं होगा! कभी नहीं होगा!"

उन्होने बडी गमजोशी से हाथ मिलाये और शुभरात्रि की कामना करते हुए अपने अपने रास्ते चल पड़े।

शेर का पजा

यूरा उन लड़कों मे से नहीं था, जिन्हें बड़े हमेशा टोक्ते रहते ह क्या हर समय पीछे-पीछे लगे रहते हो! नहीं, हालांकि वह अभी छोटा ही था—वह केवल सात साल का था—फिर भी वह दिन भर पार्क, सड़क या चिडियाघर मे ग़ायब रहता था। चिडियाघर उसके घर के सामने, सड़क के उस पार था। अक्सर वह वहा चला जाता, क्योंकि उसे जानवरों से बहुत प्यार था।

लेकिन उसे यह स्वीकारने मे बड़ी शर्म आती थी कि उसे और सब जानवरों से ज्यादा चिडियाघर के फाटक के सामने टिकटघर के पास के खभे पर खड़ा प्लास्टर का शेर पसद है।

जब से उसने उसे देखा है, तभी से उसके साथ एक खास तरह का लगाव महसूस करता आया है।

एक बार उसने अपनी मा से पूछा था "मा, यह शेर बदमाश लोगों से जानवरों की रखवाली करता है क्या?"

"हा, हा," मा ने अनमने स्वर मे जवाब दिया था और वह बेहद खुश हुआ था कि मा ने इतने महत्त्वपूर्ण सवाल पर उससे बहस नहीं की थी।

प्लास्टर का बड़ा सा शेर फाटक के ऊपर ऊची सी जगह पर गर्व के साथ बैठा हुआ था और यूरा हर बार दोस्ती और इज्जत की निगाह से उसे देखता था।

खतरे के सायरन गूज रहे थे, घबरायी हुई माए जल्दी-जल्दी अपने बच्चों को इकट्ठा करके बचावस्थल की तरफ भाग रही थीं। यूरा भी तहखाने मे एक बेंच पर बैठा था और उसका नन्हा सा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। भयानक धमाके, जो उसके लिए अब तक अनजाने थे,

यहा इस बडे, गहरे तहखाने मे भी साफ-साफ सुनायी दे रहे थे। कभी-कभी तहखाना मानो डर के मारे थर्रा जाता था, बाहर दीवारों के पास कुछ गिर रहा था, टूटे हुए शीशो की आवाजें आ रही थीं।

"ये शैतान फिर आ गये है!" औरते गुस्से मे भरकर कह रही थीं। बुढ़ियाए हर बार जब खासकर जोरदार धमाका होता था, अपने सीने पर सलीब का चिह्न बनाती थीं।

एकाएक घर ऐसे हिला मानो कोई उसे बलूत के पेड की तरह जड से, यानी नींव और तहखाने समेत उखाडना चाहता हो, लेकिन फिर इरादा बदलकर केवल जोर से हिलाकर ही सतुष्ट हो गया हो।

"कहीं पास ही मे गिरा है," यूरा की मा ने कहा। "हो सकता है कि सामने "

और वह गलत नहीं निकली। जब खतरा खत्म हो गया, तो लोग यह देखने के लिए दौडे कि बम कहा गिरा है। मा के साथ यूरा भी दौडा। बम चिडियाघर पर गिरा था—हयिनी मर गयी थी, बदर घायल हो गये थे और डरा हुआ सेबल बाडे से निकलकर सडक पर दौड रहा था।

पर यूरा रोते हुए एक ही बात चिल्लाता रहा

"मा, शेर!"

यूरा के रोने मे इतनी मायूसी थी कि मा ने न चाहते हुए भी उस तरफ देखा, जिधर यूरा इशारा कर रहा था। प्लास्टर का बडा सा शेर अपने बडे सफेद सर को पजे पर टिकाये हुए पहलू के बल लेटा हुआ था। उसके पिछले पर गायब हो गये थे। आगे का एक पर चूरचूर हो गया था। पर उसकी अयालदार गरदन पहले की तरह ही शानदार लग रही थी और नजर भी हमेशा की तरह कठोर और निश्चल थी।

"मा, मा, डाकुओ ने उसे मार डाला है!" यूरा चिल्लाया। "मा वह उनके साथ लडा "

और वह कुछ खोजने के लिए खभे की तरफ लपका, जो बम के टुकडो से बर्बाद हो गया था। वह मलबे को हटा रहा था और उसकी नीली आखो से बेरोक आसू गिर रहे थे। फिर भी उसे कुछ मिल ही गया, जिसे उसने झट से जेब मे छिपा लिया।

"यूरा, वहा क्या कर रहा है?" मा ने पूछा। " उस मलबे मे क्या ढूढ़ रहा है? गदा हो जायेगा। छोड यह कूडा उठाना "

यूरा वहां से हट नहीं सका। वह खम्भे के इर्दगिर्द घूमता रहा और शेर की तरफ देखता रहा, मानो इस बेजान, मूक जानवर को जिन्दगी भर के लिए याद कर लेना चाहता हो, जो अनेक दशकों से चिड़ियाघर के फाटक के ऊपर बैठा जानवरों की रखवाली करता रहा था। यूरा का ध्यान पुरानी, टूटी हुई बाड़, उलटे हुए वृक्ष, टिकटघर, जिसके सिर्फ कुछ खम्भे ही बाक़ी रह गये थे, और यहीं कहीं पार्क में दौड़नेवाली लोमड़ी, किसी की तरफ नहीं गया। वह केवल शेर की ओर ही ताकता रहा।

एक शाम यूरा की मां के पास धूल से सना हुआ एक सैनिक आया। वह बैठा चाय पी रहा था और यूरा थकी आंखों से, जो बंद होती जा रही थीं, उसे देख रहा था। वह आज बहुत दौड़ा था और सैनिक जो बता रहा था, उसे अच्छी तरह नहीं सुन पा रहा था। सैनिक मोर्चे, सिपाहियों, उनके कारनामों, जर्मनों से लड़ाई और मां के भाई के बारे में बता रहा था, जिसे लाल पताका पदक से विभूषित किया गया था। मां ने ध्यान दिया कि थकावट के कारण यूरा की आंखों में नींद घिर आयी है, वह बार बार कुर्सी से गिरने को हो रहा है। इसलिए वह उसे सुलाने ले गयी। कपड़े उतारने के बाद बिस्तर पर बैठे हुए उसने पूछा

"मां, क्या यह सच है कि मीशा मामा को लाल पताका पदक मिला है?"

"सच है। वह शेर की तरह बहादुरी से लड़ा था। तू भी बड़ा होकर बहादुर निकलेगा। मीशा मामा लौटेंगे, तो तुझे लड़ना सिखा देंगे।"

"मां," उसने कहा, "वे क्या उस शेर की तरह लड़े थे?"

"कौनसा शेर?" मां ने पूछा और फिर समझाया, "ऐसा हमेशा कहते हैं कि लाल सैनिक लड़ता है, तो शेर की तरह लड़ता है।"

"तो इसका मतलब हुआ कि मीशा मामा उस शेर की तरह लड़े थे," मां की पूरी बात सुने बिना यूरा फिर बोल पड़ा। "यानी अच्छी तरह लड़े थे। मैं भी इसी तरह लड़ूंगा।"

"अच्छा, अच्छा। अब सो जा। अभी खतरे का अलाम फिर बजेगा, तब तक कुछ सो ले।"

अब तक खतरे के अलार्म आम सी बात बन गये थे। यूरा को तहखाने में दौड़ाना हमेशा नहीं हो पाता था। वह या तो कहीं सड़क पर ग़ायब रहता, या ऊपर घर की अटारी में होता या फिर एम्बुलेंस केन्द्र में।

हवामार तोपो की गरज, घरो के हिलने और बमों के फटने का यह आदी हो चुका था।

"तू कहा गायब रहता है?" मा ने उससे पूछा। "म तलाश करते करते थक जाती हू। खबरदार आगे से कभी घर से दूर गया! पिता की गरहाजिरी मे बिल्कुल बिगड गया है। लौटने तो दो उन्हें जहाज से, तेरी ऐसी खबर लेंगे कि बिल्कुल हाथ से निकल गया है।"

"म घर के पीछे बरिकेड बना रहा हू " गभीरतापूवक उसने जवाब दिया।

"कसा बरिकेड?"

"मा, वहा बोलशोय सडक पर भी बरिकेडें बना रहे ह। मने खुद देखा है। हम लडको ने भी बरिकेड बनाने का फसला किया है "

तीन दिन बाद एक जबदस्त हवाई हमले के बाद उसे बम के धमाके से अचेत अवस्था मे घर लाया गया। मा का चेहरा पीला पड गया था, बाल बिखरे हुए थे। वह कापते हाथो से उसके कपडे उतारने लगी। वह शात पडा हुआ था, लेकिन अब तक होश मे आ चुका था। वह केवल धमाके के कारण उठी हवा के थपेडे से जमीन पर गिर पडा था।

"म घर के पीछे बरिकेड बना रहा था," उसने धीरे से, अपराधी स्वर मे कहा। "म ठीक हू, मा। घबराओ नहीं।"

मा रुमाल खोजते हुए उसकी जेबों से तरह-तरह की चीजें निकाल रही थी।

"तुम्हारी जेबो मे यह सब कूडा क्या भरा है?" प्लास्टर का एक बडा सा टुकडा निकालते हुए, जो अब भूरा पड चुका था, उसने कहा।

"मा!" यूरा एकाएक चिल्लाया, "उसे मत फेंको! यह शेर का पजा है। पडा रहने दो! मुझे इसकी जरूरत है। मुझे वह याददाश्त के तौर पर चाहिये।"

मा ने आश्चय से उस टुकडे को देखा और सचमुच ही उस पर गोल सा बडा नाखून साफ दिखायी दे रहा था।

"किसलिए चाहिये?" मा ने पूछा। "यह तुमने वहा मलबे से उठाया था?"

"यह उस शेर की याद है," अपने छोटे माथे पर बल डालते हुए यूरा ने कहा।

"कसी याद? म समझी नहीं, मेरे लाल," मा ने स्नेह के साथ कहा।

"म उसका बदला लूगा उन डाकुओ से! मेरे हाथ पडके तो देखें! ऐसा सबक सिखाऊगा कि "

परिवार

"दाशा, इधर आओ तो, तुमसे कुछ कहना है," सेम्योन इवानोविच ने कहा।

दाशा ने पति को ऐसे देखा, मानो इस चौडे कधो वाले गभीर आदमी को, जिसकी हरकतो मे एक तरह की सुस्ती और आखो मे कठोरता थी और जो बहुत समय से न कभी मुस्कराता था और न कभी उसके साथ मजाक ही करता था, पहली बार देख रही हो। एप्रन से हाथ पोछकर वह कुर्सी पर बठ गयी और निगाहें कहीं कोने में टिकाये हुए बोली

"म जानती हू तुम क्या कहना चाहते हो।"

"जानती हो? कहा से मालूम हुआ? "

"दिल कहता है। खर, बताओ "

"दरवाजा बद कर लो, ताकि ओल्या न सुने "

"ओल्या पानी के लिए गयी हुई है। म तुम्हें खुद बताये देती हू। अगर कोई बात सही न हो, तो मुझे टोक कर देना म देख रही हू कि कोस्त्या की मौत के बाद से तुम कितने दुखी हो। कोस्त्या लेनिनग्राद की रक्षा करते हुए मारा गया। वह अच्छी, पवित्र मौत मरा। लेकिन इन फासिस्ट जगलियों से बदला लेना है, सेम्योन इवानोविच, हर दिन, हर घटा बदला लेना है। इन कमबख्तो ने क्या क्या नहीं किया है, सोचते हुए भी कपकपी छूट जाती है। म उनसे घणा करती हू, नफरत करती हू—कोस्त्या के लिए, अपने भाई के लिए। उनसे बदला लेना चाहते हो, मोर्चे पर जाना चाहते हो, यही बात है न?"

सेम्योन इवानोविच ने घुटने पर हाथ मारा, उठा और पास आकर उसे सीने से लगाते हुए चूमकर बोला

"मेरी दाशा बडी समझदार है! हां, तुम ठीक कहती हो। कहीं इरादा न बदल जाये, इसलिए मने कागजात भी तयार करवा लिए ह। तो लो, एक और सनिक बढ़ गया है! म काम नहीं कर सकता, मुझे एक पल भी चन नहीं है। और फिर म तो पुराना सनिक हू, पिछले साम्राज्यवादी युद्ध मे लड चुका हू और गोली चलाना अभी भी नहीं भूला हू। सिफ मेरे पास समय कम है। साथ ले जाने के लिए मेरा सामान तयार कर देना "

"चिन्ता न करो, सब कर दूगी," धीमे स्वर मे दाशा ने कहा।

खिडकी के पास आकर उसने बाहर झांका—शायद ओल्या लौट रही हो। सडक पर मेले जसी भीड थी। सब पदल चल रहे थे, क्योंकि ट्रामे बद थीं। लोग स्लेजो पर लकडिया और बोरियां खींच रहे थे। कुछ स्लेजों पर बूढ़े या बुढ़ियाए बठी हुई थीं—शालों मे लिपटी हुई और सिर पर रूमाल बाधे हुई।

पानी भी स्लेज पर रखकर ला रहे थे। बरतन के तौर पर लोग बच्चों को नहलाने के टब, टिन के बरतन, बाल्टियां और कनस्तर इस्तेमाल करते थे। सडक पर फिसलन थी। पानी छलकता था, तो गिरते गिरते बफ बन जाता था। सरदी बहुत सख्त थी। खाडी से आनेवाली हवा के झोंके आखों मे बफ की कटीली धूल फेंक रहे थे। लोग आधे चेहरे काले मफ्लरो से ढके इस तरह चल रहे थे, मानो नकाब ओढ़े हो। दाशा कुछ देर तक इस अन्तहीन रगबिरगी भीड को देखती रही। सांस लेने से आधे नकाबो के किनारों पर बफ की लेसे बन गयी थीं। राह चलते लोगो के मुह से सफेद भाप निकल रही थी। इस भीड मे बाल्टी लिए ओल्या को ढूढ़ पाना मुश्किल था। पर उसके लौटने का वक्त हो गया था।

"मुझे भी कुछ कहना है," खिडकी से मुडते हुए दाशा ने कहा। "मने भी फसला कर लिया है कि अगर तुम मोर्चे पर जा रहे हो तो म तुम्हारी जगह ले लूगी। बीच मे मत बोलो, सेया। म जो कहती हू, सुनते जाओ। शहर की नाकाबदी हो रखी है। लोगो को कितनी कठिनाइयां सहनी पड रही ह। आजकल अखबारो मे लिखते ह कि शहर मोर्चा बन गया है। और यह सच है। तो अगर यही है और तुम फासिस्टों से भाई का बदला लेने जा रहे हो, तो म तुम्हारी जगह काम करूगी। म अभी काफी मजबूत हू। तुम चिन्ता मत करो, म सब सह लूगी। म समझदार

हू और काम को पसन्द करती हू। मेरी वजह से तुम्हे आखें नीची नहीं करनी पडेंगी   म काम को समझती हू। तुम जानते हो कि मने कारखाना बच्चो की खातिर ही छोडा था   "

"और इस समय?" सेम्योन इवानोविच ने कहा।

"इस समय क्या?"

"पेत्या तो अभी छोटा ही है। ओल्या भी केवल बारह साल की है। फिर वह कमजोर भी है। अगर हम तुम, दोना घर पर नहीं रहे, तो बच्चों की क्या हालत होगी? घर बरबाद हो जायेगा, तुमने इस बारे मे भी सोचा है?"

"सोचा है, अच्छी तरह से सोचा है, सेम्योन! म बच्चों को पोरोखोवियें भेज दूगी। वहा मेरी एक पुरानी सहेली रहती है। उसके बच्चे भी हमारे बच्चो जितने ही बडे ह। मैं उससे कहूगी कि मेरे बच्चा को भी साथ रख ले। हाथ आजाद हो जायेंगे। अब वह समय नहीं कि पारिवारिक जीवन के बारे मे सोचा जाये। पता नहीं, फिर मुलाकात भी हो पायेगी या नहीं! दुश्मन हमारे घरो को बरबाद करता जा रहा है। उससे सघर्ष करना है। निठल्ला बठने से क्या फायदा! तुम्हारे लिये और कोई नहीं लडेगा—खुद ही लडना होगा   क्यो, ठीक कह रही हू न?"

"हा, ठीक कह रही हो," सेम्योन इवानोविच ने जवाब दिया।

ओल्या लौट आयी थी। पानी की बाल्टी रसोई मे रखकर वह गरम होने के लिए कमरे मे आयी और अगीठी के पास खडे होकर ठड से नीले पडे अपने छोटे हाथो को गर्माने लगी। आज मा और पिता उसे कुछ अजीब से दिखायी दे रहे थे।

"मा," वह बोली। "क्या हो गया है आप लोगो को? क्या बात है? क्या किसी और के मारे जाने की खबर आयी है? नहीं, आप लोग मुझसे जरूर कुछ छिपा रहे हैं   "

"मेरी बेटी, हमे भला तुमसे क्या छिपाना है," दाशा ने कहा। "कपडे उतारो और ध्यान से सुनो हम लोगो ने क्या फसला किया है।" और वह एक ही सास मे कह गयी "तुम्हारे पिता मोर्चे पर जा रहे ह और म कारखाने मे काम करने। तुम लोगा को म पोरोखोवियें, ल्योल्या चाची के पास भेज दूगी   बस यही बात है, बेटी   "

श्रोल्या ने अंगीठी मे लकडिया डालीं और उसके सामने बैठकर उसकी मद आग को देखती रही, जो मानो बडी अनिच्छा से जल रही थी। सिर ऊपर उठाये बिना उसने पूछा

"मुझे और पेत्या को पोरोखोविये क्यों भेज रहे ह ?"

"बेटी, घर कौन सभालेगा ? रोटी के लिए लाइन मे खडा होना है, लकडी-पानी लाना है, पेत्या को खिलाना है, यह पडोसियों के लडकों के साथ खेलकर घर वापस आयेगा, तो उसकी देखभाल करनी होगी म नहीं रहूगी, तो ये सब काम कौन करेगा ? "

"मा, हम पोरोखोविये नहीं जायेंगे। ल्योल्या चाची मुझे पसद नहीं। वह दिन भर बडबडाती रहती है रही यहा की बात, तो म सारा काम खुद कर लूगी!"

एकाएक वह उठी, लडकी के से पतले कधो से सरदियो का कोट उतारा और सिर झटकाकर फिर बोलने लगी

"अब भी क्या म सब काम नहीं कर पाती ? पानी ले आती हू, तो कौनसा बडा काम कर देती हू! लकडी कहा से लानी है, म जानती हू। सत्रहवें घर की वाल्का मेरी मदद कर देगी। चूल्हा जलाना कौनसी बात है-हमे कोई शाही खाना तो तयार करना नहीं है। रोटी के लिए भी वाल्का के साथ बारी-बारी से खडी होगी। पेत्या को अभी भी रोजाना म ही खिलाती हू। मत सोचो कि म छोटी हू। म अब छोटी नहीं रही! हम सब बडे ह। तुम दोनो की जरूरत है, तो जाओ। तुम तो घर आया करोगी। आया करोगी न ? तो ठीक है! मुझे दिक्कत होगी, तो कोई बात नहीं। आजकल दिक्कतें किसे नहीं उठानी पड रही ह। म किसी पोरोखोविये-वोरोखोविये नहीं जाऊगी। सुन लिया, मा! सब ठीक हो जायेगा। मेरी प्यारी मा! आओ म तुम्हे चूम लू सब ठीक है न ? "

हाथ

ठड इतनी थी कि गरम दस्तानो मे भी हाथ जमे जा रहे थे। चारो तरफ से जगल तग और ऊबड खाबड रास्ते पर, जिसके दोनो तरफ कमबख्त बफ से भरी खाइया थीं, मानो हमला कर रहा था। पेडो की टहनिया ट्रक को छू रही थीं, केबिन की छत पर बफ के फाहे गिर रहे थे और टहनिया टकी की बगलो को खरोंच रही थीं।

अपनी ड्राइवर की जिन्दगी मे उसने बहुत से रास्ते देखे थे, पर ऐसा पहले कभी नहीं देखा था। और हर समय इसी पर कोल्हू के बल की तरह चक्कर लगाने पडते थे। तग, अधेरे और सीलनभरे मिट्टी के घर मे वह अभी अभी पहुचा है और कोने मे सिर झुकाकर थके हुए साथियो के बीच सुस्ताने के लिए बठा ही है कि अगले फेरे पर रवाना होने के लिए फिर कहने लग गये ह। कहते ह कि सोओगे बाद मे। अभी काम करना चाहिए। रास्ता पुकार रहा है। यह जवाब देने की कोई गुजायश नहीं कि काम भागा नहीं जा रहा है। नहीं, अब नहीं किया, तो वह सचमुच भाग जायेगा! जरा सा ध्यान हटा और ट्रक खाई मे। फिर दोस्तो से मदद मागो—अपने आप तो उसे निकाला नहीं जा सकता, और यह सभव भी नहीं है। और फिर सर्दी कितनी है! मानो उत्तरी ध्रुव इस जगली रास्ते पर ट्रफिक नियत्रण करने आया है।

कभी कोहरा छा जाता है, तो कभी लादोगा झील से ऐसी हवा आती है, जसी उसने पहले कभी नहीं देखी थी—हड्डियो को भेदती हुई, गरजती हुई और कभी खत्म न होनेवाली। और कभी ऐसा तूफान आता है कि हाथ को हाथ नहीं सूझता। टायर भी लोहे के नहीं ह, बहुत बार जवाब दे बठते ह। फिर अगर सबसे पीछे चल रहे हो, तो खाई मे फसे साथियों

की भी मदद करनी चाहिए। और फिर सबसे मुख्य चीज, माल को ठीक समय पर पहुचाने का भी ख्याल रखना जरूरी है। जाऊ, देखू उसकी क्या हालत है

बोल्शाकोव ने गाडी रोकी और केबिन से निकलकर बरफ पर मारी कदम रखते हुए टकी को देखने गया। ऊपर चढ़कर उसने सरदियो की दोपहरी के फीके उजाले मे देखा कि ठड से अतलासी बनी उसकी दीवार पर पेट्रोल की धार बह रही है। उसका बदन सिहर उठा। टकी चू रही थी। एक जगह पर जोड उखड गया था।

वह खडे खडे उस धार को देखता रहा, जिसे किसी भी तरह नहीं रोका जा सकता था। एक तो रास्ते मे इतनी तकलीफ उठाना और फिर खाली टकी लिये हुए मुकाम पर पहुचना! दुघटनाए पहले भी हुई थीं, पर ऐसा कभी नहीं हुआ था। सरदी से उसका चेहरा जलने लगा। तभी ख्याल आया कि खडे होकर देखते रहने से कोई फायदा नहीं।

वह बफ मे उठते गिरते हुए केबिन मे वापस लौटा। कमिसार भेड की खाल के कोट का कालर उठाये हुए, नाक की सास से गम हुई खाल मे सिर अदर को सिकोड बठा था।

"कामरेड कमिसार," बोल्शाकोव ने पुकारा।

"हम लोग पहुच गये क्या?" कमिसार ने चौंक कर पूछा।

"लगता है कि पहुच ही गये," बोल्शाकोव ने जवाब दिया। "टकी चू रही है। क्या करें?"

कमिसार केबिन से निकला। वह आखें मल रहा था, ठोकरे खा रहा था, लेकिन जब उसने भी देखा कि क्या हो गया है, तो चिन्ता से हाथ पर हाथ मारते हुए कहने लगा

"अगले अड्डे तक चलो, वहा तेल उडेल देंगे और टकी की मरम्मत के लिए जायेंगे। ठीक है न?"

"मगर ऐसा कसे हो सकता है?" बोल्शाकोव ने कहा। "हम लोग यह पेट्रोल और कहीं नहीं, लेनिनग्राद के लिए, मोर्चे के लिए ले जा रहे ह। उसे ऐसे ही कहीं और कसे उडेल दें? नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।"

"तो और क्या कर सकते ह?" कमिसार ने पूछा और देखने लगा कि पेट्रोल की धार जोड के साथ-साथ कसे बह रही है।

"म कोशिश करके देखता हू। जोड को टाकना जरूरी है," बोल्शाकोव ने जवाब दिया।

उसने सीट के नीचे से औजारो का बक्स निकाला। उसे लगा कि वे मरम्मत के औजार नहीं, बल्कि यातना देने के औजार थे। धातु जसे तपी हुई। पर वह बहादुरी के साथ टाकी, हथौडा और पत्थर बना साबुन का टुकडा लेकर ऊपर टकी पर चढा। पेट्रोल उसके हाथ पर गिर रहा था और कुछ अजीब सा लग रहा था। उसे लगा कि वह कोई बर्फीली आग है। उसका दस्ताना पूरी तरह से भीग गया था और अब पेट्रोल कमीज की बाह के नीचे भी बहने लगा था। बोल्शाकोव ने थूकते हुए मूक हताशा से जोड को पीटा और फिर उस पर साबुन मल दिया। ईंधन का गिरना बद हो गया।

चन की सास लेकर वह फिर रवाना हो पडा। कोई दस किलोमीटर के बाद बोल्शाकोव ने गाडी को फिर रोका और टकी को देखने गया। जोड फिर खुल गया था। पेट्रोल की ठडी धार टकी की गोल दीवार से होती हुई बह रही थी। सब कुछ फिर से करना जरूरी था। टाकी की आवाज फिर हुई, पेट्रोल से हाथ फिर जला और फिर से जोड के किनारो पर साबुन मला गया। पेट्रोल का चूना बन्द हो गया। मगर रास्ता था कि खत्म ही नहीं होता था।

अब उसने गिनना भी बद कर दिया कि कितनी बार वह टकी पर चढ़ा और कितनी बार उसे ठीक किया। अब वह पेट्रोल की जलन भी महसूस नहीं कर रहा था। उसे लगता था कि वह सब सपना है घना जगल, बफ के अन्तहीन ढेर और हाथ से टपकता पेट्रोल।

उसने मन ही मन हिसाब लगाया कि अब तक कितना कीमती ईंधन बह चुका है और उसके हिसाब से यह कोई ज्यादा नहीं था—कोई चालीस पचास लीटर ही। पर अगर प्रति दस-बीस किलोमीटर के बाद जोड को ठोक पीट कर बद करना छोड दे, तो अब तक का किया-कराया सब बेकार हो जायेगा। और वह फिर सारा काम नये सिरे से शुरू कर देता, एक ऐसे आदमी जसी हठधर्मिता के साथ, जो समय और फासले का अन्दाज भूल चुका हो।

थकावट की वजह से उसे लगने लगा कि वह चल नहीं रहा है, बल्कि एक ही जगह पर खडा है और हर चालीस मिनट बाद टाकी-हथौडा हाथ

मे ले लेता है और दरार चौडी होती जा रही है और उस पर तथा उसकी परेशानियां पर हस रही है।

अचानक एक मोड के बाद अजीब से खाली मदान दिखायी दिये-असीम, बडे-बडे और बफ से ढके हुए। रास्ता जमी हुई बफ पर से जा रहा था। चौडी झील जानवर की तरह सास ले रही थी, पर उसका सारा डर जाता रहा। अब यह विश्वास के साथ ड्राइव कर रहा था। यह खुश था कि जगल खत्म हो गया है। कभी-कभी उसका सिर स्टीयरिंग से टकरा जाता, पर यह तुरत सभल जाता था। नींद उसके कधों पर झुक जा रही थी। ऐसा लगता था कि पीठ के पीछे खडा कोई जिन अपने नम और मोटे दस्तानेवाले बडे बडे हाथों से उसका सिर और कध दबा रहा है। ट्रक उछलता हुआ भागता चला जा रहा था। और कहीं उसके अदर, ठड के मारे अकडे हुए, इस थके हुए आदमी मे कोई अनजानी खुशी हिलोरें ले रही है अब यह पक्की तरह जानता था कि वह सब कुछ बर्दाश्त कर लेगा। और उसन बर्दाश्त किया भी। माल मुक़ाम पर पहुचा दिया गया।

मिट्टी के बने घर मे डाक्टर ने आश्चय से उसके हाथों को, जो ठड से झुलस गये थे, देखते हुए असमजस के साथ पूछा

"यह क्या हो गया है?"

"जोड को टाक रहा था," दद के मारे दात भींचते हुए उसने बताया।

"तो क्या रास्ते में रुक नहीं सकते थे?" डाक्टर ने कहा। "आप छोटे तो ह नहीं, कि न समझें। इतनी सरदी मे पेट्रोल से इस तरह भीग जाना "

"नहीं, रुकना सभव नहीं था," उसने जवाब दिया।

"क्यो, कहा की जल्दी थी? आप पेट्रोल कहा ले जा रहे थे?"

"लेनिनग्राद, मोर्चे के लिए," उसने इतने ज़ोर से जवाब दिया कि उसकी आवाज सारे घर मे गूज गयी।

डाक्टर ने टकटकी लगाकर उसकी तरफ देखा।

"अच्छा लेनिनग्राद ले जा रहे थे! समझ मे आया। अब, आइये, पट्टी बाध दें। इलाज की जरूरत है।"

"हा, हा, इलाज तो करवाना ही होगा। पर इस समय फुरसत सुबह तक ही है। सुबह फिर रास्ते लगना होगा पट्टी बधे हाथो से ड्राइव करने मे ठड इतनी नहीं लगेगी। रहा दद, तो दात भींच कर किसी तरह सह लूगा "

सेब का पेड

बचावस्थल मे रोशनी गुल हो गयी। एकाएक सारी जगह चीख-पुकारो ग्रौर बेंचो तथा कुसियो के खिसकाये जाने के शोर से भर गयी। तभी किसी ने चिल्लाकर कहा

"खामोश, साथियो, खामोशी से बठो!"

ग्रौर लोग ग्रधेरे मे खामोशी से बठ गये। हमला कई घटे जारी रहा। चित्रकार ग्रपनी तुडवा तिपाई पर बठा हुग्रा था, जिसे लेकर वह गमियो मे शहर से बाहर तस्वीरें बनाने जाया करता था। इस समय यह हल्की तिपाई, जिसे उसने खुद बनाया था, बडे काम ग्रायी। चित्रकार एक छोटे से इकमजिले, पुराने मकान मे रहता था। पेत्रोग्राद मुहल्ले की चौडी सडको के दोनों तरफ ऐसे घर ग्रभी भी काफी ह। घर के सामने बाग था ग्रौर उसमे एक पुराना, उजडा, मोरचा खाये पाइप वाला फौवारा था, जिसका ग्रेनाइट काई से ढक गया था। इस समय वह गहरी बफ मे डूबा पडा था। पर इस घडी मे चित्रकार सबसे कम घर, बाग ग्रौर फौवारे के बारे मे ही सोच रहा था।

वह पडोसियो की बातें, भय ग्रौर विस्मय को दिखानेवाली चिल्लाहटें ग्रौर बच्चो के रोने की ग्रावाजें भी साफ साफ नहीं सुन पा रहा था। घने, काले ग्रधेरे ने बरसाती की तरह उसे सर से पर तक ढक दिया था।

"यहा से बहुत पहले ही चले जाना चाहिए था," किसी ने झुझलाते हुए कहा।

ग्रौर उसने सोचा हा सचमुच न जाकर उसने कितनी बेवकूफी की है। इसमे कायरता की तो कोई बात नहीं थी। इस समय वह पोस्टर बनाता है ग्रौर उनकी तारीफ भी होती है। उन्हें सडको पर, क्लबो मे ग्रौर मोर्चों की खदको मे टागा जाता है, यह भी सच है। लेकिन यह जरूरी नहीं

था कि वह उन्हे लेनिनग्राद मे ही रहकर बनाता। यहा काम के लिए परिस्थितिया बेहद मुश्किल हो गयी ह। स्टूडियो ठडा है, अगुलिया ठड के मारे पेंसिल भी ठीक से नहीं पकड पातीं, अगीठी ऐसी है कि लाख कोशिश करने पर भी आदमी गम नहीं हो पाता। फिर उसके छोटे से घर मे बचावस्थल भी नहीं है। उसे पडोस के बडे घर के तहखाने मे जाकर घटो बठे रहना पडता है। वह थक गया है और बहुत पहले से ही भरपेट खाना नहीं खा रहा है। ऊपर से अब जुकाम और खासी ने भी जकड लिया है। ठड से हाथ की चमडी कडी हो गयी है। यह या तो गठिया है या इसी तरह की कोई और बीमारी। घर से चित्रकार सघ के कार्यालय का रास्ता तय करना भी उसके लिए दूभर हो गया है। ट्रामे बद ह। और अब बिजली भी गयी। उसे कहा गया था कि वोल्गा इलाके मे चले जाना ठीक रहेगा, वहा शहरो मे उजाला है, घर गम ह और खाने की कोई कमी नहीं है। उसके बहुत से साथी अब वहीं रहते ह सचमुच कितनी बेवकूफी है इस अधकार और ठडक मे भूखे बठे हुए सिर पर बम गिरने का इतजार करना

समय समय पर घर ऊपर से नीचे तक थर्रा जाता था। तब सभी शात हो जाते थे। उसके बाद कुछ मिनटो तक बेहद हगामा मचा रहता, मगर फिर धीरे धीरे शाति छा जाती। लगता था कि अधेरा और गाढा होता जा रहा है। चित्रकार समय का अहसास भी भूल गया था। तहखाने मे वह शाम को आया था और अब शायद रात काफी हो चुकी है। हमला देर से जारी था। धमाके की एक के बाद एक करके न जाने कितनी आवाजें आयीं "बम गिरा रहे ह," बडी उदासी से उसने सोचा। यह शहर भी, जिसे वह इतना प्यार करता था, कितना बदल गया है। सोचकर ही मन पीडा से कराह उठता है। कितनी उदासी और दुख की बात है। जब खतरा खत्म हो जायेगा, वह सडक पर निकलेगा और हो सकता है कि नये खडहर, आग, मलवे के ढेर देखने को मिलेगे। नये ध्वस्त हुए क्वाटरो के शहतीरो पर अटकी हुई चारपाइया और आलमारिया—जीवन की सबसे जरूरी और मामूली आवश्यकताए—हवा मे लटकी हुई होगी

कोने से किसी बच्चे के रोने की पतली सी आवाज सुनायी दी। अधेरे मे चित्रकार आसुओं से भरी बडी बडी आखो वाले इस बच्चे के सर की कल्पना करने लगा। हो सकता है कि वह सोते से जग गया था और चारों

तरफ अधेरा पाकर डर के मारे रो पडा था। क्यो न वह चित्र बनाये इस बचावस्थल का – बिल्कुल इसी रूप मे और सिफ मोमबत्तियो के प्रकाश से आलोकित। और यह कापती लौ, जो चेहरो पर दौड रही है, दीवार पर पडती काली परछाइया, पुराने फर-कोट पहने हुई बुढियाए, कोनो मे बठे फसफसाते नौजवान और युवती माओ के सीनो से चिपके बच्चे

सीढियो से उजाला आता दिखायी दिया और खुले दरवाजे से खतरा खत्म होने का सायरन सुनायी दिया। अब बाहर निकला जा सकता था।

चित्रकार ने बाहर जाने की जल्दी नहीं की। वह भीड को सकरे गलियारे मे भरता देखता रहा और सबसे आखिर मे ही ठडी दीवारों को टटोलते हुए बाहर निकला। उसे डर था कि यहीं पास ही मे खडहर देखने को मिलेगे। उसने सोचा कि वह इसी तरह से लडखडाता जसे तसे अपने छोटे से घर तक पहुच जायेगा, जो दो ही कदम की दूरी पर था।

वह सडक पर निकला और एकाएक असमजस मे पडकर घबराया हुआ रुक गया।

सब कुछ चकाचौंध करनेवाली हिमधवल चादनी से आलोकित था। बडा सा, करीब क़रीब बजनी रग का चाद सदियो के कुहासे मे रेत की बोरियो की दीवार के ऊपर हरे नीले आसमान मे लटका हुआ लग रहा था और उसके इदगिद मरीनो भेडो के झुण्डो की तरह घुघराले, सफेद बादल फले हुए थे। लगता था कि आसमान ठडक और उजाले से झनझना रहा है। बडे घरो की खाली, मदान की तरफ की दीवारें ताबई लग रही थीं। बफ बडी मधुरता से चरमरा रही थी। सडक पर बडे बडे बफ के ढेरो पर अतलासी नीली छायाए खेल रही थीं। साधारण होते हुए भी सडक पर चाद के उजाले मे एक अनजाना आकषण था।

उसने अपने घर की तरफ कदम बढाये, पर वह जगह को पहचान नहीं सका। अपने आपको उसने बाग मे पाया, जो ख्वाब की तरह खूबसूरत लग रहा था। पेडो पर तीन अगुल मोटी, हल्के पाले की परत जमी हुई थी। हर शाख किसी कुशल कलाकार की रचना लग रही थी। उनसे किरणें छूट रही थीं। पेडो के सिरो पर, जहा सेबल की खाल की टोपी जसे बफ पडी थी, कुछ अनजान रोशनिया दौड रही थीं। लगता था कि सभी पेड किसी सामारोहिक नृत्य के लिए सजधज कर खडे ह और एक दूसरे के चमकते हाथो को पकडकर अपने हीरक किरीटो को हिलाते हुए अभी चित्रकार के इदगिद नाचने लग जायेंगे।

इस अदभुत बाग मे बीचोबीच एक अत्यत सुदर पेड खडा था। प्रकाश, चमक, चिंगारिया और हीरक किरीट, जो दूसरे पेडो को सजा रहे थे, इसमे और भी अधिक थे। यह एक ऐसी पूर्णता थी, जिसे मानव के हाथ कभी नहीं गढ़ सकते। पेड शीतल और विचित्र सी आग से जल रहा था, उससे सफेद अलाव की तरह लपट छूट रही थी,—और यह लपट एक क्षण के लिए भी अपने खेल को बद नहीं कर रही थी।

कुछ भी समझने मे असमर्थ होकर चित्रकार मूर्तिवत खडा उसे देखता रहा। वह न तो जगह पहचान पाया और न याद ही कर सका कि वह बाग मे कैसे आया और असल मे वह है कहा पर।

उसने पीछे मुडकर देखा। सडक पर लोगो की भीड थी। नौजवानो के हसने और बर्फ के चुरमुराने की मधुर आवाजें आ रही थीं। उसने टोपी उतारी और एक क्षण आखें बद किये खडा रहा। वह होश मे आ गया। आखें खोलने पर वह मानो धरती पर वापस लौट आया। वह अपने बाग मे खडा था। उसे याद आया कि वह बर्फ से ढके फौवारे के पास आया था। पर बाग की चहारदीवारी को उसने कैसे पार किया? पर वहा कोई चहारदीवारी थी ही नहीं! बम के धमाके से पैदा हुई हवा की जबदस्त लहर इस पुरानी, कीडो की खायी लकडी की चहारदीवारी को उडा ले गयी थी और अब उसके टुकडे सडक पर दूर दूर तक बिखरे हुए थे। यह दैवी सौंदर्य का पेड शात फौवारे के पास खडा उसका परिचित पुराना सेब का पेड था।

उसने चारो तरफ दृष्टिपात किया और बर्फानी जादुई चादनी से जगमगाता शहर दिखायी दिया। खूबसूरत शहर का अपरिमित और अद्वितीय सौंदर्य उसके सामने फैला पडा था।

चित्रकार उसे ऐसे देख रहा था, मानो दोबारा पैदा हुआ हो। उसकी सब परेशानिया, जो उसे तहखाने मे सता रही थीं, दूर हो गयीं। क्या? सौंदर्य, वीरता, श्रम और सभ्यता की इस दुनिया से चला जाना? क्या यहा से जाया जा सकता है? कभी नहीं और कहीं नहीं!

इस शहर की तो अतिम दम तक, खून के अतिम कतरे तक रक्षा करनी चाहिये, दुश्मन को इसकी दीवारो से भगाना चाहिये, खाक मे मिला देना चाहिये! यहा से जाने का विचार तो मन मे उठने भी न देना चाहिये! और चित्रकार महान हर्ष और गर्व से भरा अभी भी खडा देख रहा था और फिर भी उसे लग रहा था कि वह पूरी तरह तृप्त नहीं हो पायेगा।

अपने बारे में

पहला प्रयोग

छुटपन मे मुझे पतीलिया बहुत पसद थीं। म उनकी चमक पर मुग्ध होता था। किसी के यहा दावत पर जाने पर मेरा सबसे पहला काम रसोई मे झाकना होता था, ताकि अलमारियो मे सजाकर रखी हुई सभी छोटी-बडी, ताबई पीली पतीलियो की छटा का आनद लू। सबसे छोटी पतीली उतारकर मुझे दे देते थे और म उसे लिए इतनी गभीरता से खेलता कि आसपास के लोग कहते थे "वह रसोइया बनेगा!" तब म उसे सिर पर उल्टा रख लेता। बडे मुझ पर हसते "सिपाही बनेगा!" हालाकि तब किसी को इसका अहसास भी नहीं था कि वे काफी कुछ सही भविष्यवाणी कर रहे ह। जीवन मे मुझे सचमुच चार युद्धो मे भाग लेना पडा।

म सात साल की उम्र मे पढ़ना और लिखना सीख गया था। मेरे हाथ जो भी किताब पडती, म पढ़ जाता। इसी तरह मुझे भाई को, जो मुझसे काफी बडा था, पढ़ते सुनना भी बहुत पसद था। मुझे गुलाबी रग की पतली-पतली किताबें याद ह। उनका प्रकाशक कौन था, यह तो म नहीं जानता, पर हर एक मे पुश्किन की एक लबी कविता छपी होती थी। इन किताबो का दाम भी कुछ ही कोपेक होता था। बाद मे मने एक धारावाहिक उपन्यास पढा, जिसका नाम था "शाल्क बुरगेर की बेटी रोजा बुरगेर"। यह उपन्यास आग्ल-बोएर युद्ध के बारे मे था। उसे पढ़ते हुए म प्राय "ट्रासवाल, ट्रासवाल, मेरा वतन" गीत भी गुनगनाता रहता था। वास्या चाचा को भी यह गीत गाना बहुत पसद था।

रूसी जापानी युद्ध चल रहा था। म तब तक आठ साल का हो चुका था। एक दिन शाम को भाई ज़ोला के "पराजय" उपन्यास का कोई अश पढ़कर सुना रहा था और म बठा हुआ तन्मय होकर उसे और फ्रास के

भाग्य का निणय करनेवाली लडाई के चित्रो को देख रहा था। उस रात म ठीक तरह नहीं सो पाया। मने सपना मे देखा कि सवारों से रहित घोडे भाग रहे ह, सिपाही घरो से गोलिया चला रहे ह, पेड जल रहे ह, खेतों मे मुर्दे बिखरे पडे ह, बडी भारी घुडसवार सेना तोपखाने का मुकाबला करने के लिए आगे बढ़ रही है आधी रात मे मेरी नींद खुली, मगर बिखरे अयालो वाले घोडो के सिर मेरी आखो के सामने घूमते रहे और कानो मे गोलियो की सनसनाहट गूजती रही। सुबह होने पर मने जिस मोटे, भूरे, बडे कागज मे मछली लिपटकर आयी थी, उसे लिया और पहले दोहरा और फिर चौहरा मोडा।

"क्या कर रहा है?" भाई ने पूछा। "फिर कोई चीज चिपकायेगा? वसे ही सारा गोद से पुता हुआ है। जरा अपनी पण्ठ तो देख!"

"म चिपकाऊगा नहीं," मने जवाब दिया, "मुझे और कुछ करना है।"

म वास्या चाचा की बढ़ईगिरी के कामों मे इस्तेमाल आनेवाली बडी सी मोटी पेंसिल लेकर एक शात कोने मे बठ गया और बडे-बडे काले अक्षरों मे लिखने लगा कि कसे मने भी उस लडाई मे हिस्सा लिया था, जिसका वर्णन जोला ने किया है। मने बडे मनोयोग से लिखा और ऐसे लिखा, जैसे कि सब घटनाए मेरे सामने घटी हो। कुछ ब्योरे मुझे याद थे और कुछ को मने अपनी ओर से गढ़ा। कहानी बढ़ने लगी। मने दूसरा मोटा भूरा कागज लिया, उसे भी उसी तरह मोडा, सब पन्नो को एक साथ चिपकाया और फिर भी मुझे लगा कि मेरी कहानी मे कोई कमी रह गयी है। तभी याद आया कि हा, कमी चित्रो की थी। तब मन जसे भी मुझसे बन पडा सवारो से रहित घोडो और एक लबे से घर की खिडकियो से गोलिया दागते हुए सिपाहियो को चित्रित किया। जब सब काम खत्म हो गया, तो मने अपनी पहली रचना को बडे गव से पढ़कर सुनाया। घर के सब लोग मुझ पर, मेरे टेढे-मेढ़े अक्षरो और चित्रों पर बेहद हसे।

"अरे लेखक महाशय," वास्या चाचा ने कहा, "बात कुछ बनी नहीं!"

"और चित्रकार साहब," भाई ने कहा, "आपने ये घोडे बनाये ह या कुत्ते?"

मैं लज्जा से जमीन में गड सा गया। म अपने लिखे हुए से बहुत प्रभावित था। पर सचमुच बात कुछ बन नहीं पायी थी। तो असली लेखक कसे

ह? शायद इस वोला ने उस लडाई मे खुद हिस्सा लिया था, तभी तो सभी बातें इतनी अच्छी तरह याद रख सका!

मने अपने पहले प्रयोग को भुला देना चाहा, लेकिन भूरे मोटे कागज को तहाकर उस पर लिखने और चित्र बनाने की लालसा पर म किसी तरह काबू न पा सका। हा, अब म अपनी रचनाओ को किसी को सुनाता दिखाता नहीं था, क्योकि जानता था कि वे सब उन पर हसेगें।

एक बार मेरे पिता, जो पेशे से हेयर ड्रेसर थे, मुझे अपने एक दोस्त के यहा ले गये, जो वोजनेसेन्स्की प्रोस्पेक्त पर रहता था। यह एक बूढ़ा फ़ासीसी हेयर ड्रेसर था। उसका चेहरा सौम्य, मूछें बडी और गुच्छेदार और हाथ सुदर और गोरे थे। शरीर से वह किसी सकसी कलाकार, जिम नास्ट या जादूगर जसा लगता था, क्योकि वह बेहद लचीला और फुर्तीला था। शायद स्वभाव से वह काफी विनोदी और हसोड था। रूसी वह काफी शुद्ध बोलता था, क्योकि रूस मे बहुत अरसे से रह रहा था। फिर भी उसके मुह से कुछ शब्दो को सुनकर हसी आ जाती थी।

"अहा, कितना बडा बश्शा है!" उसने मुझे देखकर कहा, "कितने साल के हो?"

मने बता दिया।

वह उछल पडा, मानो जो मने बताया था, उसम हैरानी की कोई बात हो।

"बश्शे, तुम पढ़ते हो?"

"हा, म शहर के तीनसाला स्कूल मे पढता हू," मने गव और गभीरता के साथ जवाब दिया।

"बडे होने पर तुम क्या बनना शाहोगे?"

मुझे कोई जवाब नहीं सूझा।

"वह लेखक बनना चाहता है," मेरे पिता ने हसते हुए बताया। "वह लडाई के बारे मे लिख भी चुका है "

"लडाई के बारे मे? " आश्चय के मारे आगे की ओर बढ़ते हुए फ़ासीसी ने, जिसका नाम जा केसी था, पूछा। "किस लडाई के बारे मे? जो जापानियो के साथ हो रही है क्या?"

"नहीं," मने उसकी दयालु, बादामी रग की फ़ासीसी आखों को देखते हुए बताया। "जमनो के साथ हुई लडाई के बारे मे। फ़ासीसियो

श्रौर जमनो की लडाई के बारे मे। श्रापने ज़ोला का नाम सुना है? एक लेखक है। उसने "

"ज़ोला?" ज़ा केसी चिल्ला उठा। "फ्रासीसी प्रशियाई युद्ध! सेदान! श्रौर तुम यह सब जानते हो, मेरे नन्हे बश्शे?"

"हा, जानता हू," मने इसके लिए तयार होते हुए जवाब दिया कि श्रभी वह भी मुझ पर हस पडेगा (हालाकि मुझे वह पसद था श्रौर म नहीं चाहता था कि श्रौरो की तरह वह भी मुझ पर हसे)। "पर मने श्रभी केवल घोडो के बारे में लिखा है। उस लडाई मे घुडसवार सेना लडी थी "

"श्रौर तुम जानते हो, मेरे बश्शे," श्रचानक केसी मुझे हाथ से पकडकर सोफे पर श्रपने पास बिठाते हुए चिल्लाया, "कि म भी वहा घुडसवार सनिक था! क्या कहते थे तब उसे? हा याद श्राया मित्रालियज़, मित्रालियेज़! जसी श्राजकल मशीनगनें होती ह न, उसी तरह की। मेरा घोडा मर चुका था श्रौर म भी घायल होकर गिरा पडा था। पर पर घाव का निशान श्राज तक बना हुश्रा है। श्रोह, तुम कितने दिलचस्प बश्शे हो! तो तुमने लडाई के बारे मे लिखा है? जानते हो, उस समय मैं बीस साल का था। मेरे सब साथी दूसरी दुनिया मे पहुच चुके ह, ज़िन्दा सिर्फ म ही बचा हू बश्शे, म तो बहुत बूढ़ा हो चुका हू, पर तुम श्रभी जवान हो। तुम बहुत कुछ देखोगे। हा, तो तुम लेखक बनोगे? "

वह मुझे कुछ भी कहने का मौक़ा दिये बिना लगातार बोलता जा रहा था। मने उसकी तरफ देखा श्रौर वह बहुत दिलचस्प लगा, क्योंकि उसके बारे मे किताब मे लिखा हुश्रा था। श्रगर वह बग़ल के कमरे से लडाई का घोडा ले श्राता, सदूक़ से फ़हराती कलगीवाला टोप निकालता श्रौर पास ही कोने मे रखी चमकती तलवार को उठा लेता, तो मुझे कोई श्राश्चय न होता। मगर तब म सचमुच हैरानी मे पड गया, जब उसने बडे रहस्यमय श्रदाज़ मे मेरे कान के पास मुह लाकर फुसफुसाती श्रावाज़ मे पूछा

"श्रौर तुमने कभी किसी श्रसली लेखक को देखा है?"

मने इनकार मे सिर हिलाया।

"तो श्राश्रो, म तुम्ह दिखाऊगा," यह कहते हुए उसने दौडकर दरवाज़ा खोला, वास्कट की जेब से घडी निकालकर समय देखा श्रौर न जाने क्या सोचकर वापस सोफे के पास श्रा गया। मेरे पिता कोई सचिव

फ्रांसीसी पत्रिका पढ़ रहे थे, इसलिए हमारी बातचीत की ओर उनका कोई ध्यान नहीं था।

केसी ने कहा

"बरशे, यहा बग़ल के कमरो मे एक लेखक रहता है। अभी दस एक मिनट मे वह स्नानघर की तरफ जायेगा। यही उसका नहाने का समय है। वह बहुत नियमपसन्द और असली लेखक है "

दस मिनट बाद मुझे सचमुच गलियारे मे किसी के कदम सुनायी दिये। कोई हमारे कमरे की तरफ आ रहा था, फिर कदम हमारे कमरे के सामने से होते हुए दूर जाने लगे।

तभी केसी ने होठो पर अगुली रखकर मुझे शोर न करने का इशारा करते हुए हल्के से दरवाजा खोला, मुझे कधे से पकडकर गलियारे में ठेला और दायीं तरफ दिखाया। मुझे धीरे धीरे चलते आदमी की पीठ दिखायी दी। वह मोटा, बडा और काले चारखानेवाली हरी कमीज, उसी तरह के कपडे की पतलून, काली धारियो वाले हरे लम्बे मोज़े और चौडी एडियोवाले मोटे जूते पहने हुए था, जो लगता था कि गलियारे मे बिछे क़ालीन मे धसते जा रहे है। उसके कधे पर एक बडा सा बुग्गीदार तौलिया पडा था और चलते चलते वह मुह से सीटी बजाने के साथ साथ अगुलियो से चुटकिया भी बजाता जा रहा था। केसी ने मुझे कमरे के अदर खींच लिया।

"देखा, देखा?" वह विजय की सी भावना के साथ चिल्लाया। "असली लेखक है, मेरे बरशे! किताबें लिखता है, 'बिरजेव्का' मे भी लिखता है "

"बिरजेव्का"* उन दिनो का एक बहुत लोकप्रिय समाचारपत्र था। मैने इस समाचारपत्र के बारे मे सुना था, इसलिए जब मुझे मालूम हुआ कि ईंट जसी चौकोर गरदन वाला यह मोटा आदमी उसने लिखता है, तो मैने केसी का विश्वास कर लिया। मुझे विश्वास हो गया कि वह मुझे धोखा नहीं दे रहा है और सच बोल रहा है, और यह आदमी सचमुच लेखक है और "बिरजेव्का" मे लिखता है।

---

* स्टॉक-एक्सचेज की खबरे देनेवाले समाचारपत्र "बिरजेवीय वेदोमोस्ती' का सक्षिप्त नाम।—स०

"जानते हो, उसका क्या नाम है?"

"नहीं जानता," मने जवाब दिया।

"उसका नाम ग्रेश्को ग्रेश्कोव्स्की है। तुमने 'बिरजेव्का' मे उसके लख पढ़े ह?"

"म 'बिरजेव्का' नहीं पढ़ता," मने झिझकते हुए कहा।

"कोई बात नहीं, कोई बात नहीं, बच्चे," केसी ने कहा। "अब तुमने असली लेखक को देख लिया है और मुझे विश्वास है कि तुम भी असली लेखक बनोगे!"

और उसने एकाएक मुझे हाथो मे उठाकर गालो पर चूम लिया।

बाद मे मने पहलवानो और फ्रासीसी कुश्ती के बारे मे ग्रेश्को-ग्रेश्कोव्स्की का उपयास पढ़ा, लेकिन वह मुझे पसद नहीं आया। म वास्या चाचा के साथ सरकस जाया करता था और जब मने वहा कुश्ती देखी, तो वह उपयास मे वर्णित कुश्ती से कहीं अधिक दिलचस्प निकली।

तब से बहुत साल बीत गये। मेरी अपने हाथो से तयार की हुई, बडी बडी लाइनो और भोंडे चित्रोवाली भूरी कापिया दूर विगत की बात बन गयी थीं। मने एक लघु उपयास लिख रहा था, जिसका शीर्षक था "युद्ध"। जब म उस अध्याय तक पहुचा, जिसमे जमन पहली बार लड़ाई मे गस का इस्तेमाल करते ह और जिसमे मुझे पहले विश्वयुद्ध की खदक मे बठे फ्रासीसी सिपाही का वणन करना था, तो एकाएक मुझे वह नेकहृदय, दुबला पतला १८७० के युद्ध का सिपाही, फ्रासीसी जा केसी याद हो आया और मने अपने फ्रासीसी सिपाही को, जो मोर्चे पर जमनों के गस के इस्तेमाल के फलस्वरूप वीरगति को प्राप्त हुआ, उसका नाम, जा केसी का नाम दिया। और मुझे बेहद अफसोस था कि वह मारा गया!

१९५६

महल

बचपन मे एक बार मै दादी के साथ घूमने को निकला। उन दिनो, यानी आज से आधी सदी पहले का पीटसबग बिल्कुल दूसरी तरह का था। सडको पर गाडिया और ठेले चलते थे, जिन्ह बडे-बडे बादामी रग के घोडे खींचते थे, परदो से ढकी खिडकियो वाली बग्घिया सरपट भागती दीखती थीं, घोडाट्रामो की घटिया झनझनाती थीं, ओम्नीबसो के पहिये घडघडाते थे, पदल लोग धीरे धीरे चलते थे और नेवा नदी की सुरमई लहरो पर नावे डोलती थीं और धूआ छोडते हुए आम लोगों से खचाखच भरे छोटे, तग स्टीमर चलते थे।

पुल पार करके हम चौक की ओर मुडे। हमारे सामने विशाल शीत महल खडा था। उसके दूसरी तरफ सनिक मुख्यालय की अधवत्ताकार इमारत थी। हम सीधे शीत महल की ओर बढने लगे।

"दादी, दादी, हम कहा जा रहे ह? क्या वहा जाने देते ह?"

"जब जार बाहर गया होता है, तो जाने देते ह," दादी ने कहा। "टिकट खरीदकर हम महल को देख सकते ह।"

और सचमुच महल के नौकरो मे कुछ दशको को इकट्ठा किया और महल के विभिन्न कमरो और हालो को दिखाने लगे। बाद मे मुझे मालूम हुआ कि उसमे एक हजार से ज्यादा कमरे, एक सौ से ज्यादा जीने और बहुत सी तरह-तरह की तस्वीरें और मूर्तिया थीं। जल्दी ही म थकावट महसूस करने लगा, पर दादी ने हौले से कान मे कहा

"यहा बठना मना है। चलते रहो, अभी हम पीटर को भी देखेंगे।"

"कौनसे पीटर को?" मने भी फुसफुसाते हुए पूछा।

"और कौनसा पीटर, बेवकूफ? अरे वही, जिसने पीटसबग को बसाया था और अपने आप कुल्हाडे से पहले मकान के लिए शहतीर काटे थे "

"तो क्या वह बढ़ई था?"

"कसा बढ़ई? वह तो जार था।"

हम जीमयाया नाले के ऊपर गलरी के पास पहुच गये, मगर मुझे दूर से दिखायी दे रहा था कि कसे गलरी के बीचोबीच एक ऊची कुर्सी पर हरी वास्कट पहने एक ऊचे कद का आदमी बठा है, जिसके वृद्ध, मोमियाई चहरे पर बारीक काली मूछें उभरी हुई ह। मूछो का हर बाल ऐसे चमक रहा था, जसे कि उन पर तेल मला गया हो।

और अचानक महल दिखानेवाला नौकर उसकी तरफ दौड पडा, और उसके मुह के पास कान ले गया, मानो कोई खास बात कह रहा हो और फिर पीछे हटकर जोर से बोला

"जार पीटर प्रथम आप लोगो का स्वागत करता है!"

हमने देखा कि जार कुछ सीधा सा हुआ, कोई चीज सरसरायी, हल्के से हिली और पीटर ने पूरी तरह तनकर खडे होकर अपनी दृष्टिहीन काच की आखो से हमारी ओर देखा और आहिस्ता से झुक गया। बाद मे उसी तरह आहिस्ता से हल्की सी चरमराहट के साथ बठ गया और फिर से जड हो गया। कोई औरत डर के मारे चीख पडी। दादी ने कसकर मुझे अपने से सटा लिया, मानो जानना चाहती हो कि कहीं हाथ काप तो नहीं रहा है। लेकिन मेरा हाथ नहीं काप रहा था। मुझे यह सब बहुत दिलचस्प लग रहा था, इसलिए मने फुसफुसाती आवाज मे प्राथना की

"दादी, म चाहता हू कि वह एक बार फिर झुके।"

लेकिन क्योंकि नौकर जल्दबाजी दिखा रहा था, इसलिए दादी ने कहा

"देखो तो यह क्या चाहता है! जसे कि उसे तुम्हारे सामने झुकने के अलावा और कोई काम नहीं है।"

और हम आगे बढे। कुछ ही क्षण बाद हम एक खिडकी के पास खडे थे, जिससे बाहर बाग़ का दश्य दिखायी देता था। यहा नौकर ने सभी दशकों को, जो सख्या मे कोई बहुत अधिक नहीं थे, इकट्ठा किया और बाग़ की ओर दिखाते हुए बताया

"यहा पहले बाग नहीं था और न उसे बनाने की कोई योजना ही थी। लेकिन जार ने चाहा कि वह महल से निकले बिना भी शहर मे घूमने

का मजा ले और इसलिए यहा बाग बनाने का हुक्म दिया गया। पगडडिया, क्यारिया, सब कायदे के अनुसार ह। मगर ताकि कोई जार के घूमने मे विघ्न न डाले, इसलिए चारो ओर यह ऊची चहारदीवारी बना दी गयी है।"

"यह पीटर ने नहीं, वतमान जार ने किया है," दादी ने उसकी बात को स्पष्ट सा किया।

"इस बाग मे हम दौड सकते ह?" मने पजा के बल खडे होकर खिडकी से बाहर देखते हुए महल के नौकर से पूछा।

"नहीं," नौकर ने गभीरता से जवाब दिया। "बडे होने पर भी तुम यहा नहीं घूम सकते।"

"नहीं, म जरूर घूमूगा!" न जाने क्यो म गुस्से मे भरकर चिल्ला पडा। मगर तभी दादी हसी हुई बोली

"इतने तेज मत बनो, और ये बेवकूफी की बाते छोडो। चलो घर लौटने का वक्त हो गया है।"

मने उस रहस्यमय बाग पर आखिरी नजर डाली, जिसमे जार के अलावा और कोई नहीं टहलता था। मने जार को कभी नहीं देखा था, मगर यह जरूर सुना था कि सब लोग उसे गालिया देते ह। मेरी कल्पना मे उसका जो चित्र था, उसके अनुसार वह सिर पर टोपी पहने हुए, लबी नुकीली दाढ़ीवाला छोटा सा, दुबला सा और घिनौना सा बौना था।

इसके ठीक चौदह साल बाद क्रातिकारी जनता ने जार का तख्ता पलट दिया। यह फरवरी के महीने की बात है। उसी उन्नीस सौ सत्रह के अक्तूबर की एक रात को लाल सनिकों, नाविको और सिपाहियो ने महल मे प्रवेश किया और शत्रु पर विजय पायी। महल विजयी सवहारा के हाथो मे आ गया।

सन अठारह के वसत मे मुझे एक बार महल के बाग को घेरनेवाली ग्रेनाइट की चहारदीवारी की बगल से गुजरने का मौका मिला। हवा शात और गरम थी। बाग मे चिडिया चहचहा रही थीं, जिमे पास के सुनसान मदान मे भी साफ साफ सुना जा सकता था। अलेक्साद्रोव्स्की उद्यान, जो एडमिरेल्टी के सामने स्थित है और अब सवहारा उद्यान कहलाता है, की चिडिया भी उनके स्वर मे स्वर मिला रही थीं। नेवा नदी की बरफ गल गयी थी और समुद्र से आनेवाली गरम हवाए पानी को तरगित कर

रही थीं, जिसमे अब भी कहीं-कहीं बर्फ के छोटे-छोटे खड तरते नज़र आ जाते थे।

महल की चहारदीवारी के पास एक चौडे कधो, ऊचे क़द और शात चेहरेवाला आदमी हथौडे से दीवार पर छोटी, मगर ज़ोरदार चोटें कर रहा था। राह गुज़रते कुछ लोग उसका काम देखने के लिए रुके, मगर समझ न पाये कि वह क्या कर रहा है। मने भी जब उसे देखा, तो म भी रुक गया।

उस आदमी ने अब हथौडा अलग रखकर सब्बल उठा लिया था। इतनी मजबूत, ऊची चहारदीवारी से अकेले जूझनेवाला यह आदमी इतना अजीब लग रहा था कि अ तत हम अपने को रोक न सके और पूछ ही बठे

"कामरेड, आप क्या कर रहे ह?"

"दीवार के साथ क्या?" उसने कहा। "अरे अब इसकी ज़रूरत नहीं। ज़ार तो है नहीं, तो बाग को अब बद क्या रखा जाये! फसला किया गया है कि इस दीवार को गिरा दिया जाये और यह काम हमारी सहकारी सस्था को सौंपा गया है। आप न समझिये कि म अकेला हू। मेरे और साथी खाना खाने गये ह। म औज़ारा की चौकीदारी के लिए पीछे रह गया। और अब बैठा ठुक ठुक कर रहा हू।"

तभी हमारी नज़र दीवार के सहारे रखे हुए हथौडो, सब्बलो और इस्पाती गतियो पर पडी। हमने उसे सफलता की कामना की और अपने अपने रास्ते चल पडे।

और महीने भर बाद इस जगह पर सारे शहर के लोग श्रमदान के लिए एकत्र हुए। उसका शोर शराबा, चहल पहल किसी मेले या त्योहार की याद दिलाता था, क्योंकि उसमें आर्केस्ट्रा भी बज रहा था और बीच बीच में, आराम के क्षणो मे कुछ मनचले नाच भी उठते थे।

हज़ारो लोग दीवार को गिराने और मलबे को तट पर खडे बजरों मे लादने मे व्यस्त थे। पहली नज़र मे लग सकता था कि हर कोई मन मुताबिक, अनियोजित ढग से काम कर रहा है। मगर काम की एक निश्चित योजना थी। स्वयसेवको–फक्टरियो के नौजवानो, लाल सनिको, नाविको, औरतो, मर्दों और किशोरो–को विभिन्न दलो मे बाट दिया गया था और सब अपने अपने हिस्से मे बडे उत्साह से काम कर रहे थे।

काम के बीच मे क्षण भर रुककर पसीना पोछते हुए मने इस विचित्र दश्य पर, महल की दीवारो और बाग़ पर दृष्टिपात किया और हस पडा। मेरे साथियों ने आश्चय से मेरी तरफ देखा कि म क्यो हस रहा हू। मने उन्हें नहीं बताया – क्योंकि म झिझक सी महसूस कर रहा था – कि बहुत पहले, जब म छोटा ही था, महल की खिडकी से इस बाग को देखने पर जार के एक नौकर ने मुझे कहा था कि म इस बाग़ मे कभी नहीं टहल पाऊगा और म चिल्लाया था कि नहीं, टहलूगा!

और अब म न सिफ उसमे टहलता था, बल्कि शेष जनता के साथ उसका मालिक भी था। अचानक मुझे उस बढे, गभीर नौकर को देखने की इच्छा हुई। देखें, अब वह क्या कहेगा?

शाम तक चहारदीवारी का नामोनिशान नहीं बचा था। उसका ऊचा जगला भी जाता रहा था। मलबे के ढेरो पर युवक युवतिया बठे क्राति के गीत गा रहे थे, क्यारियो के बीच की खाली जगहो पर नाविक नाच रहे थे। उनकी टोपियो की फीतिया हवा मे उछल रही थीं।

ऐसा लगता था कि अब नये, नौजवान मालिक आ गये ह, जिन्होने पुरानी दुनिया को नये सिरे से बनाना शुरु किया है, और इस विजयी, सवशक्तिमान यौवन का कोई मुकाबला नहीं कर सकता। हर जगह लाल झडे फहरा रहे थे। मेरे मन मे एक बच्चो जसा विचार आया "क्यो न कुर्सी पर बठे हुए मोमियाई पीटर को खिडकी के पास ले आया जाये और वह खडे होकर नये, क्रातिकारी शहर के निर्माताओ का अभिवादन करे?"

समय बीतता गया। म इस शाही बाग़ मे अनेक बार घूमा, उसकी छोटी छोटी वीथिकाओ मे बहुत बार सुस्ताने बैठा, कई बार सुना कसे मा-बाप अपने साथ टहलने आये बच्चों को महल, पुराने जमाने और उस बाग़ के बारे मे बता रहे थे, जिसमे एक ही आदमी टहल सकता था और उसका नाम था जार।

जार आज के बच्चों के लिए अपरिचित शब्द बन गया है। पर मने देखा कि वे आश्चय और अविश्वासभरी आखो से अपने चारो तरफ देखते, क्योंकि इन पुरानी कहानियो से उनका कोई सबध न था। वे इस बडे भारी महल और इस बाग़ को वसे ही देखते, जसे किसी अत्यन्त साधारण चीज को देख रहे हो।

एक दिन एक बूढ़ा मजदूर अपने पोते को, जो उसे बड़े ध्यान से सुन रहा था, बता रहा था कि कैसे उसने जवानी मे इस शीत महल पर क़ब्ज़ा करने मे हिस्सा लिया था, कैसे वह फटते हुए गोलों के उजाले से कभी कभी आलोकित रात के अंधेरे मे भागा था, कैसे बाद मे बरिकेडो और सीढ़ियो को फादता हुआ तेज़ रोशनी से जगमगाती चित्र गलरी मे पहुचा था, जिसकी दीवारो पर १८१२ के युद्ध मे भाग लेनेवाले जनरलो के पोर्टेट टगे हुए थे। उसने बताया कि कैसे अस्थायी सरकार के सभी मत्रियो को गिरफ्तार किया गया था, कैसे वे अपने कापते हाथ ऊपर उठाये हुए खड़े हुए थे और मजदूरो, सनिको तथा नाविको को यो देख रहे थे, जसे कि ऐसे लोगा को जीवन मे पहले कभी न देखा हो।

और जब उसने बाग़ के बारे मे, उसकी चहारदीवारी को तोडने और लोहे के जगलो को उठाकर ले जाने के बारे मे बताना शुरू किया, तो बच्चे ने हसते हुए कहा

"अहा, म जानता हू कि यह जगला अब कहा है हमारी स्ताचेक सडक के नये बाग़ मे। कितनी मजेदार बात है! दादा, क्या तुम ही उसे वहा ले गये थे?"

"हा, कुछ हद तक मै भी," बूढ़े मजदूर ने जवाब दिया।

"तब तो तुमने बहुत अच्छा किया," बच्चे ने समझदार आदमी के से अदाज मे कहा। "ऐसे जगले को कूडे मे फेंक देना सचमुच ठीक न होता। और वहा वह कितना अच्छा लगता है!"

वे दूर निकल गये थे। म तट की ओर बढ़ चला। म सोच रहा था कि अक्तूबर क्राति ने हमारे शहर को, जिसे अब लेनिनग्राद कहने लगे थे, कितना बदल डाला है, उसका जीवन कितना नया और आश्चयजनक हो गया है और अगर म अपने बचपन के दिनो के जीवन के बारे मे बताऊ, तो क्या कोई उस पर विश्वास करने को तयार होगा?

१९५३

नेव्स्की प्रोस्पेक्त

म दीवार से बिल्कुल सट गया और फिर एकाएक झटके से अलग होकर आगे की ओर कूदा। फिर सास रोके हुए कुछ देर रुका और कुछ सुनते हुए से कदम बढाया। मेरा शरीर दीवार से लगा दोबारा यो फिसला, जसे कि म कोई छिपकली होऊ। बाद मे म सीधा हुआ और फुटपाथ के बीचाबीच आ खडा हुआ और एक बार फिर उसी तरह धीरे धीरे दीवार की तरफ बढने लगा। यह नाच नहीं था, हालाकि सभी हरक्ते नपी-तुली थीं और तालबद्ध ढग से दोहरायी जा रही थीं।

उन्हें कोई नहीं देख सकता था, क्योकि मेरे चारो तरफ अधकार था। बेशक्, पूरा अधकार कभी नहीं होता। यही बात इस समय भी थी। लेकिन उस अधेरे मे भी म कभी-कभी घरो की छतो पर गुलाबी रोशनी की मद दमक देख सकता था और तब घरो की काली रूपरेखाओ, छता की ढलानो, पूरी तरह बद, मुर्दा खिडकियो के चौखटो और फुटपाथ की फिसलनदार वीरानगी का साफ साफ अहसास होने लगता। बाद म सब कुछ काले, धूमिल कुहासे मे खो जाता और शायद केवल इस बात का ज्ञान ही कि तुम क्हा जा रहे हो, आग बढ़ने को समव बनाता।

म हाथो और घुटनो के बल, टटोलते-टटोलते चल सकता था और हालाकि म नेव्स्की प्रोस्पेक्त पर था, फिर भी कोई मुझे न देख पाता नेव्स्की प्रोस्पेक्त पर? हमे बेवकूफ बना रहे ह? शरद और सरदियो की सुनसान से सुनसान, अधेरी से अधेरी रात मे भी सडकों पर बत्तिया जली होती ह, घरो मे उजाला होता है, कहीं न कहीं कोई रोशनी होती है। मगर फिर भी यह नेव्स्की प्रोस्पेक्त था। इस सर्दी की सबसे अधेरी घडी मे, लेनिनग्राद की नाकाबदी की घडी मे। इस अधेरे मे एक भी बत्ती नहीं

जल सकती थी, और सचमुच कोई जल भी नहीं रही थी। इसके अलावा, म ये हरकतें इसलिए नहीं कर रहा था कि गर्माना चाहता था, या किसी के न देखने का फायदा उठाकर शरीर को कुछ समय के लिए पूरी छूट देना चाहता था।

म खामोशी मे नहीं चल रहा था, हालाकि मेरे चारो तरफ हर चीज मानो जड और सहमी हुई अवस्था मे थी। समय-समय पर कहीं पास ही से गोलो के छूटने की आवाजें आ रही थीं। हर धमाके के बाद टूटे शीशो की झनझनाहट और दीवारो से ईंटें गिरने की आवाज सुनायी दे रही थी और शहर की ये ठस्स कराह बार बार दोहरा रही थीं। क्षण भर के लिए हर चीज पहले हरी पीली और फिर भूरी-गुलाबी लपटो से प्रकाशित हो उठता था और इसके बाद हवा तरह तरह की बेशुमार आवाजो से गूज जाती थी। लगता था कि कोई चीज सनसना रही है, कोई चीज हल्के से चीख रही है, कोई चीज घिनौने, मनहूस ढग से कानो के पास ऐसे भन्ना रही है, जसे कि हवा मे जहरीले, अनजान, लोहे के पखोवाले, अमगल कारी कीडे उड रहे हो।

एडमिरेल्टी की ओर बढ़नेवाला म अकेला नहीं था। म नेव्स्की प्रोस्पेक्त और ह्वोर्तोवाया मदान के नुक्कड पर स्थित सनिक अखबार के दफ्तर जा रहा था। इस रास्ते को बदलना या आसान बनाना मेरे बस की बात नहीं थी। इलाके पर गोलाबारी हो रही थी। मेरे आगे कोई गहरी सास लेता हुआ बार बार बडबडा रहा था "शतान ले जाये तुम्हे!" इसके बाद अप्रत्याशित रूप से वही महिला स्वर उसी अन्दाज मे और जसे कि उसका दम घुट रहा हो, कह रहा था "हे भगवान!" ये उदगार उसी गडगडाहट, हू हू और सनसनाहट से सबधित था, जिससे हम घिरे हुए थे।

लेकिन इसके आगे से एक और स्वर सुनायी दे रहा था, जो युवा और अधिक सयत था और लगभग कराहते हुए चीख रहा था "यह क्या है? यह क्या है?"

सरसराती सनसनाहट इतनी पास आ गयी थी कि म यत्रवत दीवार से जा चिपका। यहा तक कि एक सेकण्ड के लिए आखें बद भी हो गयीं। अचानक मुझे सब कुछ बहुत हास्यजनक लगा। यह नेव्स्की है? यह लेनिनग्राद है? नहीं हो सकता!

म अभी आखें खोलूगा, मगर तब तक मानो टाइम मशीन मे बठकर अपने बचपन मे पहुच गया हू। म क्या देख रहा हू? धूप मे नहाता नेव्स्की। हर तरफ लोगो की भीड है। कुछ खूबसूरत घुडसवार चले जा रहे ह। उनकी सख्या काफी ज्यादा है और सब के घोडे एक से, और एक ही रग के ह। कुछ घुडसवार क्वच पहने हुए ह और उनके टोपो पर चादी की चीले बनी हुई ह। बाकी झबरैली और ऊची टोपिया पहने हुए ह। क्वच चमक रहे ह, घोडे भी अतलास की तरह जगमगा रहे ह। यह मार्सोवो मैदान मे मई की परेड मे हिस्सा लेने के लिए गाड स जा रहे ह। बाद मे नेव्स्की प्रोस्पेक्त पर काली चमचमाहट की लहर दौड जाती है। ये राजदूतो और अभिजात वग के लोगो की बग्घिया और टमटमे ह। शाम को भी फानूसो से सब जगमगा रहा है। उनकी सख्या बहुत है और सब फुटपाथ के किनारे पर रखे हुए ह और लालटेनों वाली बग्घिया और ऊचे पायदानो, पहियो और बत्तियो वाली मोटरकारें आगे पीछे आ जा रही ह।

म आखें खोलता हू। अधेरा कहीं बग़ल से आती नरक जसी भूरी लपट से जगमगा उठा था। मेरे चारो तरफ काली छायाए थीं। कहीं पास ही से धमाके की आवाज़ आयी। हवा मे फिर कुछ हिला, सनसनाया और गूजा। कहीं से दीवार पर एक ईंट गिरी और टुकडे-टुकडे हो गयी। ऐसा लगा कि किसी सधे हुए हाथ ने उसे फेंका है। रात के काले कुहासे मे एक तरह की भूरी धूल मिल गयी।

तभी मेरे आगे से फिर सुनायी दिया "शतान ले जाये तुम्हें!" और उसके कुछ बाद "हे भगवान!" दूसरी ईंट बग़ल से गुज़रती हुई अधियारे मे जाकर खो गयी। कानो के पास कुछ सनसनाया और वह युवती स्वर फिर सुनायी दिया—वही "यह क्या है? यह क्या है?" कराहता हुआ।

म ठहरकर हवा मे उडती इन अप्रिय चीज़ो के रुकने का इतज़ार करने लगा। मुझे लडाई की पूववेला मे नेव्स्की की इस जगह की याद हो आयी। सडक पर निकले किसी को भी मई की उन परेडो की याद नहीं थी और फिर नेव्स्की पर सब कुछ इतना बदल चुका था कि जसे सौ साल से ज्यादा समय बीत चुका हो। कोई भी विगत की उन परेडो, राजदूतो की बग्घियो और फानूसो के बारे मे नहीं बता सकता था। नेव्स्की बिजली की रोशनी मे नहा रहा था, मोटरगाडियो और ट्रामो की बत्तियो ने भी

ज़ारशाही काल की लालटेनो को बहुत पीछे छोड दिया था। हज़ारो लोग अपने काम से आ जा रहे थे, दुकानो, सिनेमाघरों मे भीड लगाये हुए थे, फुटपाथो पर खडे थे, अखबार पढ़ रहे थे, बातचीत कर रहे थे, ट्राम या बस का इतज़ार कर रहे थे।

हर चीज़ जि दा थी, हरकत कर रही थी लेकिन इस समय? मेरे आखें खोलने की देर थी कि मैं फिर अपने को प्रागतिहासिक अधकार मे पाता और अगर उसी क्षण कोई ममय आ जाता, तो शायद म तनिक भी हैरान न होता। मेरा सारा जीवन इस शहर मे बीता है। तो इसका मतलब है कि मह भी देखना ही होगा। और कोई चारा भी नहीं है पर इन्होंने यही इलाका क्यो चुना है? अपने आगे आगे जानेवाली बुढ़िया की तरह मुझे भी चिल्लाने की इच्छा हुई "शतान ले जाये तुम्हें!" मगर तभी तेजी से घूमते उन लोहे के प्रेतो ने अपना तमाशा फिर शुरू कर दिया। युवती फिर कराही "यह क्या है? यह क्या है?"

अचानक म सुनता हू कि बुढ़िया गुस्से से भरी आवाज़ मे युवती पर चीख रही थी "क्या 'यह क्या है? यह क्या है?' लगा रखी है! देखती नहीं कि गोलो के टुकडे ह, बेवकूफ कहीं की!"

नये गोले के फटने से हुए उजाले मे मने देखा कि हम सब एक साथ अखबार के दफ्तर तक पहुच गये ह। बाद मे रात फिर घिर आयी, लेकिन उस घातक धमाके की चमक के खत्म होते होते म यह और देख सका कि बुढिया ने युवती को फाटक के अदर धकेल दिया है और उसके पीछे पीछे चली गयी है।

घना अधकार छा गया।

म फिर नेव्स्की पर हू। वह उस बहुत साल पहले के नेव्स्की की तरह नहीं है, जिस पर से "वर्याग" और "कोरेयेत्स" जहाजो के वीर गुज़रे थे। वह युद्धपूर्व के नेव्स्की की तरह भी नहीं है। लेकिन वह साध्यकालीन रोशनियो से फिर जगमगा रहा है। भीड बहुत है, ट्रामें नहीं ह, पर कारो, ट्रालीबसो और बसो की तादाद बहुत बढ गयी है। दफ्तर की दीवार के खडहर वाले मकान की जगह असली मकान खडा हुआ है म आखें मूदकर विस्फोटो के गुलाबी उजालोवाली प्रागतिहासिक रात मे पहुच सकता हू, पर अब इच्छा नहीं होती।

म सारा जीवन इस शहर मे रहा हू। म जानता हू कि अब सडको पर ऐसे नोटिस नहीं ह "गोलाबारी के समय सडक का यह हिस्सा सब

से खतरनाक है!" और खडहर, दरारें, छेद, अपनी यादमात्र छोडकर गायब हो गये ह।

कारखानो मे चिमनिया, नेवा नदी मे स्टीमर धूआ छोड रहे ह, और बागो मे सलानियो की चहल-पहल मची है। म बूढ़ा, सफेद बालोवाला आदमी, उन जगहो पर जाता हू, जिनसे म इतनी अच्छी तरह परिचित हू कि याद भी नहीं करना पडता। म उस घर के पास जाता हू, जहा म पदा हुआ था। उस पर एक स्मारक फलक लगा है "इस घर मे हर्त्सेन रहते थे।" अगली सडक गोगोल स्ट्रीट है। और यह सामने दजेर्जीन्स्की स्ट्रीट है। म सौभाग्यशाली था। मेरा जन्म एक ऐसे घर मे हुआ, जो दो लेखको और एक क्रातिकारी के नामो वाली सडको के बीच मे स्थित है। म पुन पढ़ता हू "इस घर मे हर्त्सेन रहते थे।" म उदासी मिश्रित गव की भावना से उसे पढ़ता हू। इस घर मे मने अपनी पहली कविताए और पहली गद्य रचनाए लिखी थीं। यह घर हर्त्सेन के बाद भी बना रहा और अब मेरे बाद भी बना रहेगा। शहर की आयु बहुत लबी होती है। और मुझे खुशी है कि यह घर कम्युनिज्म के आने पर भी यो ही खडा रहेगा और कम्युनिज्म का साक्षी बनेगा।

१९५६

प्रिय पाठकगण,

पिछले कुछ समय से प्रगति प्रकाशन "सर्वश्रेष्ठ रूसी और सोवियत पुस्तकमाला" प्रकाशित कर रहा है।

इसके अन्तर्गत अब तक निम्न पुस्तकें निकल चुकी हैं

चगीज आइत्मातोव, "तीन लघु उपन्यास", इवान तुर्गनेव, "रूदिन", फ्योदोर दोस्तोयेव्स्की, "रजत रातें", लेव तोलस्तोय, "कहानियां", बोरीस लाव्रेंयोव, "इक्तालीसवा", ब्रूनो यासेन्स्की, "कायाकल्प"।

इन पुस्तकों के बारे में आपके विचार जानकर हम अनुगृहीत होंगे।

हमारा पता है

प्रगति प्रकाशन,
२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ

Н С. Тихонов

«РАССКАЗЫ»

на языке хинди

Перевод сделан по книге
Н С Тихонов Собрание сочинений
Государственное издательство
художественной литературы 1959